इनर टाइ० और प्रथम दो फार्म, ग० कृ० गुर्जर द्वारा श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस,
काशी में मुद्रित और शेष दुर्गाप्रसाद मैनेजर द्वारा श्री सुखदेव
सहाय जैन प्रिंटिङ्ग प्रेस, अजमेर में मुद्रित।

भूमिका

मुहणोत नैणसी की ख्यात मुख्यतः राजपूताने और सामान्य रूप से गुजरात, काठियावाड, कच्छ, मालवा, बुंदेलखंड और बघेलखंड के (मुसलमानों के समय के) राजपूतों के इतिहास के लिये बड़े महत्व की होने पर भी सर्व साधारण को उसका मिलना दुर्लभ था; और अनुमान २७५ वर्ष पूर्व की मारवाड़ी भाषा में होने के कारण उसको ठीक समझना भी सुलभ न था। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने उसके अनुमान चौथाई अंश का यह हिंदी अनुवाद प्रकाशित कर राजपूताने आदि के इतिहास से प्रेम रखनेवालों के लिये अमूल्य सामग्री उपस्थित कर दी है। मूल ग्रंथ का यह अनुवाद उदयपुर निवासी बाबू रामनारायणजी दूगड़ ने किया है। इसमें मूल पुस्तक के कुछ अंशों का क्रम पलटना पड़ा है, जिसका कारण यह है कि उसमें एक ही वंश से संबंध रखनेवाला सारा वर्णन एक ही शृंखला में नहीं आया, कहीं कहीं भिन्न भिन्न स्थानों में भी लिखा गया है, जिससे उसको एक ही सूत्र में गूँथना पड़ा, तथा उसमें भी भूगोल संबंधी वृत्तान्त को पहले स्थान दिया गया है, फिर इतिहास को। नैणसी का लिखा इतिहास वि० सं० १३०० के पीछे का विस्तार से है, और उससे पहले का वृत्तांत अपूर्ण और कहीं कहीं अशुद्ध भी है। अतएव जहाँ तहाँ टिप्पणी देकर उसको ठीक करने का उद्योग भी किया गया है। इससे ग्रंथ की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। मूल पुस्तक में वंशावलियाँ वंशवृक्षों के रूप में नहीं, किंतु अंक संकेत के साथ चलती पंक्तियों में दी हैं; और कहीं कहीं नामों के साथ उनका विशेष परिचय भी दिया है। यह क्रम आधुनिक पाठकों को सर्वथा रुचिकर नहीं हो सकता, जिससे वंशावलियाँ वंशवृक्षों के रूप में बदल दी गई हैं, और उनमें से जिस किसी नाम के संबंध में जो कुछ लिखा है, वह नीचे टिप्पणी में दिया गया है। टिप्पणियाँ दो प्रकार के टाइपों में हैं। मूल ग्रंथ की त्रुटियाँ बतलाने या अधिक परिचय देने के लिये जो टिप्पणियाँ दी गई हैं, वे पुस्तक की अपेक्षा छोटे टाइप में हैं, और बड़े (ग्रंथ के) टाइप में केवल वेही टिप्पणियाँ हैं, जो वंशावलियों के कुछ नामों का अधिक परिचय करानेवाले मूल ग्रंथ का ही अंश होने पर भी वंशवृक्षों में नामों के साथ आ नहीं सकती थीं। टिप्पणियों के इन दो प्रकार के टाइपों से पाठकों को विदित हो जायगा कि टिप्पणियों में मूल का अंश कौन सा है और संपादक की टिप्पणियाँ कौन सी हैं। संपादक की असावधानी से पृष्ठ ११६ के टिप्पणियाँ, जो बड़े टाइपों में होनी चाहिए थीं, छोटे में छप गई हैं। सो पाठक उन्हें मूल का अंश ही समझें।

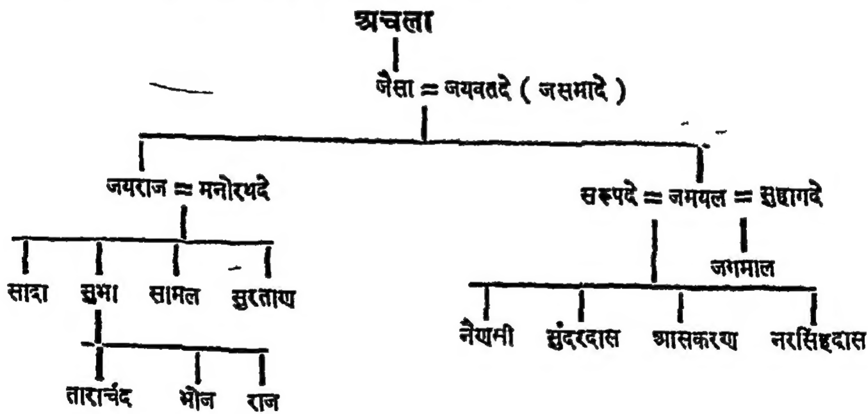
अजमेर
ता० १२-१-१९२६ ई०

गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

मुहणोत नैणसी

वंश-परिचय

मुहणोत नैणसी ओसवाल जाति के मुहणोत * वंश का महाजन था। इस वंश के महाजन जयसलमेर से जोधपुर आकर उक्त राज्य की समय समय पर सेवा करते रहे। नैणसी, साह अचला का प्रपौत्र, जैसा का पौत्र और जयमल का पुत्र था। जैसा के जयवंत दे (जसमादे) से दो पुत्र—बड़ा जयराज और छोटा जयमल—उत्पन्न हुए थे। जयमल की दो स्त्रियाँ—बड़ी सरूपदे और छोटी सुहागदे थीं। सरूपदे से नैणसी, सुंदरदास, आसकरण और नरसिंहदास ये चार पुत्र हुए, और सुहागदे से जगमाल। नैणसी के पूर्व पुरुषों का वृत्तात विशेष रूप से हमें नहीं मिल सका। तो भी पाली (जोधपुर राज्य) के नोलखा के मंदिर के वि० सं० १७०० माघ सुदी १२ बुधवार के जैन लेख, तथा जालोर (जोधपुर राज्य) के महावीर जी के मन्दिर के तीन जैन लेखों से, जो वि० सं० १६८३ आषाढ़ बदी ४ गुरुवार के हैं, तथा वहीं के चौमुखजी के मंदिर के वि० स० १६८१ प्रथम चैत्र वदी ५ गुरुवार के जैन लेख से नैणसी के कुटुंब का वंशवृक्ष नीचे लिखे अनुसार होता है—



नैणसी का जन्म

नैणसी का जन्म संवत् १६६७ मार्गशीर्ष सुदी ४ शुक्रवार को हुआ था। वि० सं० १७१४ में जोधपुर के महाराज जसवन्तसिंह (प्रथम) ने नैणसी को अपना दीवान बनाया था। कई वर्षों तक राज्य की सेवा करके विशेष अनुभव प्राप्त किए हुए बुद्धिमान्

* मुहणोत के स्थान में मूता या मेहता भी लिखते हैं, परंतु शुद्ध नाम मुहणोत ही है, जिसका अर्थ मुहण (मोहन) की संतति है।

पुरुष का जोधपुर जैसे बड़े राज्य का दीवान बनाया जाना उचित ही था। इसलिये दीवान बनने के समय नैणसी की अवस्था यदि ४७ वर्ष की थी फिर ऊपर लिखे हुए वि० सं० १६८१ के लेख में जयमल के तीन पुत्रों—नैणसी, सुंदरदास और आसकरण का विद्यमान होना लिखा हुआ है, जिससे स्पष्ट है कि उक्त संवत् से पूर्व नैणसी के दो छोटे भाई भी उत्पन्न हो चुके थे। इन सबों का परस्पर सामञ्जस्य है। अतएव इनके सबध में संदेह का स्थान नहीं है।

मुहणोत वंशियों का राजसेवा

नैणसी का पिता जयमल, जोधपुर के महाराज गजसिंह का विश्वासपात्र सेवक था और वि० सं० १६८६ में वह दीवान बनाया गया था। इसके पूर्व सं० १६७७ में जब महाराज गजसिंह के मनसब में बादशाह जहाँगीर ने एक हजार जात और एक

जयमल

हजार सवारों की तरक्की की तो उसकी तनखाह में जालौर का परगना उनको मिला। उस समय महाराज ने मुहणोत जयमल को वहाँ का शासक नियत किया था। वि० सं० १६८३ में महाराज गजसिंह के कुँवर अमरसिंह को नागौर मिलने पर जयमल नागौर का हाकिम बनाया गया था।

मुहणोत नैणसी भी जोधपुर राज्य की सेवा में रहा और वीर प्रकृति का पुरुष होने के कारण, वि० सं० १६८९ में मगरा के मेरों का उपद्रव बढ़ना देखकर महाराज गजसिंह ने मेरों को दण्ड देने के लिये उसको सेना सहित भेजा। उसने मेरों को सजा दी और

नैणसी

उनके गाँव जलाए। वि० सं० १७०० में महेचा महेशदास बागी होकर राडधरे के गाँवों में बिगाड़ करता रहा जिस पर महाराज जसवंतसिंह ने नैणसी को राडधरे भेजा। उसने राडधरे को विजय कर वहाँ के कोट (शहरपनाह) और मकानों को गिरवा दिया तथा महेचा महेशदास को वहाँ से निकालकर राडधरा अपनी फौज के मुखिया रावल जगमाल भारमलोत (भारमल के पुत्र) को दिया। सं० १७०७ में रावत नरा (नारायण) सोजत की ओर के गाँवों को लूटता था, जिसपर महाराज ने मुहणोत नैणसी तथा उसके छोटे भाई सुंदरदास को उस पर भेजा। उन्होंने कूकड़ा, कोट, कराणा, मॉकड़ आदि गाँवों को नष्ट कर दिया। वि० सं० १७१४ में महाराज जसवंतसिंह (प्रथम) ने मियाँ फरासत की जगह नैणसी को अपना दीवान बनाया। महाराज जसवंतसिंह और औरंगजेब के बीच अनबन होने के कारण वि० सं० १७१५ में जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने फलोदी और पोकरण जिलों के १० गाँव लूटे, जिस पर महाराज ने अहमदाबाद जाते हुए, मार्ग से ही मुहणोत नैणसी को जैसलमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। इस पर वह जोधपुर आया

और वहाँ से सैन्य सहित चढ़कर उसने पोकरण में डेरा किया। इस पर सबलसिंह का पुत्र अमरसिंह, जो पोहकरण जिले के गाँवों में था, भागकर जैसलमेर चला गया। नैणसी ने उसका पीछा किया और जैसलमेर के २५ गाँव जलाकर, जैसलमेर से तीन कोस की दूरी के गाँव वासणपी में वह जा ठहरा। परंतु जब रावल किला छोडकर लडने को न आए, तब नैणसी आसणी कोट को लूटकर लौट गया।

वि० सं० १७११ में पंचोली वलभद्र राघोदासोत (राघोदास का पुत्र) की जगह नैणसी का छोटा भाई सुंदरदास महाराज जसवंतसिंह का खानगी दीवान नियत हुआ।

सुंदरदास वि० सं० १७१३ में सिंधल बाघ पर महाराज जसवंतसिंह ने फौज भेजी। उस समय बाघ ४०१ राजपूतों के साथ लडने को सज्जित होकर तैयार बैठा था। महाराज की फौज में ६९१५ पैदल थे, जिनके दो विभाग किए गए। एक विभाग का, जिसमें ३५४३ सैनिक थे, अध्यक्ष राठौड लखधीर विट्ठलदासोत (विट्ठलदास का बेटा) था। दूसरे विभाग के, जिसमें ३३७२ सैनिक थे, अध्यक्षों में मुख्य मुहणोत सुंदरदास था। सिंधलों से लड़ाई हुई, जिसमें बहुत से आदमी मारे गए और महाराज की विजय हुई। वि० सं० १७२० में महाराज जसवंतसिंह की सेना ने बादशाह औरंगजेब की तरफ से प्रसिद्ध मराठा वीर शिवाजी के अधीन के गढ़ कुडाँणे पर चढाई कर गढ़ पर मोरचे लगाए। इस चढाई में सुंदरदास जयमलोत मरना निश्चय कर लडने को गया था, परंतु गढवालों के अरावों की मार से महाराज को अपनी फौज वापस लेनी पडी।

वि० सं० १७१५ में महाराज जसवंतसिंह बादशाह शाहजहाँ की तरफ से उज्जैन के पास शाहजादे औरंगजेब से लडे और वहाँ से हारकर जोधपुर लौट आए। इस लडाई के समय करमसी महाराज के साथ था और उन्हीं के साथ जोधपुर लौटा था। वि० करमसी सं० १७१८ में जब बादशाह औरंगजेब ने गुजरात का सूबा महाराज जसवंतसिंह से लेकर उसके एवज में हाँसी हिसार के परगने दिए, तब महाराज की तरफ से मुहणोत करमसी और पंचोली बछराज उन परगनों के शासक नियत किए गए थे।

नैणसी की मृत्यु

संवत् १७२३ में महाराज जसवंतसिंह औरंगाबाद में थे और मुहणोत नैणसी तथा उसका भाई सुंदरदास दोनों उनके साथ थे। किसी कारण वशात् महाराज उनसे अप्रसन्न हो रहे थे, जिससे पौष सुदी ९ के दिन उन दोनों को कैद कर दिया। महाराज के अप्रसन्न होने का ठीक कारण ज्ञात नहीं हुआ। परन्तु जनश्रुति से पाया जाता है कि नैणसी ने अपने

रिश्तेदारों को बड़े बड़े पदों पर नियत कर दिया था और वे लोग अपने स्वार्थ के लिए प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। इसी बात के जानने पर महाराज इनसे अप्रसन्न हो गए थे।

वि० सं० १७२५ में महाराज ने एक लाख रुपया दंड लगाकर इन दोनों भाइयों को छोड़ दिया, परन्तु इन्होंने एक पैसा तक देना स्वीकार न किया। इस विषय के नीचे लिखे हुए दोहे राजपूताने में अब तक प्रसिद्ध हैं—

लाख लखारां नीपजे, बड़ पीपल री साख।
नटियो मूंतो नैणसी, तांबो देण तलाक॥ १॥
लेसो पीपल लाख, लाख लखारां लावसी।
तांबो देण तलाक, नटिया सुन्दर नैणसी* ॥ २॥

नैणसी और सुंदरदास के दंड के रुपए देना अस्वीकार करने पर वि० सं० १७२६ माघ बदी १ को फिर वे दोनों कैद कर दिए गए और उन पर रुपयों के लिये सख्तियाँ होती रहीं। फिर कैद की हालत में ही इन दोनों को महाराज ने औरंगाबाद से मारवाड़ को भेज दिया। दोनों वीर प्रकृति के पुरुष होने के कारण इन्होंने महाराज के छोटे आदमियों की सख्तियाँ सहन करने की अपेक्षा वीरता से मरना उचित समझा। वि० सं० १७२७ की भाद्रपद बदी १३ को इन्होंने अपने अपने पेट में कटार मारकर मार्ग में ही शरीरान्त कर दिया। इस प्रकार महापुरुष नैणसी की जीवनलीला का अंत हुआ और महाराज की बहुत कुछ बदनामी हुई।

नैणसी के पुत्र और पौत्र

नैणसी और सुंदरदास के इस प्रकार वीरता के साथ प्राणोत्सर्ग करने की खबर जब महाराज को हुई, तब इन्होंने नैणसी के पुत्र करमसी और उसके अन्य बाल बच्चों को जो कैद किए गए थे, छुड़वा दिया। महाराज के अत्याचार को स्मरण कर वे लोग जोधपुर छोड़कर नागौर के स्वामी रायसिंह के पास चले गए, जो जोधपुर के महाराजा गजसिंह के पौत्र और बादशाह शाहजहाँ के दरबार में सलाबतखाँ को मारनेवाले प्रसिद्ध वीर राठौड़ अमरसिंह के पुत्र थे। रायसिंह ने अपने ठिकाने का सारा काम करमसी के सुपुर्द कर दिया। इस पर महाराज ने मुहणोतों को जोधपुर राज्य की सेवा में नियत न करने की शपथ खाई। परंतु उनकी प्रतिज्ञा का पीछे से पालन न हुआ, क्योंकि पीछे भी महाराज बख्तसिंह, मानसिंह आदि के समय में मुहणोत वंशी मुत्सद्दी रहे हैं।

* लखारां = लखेरों के यहाँ। साख = शाखा। नटियो = नट गया। तांबो = तांबे का एक भी पैसा। देण = देना। तलाक = अस्वीकार किया। लेसो = लोगे। लावसी = लाओगे।

महाराज रायसिंह वि० सं० १७३२ आषाढ़ वदी १२ को दक्षिण के गाँव सोलापुर में दो चार घड़ी बीमार रहकर अचानक मर गए। तब उनके मुत्सद्दियों आदि ने उनके गुजराती वैद्य से पूछा कि रायसिंह अचानक कैसे मर गये? इस पर उसने गुजराती भाषा में उत्तर दिया—"कर्मों नो दोष छै" (भाग्य का दोष है) जिसका अर्थ रायसिंह के मुसाहिबों आदि ने यह समझा कि "करमा (करमसी) ने इनको मारा है"। फिर उस (करमसी) पर विष देने का झूठा सन्देह कर उसको वहीं जिन्दा दीवार में चुनवा दिया गया, और नागौर लिखा गया कि इसके जो कुटुंबी वहाँ हैं, उन सब को कोल्हू में डालकर कुचल डालना। इस हुक्म के पहुँचने पर करमसी का पुत्र परतापसी अपने कई रिश्तेदारों के साथ मारा गया और करमसी की दो स्त्रियों ने अपने पुत्र सावंतसिंह और संग्रामसिंह के साथ भागकर किशनगढ़ (कृष्णगढ़, राजपूताना) मे शरण ली। फिर वहाँ से ये लोग बीकानेर में जा रहे।

नैणसी के ग्रन्थ

मुहणोत नैणसी जैसा वीर प्रकृति का पुरुष था, वैसा ही विद्यानुरागी, इतिहास प्रेमी और वीर कथाओं पर अनुराग रखनेवाला नीति निपुण पुरुष था। उसका मुख्य ऐतिहासिक ग्रंथ 'ख्यात'* नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ रायल अठपेजी हजार पृष्ठ से अधिक बड़ा और राजपूताने, गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, बघेलखंड, बुंदेलखंड और मध्यभारत के इतिहास के लिये विशेष उपयोगी है।

ख्यात की सामग्री

नैणसी की इतिहास पर बड़ी रुचि होने के कारण उसने चारणों, भाटों, अनेक प्रसिद्ध पुरुषों, कानूनगो आदि से जो कुछ ऐतिहासिक वृत्तांत मिल सका, उससे तथा उस समय मिलनेवाली ख्यातों आदि सामग्री से अपनी ख्यात का संग्रह किया। जोधपुर के दीवान नियत होने के पहले से ही उसको ऐतिहासिक बातों के संग्रह करने की रुचि थी। और ऐसे प्रतिष्ठित राज्य का दीवान होने के पीछे तो उसको अपने काम में और भी सुबीता रहा होगा। उसने कई जगह पर, जिन जिन से जो कुछ वृत्तान्त प्राप्त हुआ, उसका संवत्, मास सहित उल्लेख भी किया है। जैसे उदयपुर के सम्बन्ध की एक बात (वृत्तान्त) वि० सं० १७१९ भाद्रपद सुदी ९ को चारण आसिया गिरधर ने लिखाई। वहीं के इतिहास के सम्बन्ध का कुछ और वृत्तान्त जोगिण पीठू से प्राप्त हुआ। राणा उदयसिंह और पठान हाजी खाँ के बीच की लड़ाई का वृत्तान्त वि० सं० १७१४

---

* राजपूताने की भाषा में 'ख्यात' (ख्याति) का अर्थ 'इतिहास' है और 'बात' (वार्ता) का अर्थ 'वृत्तांत' है। नैणसी ने स्थल स्थल पर 'बात' शब्द का प्रयोग किया है।

दे बनाने के संवत्, तथा पहाड़ों, नदियों और जिलों के विवरण भी
त में चौहानों, राठौड़ों, कछवाहों, और भाटियों का इतिहास तो इतने
गा गया है कि जिसका अन्यत्र कहीं मिलना सर्वथा असंभव है।
यात में इतना संग्रह है, जो अन्यत्र मिल ही नहीं सकता। इसमें
ान, उनके निश्चित् संवत् तथा सैंकड़ों वीर पुरुषों के जागीर पाने या
संवत् सहित उल्लेख देखकर यह कहना अनुचित न होगा कि नैणसी
रूप ने अनेक वीर पुरुषों के स्मारक अपनी पुस्तक में सुरक्षित किए हैं।
बाद से नैणसी के समय तक के राजपूतों के इतिहास के लिये
लखी हुई फारसी तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं कहीं
राजपूताने के इतिहास में कई जगह जहाँ प्राचीन शोध से प्राप्त
पूर्ति नहीं कर सकती, वहाँ नैणसी की ख्यात ही कुछ कुछ सहारा देती
ा एक अपूर्व संग्रह है। स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी तो नैणसी को
अबुफज़ल' कहा करते थे, जो अयुक्त नहीं है। ख्यात की भाषा लगभग
ारवाड़ी है, जिसका इस समय ठीक ठीक समझना भी सुलभ नहीं है।
ं राजाओं के इतिहास के साथ कितने ही लोगों के वर्णन के गीत, दोहे,
दृत किए हैं, जो डिंगल भाषा में हैं। उनमें से कुछ तो ३०० वर्ष से भी
नका समझना तो कहीं कहीं और भी कठिन है।
ात में बहुत सी त्रुटियाँ भी अवश्य हैं, क्योंकि वि० सं० १५०० के पूर्व
ा भाटों आदि की ख्यातों से उद्धृत की गई हैं। इसलिए उनमें दिये
नामों आदि में से थोड़े ही शुद्ध हैं। परन्तु प्राचीन शोध से उनकी बहुत
शुद्धता हो सकती है। नैणसी ने एक ही विषय के सम्बन्ध की जितनी
ा सकीं, वे सब दर्ज की हैं, जिनमें कुछ ठीक हैं और कुछ नहीं। कहीं
अशुद्धियाँ हैं और कहीं लेखक-दोष से भी अशुद्धियाँ हो गई है।
ात जिस क्रम से इस समय उपलब्ध है, उसके देखने से अनुमान होता
न में किसी क्रम से नहीं, किन्तु ज्यों ज्यों जो कुछ वृत्तान्त मिलता गया,
एक पुस्तक रूप में संग्रह किया हो, क्योंकि हमारे संग्रह की हस्तलिखित
क का प्रारंभ सीसोदियों की 'बात' से शुरू होता है और दूसरे पत्रे में
ध की दूसरी बात के प्रारंभ में ही लिखा है—"एक बात तो ऊपर के
है और एक (अर्थात् यह) पोकरण ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त क

भाई जोसी मनोहरदास ने लिखाई"। इससे निश्चित है कि वर्तमान ख्यात के प्रारंभ की सीसोदियों की वात, (जो प्रारंभ के ही पत्रों में है) मूल संग्रह के पृष्ट ४९७ में थी। पीछे से उक्त मूल संग्रह से वंशक्रम के अनुसार यह ख्यात लिखी गई। परन्तु वंश-क्रम पूरा निभा नहीं, क्योंकि एक ही वंश से सम्बन्ध रखनेवाला सब वृत्तान्त एक ही साथ नहीं आया, किंतु कुछ कुछ छूट गया, जो जहाँ तहाँ लिख दिया है।

नैणसी के पौत्र प्रतापसिंह के मारे जाने पर उसके दो भाई सावंतसिंह और संग्रामसिंह अपनी दोनों माताओं सहित किशनगढ और वहाँ से बीकानेर जा रहे। नैणसी की लिखी

ख्यात की हस्तलिखित पुस्तक

ख्यात भी वे अपने साथ बीकानेर ले गए, और सुना जाता है कि नैणसी के वंशजों ने वह मूल पुस्तक (या उसकी नकल) बीकानेर दरबार को भेंट कर दी। कर्नल टॉड के समय तक उस पुस्तक की प्रसिद्धि न हुई। यदि उनको वह पुस्तक मिल जाती, तो अवश्य उनका 'राजस्थान' दूसरे ही रूप में लिखा जाता। कर्नल टॉड के स्वदेश लौट जाने के बाद आज से अनुमान ८०-९० वर्ष पूर्व* उसकी सुंदर अक्षरों में लिखी एक प्रति बीकानेर राज्य की तरफ से महाराणा उदयपुर के यहाँ पहुँची, जो वहाँ के राजकीय 'वाणीविलास' नामक पुस्तकालय में विद्यमान है। उदयपुर के बृहत् इतिहास 'वीरविनोद' के लिखे जाने के समय उक्त पुस्तक का उपयोग कई स्थलों में हुआ। जब मैंने उसका महत्व देखा, तो अपने लिये उसकी एक प्रति तैयार करने का विचार किया। परतु ऐसी बडी पुस्तक की नकल करना कई महीनों का काम था; और इतने समय के लिये राज्य की ओर से उसका मिलना असभव देखकर मैंने जोधपुर के कविराजा मुरारीदान जी को लिखा—"नैणसी की ख्यात की मुझे वडी आवश्यकता है। यदि आप कहीं से उसकी प्रति नकल करवा भेजें, तो बडी कृपा होगी"। इसके उत्तर में उन्होंने लिखा—"नैणसी की ख्यात की मूल प्रति बीकानेर दरबार के पुस्तकालय में थी, जहाँ से कर्नल पाउलेट (रेजिडेंट जोधपुर) उसे ले आए। और जिस समय वे स्वदेश लौटने लगे, उस समय मैंने वह प्रति उनसे माँगी, तो कृपाकर उन्होंने वह मुझे बख्श दी, जो मेरे यहाँ विद्यमान है। उसकी नकल कराकर मैं आपके पास भेज दूँगा।" फिर उन्होंने अपने ही व्यय से उसकी नकल कराना शुरू किया, और ज्यों ज्यों नकल होती गई, त्यों त्यों उसका थोडा थोडा अंश वे मेरे पास भेजते रहे। इस प्रकार जब सारी पुस्तक सं० १९५१ में मेरे पास पहुँच गई तब मैंने उसका 'वाणीविलास'

* उदयपुर राज्य की प्रति में उसके भेजे जाने का संवत् भी दिया, परंतु गत २२ वर्षों में मैंने उसको फिर नहीं देखा, अतएव ठीक संवत् का स्मरण न होने से उसके लिखे जाने का यह आनुमानिक समय लिखना पड़ा।

की प्रति से मिलान किया, सो दोनों पुस्तकें ठीक मिल गई। फिर मैंने उसका सूचीपत्र बनाकर उसकी जिल्द बँधवा ली। दूसरे वर्ष जब कविराजा जी का उदयपुर आना हुआ, तब मैंने वह पुस्तक उनको दिखलाकर उनकी इस बड़ी कृपा के लिये उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने उसी समय एक छप्पय बनाकर अपने ही हाथ से उसमें लिख दिया जो नीचे लिखे अनुसार है—

छप्पय

"मंत्री मुरधर तणो नैणसी मैहतो नाँमी।
ख्यात रत एकठा किया कर खाँत अमाँमी॥
विक्रम-पुर-पत हूँत करअल पोलट पाया।
दीधा मो हित दाख समय जिण सदन सिधाया॥
जौहरी मिल्यो गवरीसँकर पडत अक्षर-लिपि-पढण।
मुरारै भेट कीधा जिकण कवराजा कीमत कढण* ॥

हस्ताक्षर जोधपुर निवासी कविराजा मुरारदान। संवत् १९६० फागण वद ८"

ऐसा सुना है कि कविराजा जी के पास की प्रति इस समय जोधपुर के पंडित रामकर्ण जी आसोपा के पास है। मेरी प्रति से मेरे तीन चार मित्रों ने उसकी प्रतिलिपियाँ करवाईं और उन्हीं में से एक के आधार पर बाबू रामनारायणजी दूगड़ ने उसके एक अंश का यह हिंदी अनुवाद किया है। नैणसी की संपूर्ण ख्यात को प्रसिद्धि में लाने का यश उक्त कविराजाजी को ही है। नैणसी की इस ख्यात के कुछ कुछ अंश भिन्न भिन्न लोगों के पास भी हैं, जिस से कोई कोई यह भी अनुमान करते हैं कि नैणसी की ख्यात एक नहीं किंतु कई एक हैं। परंतु यह अनुमान निर्मूल है; क्योंकि भिन्न भिन्न लोगों के पास जो कुछ है, वह बीकानेरवाली मूल प्रति का अंश मात्र है। मुंशी देवीप्रसादजी को भी इसका कुछ अंश मिला था, जिसका उन्होंने अपने लिये उर्दू में खुलासा किया था, जो उन्होंने मुझे भी दिखलाया था। उन्होंने इस पुस्तक के महत्व के विषय में एक छोटा सा लेख सन् १९१६ ई० के अगस्त की सरस्वती (पृष्ठ ८२–८५) में प्रकाशित कर यह लिखा था—"मूता नैणसी के घरवाले तो अब इस ग्रंथ को, जो कई लोगों के पास है, मूता नैणसी का बनाया हुआ ही नहीं बताते। वे कहते हैं कि मूता का बनाया हुआ असल ग्रंथ तो हमारे पास है। मगर जब कोई उनसे

---

* मुरधर (मरुधरा) = मारवाड़। तणो = का। रत = अनुराग, उत्कंठा। अमाँमी = बड़ा, बड़ी। विक्रमपुर-पत-हूँत = बीकानेर के स्वामी से। मो = मेरा। दाख = देखकर। जिण = जिस। जिकण = जो, जिनको। कढण = निकालने को, निश्चय करने को।

देखने को माँगता है, तब इधर उधर एक दूसरे के पास होना बताकर टाल जाते हैं।' इस कथन से यही पाया जाता है कि या तो उनके पास कोई प्रति है ही नहीं, और यदि है, तो बीकानेरवाली प्रति या मूल संग्रह से वह भिन्न नहीं हो सकती।

नैणसी का दूसरा ग्रंथ जोधपुर राज्य का सर्वसंग्रह (गजेटियर) है, जिसमें जोधपुर राज्य के उन परगनों का वृत्तान्त है, जो उस समय जोधपुर राज्य में थे। नैणसी ने पहले तो एक एक परगने का इतिहास लिख कर यह दिखलाया है कि परगने का वैसा नाम क्यों पड़ा, उसमें कौन कौन राजा हुए, उन्होंने क्या क्या काम किए और वह कब और कैसे जोधपुर राज्य के अधिकार में आया। इसके बाद उसने एक एक गाँव का थोड़ा थोड़ा हाल दिया है कि वह कैसा है? फ़सल एक ही होती है या दो, कौन कौन से अन्न किस फसल में होते हैं, खेती करनेवाले किस किस जाति के लोग हैं जागीरदार कौन हैं गाँव कितनी जमा का है, पाँच वर्षों में कितना कितना रुपया पटा है, तालाब, नाले और नालियाँ कितनी हैं, उनके इर्द गिर्द किस प्रकार के वृक्ष हैं आदि। इस तरह इस विभाग की पूर्ति हुई है। यह कोई चार पाँच सौ पत्रों का ग्रंथ है। इसमें जोधपुर के राजाओं का इतिहास, राव सियाजी से महाराज जसवन्तसिंह (प्रथम) तक का है। यह ग्रंथ अप्रकाशित होने पर भी जोधपुर राज्य के लिये कम महत्त्व का नहीं है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा।



सूचीपत्र

प्रकरण पहला

प्रकरण दूसरा

प्रकरण तीसरा

प्रकरण चौथा

प्रकरण पाँचवाँ

मुंहणोत नैणसी लिखित मारवाड़ी ख्यात का हिंदी भाषांतर ।

प्रकरण पहला ।

उदयपुर का गुहिलोत वंश ।

दीवाण (मेवाड़ के महाराणा) की धरती की विगत कोस और दिशा से—

वायव्य कोण में उत्तर से वांई तरफ मारवाड़, अजमेर से कोस ६० ब्यावर राणा की, समेल खापसा (वावरा ?) अजमेर का, मानपुर का घाटा, सारण, घाटावल, जहाजपुर से सीमा मिलती है। रामपुरे से कोस ४५ तथा ५० तक सीम—पूर्व से दाहिनी कोण गाव जारोड़ा रामपुरे का, देवलिये से सीमा कोस ४२, दक्षिण की वांई ओर दीवाण का गांव धीरावद (धरियावद), आगे देवलिया से कोस ५ बीच में छोटा गांव, भैसरोड़ दीवाण की, और बून्दी कोस ६५ तथा ७०, पूर्व से कुछ वांई ओर मन्दसोर की तरफ सीमा कोस २५ तथा २७, दक्षिण से वांई तरफ रूपरास, मीमच (नीमच) दीवाण की, लीखमंडी दसोर (मन्दसोर) की। डूंगरपुर से सीमा कोस १६ दक्षिण खरक की ओर सोमनदी सीमा कोस १६। सलूंबर सेवाड़ी आसपुर, ईडर से कोस ३० खरक (ईशान) कोण में पानरवा, भीलों के मेवास (छोटे गांव या पल्ली, पाल) राणा के, गांव छाली राणा की, दलोला ईडर की । डूंगरपुर वांसवाड़ा बीच जवास भीलों का मेवास है सो राणा के आधीन है। सिरोही से सीमा कोस २५ पश्चिम ओर, वांसवाड़ा उदयपुर से कोस ४०, बीच डूंगरपुर, कांकड़ (सीमा) नहीं। ईडर उदयपुर से ५० कोस, इस मार्ग में ६ कोस भूसी-गडिया, ३ कोस चन्दवासा, ४ आहोर, ७ भीम का ओड़ा, ७ पानोरा (पानरवा) भीलों का, ६ छाली पूतली राणा की, ३ दलोल कलोल ईडर की। ईडर (में ?) उदयपुर की हवेली के निकट के गावों का सीआलीः

साख (खरीफ) का हासिल तीसरे हिस्से तक और उन्हाली (रवी) में आधा, जिसके तीन विभाग होते हैं।

उदयपुर के आस पास पाच कोस तक गिरवा (गिरिवा) कहलाता है जिसमें ५२ गांव देवड़ों के देरावास (रहने के मूल स्थान या वतन) थे, जिनमें उदयपुर बसा और वे (गांव) टूट गये। उनके हल किसान अबतक भी उन गांवों में हैं। एकलिंगजी उदयपुर से उत्तर में कोस ५, देहरा मगरे (पहाड़ी) पर है। गांव देलवाड़ा झाला कल्याण का एकलिंगजी से एक कोस, देवी राठासण (राष्ट्रश्येना) का मंदिर पहाड़ पर दो कोस दूर है। एकलिंगजी का मंदिर दोनों तरफ पहाड़ों की नाल में है, मंदिर के चारों ओर छोटासा कोट है और (निज) मंदिर चौमुखा है, अर्थात् उसके चार दरवाज़े हैं। ऊपर दण्ड कलश सुवर्ण के हैं। आस पास और भी मंदिर हैं और उदयपुर की तरफ मंदिर के पास ही एक कुण्ड है। एकलिंगजी से एक कोस उदयपुर की तरफ नागदा (नागद्रह या नागहृद) गांव है जिसके नाम से सीसोदिये नागदहे कहलाते हैं[1]। गांव की पूर्व ओर वड़ा तालाव और अच्छे व टूटे फूटे कई एक मंदिर हैं। इसी गांव में सीसोदियों के पुरुषा रहे थे। तालाव उदयसागर उदयपुर से कोस ३ पूर्व दिशा में देवारी की घाटी के पास है। यह तालाव बहुत बड़ा और (पूरा) भरने पर क़रीब २०(?) कोस के फैलाव[2] में हो जाता है और पानी इसमें गोघूंदे और कुम्भलमेर के पहाड़ों से आता है, और तालाव में जल न्यूनाधिक सदा बना रहता है। इसके नाले से वेड़च नदी निकलती है। तालाव के चारों ओर पहाड़, और २०० तथा २०५ पावण्डों (क़रीब ६३० फुट) की पक्की पाल बन्धी हुई है। नाला मोरीरूप में बहता है। यहां राणा जगत्‌सिंह के बनाये हुए महल भी हैं।

घाटियों व रास्तों का वर्णन—देवारी की घाटी नगर से ३ कोस, केवड़ों की नाल शहर से कोस ७, (दक्षिण पूर्व) में। उदयपुर से ४ कोस डूंगरपुर बांसवाड़ा जाते गुजरात के मार्ग में पर्वतों की नाल कोस सात की है। केवड़ा गांव नाल के दूसरे ढाल पर है। नगर से चार कोस दक्षिण और चावण्ड के मगरों के मार्ग में जावर की नाल है जहां दीवाण के आपत्काल में रहने के बड़े २ पर्वत हैं।

(१) विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी के आरम्भ तक नागदा ही गुहिलोतों की प्राचीन राजधानी रहा था।

(२) उदयसागर की लंबाई २॥ मील और चौड़ाई २ मील है।

विपत्ति निवारण का दारमदार इन्हीं पर्वतो पर है। जावर में चांदी की खान है जिसकी प्रति दिन की आय ४००) तथा ५००) रु० की है और उसमें से जस्ता और चांदी निकलते हैं। पश्चिम दिशा में गोघूंदा उदयपुर से कोस ८ दाहिनासा, मार्ग घाटे में होकर जाता है। खमणोर का घाटा शहर से ३ कोस ईशान कोण में है। मारवाड़ की ओर जाने के घाटे—सायरे का घाटा कोस १४, उत्तर पश्चिम में आवड़ सावड़ के बड़े पहाड़ हैं। घाटे के ढाल पर राणपुर का मन्दिर श्री-आदिनाथ (ऋषभदेव) का साह (संघवी) धरणा का बनाया हुआ बड़ा प्रासाद है। पहले यहां ऊदा कुम्भावत का बसाया हुआ बड़ा नगर था जो अब तो ऊजड़ पड़ा है। राणपुर से कोस ३ आगे सादड़ी की बस्ती है। घाणेराव का घाटा उदयपुर से कोस १६ वायव्य कोण में कुम्भलमेरु के पास है। जीलवाड़े का घाटा नगर से २३ कोस है। मानपुरे का घाटा ४० कोस दूर है।

च्यार छप्पन—उदयपुर से कोस (३५ के क़रीब) छप्पनिये राठौड़ों का वतन है। ये राठौड़ सोनिंग के वंशधर बड़े भूमिये थे। राणा उदयसिंह ने इनके मेवासे तोड़ने आरम्भ किये और राणा प्रताप के समय में जाकर टूटे थे, परन्तु छूटे नहीं। छप्पनिये अबतक छप्पन के गांवों में हैं परन्तु मेवास कोई नहीं रहा। च्यारों छप्पन के गांव २२४ जिनमें झाड़ोल के ताल्लुक़ ५६, सलूम्बर के ताल्लुक़ ५६, सेमारी ताल्लुक़ ५६, और बावएड के ताल्लुक़ ५६ हैं।

उदयपुर से दूसरे बड़े नगरों का अन्तर—चित्तोड़ २६ कोस, सोजत ४० कोस, कुम्भलमेर २० कोस, अहमदाबाद ४० (८०) कोस, सिरोही ३५ कोस, ईडर ४५ कोस, डूंगरपुर ३० कोस, देवलिया ४० कोस, मंदसोर ५२ कोस, जोजावर ३५ कोस, नीमच ४० कोस, कपासण २० कोस, ताणा २० कोस, मोही १७ कोस, जोधपुर ६७ कोस, मेड़ता ६० कोस, जालौर ५० कोस, मालपुरा ६० कोस, अजमेर ६५ कोस, वदनोर ४५ कोस, बांसवाड़ा ३० कोस, उज्जैन ६० कोस, मांडलगढ़ ४५ कोस, बून्दी ४० कोस, करहेड़ा ३५ कोस, गोघूंदा १२ कोस, (१६ मील के क़रीब है) और ऊंटोलाव (ऊंटाला) ११ कोस।

चित्तोड़ से दूसरे नगरों का अन्तर—उदयपुर २६ कोस, बून्दी का गढ़ रणथम्भोर ४० कोस, पुर १३ कोस, वदनोर ३५ कोस, बांसवाडा ५० कोस, कोठारिया २४ कोस, मन्दसोर २७ कोस, फूलिया २५ कोस, उज्जैन ६० कोस, मांडलगढ़ १७ कोस, मेड़ता ६७ कोस, वेगम (बेगूं) १५ कोस, मांडल १७ कोस, ईडर-

गढ़ ७० कोस, देवलिया ३० कोस, नीमच १५ कोस, मालपुरा ४७ कोस, और सिरवाड़ा ४८ कोस।

मेवाड़ के पहाड़—रूपजी के निकट का पर्वत देश की सीमा पर है। रूपजी से तीन कोस पूर्व गेहूंड़ बाघेरे की खाम (मोड़) में है। जीलवाड़ा और रीछेड़ के बीच आमलमाल का बड़ा पर्वत ५ कोस लम्बा है। उसके इधर केलवा और बाघेरे के आगे घाटा नामक गांव है। उसके परे मोरड़ का मगरा उत्तर दक्षिण ५ कोस लम्बा है। मोरड़ और मछावला के मध्य समीचा गांव कुम्भावत सीसोदियों का निवास स्थान है। समीचा उदयपुर से १७ और रूपजी से १२ और कुम्भलमेर से १० कोस के अन्तर पर है। उसके आगे मछावला का मगरा सात कोस लम्बा है जिसके आस पास ६ गांव बसते हैं—समीचा, मदारड़ा, बरड़ाड़ा, बरगा, समण आदि। मछावले पर वृक्षावली और जल की बहुतायत है। उसके आगे बरवाड़ा जहां से बर और बनास नदियां निकलती हैं। आगे बासेर का पहाड़ एक कोस लम्बा और उसके परे पिण्डरम्पाप का पर्वत है। बासेर और पिण्डरकांप के बीच बासवाड़ा कोतारा (?) २ कोस और उससे आगे पूमण पहाड़ों के पास लोहसींग नाम का गांव है, जिसके समीप ही एक छोटी नदी का निकास है। पूमण की लम्बाई उत्तर दक्षिण ७ कोस और उसके आगे ईसवाल नामी मगरा और कड़ी नाम का गांव है। यह मगरा गिर्वे के पहाड़ों से जा लगा है और उदयपुर से ५ कोस पश्चिम उत्तर की ओर है। जीलवाड़े से कोस ५ और ढेसूरी से कोसेक घाणेरा (घाणराव) कुम्भलमेर की तलहटी में है। जिससे दो कोस के अन्तर पर कुम्भलमेर का पर्वत १५ कोस के घेरे में सादड़ी, राणपुर, मेवाड़ी तक चला गया है। सेवाड़ी गांव कुम्भलमेर से ७ कोस पर है, इसके आगे राहंग का मगरा बहुत ही विकट, वहां जल पुष्कल और २५ गांव उसके आसपास बसते हैं। इस पहाड़ की लम्बाई १८ कोस और विपत्तिकाल में राणा के ठहरने की अच्छी ठौड़ है। वह सिरोही की सरणुवा पहाड़ियों से जा लगा है। (चौड़ाई) उसकी कोस १५ और घेरा ३० कोस का है। निकट के गांवों में सीरवी, पटेल, कुनबी, ब्राह्मण और बनियों की बस्ती है। गांवों की विगत—भाटोंदी, मूणोद, माल्हण, सुनाहणी, बहड़ी, पाडोड़, पिण्डवाड़ा सिरोही का, बेकरिये का घाटा जहां जुदी नदी है। राहंग में बालीचों का वतन है। जरगा और राहंग के बीच के स्थल को देसहरो (?) देश कहते और वहां खरबड़,

चन्देल, बोडाणा, चंदाणा राजपूत सासणीक के तौर वसते हैं परन्तु भोग दूसरी प्रजा की भांति देते हैं। इस भूमि में आम के झाड़ है और चांवल, गेहूं, चणा, उड़द बहुतायत के साथ पैदा होते हैं। मछावला और जरगा के बीच की भूमि कुहाड़िया नला कहलाती है जो दस कोस की लम्बाई में उदयपुर से बीस कोस के अन्तर पर है। जरगा का पहाड़ कुहाड़िये नले से दाहिनी ओर है और उसकी दूसरी तरफ केलवाड़ा और दक्षिण में रोहेड़ा गांव है। ऊपर सापरा, आंतरी, गुढ़ा, कांकरवा, किसोर, गूंदाली आदि गांव वसते हैं। जरगा पर्वत पर राजा हरिश्चन्द्र की स्थापन की हुई गुसांईपादुका और त्रिशूल हैं। इस पर्वत पर जल बहुतायत के साथ है। रोहेड़े से आगे ७ कोस उसीसे सम्बन्ध रखनेवाली नाहेसर (नाहर) और भांडेर की अति विषम और विकट भूमि है। वहां गांव बहुत, मेवाड़ और सिरोही राज्यों की सीमा और उदयपुर से सिरोही जाने का मार्ग है। गांव ढोल, कलोल, सिंघाड़, वोखड़ा और गोघूंदा हैं। इस पहाड़ से इधर भांडेर से कोस ४ उदयपुर की ओर दक्षिण दिशा में बहुत से गांव हैं। ठगरावड़ी, झल, आहोर, नाहेसर, पानड़वा, भांडेर, पई मथाड़ा और देवहर के पहाड़ भी बहुत बड़े हैं। इनके आगे माचण के पहाड़, १५ कोस, में भीलों की वस्ती है। आगे ईडर की ओर गंगादास की सादड़ी के पहाड़ों में भी भील वसते और परे छाली पूतली और ढोल कलोल के पहाड़ ईडर से सात कोस इधर हैं। डूंगरपुर और देवगदाधर के बीच जवास के मगरों में भी भील ही रहते हैं। ईडर डूंगरपुर से दस कोस है। छप्पन, चावण्ड और जवास व जावर के बीच उदयपुर से १७ कोस पीपलदड़ी और सीरोड़ के पहाड़ हैं, जहां चांवल और गेहूं पैदा होते और झाड़ पहाड़ की इतनी अधिकता है कि उनकी आड़ से रविबिम्ब के भी दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं। बारा बारड़ा के शैलों में भी भील निवास करते और वहां भी साल, गेहूं की पैदायश और आम्रवृक्ष व नानाप्रकार के जंगली पुष्पों की बहुतायत है। इनके आगे पर्वतीय भूमि है। डूंगरपुर से बांई ओर बांसवाडा है। बांसवाड़े और देवलिये के मध्य मेवाड़ के गांव छप्पन और राजा का जगनेर है। यह देश मण्डल कहलाता है। गांव धर्यावद बड़वाल परगने का जहां बड़े पहाड़ और सघन वृक्ष हैं। वस्ती वहां छपनिये राठौड़ और चहुवाणों की है। धर्यावद के पश्चिम मेवल के मगरे और ये गांव हैं—सलूम्बर चूंडावतों का वतन, आह-

रड़ो (वाठरड़ा) सलूम्बर से १२ कोस, वंभोरा सारंगदेवोतों का वतन। वाठरड़े और सलूम्बर के बीच में बड़े बड़े पहाड़ हैं। वाठरड़े से ३ कोस पश्चिम में उदयसागर का ताल और इस ताल से एक कोस देवारी, देवारी से २ कोस आहड़ और आहड़ से एक कोस उदयपुर है। (राणा) के महल पीछोला (झील) के तट पर बने हैं। उदयपुर से ५ कोस सिगड़िया नाम का बड़ा पहाड़ पश्चिम की ओर है। आगे उदयपुर से तीन कोस धार की पहाड़ी और लाखाढोली (लखावली) उत्तर में है। उसी दिशा में चीरवे का घाटा और आवेरी गाव है। चीरवे से दो और उदयपुर से पाच कोस पर एकलिङ्गजी और वहा से एक कोस राठासण की पहाड़ी दो कोस के घेरे में है, जहा जल नहीं है। एकलिङ्गजी से एक कोस झालों का देलवाड़ा और देलवाड़े से सात और उदयपुर से १२ कोस चहुवाणों का कोठारिया है। देलवाड़े और कोठारिये के बीच हल की पहाड़िया कोठारिये के पूर्व में हैं। देलवाड़ा मेवाड़ के मध्य में है। कोठारिये से २५ कोस चित्तोड़ पूर्व दिशा में, और चित्तोड़ से एक कोस पर अरवण के बड़े पहाड़ है परंतु उन पर जल नहीं। अरवण के पहाड़ से दो कोस पथार की पर्वत श्रेणी हैं, वहां पर जो गांव वसते हैं उनकी विगत—पथार के गांव ४४, खैरव (खैराड़) के गाव ८४, जिनमें प्रजा गूजर और ब्राह्मण हैं। रत्नपुर की चौरासी चूंडावतों की ठौड़ है जिसमें ६४ गाव का वेगूं का बड़ा इलाका है। वहां बड़ी पनवाड़ी और गेहूं व चने पैदा होते हैं। वेगूं से सात कोस पंवार इन्द्रभाण का ठिकाना बींझोली (विन्ध्यावली) है। महानाल (मैनाल) तीर्थ मांडलगढ़ से ७ कोस है। बींझोली के गाव २४ ऊपरमाल के हैं (पहाड़ के ऊपर की समतल उर्वरा भूमिको ऊपरमाल कहते हैं) । बींझोली से नौ कोस भैंसरोडगढ़ में बड़े बड़े पहाड़ हैं। भैंसरोड़गढ़ से ६ कोस कोटा पलाइता हाडों का, और एक कोस पर बूंदी (की सीमा) है। चार कोस पर ऋषि वीसलपुर का मेवास है जहा भील वसते हैं। भैंसरोड़ पाचालदेश में २५ गाव लगते और बारा गाव हवेली के हैं। उसके आगे ४५ गाव कुण्डाल के महल माकडा पर्गने के नाम से प्रसिद्ध हैं। उदयपुर से ५० और भैंसरोड़ से २० कोस दक्षिण रामपुरे का पर्गना है। रामपुरे की तरफ १२ कोस तक भैंसरोड़ की सीमा और भैंसरोड के नीचे चम्बल नदी वहती है। वहां कोट एक पक्का और दूसरी खाई गढ़ीरूप बनगई है। कोट के भीतर ४०० घरों की वस्ती है। कोट के चारों ओर चम्बल ब्राह्मणी, और पगधोई नामकी तीन नदियां फिर गई हैं।

मेवल मेरों की, वम्भोरे के सारंगदेवोत सीसोदियों की जागीर में है। इन का एक गांव उदयपुर से ६ कोस उदयसागर के नाले के पास भी है। देवलिये से ३ कोस पर वड़ा मेरवाड़ा था, बुरड वरगट, बुजमाल, डमर शाखा के मेर यहां १४० गांवों में निवास करते थे। उनको एक वार राणा जगतसिंह ने निकाल दिया था, फिर झाला कल्याण ने राणा से प्रार्थना कर उनको पीछे बसाये। अभी राणा राजसिंह ने सब मेरों को निकाल कर उनके सब गांवों में सीसोदिये, चूंडावत, शक्तावत, राणावत राजापूतों को वसी समेत बसा दिये हैं और मेर देवलिये के मेरवाड़े में जा रहे हैं। वहां वे लोग बहुत उजाड़ विगाड़ करते हैं। देवलिये और मेवल के बीच की भूमि को मण्डल का देश कहते हैं जिसमें मुख्य स्थान धर्यावद है, जहां भी मेर ही बसते थे जो प्रजा या मेवासी की रीति पर चलते थें। यहां मेरों के गांव १४० थे उनको राणा राजसिंह ने निकाल कर सारंगदेवोत राजपूतों को उन गांवों में बसाया, परंतु यहां का पानी रोगजनक होने से वस्ती बढ़ी नहीं[1]।

नवसौ नाहेसर के स्वामी भील, राणा के पक्के स्वामीभक्त सेवक हैं। उनके पुरुषा रावत कहलाते थे। अभी ये गांव रावत नरसिंहदास के आधीन हैं। पहाड का नाम नाहेसर और पर्गना जूड़ा कहलाता है जो उदयपुर से २५ कोस

---

(१)-प्रसगागत यहां मेरों का प्राचीन हाल संक्षेपरीति से लिखा जाता है। ये लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से आई हुई शक जाति की चत्रप शाखा में है जिनका सन् ईसवी की दूसरी शताब्दी में या उससे कुछ पूर्व इधर आना पाया जाता है। मेद, मेव, मेर, मैत्रक, मेहरा या मेहर पर्यायवाची शब्द हैं। इण्डियन् ऐंटीक्वेरी जिल्द ७ पृष्ठ ३२४ में कुडा की गुफा के लेख पर प्रोफेसर जेकोबी की माण्डव नाम पर दीहुई टिप्पणी पर प्रोफेसर व्हुलर लिखता है कि बृहत्संहिता में मेद वा मेरों के साथ माण्डव्य नाम की भी एक जाति मध्यभारत में बतलाई है। इन्हीं मेवों को फारसी मुवर्रखों ने मण्ड नाम से लिखा है। संस्कृत कोषों में उनको म्लेच्छ और ऐरावत कुलके नागवंशी कहे हैं। ये लोग सूर्य के उपासक थे और पहले सिन्धुनद के तटपर आकर बसे और फिर धीरे २ गुजरात, काठियावाड़ और राजपूताने के प्रदेशों में फैल गये। मेवाड या मेदपाट, मेवात, मेवल, मण्डोवर आदि नामों से स्पष्ट है कि मेर या मेव जाति के यहां बसने से उनके नामपर ये प्रदेश प्रसिद्ध हुए। मेर लोग अपने को हिन्दू मानते और राजपूत कहते हैं ऐसे ही राजपूत भी इस कथन को स्वीकारते हैं कि मेर पहले राजपूत ही थे, परन्तु उनमें भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रहने और नाता आदि की प्रथा

बनास नदी का निकास और वे स्थान जहां होकर वह बहती है—बनास उदयपुर से २६ कोस जरगा के पहाड़ से निकलकर राजा हरिश्चन्द्र के बसाये हुए रोहेड़े गांव को आती, और वहां से दो कोस मेवाड़ के गांव बरवाड़े आकर आगे कठाड़, मदारड़े और गांव माछ में होती हुई घसार के पहाड़ के बीच निकलकर कामसकराही गांव को आती है। वहां से फिर उदयपुर से १२ कोस खमणोर गांव के नीचे बहती कोठारिये के पास आ निकलती है और वहां से आगे तंवरों के गांव मोही होकर कुरज मीरमी पहवे को जाती है। वहां से आगे गांव वाकरलापुरा है जहां से ६ कोस बहकर पुर के पास आती, फिर मांडलगढ़ के आकोले होकर नंदराय के बीच में से बहती हुई चौछली को आती है जहां चोलेरे के पार्श्वनाथ का मन्दिर है। फिर जहाज़पुर के गांव पाडलोली के निकट बहती हुई जहाज़पुर पहुंच कर सांवल के गांव देवली में होती टोडे की टावर में जा निकलती है। वहां बदनोरवाली खारी नदी का बनास से सङ्गम होता है। फिर टोडे से ४ कोस गोकर्ण नाम तीर्थ में आती जहां रावण और मधुकैटभ ने तपस्या की थी। गोकर्ण से आगे टोडे के गांव बीमलपुर टावर को सींचती है। यहां सीसोदिया रायसिंह के बनवाये हुए महल हैं[1]। आगे बणहड़े होकर टंक (टॉंक) और मलारणा के गाव झोंपड़ाखेड़े, सोहड़, भगवन्तगढ़, संले, भाजे, मलारणा दे बीछूंदे, और हाडोती के गांव ढुयरे में बहती हुई खण्डारगढ़ के पास चम्बल में जा मिलती है। वहां बरवासण देवी का मन्दिर है।

---

(१)—राजा रायसिंह राणा अमरसिंह प्रथम के एक पुत्र भीमसिंह का बेटा था। भीमसिंह बादशाही चाकरी में जा रहा और बादशाह जहांगीर ने उसको टोडे का पर्गना जागीर में देकर राजगी का खिताब दिया था। बनास नदी के तटपर एक नगर बसाकर राजमहल की इमारत राजा भीम ने बनवाई थी। रायसिंह को भी शाहजहां ने राजगी की पदवी और पाच हजारी मनसब तक पहुचा दिया था। स० १६७२ ई० में राजा रायसिंह मरा, उसके पुत्र मानसिंह, महासिंह और अनोपसिंह बादशाह औरंगजेब की सेवा मे थे।

सीसोदियों की ख्यात ।

सीसोदिये पहले गुहिलोत कहलाते थे । एक वार्ता ऐसी सुनी है कि इनका राज्य पहले दक्षिण में नासिक त्र्यम्बक में था। इनका एक पूर्वज सूर्य्य की उपासना करता था, और स्तुति करने पर दिवाकर देव प्रत्यक्ष होकर दर्शन देते थे। इस से कोई उस राजा को युद्ध में नहीं जीत सकता था। वह बहुत सी पृथ्वी का स्वामी महाराजा हो गया, परन्तु उसके कोई पुत्र नहीं था। तदर्थ सूर्य से प्रार्थना की तो भगवान मार्तण्ड ने कहा कि मेवाड़ और ईडर की सीमा पर अम्बा देवी है उसकी जात बोल और मानता कर तो आशा पूर्ण होगी। तदनुसार राजा ने जात (यात्रा) बोली। राणी के गर्भ रहा तब राजा राणी दोनों अम्बा देवी की यात्रा को चले। चलते समय राणी सूर्य के आवाहान का मंत्र वहीं भूल आई, उसको आसियों (भाई बेटों) ने निकाल लिया, उनका दांव लगा, सूर्य की उपासना मिटी और सब आसियों ने मिल कर राजा पर चढ़ाई की। राजा लड़कर मारा गया और गढ़ पीछे आसियों के हाथ आया। राणी अम्बा देवी की जात समाप्त कर नागदा गाव में एक ब्राह्मण के घर आ ठहरी। जहां राजा की मृत्यु के समाचार और उसकी पाघ राणी के पास पहुंची, तब वह सत करने को तैयार हुई। चिता चुनकर उसमें बैठना चाहती थी कि गांव के ब्राह्मणों ने उसे समझाया कि गर्भवती स्त्री को सती होना उचित नहीं है, तुम्हारा प्रसवकाल निकट है। पंद्रह बीस दिन पीछे राणी के पुत्र हुआ और पंद्रह दिवस तक माता ने उसका पालन किया, तदुपरांत न्हा धोकर पुत्र को गोद में लिये आग में जलने को चली। जहां जलने को जाती थी वहां कोटेश्वर महादेव का मंदिर था और विजयादित्य नामी एक विप्र पुत्रकामना से शंकर की सेवा करता था। राणी ने उसको अपने पास बुलाया और वस्त्र में लपेट कर अपना पुत्र उसको सौंप दिया। ब्राह्मण ने जाना कि कुछ माल है सो लेलिया। इतने में बालक रोया तब वो ब्राह्मण चौंककर बोला कि मैं इस राज पुत्र को लेकर क्या करुं, कल यह बड़ा होकर आखेट करेगा, जीव मारेगा, संसार से वैर बढ़ावेगा, तो मेरा धर्म कर्म जावेगा, अतएव यह दान मुझ से नहीं लिया जाता। राणी बोली कि जो तू कहता है वह सत्य है, परन्तु जो मैं सच्चे मन से सती होती हूं तो मेरा यह वचन है कि इस बालक के वंशज राजा

होकर भी दस पीढी तक तेरे कुलाचार का पालन करेंगे और तुम्हें बहुत सुख देंगे। ब्राह्मण ने बालक को लेलिया और उसके साथ बहुतसा नक़द व आभूषण भी राणी ने ब्राह्मण को दिया। राणी तो सती हो गई व विजयादित्य पुत्रवत् उस बालक का लालन पालन करने लगा। राणी के वचनानुसार उस बालक के वंशज दस पीढी तक ब्रह्मकर्म करते रहे और नागदहे (नागदा) ब्राह्मण कहलाये।

पीढियों का क्रम—विजयादित्य, सोमादित्य, सूर्य्यवन्शी, गुहिलोत, शीलादित्य, ग्रहादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य, देवादित्य, आशादित्य, भोजादित्य,गुहदत्त और बापा। रावल बापा गुहदत्त का जिसने हारीत की सेवा की और प्रसन्न होकर ऋषीश्वर ने उसको मेवाड़ का राज्य दिया। जब हारीत विमान में बैठ चलने लगा (मरते समय) तब उसने बापा को बुलाया, वह कुछेक देर से पहुँचा जब कि विमान थोड़ा ऊपर उठ चुका था। ऋषि ने बापा की बांह पकड़ी, उसका शरीर दस हाथ ऊँचा होगया, तब अपना तम्बोल ऋषि बापा के मुख में उसका शरीर अमर करने को डालते थे, परन्तु थूक उसके मुहमें न गिरकर पांवों पर पड़ा। ऋषि बोले कि यदि यह पीक मुख में जाता तो तू अमर हो जाता, परंतु फिर भी मेवाड़ का राज्य तेरे वंश के पांवों तले सदा बना रहेगा, और यह भी कहा कि अमुक स्थान में १५ क्रोड़ सोनय्ये (सुवर्ण मोहर) गड़े हैं, उन्हें निकाल कर अपना सामान सजाना, और मोरी राजा को जीत कर चितोड़गढ़ ले लेना। ऋषि की आज्ञानुसार बापा ने वह धन निकाल लिया और उससे सेना इकट्ठी कर चितोड़ पर अधिकार किया।

रावल बापा ने हारीत ऋषि की सेवा की और मेवाड़ का राज्य लिया; उसकी साक्षी के कवित्त।

आदमूल उतपत्ति, ब्रह्म पिण रघी जांणा,
आणन्दपुर सिणगार, नयर आहोर बखांणां।
दल समूह रा राण, मिले मंडलीक महाभण,
मिले सब्ब भूपत्ति, गरुअ गहलोत नरेसर।
एकल मल धूज्यूं अचल, कहे राज बापै कियो;
एकलिंगदेव आहुठमा, राजापद इणपर दियो॥
छपनकोट सोब्रणा, रिष्य हारीत समप्पै,

स धरी मृग मारो, गय गया उधारै ।
चण्डीगि ने अकूत, जिण पल अग्यो कीन्हो,
भया हाथ उस देह, मन्त्र रजमद दीन्हो ।
आरध अंग ना नहीं, आठ दस यो वर दियो,
गुहदत्त नगर भंगर भगी, मेदपाट ता पर लियो ॥
हर हारीत पसाय, मान गीमा घर नगरी,
मगलचार आनंद, चैन सिद पचम बरनी ।
चित्रकोट केलाम, आप बल परगह कीधो,
मोरी हत मांग्य, राज गाद गुर लीधो ।
बागर ना बहल नरन, कमडल पयडल यूं यदे,
नित पूजे मोटो उलटे, नृजाई बापा नमे ॥
खडग थार पकार निज सेना हुर मंडे,
कर आहार आला चार, नाम मांजन मन रंजै ।
पटोल पनिस्त हाथ, पहरा पहरीजे,
मोलह हाथ पिछोड़, तेग तन नहीं ढकीजे ।
पग तोडर तोल पचास मण, खडग बतीसा मण तणो,
बापा तन समुद्र चले, तिण भय कांपै गज्जणो ॥
जालन्धर कसमीर, सिन्ध सोरठ खुरसाणी,
ओटीसा कनवज्ज, नगर ठट्ठा मुलतानी ।
कोकण ने केदार, दीप सिंघल मालोरी,
द्राविड़ नाथड़ देस, आण निलगारी फेरी ।
उतर दिखण पूरब पछम, कोई पाण न दख्खवै,
समत एक इन्यारवें, बापा समो न चख्खवै ॥
राव बुहारै बार, राव घर पाणी आणै,
राव करै माजणो, राव मोजड़िया ताणै ।
राव पानगृह रहै, राव पोहरै नित जागै,
राव तुरंग गहि पुलै, राव लुळ पांवे लागै ।
गजचढ़ रथचढ़ तुरिय चढ़, रावन को माहन्त रिण
चितवै चरण चक्कवतणा, सह राव बापा सरिस ॥

सीसोदिये कहलाने का कारण:—सीसोदा गांव (उदयपुर से कोस १५ उत्तर में सीधे मार्ग से, और राजनगर से ८ मील पश्चिम में है) में बहुत दिनों तक रहे इसलिए गांव के नाम से सीसोदिये कहलाये। नागदा में बहुत रहने से नागदहे भी कहे जाते हैं। एक बात ऐसी भी सुनी है कि पहले ये (सीसोदिये) ब्राह्मण थे। राजा परीक्षित के वैर में जनमेजयने (सर्प यज्ञ रच) नागों को होमा, वह यज्ञ इन्होंने किया (अर्थात् उसमें ऋत्विज थे)। नागदा गांव एकलिंगजी से एक कोस है। सीसोदियों का विरुद 'आहुठमानरेश'[1] कहा जाता है जिसका रहस्य बारहट महेशदास ने संवत् १७०६ (वि०) में इसप्रकार कहा—"एकतो आहुठ हाथ, अर्थात् सब मनुष्यों के स्वामी, और एक आहुठ कोड़ पृथिवी उस सब के स्वामी"। कई दिन केलपुरे में रहने से केलपुरे, और आहाड़ में बसने से आहाड़ा भी कहलाते हैं।

बात राणा चित्तोड़ के स्वामियों की—एक तो ऊपर लिखी है और दूसरी पुष्करणे ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त के भाई जोशी मनोहरदास ने इस तरह लिखवाई। इनका (सीसोदियों का) विडैपान गोत्र है। विडैपान ब्रह्मा का पुत्र था, सीसोदिये उसके वंश के हैं। बहुत दिनों तक ब्राह्मण रह कर वे बड़े ऋषीश्वर हुए, बड़ी तपस्या की, और इतनी पीढ़ियों तक तो शर्म्मा कहलाये—ब्रह्मा, विडैपान, देवशर्मा अतिशर्मा, विजयशर्मा, क्षेमशर्मा, ऋषिशर्मा, जगशर्मा, नरशर्मा, गजशर्मा, वायुशर्मा, दत्तशर्मा, जयशर्मा, वास्तुशर्मा, केशवशर्मा, जामशर्मा, वीरशर्मा, विजयशर्मा, लेगशर्मा, राजशर्मा, विराजशर्मा, हरखशर्मा, पीथशर्मा, वेदशर्मा, हृदयशर्मा, कलशशर्मा, जनशर्मा, ललाटशर्मा, वास्तुशर्मा, नरशर्मा, हरशर्मा, धर्मशर्मा, मुकुनशर्मा, सुभेष्यशर्मा, सुबुद्धिशर्मा, विश्वशर्मा, परदेवशर्मा कामपतिशर्मा, नरनाथशर्मा, पीनशर्मा, हेमवर्णशर्मा, जनकारशर्मा, राजशर्मा, शालयदेवशर्मा, गल्वशर्मा, गालसुव्यशर्मा, पालयदेवशर्मा, हरजनकारशर्मा, धर्मादशर्मा, गोविन्दशर्मा, गोवर्द्धनशर्मा, गोन्दसीशर्मा, वाक्यशर्मा, विराटशर्मा,

(१)—आहुठमा का अर्थ स्पष्ट नहीं, शायद लेखक दोष से शब्द अशुद्ध लिखा गया हो परन्तु यहां प्रसंग नाम पड़ने का कारण बतलाने का है अतः आश्चर्य नहीं कि उनका विरुद 'आहुठमा नरेश' नहीं किन्तु या तो आहोर नरेश हो, क्योंकि नैणसी ने उदयपुर से ११ कोस कांठों की सादड़ी के पास आहोर को राणा की प्राचीन राजधानी बतलाई है, या 'आहाड़ नरेश' से अभिप्राय हो।

धेनशर्मा, नित्यानन्दशर्मा और धनशर्मा। पीछे इतनी पीढ़ियों तक राणा के पूर्वज दित्य ब्राह्मण कहलाये-गोवर्धनादित्य, अजादित्य, ब्रह्मादित्य, माधवादित्य, जलादित्य, निजलादित्य, कमलादित्य, गौतमादित्य, भोगादित्य, आलमादित्य, पद्मादित्य देवादित्य, कृष्णादित्य, यमादित्य, हेमादित्य, नलादित्य, मेघादित्य, येगादित्य, रामादित्य, कामादित्य, हंसमादित्य, देवराजादित्य, विक्रमादित्य, जनकादित्य, नेमनादित्य, रामादित्य, केशवादित्य, करणादित्य, यमादित्य, महेन्द्रादित्य, गंजमादित्य, नगावर्गादित्य, गोविन्दादित्य, गंगादित्य, गोवर्धनादित्य, मेरादित्य, माधवादित्य, मदनादित्य, धनादित्य वेगादित्य वीकादित्य, नारायणादित्य, हेमादित्य, नेरादित्य, विजयादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य ब्रह्मादित्य, देवादित्य, अत्यादित्य, और भोगादित्य। राजा परीक्षित को (तक्षक) सर्प ने डसा उसके वैर में परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने नागों से द्वेष कर सारे ब्राह्मणों को इकट्ठे किये और कहा कि मेरे पिता का वैर लेने के वास्ते मैं सर्पों को होमना चाहता हूँ। किसी ऋषि या ब्राह्मण ने राजा की बात को नहीं स्वीकारा तब राणा के पूर्वज ने इस काम को करना मंजूर किया, और उदयपुर से ८ कोस, मेवाड़ में नागदा गाव में नागों का होम किया, सो वे होम कुण्ड अब तक वहां हैं। नागों का होम होने से गाव का नाम नागद्रह पड़ा[1]।

बात--श्रीएकलिंगजी के पास राठासण देवी है वहां हारीत ऋषि ने १२ वर्ष तक बड़ी तपस्या की थी। वहां बापा रावल एक ब्राह्मण का पुत्र बछड़े चराया करता था। उसने बारह वर्ष तक हारीत की बहुत सेवा की। जब ऋषीश्वर की तपस्या पूर्ण हुई तब उसने वहां से चलने की ठानी, परन्तु साथ ही बापा को भी कुछ देने का विचार किया। उस समय हारीत ने देवी पर कोप

(१)—यह वंशावली बिल्कुल कृत्रिम है, इसमें ब्रह्मा के पुत्र से लगा कर भोगादित्य तक ११० नाम दिये हैं, इनकी कल्पना करनेवाले ने गरसवरास बनाते समय इतना भी विचार न किया कि आर्यों की कालगणना के अनुसार यह नामावली ब्रह्मा से कैसे जा मिलाता हूं। हमारे शास्त्रों में एक महायुग में कृत, त्रेता, द्वापर और कलि च्यार युग माने हैं, जिनमें ४३२०००० वर्ष होते हैं। ऐसे ७१ महायुग का एक मन्वतर और १४ मन्वतर अर्थात ४३२००००००० वर्षों का ब्रह्मा का दिन होता, और उतने ही वर्षों की रात। अब हम उपरोक्त वंशावली के प्रत्येक राजा की आयु कितनी मानें? और जनमेजय के सर्पयज्ञ की महाभारत में दी हुई कथा के नाम ठाम आदि से इस कथा का मिलान करें तो स्पष्ट हो जायगा कि यह निरी कपोल कल्पना ही है।

कर उसे कहा कि मैंने बारह वर्ष तक तेरे निकट तप किया तूने कभी मेरी खबर तक नहीं ली। देवी ने प्रत्यक्ष होकर पूछा कि मुझे क्या आज्ञा देते हो। ऋषी बोला कि इस लड़के (बापा) ने मेरी बहुत सेवा की है सो इसको यहां का राज देना चाहिये। देवी ने कहा कि राज तो महादेवजी की सेवा के बिना नहीं मिल सकता सो तुम उनको प्रसन्न करो। तब हारीत ने शंकर का ध्यान धर उग्र स्तुति की जिससे पर्वत व पृथ्वी को फाड़कर श्रीएकलिंगजी का ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ। हारीत ने फिर स्तुति की, सदाशिव प्रसन्न हुए, और कहा क्या मांगता है? ऋषि ने बापा रावल के लिये विनती की कि इसको मेवाड़ का राज्य दीजिये। तब महादेव व देवी राठासण ने प्रसन्न होकर कहा कि 'एवमस्तु'! यही कारण है कि अब राणा को आशीर्वाद देते समय ऐसा कहते हैं कि "हर हारीत प्रसन्न"।

महादेव को प्रसन्न करके हारीत आश्रम पर आया, इतने में बापा भी आन उपस्थित हुआ। ऋषि ने उस से कहा कि तूने मेरी बहुत सेवा की है इसलिये मैंने महादेव व देवी को प्रसन्न कर तुझे मेवाड़ का राज्य दिलाया है। यहां एकलिंग प्रकट हुए हैं, और देवी राठासण का स्थान भी है। उन दोनों की तू सदा सेवा करता रहना, तेरा राज अविचल रहेगा, अब एक घड़ी रात पिछली रहे तू फिर मेरे पास आना तुझे कुछ कहना है सो उस समय कहूंगा। बापा घर जाकर सो रहा, उसके उठने में कुछ देरी हो गई, उठते ही दौड़ता हुआ ऋषि के पास पहुंचा, उस वक्त हारीत विमान में बैठ चुका था। विमान थोड़ा ऊपर उठा तो हारीत ने बापा की बांह पकड़ी जिससे उसकी देह दस हाथ बढ़ गई। ऋषि ने अपने मुख का तम्बोल बापा के मुख में डालना चाहा, परन्तु वह उसके पावों पर गिरा। हारीत बोला कि यदि यह मुख में गिरता तो तेरा शरीर अमर हो जाता, परन्तु अब भी मेवाड़ का राज्य तेरे पगों से कभी न जावेगा, और अमुक ठौड़ ५६ कोटि सुवर्ण मुद्रा है सो तू लेकर अपना सामान दुरुस्त कर चित्तोड़गढ़ पर जाना। वहां मोरी राजा राज्य करता है उसको मार कर राज्य अपने अधिकार में लाना। कहते हैं कि सम्वत ५० में बापा को वरदान हुआ था। बापाने मौर्य्यों को मार कर चित्तोड़गढ़ लिया और इतनी पीढ़ियों तक ये रावल कहलाये १ भोजादित्य, २ बापा रावल, ३ गुमांण रावल, ४ गोयन्द रावल, ५ सिंह रावल, ६ आलू रावल, ७ सीहड़ रावल, ८ शक्तिकुमार रावल, ९ शालिवाहन रावल, १० नरवाहन रावल, ११ अम्बप्रसाद रावल, ११ किंचप्रसाद रावल, १३ नरसिम्ह

रावल, १४ नरहर रावल, १५ उदितराज रावल, १६ कर्णादित्य रावल, १७ भादूरावल, १८ गात्र रावल, १९ हंस रावल, २० योगराज रावल, २१ वड़सिंह-रावल २२ वीरसिंह रावल, २३ समरसिंह रावल, २४ रत्नसिंह रावल पद्मिनीवाला, २५ श्री पुञ्ज रावल, २६ कर्ण रावल। यहां तक चित्तोड के स्वामी रावल कहलाये [1]।

---

(१)—नैणसी ने बापा रावल से लेकर रावल रत्नसिंह तक मेदपाट के महाराजाओं की केवल वंशावली देने के अतिरिक्त और कुछ भी वर्णन उनका नहीं किया और न उनका समय ही दिया है। देता भी कहां से क्योंकि बड़वे भाटों की ख्यातें और दन्तकथाएं पुरातत्व पर बहुत ही धुंधला प्रकाश डालतीं, और जो कुछ कहा भी तो विशेषत अशुद्ध और कपोलकल्पित होता है। उदाहरण में राज प्रशस्ति आदि में दी हुई प्राचीन वंशावलियों को देख लीजिए कि उस समय के इतिहासवेत्ताओं को प्राचीन वृत्त कहां तक ज्ञात थे। हां महाराणा कुम्भाजी के शिलालेखों में वंशावली आदि वृत्त कुछ शोध के साथ लिखे गये हैं। कहते हैं कि शाहंशाह अकबर को इतिहास विद्या के साथ पूरा प्रेम था, और उसकी आज्ञानुसार उसके प्रधान मन्त्री अबुलफज़ल ने राजपूत वंशों का हाल लिखना आरम्भ कर प्रत्येक राजवंशी राजा को अपने वंश परम्परा का इतिहास उपस्थित करने को कहा। राजा महाराजा तो उसको बिल्कुल् भूले हुए थे, उन्होंने अपने अपने बड़वे व चारण भाटों को ताकीद की कि हमारी ख्यातें उत्पत्ति से आज तक की लिखवाओ, परन्तु जब वे स्वयं ही अज्ञात थे तो बतलाते क्या। उस वक़्त कुछ तो वंश परम्परागत दन्तकथाओं, जनश्रुतियों, और क़िस्से कहानियों के आधार पर और विशेषत कल्पित बातें लिखकर दे दी गईं। आईन अकबरी में दी हुई वंशावलियां भी रद्दी सी ही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में कई विद्वानों के प्रशंसनीय उद्योग और परिश्रम से प्राचीन शिलालेख, दानपत्र, सिक्कों आदि की खोज होने लगी, प्राचीन लिपियां पढ़ी गईं, तब भारत का प्राचीन इतिहास कुछ अंधकार में से निकल कर प्रकाश में आया, जिससे स्पष्ट है कि बड़वे भाटों की दी हुई वंशावलियां और कथाकलाप विश्वास योग्य नहीं हैं।

हम निश्चित रूप से नहीं कहसके कि बापा के विषय में दीहुई ये कहानियां कहां तक सत्य हैं, और गुहिलवंश का मूल पुरुष गुहदत्त, जिसके नामपर वंश विख्यात हुआ वास्तव में कहां का निवासी था और किस समय में हुआ। परन्तु आगरे के पास गुहिल नामांकित दो सहस्र सिक्के मिलने और उसके वंशज बापा का सुवर्ण का सिक्का उपलब्ध होने व कतिपय प्राचीन शिलालेखों और वंश परम्परागत ख्यातों के आधार पर यह अनुमान किया जासक्ता है कि नागदा में राजधानी स्थापन करने के पूर्व भी गुहिलवंशी प्रतापी और समृद्धिशाली नरेशों की गिनती में हों और देश के एक बड़े विभाग पर शासन करते हों। इस विषय में मैंने अपना मत अपने बनाये हुए 'राजस्थान रत्नाकर' के तरंग दो में गुहिल वंश के इतिहास में कुछ विस्तार के साथ लिखा है, तथा नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १,

कवित्त रावल खुमांण (बापाके पुत्र) का ।

चिने लख्ख पायक्क, लख्खमत्ता तोखारह,
सहस एक छत्र पत्त, ढ़ गय मा दरबारह ।

अंक ३ में रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने बापा रावल के सोने के सिक्के पर जो निबन्ध लिखा है उसके पढ़ने से पाठकों को बहुत कुछ सही हाल जान पड़ेगा ।

रावल शब्द राजकुल का प्राकृत रूप है और गुहिल वंशी नरेशों के नाम के साथ यह उपाधि ग्यारवीं शताब्दी के पीछे जुड़ी हुई मालूम होती है । प्राचीन लेखों में उनको सूर्यवंशी या रघुवंशी नरपति नृप या नरनाथादि उपाधियों से विभूषित किया है ।

नीचे प्राचीन शिलालेखादि के आधार पर मेदपाट के गुहिलोत नरेशों की कुछ वंशावली दीजाती है —

(१) गुहदत्त इसके वंशज गुहिल गुहिलोत या गहलोत कहलाये ।

(२) भोज (३) महेन्द्र (४) नाग, शायद नागदा या नागहृद इन्होंने बसा कर राजधानी बनाई हो । (५) शील या शीलादित्य इसका एक लेख सं० ७०३ वि० का, और एक तांबे का सिक्का भी मिला है जिसका समय शायद (७१२) हो । (६) अपराजित, इसका सं० ७१८ वि० का लेख मिला है ।

(७) महेन्द्र दूसरा (८) काल भोज (बापा रावल इसी का विरुद हो)

(९) खुंमाण या खुमाण—सं० ८१० वि०

(१०) मत्तट (११) भर्तृभट (१२) सिंहजी (१३) खुमांण दूसरा ।

(१४) महायक (१५) खुमांण तीसरा (१६) भर्तृभट दूसरा. सं० १००० वि०

(१७) अल्लट—आघाटपुर या आहाड़ में राजधानी स्थापन की । सं० १०१० वि०

(१८) नरवाहन—सं० १०२८ वि० (१९) शालिवाहन ।

(२०) शक्तिकुमार सं० १०३४ वि० । (२१) अम्बाप्रसाद (२२) शुचिवर्मा (२३) नरवर्मा (२४) कीर्तिवर्मा (२५) योगराज (२६) वैरट (२७) हंसपाल (२८) वैरिसिंह (२९) विजयसिंह, सं० ११६४-११७३ वि० (३०) अरिसिंह (३१) चोडसिंह (३२) विक्रमसिंह (३३) रणसिंह ।

यहां तक मेवाड के स्वामी राजा या नृप कहलाये । यहां से दो शाखें फटी, जिनमें स बड़ी शाखा वाले चित्तोड के स्वामी रहे और रावल कहलाए, और छोटी शाखा वाले-राणा उपाधिके साथ सीसोद की जागीर पाए ।

(३४) क्षेमसिंह ,(३५) सामन्तसिंह—जालोर के चहुवाण राव कीतू ने इसका राज छीना तब बागड़ में जाकर डूंगरपुर का राज्य स्थापन किया ।

(३६) कुमारसिंह—खोया हुआ मेवाड़ का राज पीछा लिया ।

(३७) मथनसिंह या महणसिंह (३८) पद्मसिंह ।

(३९) जैत्रसिंह—सं० १२७०-१३०९ वि० । (४०) तेजसिंह सं० १३१७-२४ वि० ।

खड़े सेन दरट्टइ, धुण लीधी धर सारह,
पमार दल पहट्ट, दीअ प्रसणा पारह।
पचास लाख मालवपती, मेवाड़े सोह गाजियो।
खूमाण राव वाये तणै, सिद्धराव भड़ भाजियो[1]॥

कवित्त रावल आलू (महेंद्र के पुत्र ?) का।

तीन लक्ख तोखार, सत्तसो तीन तंयासी,
पांच लक्ख पायक्क, करै ओळग मेवासी।
आहोर नैर धर नरेश, माल मंडव उग्रावै,
घर वैठा डरहूंत, भेट गुज्जरह पठावै।
आठ ही पोहर आलू भये, नयण नींद कोय न करै,
गहलोत गजां दल चालतां, अवर राय ओभक मरै॥

राव आलू (अल्लट) का वनाया हुआ गढ़ आहोर जो उदयपुर से दस कोस झालो की सादड़ी के पास है। उस आहोर वालों की वंशावली—रावल आलू, सीहो, शक्तिकुमार, शालिवाहन, नरवाहन, अम्बोपसाव (अम्वाप्रसाद), कीरतब्रह्म, नरदेव, उत्तम, करणादत्त, भादू, गात्रड़, हंस, जोगराज, वैरड, वैरसी, श्रीपुञ्ज, करण रावल। करण के दो वेटे हुए। राहप को चित्तोड़ का राज व राणा पद दिया, माहप को रावल पद के साथ वागड़ का राज दिया[2]।

---

(४१) समरसिंह—स० १३३० ५८ वि०।
(४२) रत्नसिंह–स० १३६० वि० में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ लिया, फिर सीसोदे की राणा शाखा वाले चित्तोड़ के स्वामी हुए।

(१) यह कवित्त पीछे का बना हुआ है, क्योंकि रावल खुमाण के समय में सिद्धराज कहां से आया। वह तो खुमाण से कई सौ वर्ष पीछे गुजरात का राजा हुआ था। (स० ११४९)।

(२) राणा शाखा की सीसोदे की वंशावली—
(१) राणाराहप (२) नरपति (३) दिनकर्ण (४) जसकर्ण (५) नागपाल (६) पूर्णपाल (७) पृथ्वीपाल (८) भुवनसिंह (९) भीमसिंह (१०) जयसिंह (११) लक्ष्मसिंह। अलाउद्दीन खिलजी के हमले के समय रावल रत्नसिंह की सहायता को आये। रत्नसिंह के वीर गति प्राप्त होने पीछे चित्तोड़ की गद्दी के लिये लड़कर अपने ७ पुत्रों सहित काम आये। (१२) राणा अरिसिंह, लक्ष्मसिंह का पुत्र, पिता के मारे जाने पर दुश्मन के मुकाबले

रावल कर्ण के दो पुत्र थे, माहप और राहप। अपने ज्येष्ठ कुँवर माहप को सेना साथ देकर रावल ने मेंड़ूले के राणा को विजय करने के वास्ते भेजा। गर्मी का मौसम था, कुँवर जाकर पर्वतों में कहीं शीतल छाया और झरने देखकर ठहर गया और साथ के सब उमरावों को यह कहकर अपने अपने घर जाने की विदा दी कि अभी गर्म ऋतु है दो एक मास पीछे थोड़ी वर्षा होने पर मेंड़ूते पर चढ़ाई करेंगे। राणा कर्ण इधर बाट निहार-

---

से मारे गये। (१३) महाराणा हमीरसिंह—सं० १३८३ वि० के लगभग, मुसलमानों से चित्तोड़ छीन लिया। देहान्त सं० १४२१।

(१४) महाराणा क्षेत्रसिंह सं० १४२१-३९ वि०।

(१५) ,, लक्षसिंह या लाखाजी इनके (देहान्त का संवत निश्चित नहीं परन्तु सं० १४६८ वि० के पीछे तक भी विद्यमान होना पाया जाता है)।

(१६) ,, मोकल-देहांत सं० १४९० वि०।

(१७) ,, कुम्भकर्ण-१४९०-१५२५ वि०।

(१८) ,, रायमल—सं० १५३०-१५६५ वि० (५ वर्ष कुम्भाजी के बड़े पुत्र उदयकर्ण ने राज्य किया)

(१९) ,, संग्रामसिंह या सांगाजी—सं० १५६५-८४ वि०।

(२०) ,, रत्नसिंह—सं० १५८४—८८ वि०।

(२१) ,, विक्रमादित्य—सं० १५८८—९४ वि०।

(२२) ,, उदयसिंह—सं० १५९४—१६२८ वि०।

(२३) ,, प्रतापसिंह—सं० १६२८—५३ वि०।

(२४) ,, अमरसिंह—सं० १६५३—७६ वि०।

(२५) ,, कर्णसिंह—सं० १६७६—८४ वि०।

(२६) ,, जगतसिंह—सं० १६८४—१७०६ वि०।

(२७) महाराणा राजसिंह—सं० १७०६-३७। नैणसी ने यहीं तक वंशावली दी है, हम आगे भी विद्यमान महाराणा साहब तक की वंशावली यहीं लिख देते हैं ताकि पाठक एक ही स्थान पर उसे पूर्णरूप में देख सकें।

(२८) महाराणा जयसिंह—सं० १७३७—५५ वि०।

(२९) ,, अमरसिंह दूसरे—१७५५—६७ वि०।

(३०) ,, संग्रामसिंह दूसरे—१७६७—९० वि०।

(३१) ,, जगतसिंह दूसरे—१७९०—१८०८ वि०।

(३२) ,, प्रतापसिंह दूसरे—१८०८—१८१० वि०।

(३३) ,, राजसिंह ,, —१८१०—१८१७ वि०।

(३४) ,, अरिसिंह (अरसीजी) दूसरे—१८१७—२९ वि०।

रहा था कि इतने दिन हुए कुँवर की तर्फ से कुछ समाचार तक नहीं आये इस का क्या कारण है ? कुँवर माहप पाटवी और प्रीतिपात्र सुहागण राणी का पुत्र था इसलिये वास्तविक वृत्तान्त जानते हुए भी किसी प्रधान, खवास या पासवान ने यह भेद रावल पर प्रकट न किया। रावल वार वार आतुर हो कहने लगा कि कुँवर की खबर नहीं आई। तब किसी ने निवेदन किया कि कुँवर तो गर्म ऋतु होने के कारण मेड़ते नहीं गया, वर्षा होने पर जावेगा, साथ के सर्दारों को भी घर जाने की छुट्टी दे दी है, अतः आपके पास पत्र कहां से आवे। यह सुनकर रावल बहुत दुःखी हुआ और मन ही मन जान लिया कि माहप राज्य करने के योग्य नहीं है। फिर उसने दूसरी सेना अपने छोटे पुत्र राहप को दे मेड़ते भेजा। राहप तत्काल चढ़ धाया, शत्रु को जा दबाया और विजय का डंका बजाता मेड़ते के राणा को बंधुआ बना अपने पिता के सन्मुख लाया। रावल कर्ण राहप पर बहुत प्रसन्न हुआ। मेड़ते के राणा की राणा पदवी राहप को दी और उसे अपना पाटवी बनाया। माहप को रावलाई देकर डूंगरपुर बांसवाड़े का प्रदेश जागीर में दिया, जहां उसकी सन्तान अबतक राज करती हैं[1]। राहप के वंशज चित्तोड़ के स्वामी हैं।

कवित्त राव बैरड (बैरट) जोगारो (जोगराज का पुत्र)।

गुज्जर वैनह नमै, नमै वहं डाहल रायह।
डाहालू सब विमित, लीव सैंभर वैचायह॥

---

(३५) ,, हमीरसिंह—१८२६—३४ वि०।
(३६) ,, भीमसिंह—१८३४—८५ वि०।
(३७) ,, जवानसिंह—१८८५—९५ वि०।
(३८) ,, सर्दारसिंह—१८९५—९९ वि०।
(३९) ,, स्वरूपसिंह—१८९९—१९१८ वि०।
(४०) ,, शम्भूसिंह—१९१८—१९३१ वि०
(४१) ,, सज्जनसिंह—१९३१—१९४१ वि०।

विद्यमान महाराणा साहिब श्री सर फतहसिंहजी बहादुर, महाराज कुमार श्री सर भूपालसिंहजी बहादुर।

(१)—विक्रम की तेरवीं शताब्दी में रावल सामन्तसिंह से डूगरपुर की शाखा चली।

बारहसत पंचास, गुड़े गैवर गल गंजे।
लक्ख एक तोखार, ढिल्ल अरियण घड़ भंजे॥
पाताल सेस पड़िहारियो, दूसरखे राव डंडवे।
बांकड़ो राव वैरड़ वसुह, मुणस टेक मेवाड़पे॥

राणा राहप, राणा दिनकर, राणा जसकर (जसकर्ण), राणा नागपाल।

दोहा—नागपाल रायांगुरु, जिण भंजे खुरसाण।
चक्रवत सो चेला किया, ठेम सेत लग झाण॥

राणा पुनपाल, राणा प्रथम (पृथ्वीपाल), राणा भूणगसी (भुवनसिंह), राणा जयसी, राणा गढ़ मण्डलीक लखमसी, राणा अरसी, राणा हमीर, राणा खेता, राणा लाखा, राणा मोकल, राणा कुम्भा बावन विसन (विष्णु) का अवतार, राणा रायमल, राणा सांगा, राणा उदयसिंह[1], राणा प्रताप, राणा अमरसिंह, राणा करण, राणा जगतसिंह, राणा राजसिंह।

रत्नसी अजयसी का, भड़ लखमसी का भाई, पदमणी के मामले में अलावदी (अलाउद्दीन) से लड़कर काम आया। (रत्नसिंह, अजयसी का पुत्र नहीं किन्तु महारावल समरसिंह का पुत्र था जो उनके पीछे चित्तोड़ की गद्दी पर बैठा था)। एकबार तो बादशाह ने चित्तोड़ से कूच कर दिया था, परन्तु रत्नसी लखमसी-ने-पुर के डेरों से पीछा बुलाया। लखमसी के बारह बेटों ने गढ़ से उतर कर बारी बारी सुलतान के साथ युद्ध किया तेरवें दिन जोहर हुआ, राणा लखमसी, रत्नसी व करणसिंह गढ़ से उतर कर शत्रु के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। लखमसी का एक पुत्र अनतसी जालोर ब्याहा था वहां कान्हड़देव (चहुवाण) के साथ (सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की सेना के मुक़ाबले में) मारा गया। जहां अनतसी काम आया वह स्थान अनतडूंगरी के नाम से प्रसिद्ध है[2]।

---

(१) नैणसी ने राणा रत्नसिंह और उनके भाई राणा विक्रमादित्य के नाम यहां नहीं दिये हैं जो राणा सांगाजी के पीछे क्रमवार चित्तोड़ की गद्दी पर बैठे थे।

(२) एक प्राचीन रूपक में लखमसिंह के पुत्रों के नाम ये दिये हैं—

प्रथम कुंवर हरिसिंह, सिंह जिम समहर जग्गो,
नरसिंघ जिम नरसिंघ, यदा दल माहिं विलग्गो।
अनतसीह अड़ कटक, अमत भाग बिच पैसे;
अभयसिंह धरविद्ध, कटक दलिया चित वैसे।

राणा अरसी भी चित्तोड़ के शाके में मारा गया उसके पुत्र राणा हमीर ने ६४ वर्ष, ७ महीने १ दिन चित्तोड़ पर राज किया। वंश रक्षा के हेतु अजयसी गढ़ के बाहर भेज दिया गया था, वह चित्तोड़ का राजा हुआ। एक अभयसी पिता के साथ मरा जिसके वंशज कुम्भावत। कुक्कड़ माकड़ काम आये, ओफड़, पेथड़, जिसके वंश के भाखरोत। इतने राणा चित्तोड़ पाट बैठे–राहप राणा करण रावल का पुत्र, दहूराणो, नरु राणो, हरमू राणो, जसकर्ण, नागपाल, पुनपाल, पेथड़ (पृथ्वीपाल), भूणसी (भुवनसिंह), भीमसिंह, अजयसिंह, भड़लखमसी जो चित्तोड़ पर बारह बेटों सहित युद्ध में काम आया, अरसी। हमीर अरसी का पुत्र, माता का नाम देवी सोनगिरी, कई दिन तक खमणोर के पास ऊनवा गांव में अपने मामा के यहां रहा था[१]।

राणा खेतसी या क्षेत्रसिंह[२]—एक बार चित्तोड़ का सौदा बारहट बारू बूंदी गया था, तब लालसिंह (हाड़ा जिसकी कन्या राणा खेतसी को व्याही थी) ने बात कहते हुए दीवाण (राणा) के लिये कुछ अपशब्द कहे, जिससे बारू पेट में कटार मारकर मर गया। कोई कहते हैं कि कमल पूजा की (मस्तक काटा)। हाड़ा सीसोदियों में वैर पड़ा, बहुत दिनों तक शत्रुता चलती रही और उसकी आग खूब भड़की, परन्तु सीसोदिये प्रबल और हाड़ा निर्बल थे अतएव

समहरी राण मोकळ सहस, समरसिंह कुक्कड बसी,
आवियो काम नक्कड सहित, गढ़ मण्डलीक लखमसी ॥

(१) ये चित्तोड़ के राणा नहीं, परन्तु सीसोदे की शाखा के सामन्त थे। नैणसी ने इनकी वंशावली पहले भी कुछ अन्तर के साथ दी है। शुद्ध वंशावली के वास्ते देखो नोट पृष्ठ १८–१६–२०

(२) राणा खेतसी ने दिल्ली के नगर लूटे, ईडर के राव रणमल को कैद कर चित्तोड़ लाये और मालवे के सुलतान अमीशाह (दिलावरखां गोरी का पहला नाम) को बाकरोल (हमीरगढ़ का पुराना नाम) के मुकाम युद्ध में पराजित किया था। अमीशाह के युद्ध का एक पुराना रूपक मुझे एक सेवक के पास से मिला है—

जो दळ पन्च जोजन्न, माण मेलाण पडन्तो,
जो दळ नदी निज्झरण, पूर जण माह पिवतो।
जो दळ राया मण्डळ, गयो गाहन्तो गिरवर,
जु दळ तणी रज खेह, उडे छायो रव अम्बर।
एतलो कटक अमीशाह को, खेतल भजे खड्ग बल,
अडवेग वळन्तो दीठ में, रहम्म तरोवर एक दल ॥

उन्होंने सीसोदियों के बारह सर्दारों को अपनी बेटियां ब्याह कर बूंदी, मांडलगढ़ के बीच के २४ गाम दहेज में दिये-जीलगरी, धनवाड़ा, बंका वाजणा, खिणीखा, भीलड़िया आदि (ख्यात में इतने ही नाम दिये हैं)। राणा खेतसी के पुत्र-लाखा, भाखर के भाखरोत, भूचर के भूचरोत, सलखा के सलखणोत, महिपा, सिखरा के सिखरावत। चाचा पासवान का जिसकी सन्तान दक्षिण के भोंसले साहजी शिवा हैं[1]। मेरा खातण के पेट का।

राणा लाखा (लक्षसिंह)—मंडोर के राव चूंडाने अपनी राणी मोहिल (जाति की) के कहने से अपने पुत्र रिणमल (रणमल) को देश निकाला दिया तब अच्छे अच्छे राजपूत उसके साथ हो लिये और ५०० सवारों से रिणमल चित्तोड़ आया जहां राणा लाखा राज करता था और चूंडा उसका पाटवी कुंवर था। चित्तोड़ उस वक्त हिन्दुस्तान में बड़ा राजस्थान था, और छत्तीस ही वंश (राजपूतों के ३६ वंश प्रसिद्ध हैं) वहां चाकरी करते थे। रिणमल भी दीवाण का चाकर रहा। एक दिन राणा लाखा शिकार को निकला, कुंवर चूंडा भी साथ था, नगर के दर्वाज़े में घुसते हुए राणा ने देखा कि एक कुम्भार विवाह करके आ रहा है। दीवाण वहीं ठहर गये और कहा कुम्भार को आने दो। फिर उसे देख कर एक निःश्वास छोड़ा जिसको चूंडा ने ध्यान में रक्खा। जब आखेट कर पीछे महल पधारे, उमराव सब अपने अपने घर गये, तब दीवाण ने कुवर को कहा कि बेटा तुम भी जाओ सुख करो। चूंडा ने हाथ जोड़ कर विनती की कि दर्वाज़े से निकलते समय दीवाण ने निश्वास क्यों डाला? दीवाण बोले, बेटा इस विचार में मत पड़। चूंडा ने फिर निवेदन किया कि दीवाण इसका कारण फर्मावें तब ही तो मेरा जीवन सार्थक है (अर्थात् नहीं तो शरीर त्याग दूंगा)। तब दीवाण कहते हैं-चूंडा यों किसी राजपूत की बेटी ब्याहली उसमें क्या, विवाह होना तो तब ही कहा जा सक्ता है जब अपने सगों की बेटी वरे[2]। चूंडा ने कहा

---

(१) कर्नल टॉड ने शिवाजी को राणा अजयसी के एक पुत्र सजनसिंह का वंशज लिखा है। (टॉड राजस्थान अंगरेजी ऑक्सफर्ड' संस्करण जिल्द १ पृष्ठ ३१४)।

(२) एक और भी ऐसी ही कथा थोड़े अन्तर के साथ प्रसिद्ध है। राव रणमल ने अपनी बहन का सम्बन्ध चूंडा के साथ करने को नारियल भेजे थे, परन्तु वह उस वक्त चित्तोड़ में नहीं था कहीं शिकार को गया हुआ था। राणा ने हंसी में कह दिया कि जब हम जवान थे तो हमारे लिये भी ऐसे ही सम्बन्ध आया करते थे, अब बूढ़े हुए हमें कौन

बहुत अच्छा। दूसरे दिन सब उमरावों (सामन्तों) को इकट्ठे कर पूछा, ठाकुरों ! किसी के युवावस्था की कन्या है ? उनमें से एक ने उत्तर दिया कि बड़ी कन्या रणमलजी की बहन है। चूंडा ने रणमल को कहा कि आप हमें गोठ देवें। उसने कहा कि बहुत खूब। फिर रणमल ने मदारिये के चालीस पचास बकरे मंगवाये, बहुत से गेहूं पिसवाये, नाना प्रकार के व्यंजन बनवाये और चूंडाजी को कहलाया कि गोठ तैयार है पधारो। (चूंडा भले २ सर्दारों सहित रणमलजी के डेरे पर गया) और सब ठाकुरों के सन्मुख उनसे कहा कि रणमलजी (अपनी बहन) दीवाणजी को परणा दो। रणमल ने उत्तर दिया कि दीवाण वृद्ध हैं, मैं अपनी बहन आपको व्याह दूंगा। चूंडा कहता है "रणमलजी ! तुम हमारे बड़े सगे हो, हमसे सम्बन्ध जोड़ो !" बहुत हठ की परन्तु रणमल ने न माना, चूंडा ने भी अपनी टेक न छोड़ी, दो पहर इसी में बीत गये, तब चूंडाने पूछा कि अरे ! इनके कोई विश्वासपात्र चारण ब्राह्मण भी है ? उत्तर मिला कि खिड़िया चारण चानण (चंदन) है। उसको बुला कर कहा कि तूं अपने ठाकुर को समझा कि एक छोरू मर ही गया ऐसा मान लेना। चारण बोला कि दीवाण के चूंडा बेटा है, अब खाली (निरर्थक) बात करने से क्या लाभ, तुम्हारे कहने पर हम बाई का विवाह कर भी देवें और जो कभी उसके पुत्र हो जावे तो ? चूंडा ने कहा कि जो बेटा हो गया तो चित्तोड़ का स्वामी वही होवेगा। चारण कहता है—"राज ! (साहब) चित्तौड़ की साहिबी (राज्य) कौन छोड़ता है"। तब तो चूंडा ने शपथ खाई, (सचमुच चूंडा ने यहां देवव्रत भीष्म सा काम किया)। चारण ने रणमलजी को जाकर कहा आप क्या करते हैं, पुराने सगों से ही संबंध करना चाहिये,

---

नारियल भेजे। पिता के इन वचनों की भनक चूडा के कानतक पहुच गई और उसने वह सगपण करना स्वीकार नहीं किया तब राणा ने स्वय नारियल झेल विवाह किया और पिता की आज्ञानुसार चूंडा ने अपना राज का हक छोड कर मोकल को दिया।

राणा लाखा ने गया तीर्थ में जाकर उसको यवनों के अत्याचार से बचाया, हिन्दुओं का कर छुड़ाया, और स० १४७५ वि के लगभग शरीर त्यागा हो। कई विद्वानों ने राणा लाखा का स० १४५४ वि (सन् १३९७ ई०) में देहात लिखा है, परन्तु वह सही नहीं है क्योंकि राणा लाखा का एक लेख आबू पर अचलेश्वर के मंदिर के त्रिशूल पर स० १४६८ वि० का, और दूसरा गोडवाड़ में कोट सोलंकियों के एक जैन मंदिर का लेख स० १४७५ वि. का मिला है। राणा लाखा के अज्जा नामी पुत्र भी था जिसके बेटे सारगदेव के वंशज कानोड़ के रावत सारंगदेवोत कहलाते हैं। एक पुत्र दूला था जिसके वंशज दूलावत राजपूत हैं।

नया तो किस काम का, दीवाण को कन्या व्याह दो ! सारांश कि चारण ने बड़ी कठिनता से रणमल को राजी कर लिया। तुरन्त दीवाण के पास नारियल भिजवाये और उसी दिन दीवाण ने आकर विवाह किया और उनकी बड़ी खातिर की गई। तेरह मास पीछे मोकल पैदा हुआ, वह पांच वर्ष का था कि दीवाण का देवलोक वास होगया। राणियां सती होने को निकलीं, राठोड़ राणी हंसबाई ने भी सती होने की तैयारी की, तब चूंडा जाकर पांवों पड़ा और कहने लगा माताजी ! यह क्या करती हो, आपको तो राजमाता का तिलक मिलेगा। राणी बोली "जहां चूंडा विद्यमान है वहां मेरे बेटे को राज कौन देगा"। चूंडा ने कहा, माता ! राज मोकल का है, चूंडा तो उसका चाकर है, और तत्काल मोकल को बुलाकर अपने सिर की पाघ चूंडा ने उसके मस्तक पर धर दी और उसकी पाघ आप ने पहनली, छोटे भाई को मुजरा किया, तब तो दूसरे सब सामंतों ने भी मोकल को तसलीम (झुककर नमन करना) की। मोकल की माता ने चूंडा को आशीष देकर कहा "बेटा जैसा तूने किया वैसा दूसरा कौन कर सकता है, यह चित्तोड़ का राज मेरे पुत्र को तूने दिया है, और जो मैं सती हूं तो मेरा यही वचन है कि मेवाड़ की धरती तुम्हारे वंश में सदा बनी रहेगी"। राठोड़ राणी के ये वचन आजतक निभाये जाते हैं। चूंडा के वंशजों की अब तक वैसी ही खातिर होती है।

राणा लाखा के पुत्र–चूंडा, जिसके वंश के चूंडावत मोकल, राघवदेव पितृ हुआ; ऊदा के ऊदावत, दूलाके दूलावत, गजसिंह के गजसिंहोत, और डूंगर व मांडा के मांडावत।

राणा मोकल–(मण्डोर के) राव चूंडा की बेटी हंसबाई के पेट का, जिसे राणा खेता के पासवानिये खातण के पुत्र चाचा व मेरा ने मारा। फिर वे (चाचा मेरा) पई के पहाड़ों में जा छिपे। राव रणमल ने पहाड़ को घेर कर उनको मारा। राणा मोकल के पुत्र–१ राणा कुम्भा, २ खीवा (खेमकर्ण) जिसकी संतान देवलिया प्रतापगढ़ में राज करती है, ३ सूआ के सूआवत, ४ (सत्ता के पुत्र) कीता के कीतावत, ५ अडू के अडूओत, ६ गडू के गडूओत और ७ वीरम।

राव रणमल ने मण्डोर जीतकर अपने कुंवर जोधा को दी और आप नागोर आ रहा[१]। एक दिन वह कहने लगा, "ठाकुरों ! बहुत दिन हुए चित्तोड़ से कोई

(१) राव चूंडा राठोड़ ने मंडोर का राज अपनी राणी मोहिल के, जो उसकी प्रिया थी, कहने से अपने पुत्र कान्हा को देकर राव रणमल को बाहर भेज दिया। रणमल अपने पुत्र

समाचार नहीं आये इसका क्या कारण है" । थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी आया और राव को पत्र देकर कहा कि मोकल मारा गया। राव बोला। "हैं! मोकल मारा गया।" पत्र पढ़वाया, जलांजलि दी, और चित्तौड़ जाने की ठानी। इक्कीस धावड़े करे और फिर ठहर कर बोला "भाई! मोकल का वैर लेने को

सोचा महिम चित्तौड़ में राणा लाखा के साथ रहा और राणा ने उसे ४० गांव जागीर में देकर अपने अव्वल दर्जे के उमरावों में दाखिल किया। राणा मोकल की बाल्यावस्था में रणमल ने अपना अधिकार अटल पाकर बढ़ाया और चूंडा को चित्तौड़ से बाहर करवा कर आप स्वतन्त्रता के साथ राजकाज करने लगा। चूंडा मांडू (मालवा) के सुलतान होशंग खां गोरी के पास चला गया और वहां सुलतान ने उसे अच्छी जागीर देकर बड़ी खातिर के साथ रक्खा। रणमल की बहन (मोकल की माता) की मरजी हुई, भाई को मोकल ने उसे देख उसने चूंडा को पीछा शुभ रीति से बुलाया। चूंडा ने आकर राव रणमल को मरवाया।

मंडोर पर राव कान्हा ने ५ वर्ष राज किया उसके पीछे उसका भाई सत्ता गद्दी पर बैठा। वह शराब बहुत पीता था। राज का काम उसका भाई रणधीर करता था। सत्ता के पुत्र नरबद और रणधीर में अनबन होजाने से रणधीर चित्तौड़ जाकर राव रणमल को राणा की फौज समेत मंडोर लेगया। रणमल ने नरबद को युद्ध में पराजित कर मंडोर पर अधिकार किया और नरबद अपने पिता सहित राणा मोकल की शरण में जा रहा।

मोकलजी ने गुजरात के सुलतान अहमदशाह से लड़ाइयां की थीं। नागोर के हाकिम फीरोज़खां को पराजित कर उसके पुत्र महमूद व मसूदखां को मारे और बूंदी वालों से सांभर आदि छीन लिये थे। फीरोज़खां के साथ राणा मोकल के युद्ध का एक प्राचीन कवित्त भी मिला है—

"श्री मोकल महाराण, कुल ईंडर अवतारी।"
"जेण रचौ रण रंग, भार जुल्मरे भारी ॥"
"सबल साह पीरोज, नाग नाखियो हर नव्वर।"
"सह नागद लेगड़, अवसाण हर गुज्जर।"
"रूपावत राव वेढाहरै, मीरजाद मरदन्नजुम।"
"खरबरद मांह दीठो न को, मोकल जम हर अवतरुण।"

फीरोज़ गुजरात के पहले सुलतान मुजफ्फरशाह का भतीजा था। नागोर उसके पिता शम्सखां की जागीर में था। महाराणा मोकल के साथ सं० १४८० वि० (सन् १४२३ ई०) के आसपास फीरोज़ की दो लड़ाइयां हुई थीं। पहली लड़ाई में महाराणा को हार हुई परन्तु दूसरे जावर के पास के युद्ध में फीरोज़ शिकस्त खा कर भागा था। गुजरात के सुलतान अहमदशाह के साथ भी सं० १४८६ वि० (सन् १४२९ ई०) में मोकलजी का युद्ध हुआ। तारीख फ़िरिश्ता व मिराते सिकन्दरी में भी इस युद्ध का वर्णन है।

दिनभर घिनाह होते रहे फिर मेवासा[1] तोड़ कर मीणों को दिया और अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर राव चित्तोड़ आया, वहां कुंभा को पाट बिठाया, कितने ही चलवाई सीसोदियों को दंड देकर देश से निकाल दिये और कुंभा के राज्य में शान्ति-स्थापन कर दी जहां वह सुखपूर्वक शासन करने लगा।

राणा कुम्भा—रणमल ने सारे देश को अपने हस्तगत कर लिया था, जिसको वह चाहता निकाल बाहर करता था। तनय पाकर चाचा का पुत्र राणा कुम्भा से आन मिला, और महपा पंवार भी पहुंच गया और राणा के कान भरने लगा कि धरती राठोड़ों ने ली, देश के स्वामी वे हो गये। एक दिन राणा तो सोता था और एका चाचावत पगचम्पी कर रहा था, उस समय एका की आंख में से आंसू टपक कर राणा के पग पर पड़े, जिससे चौंक कर राणा क्या देखता है कि एका रो रहा है। पूछा-क्यों रोता है? उत्तर दिया स्वामिन् धरती सीसोदियों से गई और राठोड़ों ने ली इस बात से मुझे महा दुःख होता है। राणा बोला तो क्या रणमल को मारेगा? एकाने उत्तर दिया कि "जो दीवाण के हाथ मेरी पीठ पर रहे तो उसे मारूंगा"। राणा ने कहा "अच्छा मार"। अब प्रति दिन इसी की सलाह होने लगी। एक दिन रणमल तलहटी आया, वहां उसके सब आदमी इकट्ठे हुए तब राव के डोमने पूछा कि क्या आजकल दीवाण का और आपका विचार किसी पर चूक करने का है? रणमल बोला हमारे तो किसी से चूक नहीं है। डोम कहता है-तब तो दीवाण आप ही पर चूक विचारते हैं, कुंवर जोधाजी को तलहटी में रखना। अब रणमल तो गढ़ पर रहता और उसके सब बेटे तलहटी में। एक दिन राणा ने कहा रावजी! आजकल जोधा नहीं दीखता सो कहां है? रणमल बोला-तलहटी है, घोड़ों को चराता है। राणा ने कहा उसे ऊपर बुलाओ! राव ने उत्तर दिया कि जो हुक्म, बुलाऊंगा, परन्तु जोधा को कहला भेजा कि हम बुलावें तो भी मत आना। एक दिन राणा, महपा पंवार और एका चाचावत ने मिल कर निश्चय कर लिया कि आज रणमल को मारना चाहिये। रात को कुंभा सोया परन्तु नींद नहीं आवे, बार बार महल के बाहर जाकर देखे और पीछा आवे। तब राणी ने पूछा "दीवाण आज क्या मामला है क्या किसी पर चूक है"? राणा ने कहा—हां! राणी ने अर्ज़ की कि हरामखोरों के कहने से

---

(१) मेवासा (मेव-वासा) मेव, मीणे आदि लोगों के निवास स्थानों को कहते हैं।

कहीं रणमल को मत मरवादेना। राणा ने उत्तर दिया कि हमने तो उसे मरवा दिया। राणी ने कहा कि आपने यह क्या किया, उसने तो आपका देश बसाया, आपके बाप का बैर लिया, आपको पाट बिठाया, आपके साथ बुराई क्या की? जिससे आपने उसे मरवाया। राणी के ऐसे वचन सुनकर दीवाण ने एक दासी को भेजी कि महपा को बुलाला, दासीने जाकर उसको कहा कि दीवाण ने जिस काम के वास्ते फर्माया उसे अभी मत करना, और दीवाण तुमको याद फर्माते हैं। महपाने सोचा कि जो रणमल जीता रह गया तो हम मरे, इसलिये दासी को मोतियों की माला देकर कहा कि तू जाकर पीछी अर्ज़ करदे कि जो काम फर्माया था वह करडाला। दासी ने आकर वही अर्ज़ की। इन्होंने जाकर जागृत अवस्था में लेटे हुए रणमल पर प्रहार किया। रावने एक राजपूत को तो सोते सोते ही कटार से मार गिराया, दूसरे का मस्तक लोटे की मार से तोड़ा, और तीसरे का काम लातों से तमाम किया। इस तरह तीन को मार कर रणमल मारा गया[1]। दासी ने महल पर चढ़ कर पुकारा "राठोड़ों तुम्हारा रणमल मारा गया है!" वे शब्द तलहटी में सुनाई दिये और जोधा, कांधल और दूसरे सब साथी निकल भागे। उनके पीछे फौज भेजी गई, लड़ाई हुई, जिसमें कई सर्दार बरड़ा चंद्रावत, शिवराज, पूना भाटी, ईंदा भीमा, वैरीसाल, वरजांग भीमावत और जोधा का काका भीम चूंडावत आदि मारे गये।

सीसोदिया राघोदेव लाखा के पुत्र की बात—

सीसोदिया राघोदेव लाखावत राणा कुम्भा की धरती में बिगाड़ करता था इसलिये राणाने उसे मारने का विचार किया। एक दिन राघोदेव दरबार में आया, उसके अंगरखे की बांह ढीली होने से हाथ पर उतर आई थी, भीतर पग धरते ही उसकी एक बांह राणाने और दूसरी राव रणमलने पकड़ली और दोनों बगल से कटार धूंसे गये। घाव खाते ही राघोदेव ने दांतों से पकड़ कर अपना

---

(१) कर्नल टॉड लिखता है कि राव चूडा (लाखावत) ने रणमल का काम तमाम करवाया। वह एक दासी को लिये मस्त सोता हुआ था, दासी ने उसे पलंग से कसकर बांध दिया। घातक अचानक सिरपर आन खड़े हुए, तब पीठ पर बंधे हुए पलंग समेत रणमल किसी ढब से खड़ा हो गया और दो एक को मारकर अन्त में मारा गया।

कटार खींचा (परन्तु वार करने का वार न आया)। उन दोनों ने यह समझ कर, कि कटार काजू लगे हैं वह अब कुछ कर नहीं सकता गिरकर मरजावेगा, उसके हाथ छोड़ दिये। उसी अवस्था में वह जलेवखाने से निकलकर पोली के बाहर पहुंचा था कि एक राजपूत ने झटका मार उसका सिर धड़से जुदा कर दिया, परन्तु मुण्ड के विना ही उसका रुण्ड भागने लगा, लोग सारे हटगये, तब रुण्डने अपने सीसको उठा कर कमरबंद में बाधा और अपने घोड़े पर चढ़ घर की तरफ चलता हुआ। प्रभात होते चित्तोड़ से १७ कोस पड़ावली गांव में पहुचा, तब किसी पनिहारी ने उसे देखकर कहा कि देखो कोई योद्धा विना सिरके ही घोडे पर चढ़ा चला आता है। वह स्त्री रजस्वला थी उसकी छाया पड़ते ही राघोदेव घोड़े पर से गिरगया और वहीं उसकी ५ सात पत्निया (पड़ावली से आकर) सती हुई। वहा राघोदेव सीसोदिया आजतक पूजा जाता है। साखी का गीत–" राय आंगण राणा कुंभकरण रुठै, हाथा मद्दे हिंदवेराय।
काढी राघव भली कटारी, दातां सरसी ऊपर डाय' "॥

चित्तोड़ में नापा साखला राणा कुंभा के दरबार में राव जोधा की तरफ से रहता था उसने (गुप्तरीति से) जोधा को कहलाया कि अभी यहा आओ तो राव रणमल का वैर लेने का अच्छा अवसर है। राव जोधा चढ़ चला। मार्ग में रूण (रूणेचा) के टीकायत साखला राणा की बेटी के साथ विवाह किया। जब

(१) यहा भी नैणसी का कथन पक्षपात से खाली नहीं है। राघोदेव राव चूंडा (सीसोदिया) का भाई था, चूंडा जाते वक्त उसको महाराणा (कुंभा) की रक्षा के निमित्त चित्तोड़ में छोड़ गया था, क्योंकि राव रणमल के हतखंडे देखकर उसके मन में शंका उत्पन्न हो गई थी कि वह अवश्य राज्य दबाने का दाव खेलेगा। जब राव रणमल चाचा मेरा को मारकर सीसोदियों की जो कन्याएं उनके पास थीं उनको देलवाड़े में लेआया और उन्हें राठोड़ों के घरों में बिठाने लगा, तो राघोदेव ने, जो कटक जोड़ कर वहा पहुंच गया था, इसे पसंद न किया और उन सब बालाओं को अपने डेरे पर लेगया। राव रणमल इससे बहुत चिढ़ा, उस वक्त तो वह कुछ न कर सका, परन्तु उसी दिन से राघोदेव का शत्रु हो गया। चित्तोड़ आकर उसका काम तमाम कर देने का विचार करने लगा। राणा पर तो उसका प्रभाव पूरा जमा ही हुआ था, दरबार में बुलाकर राणा से राघोदेव को सिरोपाव दिलवाया जिसमें के अगरखे की दोनों बाहों के मुख राव (रणमल) ने सिलवा कर बंद करवा दिये थे। जब राघोदेव ने बाहों में हाथ डाले तो संकेतानुसार रणमल के दो राजपूतों ने उसपर दोनों तरफ से कटार के वार कर उसे वहीं मारडाला। राघोदेव की पितृ मानकर पूजा की जाती है।

राव जोधा के रवाना होने के समाचार राणा को पहुंचे तो उसने नापा को हुजूर में बुलाकर पूछा कि तेरे पास इन दिनों में रावजी की ओर से कोई पत्र भी आया है। पहले जब कभी राणा ऐसा प्रश्न करता तब तो नापा यही उत्तर देता था कि कोई विशेष बात नहीं सुनी है, परन्तु इस अवसर पर अर्ज़ की कि "दीवाण बात सत्य है, मुझे भी यही समाचार मिले हैं"। ऐसा सुनते ही दीवाणके चहरे का रंग बदल गया, सांखले को कहा कि अब क्या करना चाहिये? उसने निवेदन किया "दीवाण सलामत! राठोड़ों के वैर का मामला बड़ा विकट है और वैर भी राव रणमल का"। तब तो दीवाण बड़े भय में पड़ गये। नापा बोला कि यह सबल वैर धरती देने से मिटना संभव है, वह दी जावे। दीवाण को भी यह मत भाया, नापा डेरे पर आया और तुरन्त राव जोधा के पास दूत दौड़ाया और कहलाया कि यहां कुछ दम नहीं है आप शीघ्र आइए। रावजी की फौजें जहां तहां मेवाड़ में आन घुसीं और लगी देश को उजाड़ने। दीवाण को बड़ा शोच हुआ, नापा को कहा कि किसी प्रकार सन्धि हो जावे तो अच्छा है। नापा ने अर्ज़ की कि भले आदमी इसके लिये रावजी के पास भेजे जावें और वे बातचीत करें। राणा जी के प्रधान रावजी के पास गये और कहा कि जो होनहार था सो तो हो गया, यह देश तुम्हारा ही बसाया हुआ है, तुमही मारोगे तो रखने वाला कौन है? रावजी बोले कि यह तो सच है, परन्तु वैर बांधना सहल और छूटना कठिन है। राणाजी के प्रधानों ने कहा कि तो हमने भूमि दी, परन्तु रावजी के सर्दार बोले कि यह तो ठीक, तथापि कुछ होड़ लगाकर लड़ाई भी होनी चाहिये। दीवाण के भलेमानसों ने इसको स्वीकारा और जाकर दीवाण पर सारी बात विदित की। राणाजी प्रसन्न हुए, दोनों ओर से सेना सजकर आन उपस्थित हुई। रण खेत साफ किया गया, स्तम्भ रुपे, पूर्व में राव जोधा की और पश्चिम ओर राणा की सैन्य खड़ी हो गई। उस वक्त रावजी के प्रधानों ने विचारा, भूमि लीजाय तो अच्छा है, विविध प्रकार से स्वामि को समझाया कि पक्के वाचा वचनादि के साथ इस समय मंडोर का लेलेना ही उत्तम है, युद्ध में तो आपके सन्मुख ये क्या ठहर सकेंगे। राव जोधा भी इससे सहमत हो गया तब उसके सर्दारों ने कहा कि आज्ञा हो तो उभय पक्ष के दो योद्धाओं का द्वन्द युद्ध थाप देवें। एक सामन्त हमारा और एक आपका मैदान में आकर लड़े, जिसके सामन्त की जीत हो वही पक्ष विजयी समझा जावे। (इस द्विमुंही युक्ति से भी इतना तो अवश्य पाया जाता है कि मंडोर

पर राणा का अधिकार था और युद्ध में कुंभाजी पर विजय पाना सुलभ नहीं समझा गया था)। रावजी! आप के ग्रह ऐसे प्रबल प्रतीत होते हैं कि आपही का सामन्त जीतेगा। दीवाण भी इससे सहमत कर लिये गये, दीवाण की तरफ से उनका बड़ा सामन्त विक्रमायत झाला, और रावजी की ओर से बीजा ऊदावत आया। विक्रम के पास ढाल थी और बीजा बिना ढाल के ही गया था। तब रावजी ने उसको कहा कि बीजा! तू भी ढाल लेले! परन्तु उसकी मर्दानगीने उस अस्त्र के वास्ते पीछे फिरना गवारा न किया, आगे साम्हने ही रावजी की सवारी का रथ खड़ा था उसका एक चक्र बीजा ने घोड़े पर चढ़े चढ़े ही निकाल कर ढाल के बदले हाथ में लेलिया और बढ़ कर विक्रम को ललकारा कि पहले तूं ही वार कर! अपनी मृत्यु के भय से घबराये हुए विक्रम ने घाव किया, परन्तु बीजा ने फुर्ती से उसके हाथ को पहिये पर रोक लिया जिससे पहिया आधा कट गया। फिर बीजाने खड्ग उठाया, झाला उसको न रोक सका, भयभीत हो उल्टे पागड़े (रकाब) ही उतरता था कि इतने में ऊदावत का हाथ पड़ने से झाला कटकर दो टूक हो गया। उस अवसर पर नापा साखला दीवाण के पास खड़ा था उसने अर्ज की कि "दीवाण सलामत! खाडा एक ही धार से चलाया गया है, जो दशा आपके सामन्त की हुई वही आपकी होती, परन्तु अहोभाग्य कि आपने धरती देकर युद्ध को टाल दिया" इतना सुनना था कि रावजी के घोड़ों की बागें उठीं, दीवाण की सेना ने पग पीछे दिये, तब पिछले ठाकुरों ने बीच में आकर पुकारा कि "सर्दारों? भागते क्या हो"। रावजी की फौजने दीवाण का देश लूटा और जोधाने मंडोर में आकर फिर जोधपुर बसाया[1]।

---

(१)—यह सब लेख कपोलकल्पित और पक्षपात से भरा हुआ है। जिस रणमल ने आकर महाराणा की शरण ली थी और महाराणा मोकल ही की सहायता से उसको मंडोर का राज मिला था, और उसके मारे जाने पर जोधा भयभीत हो भाग गया था, भला उसका भय महाराणा कुम्भा जैसे प्रतापी महाराजा पर गालिब हो यह कौन मान सकता है। राव रणमल के मारे जाने पर जब जोधा भागा और राव चूडा (लाखावत) ने जाकर मंडोर पर अधिकार कर लिया तो राव जोधा की भूआ सौभाग्यदेवी (महाराणा कुम्भा की माता) को अपने भतीजे की दशा देख दया आई और अपने पुत्र (महाराणा कुम्भा) को उसकी (राव जोधा की) सिफारिश की। महाराणा ने कहा कि जो मैं प्रत्यक्ष में मंडोर जोधा को देऊं तो चूडा अप्रसन्न होगा, क्योंकि राव रणमल ने काका राघोदेव को मरवा डाला है, इस लिये आप राव जोधा को कहला दें कि वह मंडोर पर अधिकार कर-

चूंडावत[1] सीसोदियों की शाखा—

सं० १७२२ पोष वदि ५ को खिड़िये (चारण) खींवराज ने लिखाई।

चूंडा लाखावत के पुत्र— १ कांधल, २ कुंतल, ३ मांजा, ४ तेजसी।

१ कांधल (चूंडावत का वंश)—कांधल के पुत्र १ रतनसी, २ सिंघ, ३ नंगा, ४ जग्गा, ५ सांगा।

भेजे, मैं इसमें कुछ आपत्ति नहीं करूंगा। महाराणा की माता ने एक चारण के द्वारा यह समाचार जोधा के पास भेजे तदनुसार उसने चूंडा के बेटों (कुंता मांजल) को जो उस वक्त मंडोर का शासन करते थे, मारकर मंडोर पर अधिकार कर लिया। बारह वर्ष तक मंडोर पर (कोई ७ वर्ष भी कहते हैं) सीसोदियों का झण्डा फहराता रहा था।

(१) चूंडावत शब्द से अभिप्राय " चूंडा का पुत्र " है। राजपूताने में प्रायः पुत्र या वंशज के लिये पिता (या वंशकर्त्ता) के नाम के अन्त में 'वत' जोड़ा जाता है जैसे 'शक्तावत' अर्थात् शक्ता का पुत्र (या वंशज)। नैणसी ने बहुधा ऐसा ही प्रयोग किया है अतः आगे जहां किसी नाम के अन्त में 'वत' लगा हो उसे उस नामवाले का पुत्र समझना चाहिये।

वंशवृक्ष नं० (१) वाघल के पुत्र रतनसी का वंश।

दूदा[१] सत्ता[२] करमा[३] साईंदास[४] खेंगार खेतसी नाथू

रावत प्रतापसिंह[५] किशना गोइंद[७], बेगम पट्टै

शालिवाहन तेजा[६] ताडखान

मानसिंह जस्सू

पृथीराज परशुराम

रघुनाथ, सलूंबर पट्टै रतनसी

मेघ जोध केवलदास अचलदास

नरसिंहदास राजसिंह, बेगम पट्टै

जैतसी, अठाणा पट्टै महासिंह

टिप्पण जो मूल टाइप में दिये हैं उनको नैणसी के लेख का भाषांतर ही समझना चाहिये—

(१ २ ३) हाडी करमेती के मामले में चित्तोड़ पर काम आए (युद्ध में मारेगए)।

(४) बेटा नहीं था, पीछे उदयसिंह (राणा) के पुत्र शक्तिसिंह को गोद लिया तो भी उत्तराधिकारी (साईंदास का) भाई खेंगार ही हुआ।

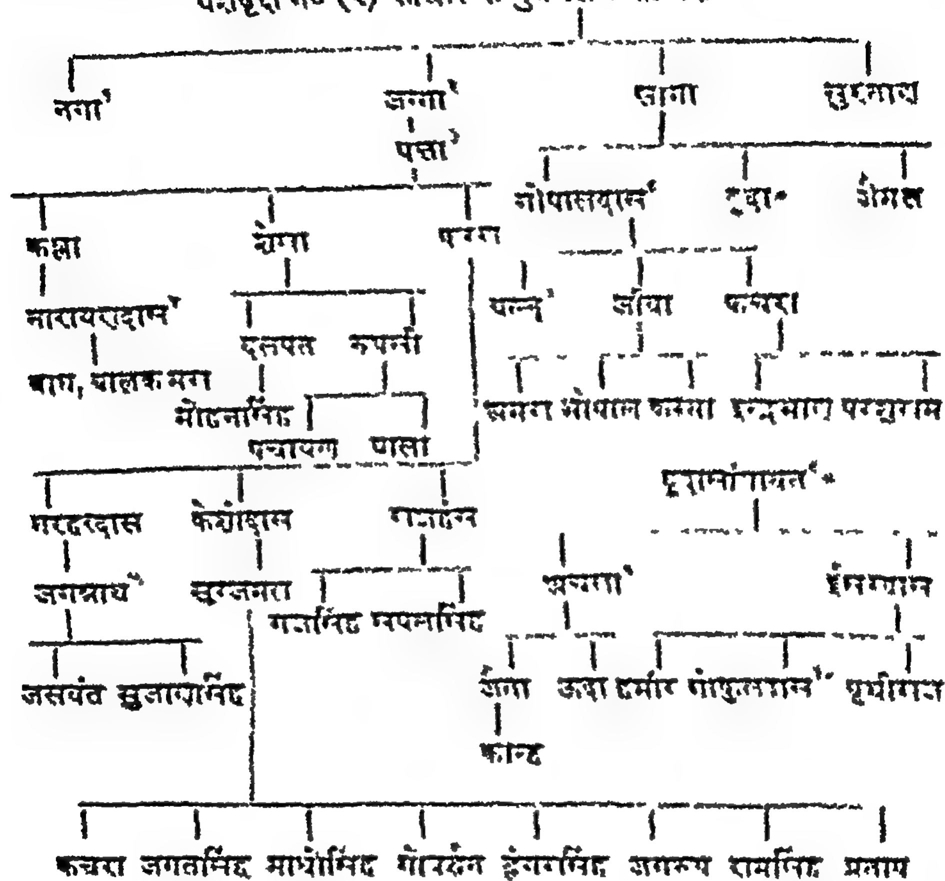
(५) धांलवाड़े काम आया।

(६) ऊंटाले काम आया (राणा अमरसिंह प्रथम के समय में)।

(७) बेगम की जागीर पाई, नानुवै बाघरेके काम आया।

खेतसी रतनसीहोत का पुत्र नाथू, नाथू का लखमल और लखमल का पुत्र वेणीदास था। खेतसी ने लखरा पालीगा को मारा।

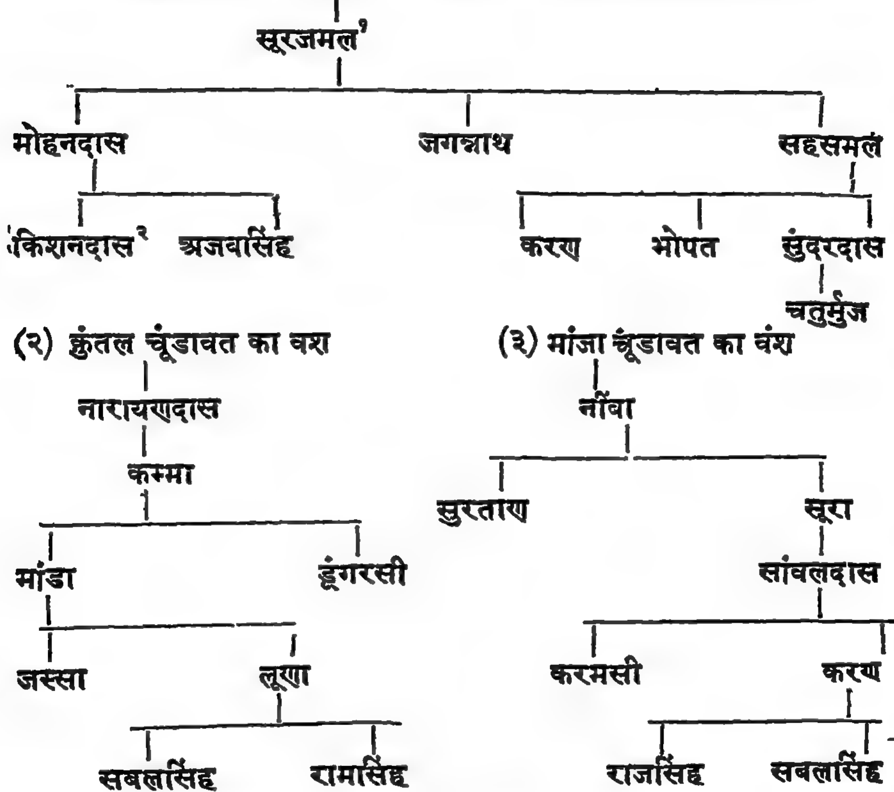
वंशवृक्ष नं० (२) काधल के पुत्र शिव का वंश।



(१) हाडी कर्मेती के मामले में चित्तौड़ पर लड़ कर मारा गया। एक बालक पुत्र था वह जौहर की अग्नि में जल कर मरा। (२) गढ़ीनशी पर ऋतुवाण परमसी ने सांवलदास को मार यहां काम आया। (३) सं० १६२४ (वि०) में चित्तौड़गढ़ पर (अकबर के साके में) काम आया (इनके वंशज ज्ञानसिंह के रावत हैं)। (४) राणपुर के युद्ध में काम आया (राणा अमरसिंह प्रथम के समय)। (५) मानसिंह के गोद गया। (६) पाकरोल के युद्ध में काम आया। (सांगा के पुत्र दूदा के वंशज देवगढ़ के रावत हैं)। (७) (राणा अमरसिंह के) आपत्काल में साथ था, मौत से मरा। (८) राणपुर के युद्ध में मारा गया। (९) मांडल काम आया। (१०) केलवा पट्टे, ४ लाख टकों की रेख।

जयमल सागावत के वेटे—नारायणदास, पूरा, मानसिंह। नारायणदास के वेटे-गोइन्ददास और गोकुलदास। जयमल वखसी के पहाड़ो की लड़ाई में मारा गया (राणा अमरसिंह के) आपत्काल में । गोकुलदास को वसी का पर्गना जागीर में मिला, रेख टका तीन लाख।

वंशवृक्ष नं० (१) सुरताण (कांधल के बेटे) सिंह के पुत्र का।



(४) तेजसी चूंडावत का वेटा रावत सांवलदास था।

---

(१) राणपुर की लडाई में मारा गया।

(२) (गांव) हडां जागीर में, रेख टके बीस हजार की।

खेतसी चूंडावत की वात—सिंथलवाटी के गांव जाखोरे में रत्नसिंह नाथावत नाम का एक राजपूत रहता था, उसके एक कन्या थी, जिसकी सगाई उसके मामा भाना सोनगिरे की मारफत खेतसी (चूंडावत) के साथ हुई थी। पन्द्रह दिन का साहा थापा गया। रावत रत्नसिंह कांधलोत अपने पुत्र खेतसी से सन्तुष्ट नहीं था और न खेतसी के पास कुछ धन था, इसलिये जो ब्राह्मण नारियल लेकर आया उसको विदा में कुछभी न मिला। ब्राह्मण ने बेटी की माता को जाकर कहा कि वर के घर में तो चूहे एकादशी करते हैं। कन्या की माता कहने लगी कि यदि ऐसा है तो मैं अपनी बेटी को लेकर कूए में गिर पड़ूंगी परन्तु ऐसे भूखे घर में उसको कदापि न दूंगी। इसपर (उसी कन्या का सम्बन्ध) सूरजमल वालीसा के पुत्र सगरा के साथ कर वही पन्द्रह दिन के साहे थापे। वालीसे जान की तयारी करने लगे। इधर भाना ने राव रत्नसिंह को कहा कि विवाह का दिन निकट आगया है खेतसी को व्याहने भेजिये। राव बोला "वह खेतसी बैठा लेजाओ!" भाना ने कहा कि चढ़ने को घोड़ा नहीं सो आपका घोड़ा दें। राव ने घोड़ा तो दिया परन्तु भाना को चिता दिया कि इसे तूं अपने पास रखना केवल तोरण-वन्दन के समय वर को सवार करा देना। चालीस जवान साथ लेकर व्याहने चले, घाटा पार कर राणा के गांव में डेरा दिया और तालाव के पास एक वापी पर गोठ के निमित्त बकरे वध किये। भाना और खेतसी दिशा गये थे, खेतसी शौच से निवृत्त हो वापी के पास वट-वृक्ष की डाल पकड़े खड़ा था कि पनिहारियां वहां पानी भरने को आईं, उनमें से एक ने कहा "यह बनड़ा (दुलहा) व्याहने को तो चला परन्तु इसके ऊपर एक दूसरा वर भी वहां आता है तो कन्या का विवाह इसके साथ होगा या उसके?"। यह बात खेतसी ने सुनी और जब भाना आया तो उसे कहा कि "भानाजी बधाई देता हूं!" भाना बोला कि अच्छी सी देना। कहा जिस दुलहन को हम व्याहने जाते हैं उसीके लिये दूसरा वर भी आता है। भाना ने पूछा कि यह किसने कहा तो खेता ने पनिहारी की ओर इशारा किया। भाना ने आवेश में आकर पनिहारी से कहा कि रांड तूं क्या बकती है, तो कहने लगी कि इस गांव में कुम्भार नहीं है, वेह (व्याह में रखने की मटकियां) हमने घड़ी हैं, हमें निश्चय खबर है कि सगरा सूजावत आवेगा। भाना बोला मैं जाकर अपनी बहन से पूछता हूं कि यह क्या बात है। वह अश्वारोही हो गांव में आया। आगे ढोल बज रहा

था, न्योंनिहार आते थे। भाना गया परन्तु उसके साथ किसीने बात तक न की। उसने अपने बहन व बहनोई को जाकर पूछा कि यह क्या मामला है? जान चूंडावतों की आई है। उन्होंने उत्तर दिया कि हम चूंडावतों को बेटी न ब्याहेंगे। भाना कहता है "ठाकुरों! यह बात ठीक नहीं मैं बीच में हूं, मुझे कटार खाकर मरना पड़ेगा।' कन्या का पिता कहने लगा भानाजी! तुम्हारी कटार कुन्द है मैंने अपनी कटार कल ही सुधराई है यह लो'। तब तो भाना बिना कुछ कहे सुने लौटकर खेतसी के पास आया और कहने लगा। भाई, फिर चलो, रोटी बाटी खाकर पीछे मुड़ें। तब खेतसी बोला, भानाजी! दो एक कोस तो इस इराकी पर मुझे भी चढ़ने दो, तोरण तो हाथ ही नहीं आया, फिर मुझे इस (घोड़े) पर चढ़ने का अवसर कब मिलेगा। भाना ने खेतसी का दिल विशेष दुखाना उचित न समझकर घोड़ा दे दिया। वह सवार हुआ, दो जलेबदार बाग थाम्हे चलने लगे। जब वे गाव के गोरवे (समीप) आये तो वहां कुछ स्त्रियां खड़ी हुई थीं खेतसी बोला कि भानाजी! देखो यह कामनियां कहती हैं कि "यो बींद तो रोवनो जाय छै।" मुझे क्यों लज्जित करते हो? तब जलेबदारों ने बाग छोड़दी, इसने घोड़े के एड़ लगाई और दस बीस क़दम आगे जा यह कहते हुए बाग मोड़ी कि "ऐसा कौन है जो मेरी मांग ब्याहे' और घोड़े को सरपट फैंका। भाना हक्का बक्का रह गया, साथवालों को कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं खेतसी को मना लाता हूं। पीछे पीछे भागता हुआ भाना पुकारता जाता है परन्तु सुने कौन? तब तो भाना बोला कि खेतसी तूं तो चला जाता है परन्तु मुझे मरना पड़ेगा। खेता ठहरा और कहने लगा कि आओ मिललेवें और साथ साथ चलें। सूर्यास्त होते एक सरणेर (तुरही बजाने वाला डोम) को भी च्यार फदिये (चांदी का छोटा सिक्का) देकर आगे करलिया। बालीसे ५०० सवारों से ब्याहने आये, तोरण पर पहुंचे, समेला हुआ, तीन प्याले मदिरा के पिए। खेतसी और भाना भी तोरण तले जा खड़े हुए, वर-चेहड़ा सन्मुख आया तब वर के लिये "खमा" का शब्द उच्चारण कियागया। खेतसी बोला "खमामो खेतसी नू" (खमा मुझ खेतसी को) और साथही तलवार म्यान से खींचकर एकही हाथ में बालीसे वर का सिर तन से जुदा कर दिया और चल खड़ा हुआ। बालीसों ने पीछा किया, भाना हाथ आया उसको मार गिराया और खेतसी अछूत निकल गया। बालीसों ने जाना कि खेतसी को मार लिया है परन्तु जब ध्यानपूर्वक देखा तो

शव भाना का था। पीछे फिरे और कन्या के पिता को फटकारा कि हमें पहले क्यों न जनाया कि यह मांग झगड़े की है, अब दुलहन को सगरा के साथ सती करो। कन्या कहने लगी कि " मेरा तो पति खेतसी है यदि वह मरता तो मैं सती होती, सगरा को घींसकर फेंक दो! मेरा उसके साथ क्या सम्बन्ध ! " वालींसे मरने मारने को तयार हुए। लड़की ने देखा कि माता पिता पर आपत्ति आवेगी और एक मेरे जीव के वास्ते कई आदमियों का कट्टा हो जावेगा, तब वह सगरा के साथ जलमरी और झगड़ा मिटगया।

बात राणा कुम्भा के चित्त भ्रम होने की–कोई साहूकार समुद्र यात्रा करने गया था। उसने एक मृतक शरीर देखा और वह बात पीछी राणा को आकर कही, तब राणा बहका हुआ सा हो गया और अण्डबण्ड बातें करने लगा। उन दिनों वह कुम्भलमेरु पर रहता था, जहां मामाकुण्ड नामका एक स्थान है और मामा नामही का एक वट वृक्ष। उसके नीचे राणा अकेला बैठा हुआ था कि उसके पाटवी पुत्र ऊदा ने वहां आकर कटार से अपने पिता का काम तमाम कर दिया और आप राजसिंहासन पर बैठा। इस घटना से राज के सब बड़े बड़े उमराव अप्रसन्न होकर अपने अपने घर बैठ गये, दर्बार में न जावें और अपने भाई बेटों को चाकरी में भेज देवें। राणा कुम्भा का छोटा कुंवर रायमल उस वक्त ईडर में था, उसको सर्दारों ने गुप्त रीति से बुलाया और ऊदा के पास रहनेवाले अपने भाई बेटों को सूचना दी कि तुम किसी ढब से शिकार के मिस ऊदा को बाहर ले निकलो। ऐसा ही हुआ, ऊदा गढ़ से नीचे उतरा, पीछे से सर्दारों ने रायमल को गढ़ पर लेजाकर पाट बिठा दिया और बाजे बजवा कर फिर अपने भाई बेटों को भी ऊदा के पास से बुला लिया। उसे कहला भेजा कि "तूं काला मुंह करके चलाजा, नहीं तो रायमल तुझे मार डालेगा"। ऊदा कई दिन सोजत में जाकर ठहरा और कुछ काल तक बसी के देहुरे (मन्दिर) में रहा। ऐसा भी सुना है कि उसने कुंवर बाघा (राठोड़) की बेटी के साथ विवाह किया और फिर बीकानेर चला गया और वहीं मरा। उसके वंश का कोई है तो बीकानेर की तरफ है[1]।

(१) कर्नल टाड लिखता है कि ऊदा राज्य पीछा लेने को दिल्ली के (ख्यातों में मांडू लिखा है) बादशाह के पास गया और उसे अपनी बेटी ब्याह देना स्वीकारा, परन्तु ज्योंही दुर्गाह के बाहर निकला कि उसपर बिजली गिरी जिससे वह वहीं मर गया।

दोहा—ऊदा बाप न मारजे, लिखियो लाभे राज।
देस बसायो रायमल, सर्यो न एको काज॥

राणा कुम्भा ने कुम्भलमेरु बसाया तब बहुत लोग वहां आन बसे, बड़ी बस्ती हो गई। कहते हैं कि वहां ७०० तो मंदिर थे जहां सात सौ झालर बजती थी और सातसौ घर ही श्रीमाली ब्राह्मणों के थे, जिनमें से प्रत्येक के घर पर ७०० थालियां थीं। राणा उदयसिंह भी कई दिन तक कुम्भलगढ़ पर रहा था। राणा कुम्भा के पुत्र-१ ऊदा (उदयकर्ण), २ नंगा, जिसके वंशज नंगावत, ३ गोयंद, इसके सन्तान नहीं हुई, ४ गोपाल भी निस्सन्तान मरा, और ५ रायमल[1]।

(आक्स फॉर्ड एडीशन जिल्द १ पृष्ठ ३३६)। यह कथा पीछे से जुड़ी जान पड़ती है, क्योंकि राजपूत राजाओं के साथ विवाह संबंध अकबर ने जोड़ा था, पहले नहीं था।

(१) महाराणा कुम्भा सं० १४६० वि० (स० १४३३ ई०) में गद्दी बैठे, और अपने राज्य, ऐश्वर्य व बल प्रताप में यहांतक वृद्धि की कि उस वक्त उत्तरी हिन्दुस्तान में दूसरा कोई क्षत्रिय राजा उनकी बराबरी का न था। दिल्ली मालवा गुजरात के बादशाहों से अनेक लड़ाइयां लड़कर विजयी कुम्भाजी ने अपने आतङ्क की छाप उनके हृदयपट पर भलीभांति अंकित करदी और उनकी बादशाहत के कई प्रदेश भी जीतकर अपने राज्य में मिलाए। हिन्दू सुरत्राण व राजगुरु की पदवी प्राप्त की। उनकी सेना में एक लक्ष से अधिक सवार पैदल और कई सौ जंगी हाथी रहते थे। राजपूताने के राजा राव तो क्या किन्तु दिल्ली मालवे और गुजरात के प्रबल मुसलमान सुलतान भी सदा उनके साथ मित्रता जोड़ने ही के इच्छुक रहते थे। कई आपत्तिग्रस्त राजा महाराजा आदि आकर उनकी शरण लेते थे। सच तो यह है कि मेवाड़ राज्य को उन्नत दशा में लाने वाले महाराणा कुंभा ही थे, उन्हीं के पराक्रम व नीति निपुणता से महाराणा सांगा तक राज्य का बल प्रताप प्रतिदिन बढ़ता ही गया। महाराणा कुंभा जैसे विजयी वीर व प्रतापशाली थे, वैसे ही अपूर्व विद्वान्, साहित्य संगीत के ज्ञाता और पूर्ण धर्मनिष्ठ भी थे। अनेक महल मंदिर गढ़ कोट और देवालय बनवाये और संस्कृत भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की और करवाई। चित्तोड़गढ़ पर गगनचुम्बित विशाल जयस्तम्भ उनकी उज्वल कीर्ति का अद्वितीय स्मारक और पौराणिक हिन्दू देवताओं की मूर्तियों का अनुपम भण्डार है। कुंभाजी का इतिहासप्रेमी होना इसीसे सिद्ध होता है कि महान् खोज व परिश्रम के साथ अनेक प्राचीन शिलालेखों को पढ़वाया और उनके आधार पर अपने वंश के प्राचीन वृत्तांत को बड़ी बड़ी शिलाओं पर अंकित करवाया। फारसी तवारीखें भी उनके वीर चरित्रों से रंगी हुई हैं। यहां केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि अपने ३५ वर्ष के राजत्वकाल में कुंभाजी ने मेवाड़ राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया था। अफसोस कि ऐसे शूरवीर साहसी प्रतापी पराक्रमशील और विद्यानुरागी पूज्य पिता को उनके ज्येष्ठ पुत्र ने राज्य लोभ से मारकर सदा

राणा रायमल्ल—चित्तोड़ पाट बैठा । इसके पुत्र बड़े बलाय (शूरवीर) हुए । उनके नाम—१ उडणा पृथ्वीराज, २ जयमल, ३ जैसा, ४ सांगा (संग्रामसिंह), ५ किसना, जिसके वंश के किसनावत, ६ बघा निस्सन्तान मरा, ७ देवीदास निस्सन्तान मरा ८ पत्ता ९ रांपा निस्सन्तान मरा ।

के लिये कलङ्क का टीका ही अपने मस्तक पर न लगाया किन्तु साथ ही मेवाड़ की उन्नति को भी बड़ा धक्का पहुंचाया ।

(१) महाराणा रायमल अपने भाई (उदयकर्ण) के वैरभाव के कारण ईडर जा रहे थे, वहीं से बुलाये जाकर सं० १५३० वि० (सन् १४७३ ई०) में राज सिंहासन पर बिठाए गए । यह भी अपने पिता के समान ही शूरवीर और प्रतापी रहे । उदयकर्ण के बेटे सहसमल व सूरजमल को साथ लिये मालवे का सुलतान गयासुद्दीन मेवाड़ पर चढ़ आया था । रायमल ने उसको परास्त कर भगाया जिसकी साक्षी का प्राचीन गीत—

चढ़ै पूर पावस चढ़ै रायमल्ल रण चढ़ै, नवोगाराम से बोढ रमणा ।
बढ़े बनास तू काय रातै बरण, जळ अधक पूछियो गंग जमणा ।
कोद भड़ कचरिया रायमल कोपिये, सुपण मोटी कर कुम्भ जायो ।
रकतड़ै रुधर रणमांम रहियो नहीं, झपट नदी जळ मांह आयो ।
गजड़ मेवाड़ रायजीप मालव तणा, तुरक घण्या रदाविया रायमल तीर ।
असुर घड़ तोड़ धोड़ाल बुड़ ऊपरे, नदी नदियां मिलै रातडो नीर ।
हुवै हिन्दू घणा तन भेटू हुवै, सूरा उपकट सगराम मातो ।
बयो सीसोदियो मोह आई घडा, रुधिर बरण मिळै तण धीररातो ॥

भावार्थ—गंगा जमना बनास नदी से पूछती हैं कि तेरा जल रक्त वर्ण का क्यों हुआ ? बनास उत्तर देती है कि कुम्भा के पुत्र रायमल्ल ने रणखेत में मालवे के सहस्रों धारों को मारे उनके तन से निकला हुआ रुधिर रणखेत से बहकर मेरे जल में आन मिला इसलिए यह रक्तवर्ण हुआ है ।

मालवे का सुलतान अपनी हार से लज्जित होकर फिर मेवाड़ पर आने का विचार करने लगा । इसके पूर्व उसने अपने मुख्य सेनापति जफरखां को मेवाड़ का पूर्वी भाग लूटने को भेजा था । इस लूटमार के समाचार सुनते ही महाराणा रायमल्ल ने आमेर, रायसेन, चन्देरी, नरवर, बून्दी, आमेर और अजमेर आदि के राजा व रावों को साथ ले ऊपर की ओर अपनी बाग उठाई । मांडलगढ़ के पास युद्ध हुआ, जफरखां के साथ के कई नामी सर्दार मारे गये और वह हार खाकर भागा । महाराणा ने मांडू तक पीछा किया और खैराबाद लूटा । सुलतान गयास ने एलची भेज नजराना देकर सुलह करली । यह वृत्तांत 'रायमल रासे' में लिखा है । इस युद्ध की साक्षी का प्राचीन कवित्त,—

रायां गुर रायमल्ल, खान जाफर निरमुरण ।
रायां गुर रायमल्ल, सबल राणा दर सुरुण ।

(कुंवर) पृथ्वीराज उग्र प्रकृति का था, उसने टोडा और जालौर एक ही दिन में मारे थे। जब यह बात बादशाह के कान तक पहुंची तो उसने उसका नाम 'उडणा पृथ्वीराज' रक्खा। उसने कई लड़ाइयों में विजय प्राप्त की थी। वीठू ब्राह्मण ने पृथ्वीराज के विषय में यह बात कही कि राणा रायमल के राज में माडू के बादशाह का मेवाड़ में जिजिया (एक कर विशेष जो हिन्दुओं से लिया जाता था) लगता था। राणा ने तो सयाना होने पर भी उसपर कुछ ध्यान न दिया परन्तु एक समय पृथ्वीराज आखेट रमण को गया था, मार्ग में एक पनिहारी जलभरा घट सिरपर धरे आती हुई मिली। अनायास पृथ्वीराज की टक्कर लगने से घड़ा गिरकर फूट गया। गोडवाड़ के लोग ओछबोले (वाणी के असभ्य) तो होते ही हैं (पृथ्वीराज को गोडवाड़ का परगना राणा ने दे रक्खा था और वह वहीं रहा करता था)। पनिहारी ने कहा "कुंवरजी! मेरा घड़ा क्या फोड़ा, ऐसे तलवार के धनी हो तो मेवाड़ का जिज़िया छुड़ाओ"। पास खड़े हुए दूसरे मनुष्यों ने स्त्री को रोककर कहा कि ऐसे मत बोल! पृथ्वीराज ने साथवालों से पूछा "ठाकुरों! यह पनिहारी क्या कहती है"? किसीने उत्तर दिया, यह कहती है कि सारी मेवाड़ पर माडू के बादशाह का जिज़िया लगता है उसको कुंवरजी तुम क्यों नहीं छुड़वाते। कुंवर ने प्रश्न किया कि जिज़िया लेने वाले कौन हैं? कहा ये पातशाही चाकर हैं, दीवाण के चाकर नहीं, और पाटण कोट में रहते और कर उगाहते हैं। दीवाण उसवक्त कुम्भलगढ़ पर रहते थे। कुंवर के मनमें वह बात खटक गई, जब मृगया कर पीछा आया तो साथवालों से कहा कि अब तुर्कों को मारेंगे, सावधान होजाओ! सबने अर्ज़ की कि इस विषय में पहले दीवाण से अर्ज़ करलेना उचित है। कुंवर बोला,

---

रावो गुर रायमल, गाम नौमां गुढ़ढोथा।
राया गुर रायमल, शत्रु मोर जम लोधा।
रायमल राण राणा तिलक, हिंदु जगमें कारत फिरैं।
इण भांत सुकव जस उच्चरैं, रायमल्ल राणा स्रिरै॥

उपरोक्त पुत्रों के अतिरिक्त उनके पुत्र कल्याण, पत्ता, (प्रतापसिंह) रामसिंह, आदि थे और दो राज कुमारियां दमोदरकुंवर और हरकुंवर थीं।

इन्हीं महाराणा के समय में एकलिंगजी के मन्दिर का जीर्णोद्धार होकर वर्तमान चौमुखी मूर्ति स्थापन की गई।

बहुत ठीक, हम दीवाण के कानपर यह वात डाल देंगे, तुम तो मारो। कोट में पहुंचते ही राजपूत तुर्कों पर टूट पड़े और सबको धराशायी कर दिये। जब यह खबर राणा को पहुंची तो वे पृथ्वीराज से बहुत ही नाराज़ हुए। कुंवर ने अर्ज़ की "दीवाण! आपने बहुत दिनों तक पृथ्वी भोगी, अब हम सयाने हुए हैं, आप विराजे रहें, हम देश की रक्षा करेंगे[1]।"

मांडू के वादशाह का उमराव लल्लाखान पृथ्वीराज का नाम सुनकर नींद से उभक पड़ता था और उसी के आधीनस्थ जन जिज़िया उगाहने आये थे जिनको पृथ्वीराज ने मारा। यह पुकार लल्ला के पास पहुंची वह तुरन्त चढ़ धाया और मेवाड़ के गाव मगरोप व आकोला लूट लिये तथा लोगों को बन्दी बनाये। फर्याद पृथ्वीराज के पास आई, वह सूर्यास्त के समय कुम्भलनेर से सवार हुआ सो दिन निकलते निकलते टोडे पहुंच गया (जो लल्ला की जागीर में था) और खान को मारलिया[2]। फिर साथ वालों से पूछा कि कहो अब सूरजमल खींवावत को कैसे मारें[3]? किसी ने कहा कि सूरजमल प्रति अष्टमी के दिन ऊंटाले गांव में चारण (जाति) देवी के दर्शन करने आता है।

(१) यह जिजिया लगने की वात चारणों की कही हुई विश्वासनीय नहीं क्योंकि फारसी तवारीखों में कहीं इसका ज़िकर तक नहीं मिलता है। यदि ऐसा होता तो मुसलमान इतिहास लेखक कभी उसके लिखने में नहीं चूकते। इसके अतिरिक्त जिस राणा रायमल ने मालवे के सुलतान गयासुद्दीन की पीठ पर विजय का शब्द लिखा, मालवे के प्रसिद्ध सेनापति जफरखां को परास्त कर रणभूमि से भगाया, मालवे का इलाका लूटा और सुलतान ने हार मान कर सन्धि करली, वह महाराणा माडू के वादशाह को अपने देश में जिजिया उगाहने दे, इस बात को कौन मान सक्ता है?

(२) इसके लिये एक कहावत भी प्रसिद्ध है ' भाग लला पृथिराज आयो, सिंह के साथरै स्याल ब्यायो "।

(३) सूरजमल (खेमकर्ण का पुत्र और राणा मोकल का पौत्र) देवलिये प्रताप गढ़ वालों का मूलपुरुष था। राणा ने खेमकर्ण को बड़ी सादड़ी जागीर में दी थी। पिता का देहान्त होने पर सूरजमल सादड़ी का स्वामी हुआ और राणा से खसाखस करने लगा। पृथ्वीराज ने युद्ध में सूरजमल को घायल किया और सादड़ी छीनली, तो सूरजमल के साथी उसे देवलिये की ओर लेभागे। इसका विशेष वर्णन राजप्रतापगढ़ के इतिहास में मिलेगा।

कर्नल् टॉड लिखता है कि सूरजमल ने राणा लखा के पौत्र (और अजा के पुत्र) सारंगदेव से साजिश की (सारंगदेव के वंशज कानोड़ के राव मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के उमरावों में है) और मालवे के सुलतान मुजफ्फरशाह को चित्तोड़ पर चढ़ा लाया। (मालवे में तो मुजफ्फरशाह नाम का कोई सुलतान नहीं हुआ, शायद वह माडू का

बात (सोलंकी) राव सुरताण हरराजोत की—राव सुरताण टोड़ारी छोड़कर राणा रायमल के पास चित्तोड़ आया, राणा ने बदनोरगढ़ का सारा पर्गना उसे जागीर में दिया। कुंवर पृथ्वीराज का विवाह राव सुरताण की पुत्री तारादेवी के साथ हुआ था। पृथ्वीराज के मरने पर राणा ने जयमल को युवराज पद दिया। पृथ्वीराज रायमल के जीते जी ही विष प्रयोग से मर गया था। जयमल राव सुरताण से बहुत बिगड़ा हुआ था। रावने उसको राजी करलेने में बहुत परिश्रम किया, परन्तु सब निष्फल। एक बार उसने अपने साले व कामदार सांखला रतना को कुंवर जयमल के पास भेजा। रतना ने बड़ी नम्रता के साथ बातचीत की जिसपर भी जयमल ने कहा कि "तेरी बहन को बनियों के घोड़ों की पूंछ से बंधवाऊंगा"। तब तो रतना को भी क्रोध

सुलतान नासिरुद्दीन हो जिसने सं० ६०६ हि० (स० १५०३ ई०, सं० १५६० वि०) में चित्तोड़ पर चढ़ाई की थी। फारसी तवारीखों में तो युद्ध में राणा का हार खाना और नजर नजराना देकर सुलह करलेना लिखा है, परन्तु कर्नल टॉड के लेखानुसार राणा के ८२ जख्म लगे और वह भागने ही को था कि अचानक पृथ्वीराज गोडवाड़ को मद्रा सोलंकी के सुपुर्द कर एक हजार चुने हुए सवारों सहित ऐन मौके पर आन पहुंचा और तुर्क सैन्य पर धावा कर दिया। सूरजमल भागा, सारंगदेव मारा गया और सुलतान की सेना तीन तेरह हो गई।

गोडवाड़ में नाडलाई गांव के आदिनाथ (जैनियों के प्रथम तीर्थंकर) के मन्दिर की प्रशस्ति से जाना जाता है कि राणा श्री रायमल के राज्य काल में गोडवाड़ पर महाकुंवर श्रीपृथ्वीराज अनुशासन करता था।

सिरोही के राव लाखा ने सोलंकी भोज को मार कर उसकी जागीर छीन ली तब भोज का बेटा रायमल और पोता शंकरसी आदि पृथ्वीराज के पास आन रहे। मादड़ेचों से देसूरी छीनकर राणा ने सोलंकियों को जागीर में दी। भोज के वंशज रूपनगर के सोलंकी ठाकुर मेवाड़ के जागीरदार हैं देसूरी गोडवाड़ के साथ मारवाड़ राज्य के अधिकार में गई।

पृथ्वीराज की बहिन आनन्दकुंवरी का विवाह सिरोही के राव जगमाल देवड़े के साथ हुआ था। राव ने राणी सीसोदणी के साथ कठोरता का बर्ताव किया जिस पर पृथ्वीराज ने सिरोही जाकर राव को यथोचित दण्ड दिया। उसका बदला लेने की ठान प्रकट में राव ने पृथ्वीराज से मित्रता की और विषमिली पौष्टिक गोलियें दीं जिनके खानेसे कुंवर की मृत्यु हुई।

कुंवर पृथ्वीराज का एक पुत्र भैरूसिंह सं० १५८६ वि० में गुजरात के सुलतान बहादुरशाह के पास जा नौकर हुआ था।

आया और कुछ बोल उठा। कोप में भरा जयमल बदनोर पर चढ धाया। उसने पहले खबर के वास्ते गुप्तचर भेजे थे, उन्होने आकर कहा कि गांव तो सुनसान और ऊजड़ हो गया और राव सुरताण अपने परिवार व मालमते को लेकर निकल भागा है। उस वक्त रात्रि होगई थी, जयमल के सर्दारों ने कहा कि अभी तो यहीं ठहर जाइये, प्रभात में चलकर सुरताण के गाड़ों को जा लेंगे। जयमल तमक कर बोला कि मशालें जलाकर हाथियों पर लेलो और पीछा करते हुए चले चलो। आप भी बग्गी सवार मशालों के प्रकाश में गाड़ों के खोज देखता हुआ बढ़ा और बदनोर से सात कोस गांव अंटाली के पास सुरताण को जा लिया। तब राव की पत्नी सांखली भयभीत हो कर कहने लगी "भाई रतना! बंध पकड़ीजता दीसे है (अर्थात् क़ैद हो जावेंगे)"। रतना ने उत्तर दिया चित्तोड़ के धणी प्रतापशाली है, जो चाहेंगे सो करेंगे। इतनी बात कह उसने अमल का मावा चढ़ाया, घोड़े का तंग कसकर खींचा, और सवार हो अकेला कटक की ओर चला। धीरे धीरे राणा की फौज में जा मिला। आधी रात का समय था जयमल बग्गी सवार गांव आकड़सादे और सथाणे के बीच आ रहा था, मेवाड़ के जूझार सब ऊंघते जाते थे। जब जयमल की गाड़ी मशालों के प्रकाश के साथ निकट आई तब रतना अपने अश्व को खुरी कर गाड़ी के बराबर लेगया और जयमल को सम्बोधन कर कहा–"राज! (कुंवर साहब) सांखला रतना मुजरा करता है। और साथही अपना बर्छा उसकी छाती में झोंक दिया। भाला छाती फोड़ कर पार निकल गया, परन्तु उसे खींचकर दूसरी और तीसरी चोट भी करदी, जयमल गिरा और कार्य सरा। साथवालों ने घेर कर रतना को भी मार लिया और फौज वहीं से पीछी फिर गई। आकड़सादे व सथाणे के बीच कुंवर के शव का अग्निसंस्कार किया गया।

बदनोर में पहले मेर व गूजरों की बस्ती थी अब वहां के गांवों में जाट रहते हैं। उन्होंने मुझ से (मुहणोत नैणसी से) कहा कि हम राव सुरताण की बसी के हैं। साखी का छन्द—

" समचढ़ सांखला जुड़ पाख, जैमल प्राण पोरस दाख।
रावरै दल तुहिज रूपक, रूप रतना राख[1] ॥

(१) कर्नल टॉड ने लिखा है कि राव की धरती पठानों ने छीन ली थी, राव सुर-ताण ने प्रण किया था कि जो सर्दार मुझे पठानों से अपनी भूमि पीछी दिलवादे उसीके

जयमल के मारे जाने पर राणा ने अपने पुत्र जैमा (जयसिंह) को टीकायत किया था, परन्तु जब राणा रायमल रोगग्रस्त हुआ और देखा कि जैसा राज्य के योग्य नहीं है, और राजपूत भी उससे राजी नहीं, तब उसने सांगा को बुलाया और वही अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ।

राणा सांगा (संग्रामसिंह) रायमल का—पृथ्वीराज व जयमल के मरने पर टीकायत हुआ, बड़ा भाग्यशाली और प्रतापी महाराजा था, उसने पहले तो बहुत आपत्तियां उठाईं परन्तु पाट बैठने के पीछे उसका प्रताप बहुत बढ़ा, बहुत से देश जीते, ऐसा (प्रतापी) राणा चित्तोड़ पर दूसरा कोई नहीं हुआ। मांडू के बादशाह (महमूद खिलजी) को दो बार क़ैद करके मुक्त किया और पीलेखाल तक (बयाने के पास) अपने राज्य की सीमा बढ़ाई। वहां जाकर बाबर बादशाह के साथ युद्ध किया परन्तु हार खाई। उसने चन्देरी भी फतह की थी, बाबोगढ़ के बाघेले मुकुन्द से उसकी लड़ाई हुई, मुकुन्द पराजित होकर भागा और उसके बहुत से हाथी राणा के हाथ आये (बाधोगढ़ के युद्ध का हाल नैणसी के लेख के सिवा और कहीं नहीं मिला)। यह बात खिड़िया चारण खींवराज ने कही। गीत राणा सांगा का—

आयो आगरै जगड़ की जवनपत, समहर संग सपड़ाणो।
दिलड़ी तकी धराधक धूणै, रोस चईनों राणो।
पारंभ मार पसरिया परखंड, अत साहस ऊलटियो।
ढिलड़ी जोय जपै धवळागिर, हिंदवां राणो हठियो।
नरवर गोपाल निजलते, समपै सिखर सवाई।
खुण खुरताण झुकीनी सामे, मुकंद तणै घर माही।
मालतणो सझियो मोगर थट, लोहतणो रसलागो।
पूरवदेश भगाण पड़ैना, भोतण पड़्यो भागो।

साथ अपनी पुत्री तारादेवी का विवाह कर दूगा। जयमल ने राव की प्रतिज्ञा पूरी न करते गुप्त रीति से तारादेवी के साथ संबंध जोड़ना चाहा, इस पर बिगड कर रावने जयमल को मार डाला।

(१) यह गीत अशुद्ध प्रतीत होने पर हमने जोधपुर राज्य के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसादजी के पास इसे भेजा था, तो उन्होंने इसे सुधरवा कर इस भांति होना बतलाया—

राणा सांगा का विवाह (मारवाड़ के) कुंवर वाघा सूजावत की पुत्री धनाई (धनवाई) से हुआ था जिसके गर्भ से राणा रत्नसिंह ने जन्म लिया। सांगा का जन्म सं० १५३९ वि० वैशाख बदि ९, गद्दीनशीनी सं० १५६६ जेष्ठ सुदि ५, और सं० १५८४ कार्तिक शुक्ला ५ को सीकरी के खेत में बाबर बादशाह से लड़ाई हारने के उपरान्त थोड़े ही काल तक जीया। (यह युद्ध सं० १५८४ वि० के चैत सुदि १४ को हुआ था।)

रत्नसिंह टीकायत के अतिरिक्त विक्रमादित्य, उदयसिंह, भोजराज, (कहते हैं कि राठोड़ मीरांबाई का विवाह इसके साथ हुआ था) और कर्ण नामी और भी पुत्र राणा (सांगा) के थे। (सुप्रसिद्ध मीरांबाई जिसने भक्तिभाव के कारण राजपूताने ही में नहीं वरन सारे भारतवर्ष में प्रख्याति प्राप्त की और जिसके पद व भजन आजतक देश भर में गाये जाते हैं राणा सांगा के पुत्र भोजराज को ब्याही गई थी, न कि राणा कुम्भा को जैसा कि कर्नल् टॉड ने लिखा है)।

राणा सांगा का एक विवाह बूंदी के हाड़ा राव नर्बद की कुंवरी कर्मवती के साथ हुआ था, जिसके पेट से विक्रमादित्य और उदयसिंह ने जन्म लिया। राणा का प्रेम हाडी पर विशेष था। एक दिन राणी ने दीवाण से अर्ज़ की कि दीवाण घणा वर्ष सलामत रहे, परन्तु विक्रमादित्य और उदयसिंह बालक हैं। रावले (आपके) टीकायत और राज्य का स्वामी रत्नसिंह है इसलिये दीवाण विराजे हैं जितने इन बेटों का भी कुछ बन्दोबस्त कर देवें तो अच्छा है। राणा ने पूछा कि क्या चाहती हो? अर्ज़ की कि रत्नसिंह को पूछ कर इनको रण-

---

आखे आगरो जगट की जवनपुर, समर सांगे सपडायो,
दिलड़ी तकी धराधक धूजे, रोस चढ़ियो रायो।
पारम्भपूर पसरियो परखयड, अतिसाहस ऊलटियो,
दिलड़ी जोय जपे धवळागिर, हिंदवां रायो हठियो।
(तीसरे चरण के पहले दो पदों का अर्थ कुछ नहीं बैठता है)
सुण सुरताण न कीधा सागे, मेछ तणा घर मांही।
मोकल हर सझियो मोगर थट, लोह तणें रस लागो,
पूरब देस भगाण पढन्ता, भीतण पवचो भागो॥

(भावार्थ)—आगरा दिल्लीसे कहता है कि सांगा आया, दिल्ली की धरा धूजती है, राणा के रोस से पराई धरती में पूरा आरम्भ फैला, और साहस बढा, राणा हठ पकड़े हुए हैं। सुलतान के साथ सांगा ने जो किया उसे सुण कि लोहे के समान कठोर सैन्य सजकर मोकल के प्रपौत्र के आते ही पूर्व देश में भगाणा पढत पादशाह डरकर भागा।

थम्भोर जैसी कोई ठौड़ दी जावे और हाड़ा सूरजमल (राणी का भाई) जैसे राजपूत को इनका हाथ पकड़ा दिया जावे (अर्थात् शिक्षक व रक्षक बनाया जावे)। राणा ने वह अर्ज स्वीकारी। प्रभात होते ही रत्नसिंह को बुलाकर कहा कि विक्रमादित्य व उदयसिंह तुम्हारे छोटे भाई हैं सो इनको कोई ठिकाना देना चाहिये। राणा सांगा एक महा शक्तिशाली राजा था, इसलिये रत्नसिंह कुछ भी न बोल सका, यही अर्ज की कि जो दीवाण ने विचारी हो वही जागीर दीजिये। राणा ने कहा कि रणथम्भोर दिया जावे। रत्नसिंह ने उत्तर दिया बहुत खूब। विक्रमादित्य व उदयसिंह को रणथम्भोर का मुजरा करने की आज्ञा हुई, उन्होंने मुजरा किया, उस वक़्त हाड़ा सूरजमल राणा के दर्बार में हाजिर था। राणा ने उससे कहा " हम विक्रमादित्य उदयसिंह को रणथम्भोर देकर तुम्हारी गोद में रखते हैं। सूरजमल ने अर्ज की कि मुझे इससे क्या वास्ता, मैं तो चित्तोड़ के धणी का चाकर हूं। तब राणा ने आग्रहपूर्वक कहा कि ये तुम्हारे दोनों भाञ्जे बालक हैं और बूंदी से रणथम्भोर निकट भी है, तुम भले राजपूत हो, इससे इनका हाथ तुमको पकड़ाते हैं।

सूरजमल बोला दीवाण की आज्ञा शिरोधार्य्य, हम तो हुक्म के चाकर हैं, परंतु दीवाण के सौ वर्ष पूरे हुए पीछे रत्नसिंह हमको मारने को तैयार होंगे, इसलिये वे हमको फर्मा देवें। राणाजी रत्नसिंह की ओर देखने लगे, उसने तुरन्त सूरजमल को कह दिया कि दीवाण फर्मावें वह मंजूर कर लो। ये मेरे भाई हैं, और तुम हमारे सगे हो, मैं कदापि तुमसे बुरा नहीं मानूंगा। तब सूरजमल ने राणा की आज्ञा स्वीकारी और साथ जाकर रणथम्भोर में विक्रमादित्य और उदयसिंह का अमल कराया[1]।

---

(१) नैणसी ने सांगाजी का हाल बहुत ही थोड़ा लिखा है। सचतो यह है कि इन महाराणा ने मेदपाट को उन्नति के ऊंचे से ऊंचे शिखर तक पहुंचा कर हिन्दूपति की पदवी को सार्थक कर दिया था। मालवे, गुजरात और दिल्ली के बादशाहों से कई युद्ध कर उन्हें रण भूमि से भगाये, सुलतान महमूद मालवी को पराजित कर घायल हुए को बन्दी बना चित्तोड़ लाये, और वहां तीन मास बन्दीगृह में रख उसके घावों का इलाज कराया और चंगा होने पर मांडू का तख़्त उसे पीछा दे सलामती के साथ अपनी राजधानी में पहुंचाया। हाथ में आए हुए शत्रु पर ऐसी दया दिखलाना महाराणा सांगा की शूरवीरता और उनके पूर्ण उदार हृदय का परिचय देता है। सच तो यह है कि यदि सांगाजी की जंगी कार्रवाइयों

राणा रत्नसिंह—कुंवर वाघा (राठोड़) का दोहिता धनाई के पेट का, हाडा सूरजमल नारायणदासोत (बूंदी के राव) से लड़कर मारा गया । यह

का वर्णन सविस्तर किया जावे तो एक स्वतन्त्र पुस्तक तैयार होजावे । राज्य लोभ से पिता पुत्र, और भाइयों भाइयों में परम शत्रुता बंध कर परस्पर मारकाट होना या अनेक छल छिद्र करके एक दूसरे के प्राणों के गाहक बनजाना तो स्वच्छन्द और स्वेच्छाचारी निरंकुश नरनाथों में एक प्रथा सी चली आती है । तदनुसार पृथ्वीराज, जयमल और सांगा में भी बैर भाव उत्पन्न होकर पृथ्वीराज ने सांगा को मारना चाहा, परन्तु उनके काका सूरजमल के बीच में पड़जाने से सांगा केवल पांच च्यार घाव खाने और एक आंख खोने के उपरान्त वहां से बच कर भागा, और च्यारभुजा का मार्ग पकड़ गांव सेवन्तरी में राठोड़ बीदा जैतमालोत के पास पहुंचा । बीदा वहां रूपनारायण की यात्रा को आया था, और पीछा लौटने को तैयार था कि उसने सांगा को पहचान कर अपने कसे हुए अश्व पर उसे सवार करा आगे को रवाना कर दिया । इतने में जयमल पीछा करता हुआ आन पहुंचा, बीदा ने जयमल को रोका, लड़ाई हुई और बीदा मारा गया । सांगा अजमेर में श्रीनगर के पवार राजा करमचन्द के पास जा ठहरा ।

उस वक्त भारतवर्ष में दोही बड़े महाराजाधिराज थे-अर्थात् उत्तर में सांगा, और दक्षिण में बीजानगर के यादव । महाराणा सांगा ने मुसलमान सुलतानों को कैद कर छोड़े जिसकी साक्षी के कई प्राचीन गीत हैं उन में से दो एक यहां उद्धृत किये जाते है ।

इबराहिमन (लोदी बादशाह) पूरब दिस उलटे
पछम मदाफर (मुजफ्फर गुजराती) न दे पयाण ।
दखणी महमदसाह (मालवी) न दौड़े,
सांगो दामण त्रहू सुरताण ।
साहमेक दस येकन सामै, बिदसम सामै हेक बण ।
सुभल राण रायमल सभ्रम, त्रेबलिया पतसाह त्रण ।
साई सूरा गमण न सामै, लीहन को लोपवै पग ।
आपाहरै बलाक्रम बांध्या, पतसाहां त्रहु तणा पग ॥
मिण महमद बांधियों, सुजड़ सहसेन सघारे ।
मुदाफर मय मले, अब आवियां उतारे ।
गुढापह गमियां, भाग लीधा निम्बोड़े ।
गोपालो अमगल, एह छूटे तुहोड़े ।
रणथम्भ लेण रायमल तनय, बियोन की बोलैनवल ।
संग्राम तुहिज साधै समर, चदेरी चीतोड़ गल ॥

सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की चढ़ाई ने मेवाड़ को जबर्दस्त धक्का पहुंचाया था, परन्तु वीर राणा हमीर ने तुर्कों से अपना देश पीछा लेकर उस पौधे को नवांकुरित किया ।

७

लड़ाई मैंनरोड़ के पास गांव किंवाजणे में हुई थी जो चित्तोड़ से २२ कोस, बूंदी से १० कोस, महनाल से ६ कोस और मैंनरोड़ से दस कोस पर है।

राणा सांगा ने अपने छोटे पुत्र विक्रमादित्य को रणथम्भोर जागीर में देकर हाडा सूरजमल को उसका रक्षक (गार्डियन्) नियत किया था। राव नारायणदास के मरने पर जब सूरजमल गद्दी बैठा तब लाललश्कर नामी घोड़ा रु० २००००) का और मेघनाद नामी हस्ती रु० ६००००) का राणा ने उसके लिये टीके में भेजे थे। रत्नसिंह के सिंहासनारूढ़ होने पर हाडी करमेती अपने पुत्रों को लेकर रणथम्भोर में जारही। राणा रत्नसिंह को वह गढ़ अपने भाइयों के हाथ में रहना अखरने लगा तब उसने पूरबिये पूरणमल और रणमल को भेजे कि विक्रमादित्य और उदयसिंह को चित्तोड़ ले आवें। वे दोनों गये, परन्तु राणी हाडी ने कहा कि मेरे पुत्र तो बालक हैं तुम सूरजमल के पास जाओ, वही जवाब देवेगा। उन दोनों ने बूंदी जाकर सूरजमल से कहा कि राणाजी ने विक्रमादित्य व उदयसिंह को बुलाये हैं। उसने यही उत्तर दिया कि मैं स्वयं हाज़िर होकर दीवाण को सारी बात मालूम करूंगा। पूरणमल ने चित्तोड़ आकर सब वृत्तान्त निवेदन किया और कहा कि दोनों भाई तो आने को तैयार थे, परन्तु सूरजमल ने उनको न आने दिया। यह सुनकर राणा क्रोध के मारे जल उठा।

राणा कुम्भा ने इस नव पल्लवित तरु को भलीभांति सींचकर हरा भरा पुष्प दल संयुक्त उन्नत तरवर बनाया, और सांगा इस में फल लाया। यदि वह बयाने के युद्ध में बाबर पर विजय लाभ करते तो अवश्य मेदपाट राज्य के अमेद पादप की छाया तले देहली गुजरात व मालवे के महाराज्य आजाते और वहां के शाहंशाही गढ़ कोटों पर सूर्यवंशी राणा का झण्डा फहराता।

युद्ध हारने के थोड़े ही काल पीछे नव विम्बाक में इस वीर शिरोमणि का स्वर्गवास होगया, इस बखत किसी कवि ने निम्न लिखित शोक सूचक गीत कहा था—

क्रां विण सूर पेहवो अम्बर, दीपक पाखे जिसो दुवार।
पारस विना जेहवी प्रथमी, सांगा विण जेहवो संसार।
विण ढिव दोन कमल जोती विण, धागहर विण जसी धर।
जंमी हुत लिमो जाणेवो, तो विण प्रथमी कलपतर।
बलहर गयो दुनी दीवाणण, फबे नहीं दीपक फरक।
म्हा ग्रहण मोघणो सांगा, आयनियो मोटो अरक॥

पहले भी जब सूरजमल एक हाथी व एक घोड़ा टीके में नज़र करने को लाया था तो राणा ने उसे नहीं स्वीकारा और कहा कि जो लाललश्कर अश्व व मेघनाद हस्ती तुम्हें टीके में दिया गया वही पीछा दो। सूरजमल बोला कि मैंने चारण की भांति याचना करके तो हाथी घोड़ा लिये ही नहीं थे सो पीछे ला दूं। बात बहुत बढ़गई और राणा उसे मारने का दांव व अवसर देखने लगा।

गौड़ों का बारहट चारण भाणा मीसण (मिश्रण), जो चित्तोड़ के गांव राठकोदमिये में रहता था, एक प्रसिद्ध चारण और बड़ा कवि था। वह अपने यजमानों के पास जो बूंदी में रहते थे, जाकर मास दो मास रहा करता था। उस अवसर पर वह बूंदी गया तब सूरजमल के मुजरे को भी गया था। एक दिन भाणा को साथ लिये सूरजमल शिकार को गया, दूसरे साथवालों को तो हाके पर भेज दिये और वे दोनों ही एक मूल में बैठ गए। वहां वराह तो कोई न निकला परन्तु दो रींछ मिले। राव उन से बत्थमबत्था होगया और दोनों को कटार से मार गिराए। भाणा यह देखकर चकित होगया, तब सूरजमल ने केवल इतना ही कहा कि "क्या किया जावे जब ज़बर्दस्ती ऊपर आन गिरे तो मारने ही पड़े"। भाणा ने यश कह कह कर राव को बहुत रिझाया, तब सूरजमल ने विचार किया कि राणा ने लाललश्कर घोड़ा और मेघनाद हस्ती पीछा लेने की हठ पकड़ी है और मेरे सर्दार कामदार भी मुझे दबाकर उन्हें राणा को दिलादेंगे, इससे तो अच्छा यही है कि वह घोड़ा हाथी मैं भाणा जैसे पात्र को दान में दे दूं। ऐसा ठान उसने लाख पसाव के साथ वे दोनों एग्र चारण को देदिये। राणा रत्नसिंह सूरजमल को मारने का मनोरथ पूर्ण करने के वास्ते मृगया के बहाने विदा हुआ और चित्तोड़ से दस कोस पर आकर डेरा दिया। रावत करमचन्द की पुत्री राणी परमारण भी साथ थी। भाणा चारण वहां राणा के मुजरे को हाजिर हुआ। दीवाण ने पूछा कि इतने दिन कहां था? अर्ज़ की कि बूंदी में था। तब राणा ने सूरजमल का हाल पूछा। भाणा ने उसकी बहुत प्रशंसा की, वह राणा के मन में न भाई और कहा कि तूने सूरजमल में ऐसा क्या गुण देखा जो उसकी इतनी बड़ाई करता है। चारण ने रींछों की सारी कथा कहकर निवेदन किया कि वह बांका राजपूत है, जो कोई उसे मारने की इच्छा करे उसकी कुशल नहीं। उसी वक़्त किसी दूसरे ने पूछा कि भाणाजी तुम सूरजमल का इतना यश कहते हो सो अभी उसने तुमको

क्या दिया। वह बोला कि मुझे लाख पसाव के साथ लाललश्कर घोड़ा और मेघनाद हाथी दिया है। यह सुनते ही राणा की क्रोधाग्नि द्विगुण भड़क उठी और भाणा को आज्ञा दी कि " तूं मेरे देश में मत रह ! बूंदी चला जा "। वह भी तुरन्त पट झाड़ कर उठ बैठा और तत्क्षण बूंदी की ओर प्रस्थान किया।

राणा भी आखेट करता हुआ बून्दी के निकट आता रहा और सूरजमल के पास दूत पर दूत भेज और कहलाया, कि शीघ्र हाज़िर होवे। वह ताड़ गया कि राणा का मन मैला है और विचार में पड़ा कि जाऊं या न जाऊं। एक दिन उसने अपनी माता खेतू राठोड़ण से जाकर पूछा कि राणा के दूत मुझे बुलाने को आये हैं, राणा मुझसे बिगड़ा हुआ है, वह मुझे मारेगा, यदि तुम्हारी आज्ञा होतो उसे हाथ बताऊं। माता बोली बेटा ! ऐसी बात क्यों करें, अपने तो सदा से दीवाण के चाकर हैं ऐसा बुरा काम तो आजतक हमसे कोई हुआ नहीं कि जिसके कारण राणा तेरी घात करे। शीघ्र राणा के पास जाओ और अच्छी सेवाकरो ! माता का ऐसा आदेश सुन सूरजमल चला और चित्तोड़ व बून्दी की सीमापर गोकर्ण नामी तीर्थवाले गाव में राणा से मुजरा किया। राणा के मनमें तो खुटाई भरी थी, परन्तु प्रकट में राव का बड़ा आदर किया, 'सूरभाई' कह कर बातचीत की। एक दिन सूरजमल को कहा कि हमने एक हाथी नया खरीदा है, आज उसपर सवारी करके तुमको दिखलावेंगे। जब राणा हाथी सवार हुआ तो सूरजमल भी घोड़े चढ़ कर आगे आगे चलने लगा, एक स्थान पर संकड़ी सी ठौड़ देखकर राव पर कुंजर पेला, परन्तु सूरजमल ने घोड़े के एड़ लगाकर अपने को हाथी के मोहरे से बचालिया और क्रोध के मारे लाल होगया। राणाने कई मीठी मीठी बातें बनाकर उसका क्रोध शमन किया और कहा कि इसमें हमारा दोष नहीं है हाथी अपने आप झपट पड़ा था।

फिर दो एक दिन का अन्तर डालकर राणा ने फर्माया कि वनशूकरों की शिकार को चलेंगे। रावने उत्तर दिया कि " जो आज्ञा " ! (इसके पूर्व) राणा ने अपनी राणी पंवार से कहा था कि कल हम एक इकल सूअर को मारेंगे और तुमको भी वह तमाशा दिखलावेंगे। दूसरे दिन राणी गोकर्ण तीर्थ में स्नान करने गई। उससे थोड़े ही समय पहले सूरजमल भी स्नानार्थ गया था। राणी के पहुंचतेही वह चटसे धोती पहनकर पास से निकल गया। राणी की दृष्टि उस पर पड़ी, किसी (दासी) से पूछा कि यह कौन है ? उसने उत्तर दिया कि

बून्दी का स्वामी सूरजमल हाडा है, जिसपर दीवाण का कोप है। तुरन्त राणी ताड़ गई कि दीवाण जिस सूअर के मारने को कहते वह इसीसे अभिप्राय है। रात के वक्त राणी ने फिर वही सूअर की चर्चा छेड़ी, और अर्ज़ की कि उस शकल को मैंने भी देखा है, दीवाण उसे न छेड़ें। राणा ने पूछा कि कब देखा? तब उसने सब कथा कही और यह भी कह दिया कि उस सूअर को छेड़ने वाले की कुशल नहीं। राणा को यह बात बुरी लगी।

प्रभात होते सूरजमल को साथ ले राणा शिकार को गया, मूलपर बैठे और दूसरे सब लोगों को हटादिये, केवल राणा, पूरणमल पूराविया, सूरजमल और उसका एक ख़वास वहां रहे। राणाने पूरणमल को इशारा किया कि "लोह कर" परन्तु उसकी हिम्मत न पड़ी, तब राणा ने अश्वारूढ़ हो स्वयं सूरजमल पर तलवार का वार किया, जिससे उसकी खोपड़ी का कुछ भाग कट गया। यह देख पूरणमल ने भी एक छिछलता हुआ हाथ मारा, वह सूरजमल की जंघापर पड़ा, तब तो लपककर सूरजमल ने पूरण को दे पछाड़ा। वह चिल्लाने लगा, राणा उसको बचाने के निमित्त आया और दूसरा हाथ भी चलाया, उस वक्त सूरजमल ने घोड़े की बाग पकड़ कमर से कटार खींच झुके हुए राणा की गर्दन के नीचे घूंसदी, वह नाभि के नीचेतक चीरती हुई चली गई, राणा घोड़े पर से गिरा, और गिरते ही जल मांगा। सूरजमल बोला "कालरा खाधा हूंमै पाणी पी सकै नहीं" (काल आन पहुंचा है अब तू जल नहीं पीसकता है)। तदुपश्चात् राणा और सूरजमल, दोनों के प्राण पखेरू उड़ गए[1]। पाटण में राणा को दाग दिया गया और राणी परमारण शवके साथ सती हुई। राणा रत्नसिंह के कोई पुत्र न था इसलिये भाई बेटों आदि ने मिलकर विक्रमादित्य और उदयसिंह को रणथम्भोर से बुलाये और राजतिलक विक्रमादित्य को दिया।

राणा विक्रमादित्य—करमेती हाडी का पुत्र, उदयसिंह का बड़ा भाई, राणा रत्नसिंह के पाट बैठा। सम्वत् १५६६ (सं० १५६१ अशुद्ध लिखा है, सम्वत् १५६१ वि० में यह चढ़ाई हुई थी) जेष्ठ सुदि १२ को बादशाह बहादुर (गुजराती) चित्तोड़ पर चढ़ आया, गढ़ लिया, हाडी करमेती ने जोहर किया, कई राजपूत मारे गए, फिर हुमायूं बादशाह विक्रमादित्य की सहायता पर चित्तोड़ आया

(१) सं० १५८८ वि० में मारे गए।

और बहादुर को वहां से भगा कर राणा को पीछा गद्दी पर बिठाया। पीछे पुत्तल दासी के पुत्र (वणवीर) ने सोते हुए राणा विक्रमादित्य को मार कर चित्तोड़गढ़ अपने अधिकार में कर लिया।

यही बात चारण आसिये गिरधर ने इसप्रकार कही-सं० १७१९ (लेखक भूल से लिखा गया हो, १५९१ वि० होना चाहिये) भादों सुदि ९ के दिवस माडू का (भूल से गुजरात के बदले लिखा गया हो या उस वक़्त मालवा व गुजरात के दोनों महाराज्य गुजरात के सुलतान के अधिकार में होने से बहादुर को मांडू का बादशाह लिखा हो) बादशाह बहादुर पहलीवार चित्तोड़गढ़ पर चढ़ आया और गढ़ घेर लिया। राणा विक्रमादित्य बालक था, विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों हाडा नरबद भोजावत की बेटी करमेती के पुत्र थे। कई दिन के घेरे पीछे एक ओर से गढ़ टूटा, सीसोदिये मूठाली (तलवार) के मुख मरे और चौदह बड़े सर्दार काम आये। सन्धि की बातचीत हुई, बादशाह के भले आदमी गढ़ पर गए और राणा के विश्वासपात्र पुरुषों ने तलहटी आकर मामला ठहराया। राणा ने उदयसिंह को चाकरी में भेजना स्वीकारा और क़ौल करार होकर अन्त में बादशाह उसको अपने साथ ले गया। बादशाह बहादुर के कोई बेटा नहीं था, उमराव वज़ीरों ने अर्ज़ की कि अब आप वृद्ध हैं किसी भाई भतीजे को गोद बिठालें तो अच्छा है। बादशाह ने कहा राणा का भाई ठीक है। बड़े घर का लड़का है, इसको मुसलमान बनाकर गोद रख लिया जावेगा। यह बात निश्चय हुई। उदयसिंह के राजपूतों ने जब यह सुना तो उन्होंने उसके कान में बात डाली और विचार बाधकर रात को उसे वहां से ले निकले। प्रभात होते जब बहादुर के कर्णगोचर हुआ कि उदयसिंह भाग गया है तो वह तुरन्त चढ़-धाया और चित्तोड़ आ कर गढ़ के घेरा लगाया[1]। विक्रमादित्य और उदयसिंह

(१) बहादुरशाह का उदयसिंह को अपने साथ लेजाने आदि की कथा विश्वास के योग्य नहीं है क्योंकि बहादुर की चढ़ाई के समय राणा विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों उनके ननिहाल बूंदी को भेज दिये गए थे और सं० १५९२ वि० के प्रारम्भ में जब विक्रमादित्य को मार कर वणवीर गद्दी बैठा तो उसके हाथ से उदयसिंह को बचाने के वास्ते-अपने पुत्र का भोग देकर-धाय पन्ना उस बालक राजकुमार को कुम्भलमेर लेगई थी जहा वह-गद्दी बैठने तक गुप्त रीति से रहा। इसके अतिरिक्त फारसी तवारीखों में कहीं इसका ज़िकर तक नहीं है।

को सर्दारों ने गढ़ के बाहर भेज दिए। हाडी करमेती अपनी बेटी खीची भारतीचंद की पत्नी, हाडा कल्ला जगमालोत की बेटी राणा विक्रमादित्य की राणी, और राणा देवीदास की बेटी सहित जोहर की अग्नि में जलकर भस्म होगई। इतने राजपूत सर्दार युद्ध में खेत पड़े-रावत दूदा रत्नसिंहोत, सीसोदिया कम्मा रत्नसिंहोत, पंचायण पंवार करमचन्द का, हाडा अर्जुन नरवद का, रावत सत्ता (शत्रुसाल) रत्नसिंह का, सोनगिरा माला वाला का, रावत बाघा सूरजमलोत देवलिये वाला और सोलंकी भैरवदास नाथावत पोल पर काम आया इसलिये चित्तोड़ गढ़ की वह पोल (उसके नाम से) भैरव पोल कहाती है, (भैरव पोल राणा कुम्भा ने बनवाई और वह नाम भी उसका उसी समय में रक्खा गया था)। रावत देवीदास सूजावत, सीसोदिया नंगा सिंहावत जग्गा का भाई, और झाला सिंह अज्जावत।

(गुजरात देश राज वर्णन में नैणसी ने लिखा है)-बादशाह बहादुर सेना सज चित्तोड़ पर चढ़आया, सं० १५८६ (यहां भी १५६१ की जगह १५८६ ग़लत लिखा है) फाल्गुण सुदि १ चित्तोड़गढ़ टूटा, लाखोटा की पोल पर सवार १८००००, व हाथी १४००० थे (शायद लेखक प्रमाद से एक एक बिन्दी आगे लग गई हो या कवि ने अतिशयोक्ति की हो)। राणी करमेती ने जोहर किया, ४००० राजपूत रणांगण में खेत पड़े, सरोवर कूए वाव तलावों में से ३००० बालक जाल डाल डाल कर निकाले गए, सात सहस्र स्त्रियां अपने बच्चों सहित अफीम खाकर मरीं, और असंख्य स्त्री पुरुष बन्दी बनाए गए। बहादुरशाह के गुजरात को लौटने पीछे सीसोदियों ने तुर्कों को चित्तोड़ से मार भगाए[1]।

---

(१) राणा विक्रमादित्य ने अपने अनुचित वर्ताव से मातहत सर्दारों को अप्रसन्न कर दिए थे इसी से अवसर पाकर बहादुरशाह ने दो बार चित्तोड़ पर चढ़ाई की, पहली बार तो माजी हाडी ने सुलतान महमूद मालवी से दण्ड में लिया हुआ जड़ाऊ मुकुट और कमरबन्द, मालवे के कई पर्गने, दस हाथी, एक सौ घोड़े और एक क्रोड़ रुपया नक़द देकर संधि करली। इतना पाने पर भी बहादुरशाह ने थोड़े ही अर्से पीछे फिर गढ़ को आन घेरा। देवलिये का राव बाघसिंह महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया (महाराणा गढ़ के बाहर भेज दिए गए थे) और मेवाड़ के बहादुरों ने शत्रु से युद्ध कर वीरगति प्राप्त की। यह चित्तोड़ का दूसरा शाका कहलाता है।

११ को हुआ था। चित्तोड़ छूटने पर राणा एक बार कुम्भलमेर आया और फिर शीघ्र ही उदयपुर बसाया। अबतक भी २००० देवड़ों के लगभग इन गांवों में रहते हैं। (गांवों की विगत)-पीछोला, पालड़ी की जगह उदयपुर बसाया, आहाड़, देबारी, ढींकली, लकड़वास, कलड़वास, मडूण, कोटड़ा, तीतरड़ी, भवाणा, अंबेरी, बेदला, रूआंध, छापरोली, लाखाहोली, बेहड़वास, चीकलवास, बड़गांव, देवाली, मुन्डखसोल, बड़ी, थूर, कवीता, बरसड़ा, नाई, बूजड़ा, सियारमा और थार॥ देवड़ा बल्लू उदयभाणोत-देवड़े दीवाण के चाकर हैं। पांच हजार टका रेख पाते हैं। यहां (गिरवे में) पाघर (वादी या पहाड़ों से घिरी हुई समभूमि) में राणा ने अपने नाम पर उदयपुर नगर बसाया। नगर के निकट ही माछला नाम की छोटीसी पहाड़ी है जिसके उत्तर तरफ शहर दो कोस के घेरे में बसा है। दीवाण के महल पीछोले की पाल पर और पश्चिम में तालाव के निकट ही नगर है; जिसके एक ओर माछला और दूसरी ओर सीयारमे की पहाड़ियां आगई हैं। तालाव जब पूरा भरजाता तब जल इन पहाड़ियों तक पहुंच जाता है। जल की आय माछला और सीयारमे की पहाड़ियों से है। तालाव बहुत बड़ा (लगभग ४ कोस के घेर में है) और उसमें मगरमच्छ रहते हैं। उसकी मोरी से नगर के आस पास की बहुत सी भूमि सींची जाती जिसका अच्छा हासिल आता है और वह जल आहाड़ के पास बेड़च नदी में जा मिलता है। पीछोले के पास ही दीवाण के महल और नगर है। महलों के पास पीछोले में लाखेटे (?) की जगह राणा अमरसिंह का बनवाया हुआ बादल महल और बाग है। तालाव के दूसरी तरफ राणा जगतसिंह का बनवाया हुआ 'मोहन मन्दिर'[1] है। नगरनिवासियों के जलका आधार पीछोले पर ही है, दूसरा ऐसा कोई जलाशय आसपास नहीं है। यह तालाव राणा लाखा के राजसमय में किसी बणजारे ने बन्धवाया था। (राणा उदयसिंह ने उसकी मरम्मत करवाई)। नगर में जैन तथा शैवाम्नाय के मंदिर १५ तथा २० हैं, बस्ती अनुमान बीस हजार घरों की-जिनमें २००० ओसवाल, महेसरी, हुमड़, चित्तोड़ा, नागदा, नरसिंहपुरा, और पोरवाड़ महाजनों के, घर १५०० ब्राह्मणों के, ५०० पंचोलियों भटनागरों आदि के; ६० भोजकों के,

(१) यह महल महाराणा जगतसिंह प्रथम के पासवानिये पुत्र मोहनसिंह ने अपने नाम पर बनवाया था।

सुर्जन (हाडा बूंदी का), राव दुर्गा सीसोदिया, राव जयमल मेड़तिया। इसके पीछे राव मालदेव ने तुरंत ही कटक जोड़ा, वह मेड़तिये राठोड़ों से टेप रखता था अतएव मेड़ते की ओर कूच किया। राव के प्रधान पृथ्वीराज ने बहुत कहा कि पहले अजमेर चलकर राणा से युद्ध करना चाहिये, परन्तु राव ने न माना और मेड़ते आया। मेड़तियों से लड़ाई हुई, पृथ्वीराज मारा गया, और राव हार खाकर पीछा लौटा। यह राव (मालदेव) और राणा की बात यहीं समाप्त हुई।

राणा उदयसिंह ने अपने सरदार राव तेजसिंह डूंगरसिंहोत और बालीसा सूजा को फर्माया कि तुम अजमेर जाकर हाजीखां को कहो कि हमने तुम्हें राव मालदेव के हाथ से बचाया है इसलिये तुम्हें चाहिये कि कोई चीज़ हमारे नज़र करो, अर्थात् तुम्हारे अखाड़े में रंगराय नाम की पातर है उसे हमें देदो। उन सरदारों ने राणा से अर्ज़ की कि हाजीखां भला मानस है और आफत का मारा है, दीवाण ने उस पर उपकार किया, परन्तु ऐसी बात कहलाना उचित नहीं है। राणा ने एक भी न सुनी और हठ पूर्वक उनको भेजे। उन्होंने अजमेर जाकर हाजीखां को राणा का सन्देश सुनाया। वह बोला कि मेरे पास इस समय देने को कुछ है नहीं, और पातर तो मेरी स्त्री के समान है। इसी पर राणा व हाजीखां में शत्रुता होगई। सरदारों को विदा कर हाजी ने राव मालदेव के पास अपने दो वकील भेजे और सहायता चाही। राव ने १५०० सवारों के साथ देवीदास जैतावत, रावल मेघराज, लछमण भारावत, जैतमाल जैसावत और दूसरे भी कई सरदारों को अजमेर भेजे[1]। राणा भी स्वयं दस देशपतियों को साथ लिए उदयपुर से पयान कर हरमाड़े आया, हाजीखां भी मुक़ाबले को आन पहुंचा।

---

(१) राव मालदेव और महाराणा उदयसिंह के दरमियान मनोमालिन्य होने का एक यह भी कारण था कि मेवाड़ के सरदार झाला सज्जा का पुत्र जैतसिंह किसी कारण से महाराणा से रूठ कर राव मालदेव के पास जोधपुर जारहा था जहां उसे खैरवा गांव जागीर में मिला। जैतसिंह की बड़ी बेटी स्वरूपदेवी का विवाह राव मालदेव के साथ हुआ था, और वह चाहता था कि स्वरूपदेवी की छोटी बहन से भी विवाह करे, परन्तु जैतसिंह ने राव के इस प्रस्ताव को मंजूर न किया और उस कन्या का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया। इसी झाली राणी के वास्ते महाराणा ने कुंभलगढ़ पर एक महल बनवाया। राव मालदेव कुंभलगढ़ पर चढ़ आया परन्तु हताश होकर पीछा लौटा।

उस समय फिर राव तेजसिंह और वालीसा सूजा ने अर्ज की कि लड़ाई न की जावे, क्योंकि पाच हजार पठान और हज़ार राठोड़ों को मार लेना कठिन काम है, परन्तु दीवाण ने उनकी वात न मानी, खेत बुहारा गया और अणियां बांट दीं। हाजीखां ने यह दांव खेला कि अपनी दूसरी सेना को तो आगे भेजदी और आप एक हजार चुने हुए सवार साथ ले एक पहाड़ी की ओट में जा खड़ा हुआ। हरोल की टुकड़ी में गोल के बीच राणा के आन उपस्थित होने की खबर पाते ही पठानों ने गोल पर धावा कर दिया। राव दुर्गा का घोड़ा कट गया, तब वह हाथी पर चढ़ बैठा। हाजीखां ने हाथी की तरफ तीर चलाना शुरू किया। एक तीर राणा के जा लगा। तब तो राणा की फौज ने पीठ दिखाई। उसके इतने सरदार खेत पड़े-राव तेजसिंह डूंगरसिंहोत, वालीसा सूजा, डोडिया भीम, चूंडावत छीतर और एक सौ दूसरे योद्धा। हाजीखां के १५० पठान मारे गए, और राव मालदेव के ४० आदमी काम आए। इस लड़ाई से मेड़ता राव के हाथ लग गया। पीछे हाजीखां पर वादशाही फौज आई तब राव मालदेव ने उसको जैतारण के गाव लोठोघा की निंबोल में रक्खा। कितनेक दिन वहां ठहर कर वह गुजरात की ओर चल दिया। हाजीखां को शरण देने के अपराध में वादशाह ने सेना सहित हुसैनकुलीखां को मारवाड़ पर भेजा था। जब वह जैतारण पहुंचा तो हाजीखां तो भाग गया और राव रत्नसिंह ने जैतारण ली।

राणा उदयसिंह ने वूंदी का राज तिलक राव सूरजमल के पुत्र राव सुरताण को दिया था परन्तु हाडोती के सरदार उससे राजी न थे। नर्वद हाडा का पुत्र अर्जुन तो चित्तोड़ पर (वहादुर शाह के युद्ध में) मारा गया, उसका पुत्र सुर्जन हाडा राणा का चाकर था। उसकी जागीर में १२ गांव थे, पीछे जगनेर में काम पड़ा तब वह राणा की तरफ से लड़कर घायल हुआ था इसलिये दीवाण ने उसको कुछ काल तक फूलिये का परगना भी जागीर में दिया था, फिर फूलिया खालसे होकर वदनोर का पट्टा सुर्जन को दिया गया। इसी अवसर पर राव सुरताण के उपद्रव के समाचार पहुंचे, तब राणा ने बूंदी का राजतिलक सुर्जन को दिया और उसे बड़ा विश्वासपात्र जानकर रणथम्भोर की किलेदारी भी उसको सौंपी।

सिरोही के राव दूदा का पुत्र मानसिंह राणा उदयसिंह के पास आनकर चाकरी में रहा था। राव दूदा के मरने पर रायसिंह का पुत्र उदयसिंह सिरोही

की गद्दी पर बैठा, परन्तु थोड़े ही समय में शीतला रोग से उसका शरीर छूट गया। इसके समाचार गुप्त रीति से पहुंचते ही मानसिंह राणा से आज्ञा लिये विना ही चुपके से सिरोही पहुंच कर गद्दी पर बैठ गया, इसलिये राणा ने सिरोही के कुछ पर्गनों पर अधिकार करलेने का विचार किया था, परन्तु मानसिंह ने नम्रता पूर्वक विनती कर राणा को राज़ी कर लिया। सं० १६२१ फाल्गुण सुदि १५ को राणा उदयसिंह का गोगूंदे में स्वर्गवास हुआ[1]।

राणा उदयसिंह के पुत्र—१ राणा प्रताप, सोनगिरे अखैराज का दोहिता, अपने पिता के पीछे उदयपुर पाट बैठा। २ कन्ह—करमचन्द परमार का दोहिता, इसके वंशज कानावत। ३ परशुराम, ४ भोजराज, ५ दुर्जनसिंह, ६ रुद्रसिंह के वंशज सिरोही में, ७ नंगा जिसके नंगावत (मालवे में कहते हैं)। ८ श्यामसिंह-इसके पुत्र साहिब, और माधोसिंह जो राणा जगतसिंह को छोड़ कर बादशाही चाकर हुआ। उसको झाला हरीदास ने ताजये के मामले में मारा, ९ जैतसिंह, १० सुरताण कल्याणमल जयमलोत के पास था, ११ वीरमदेव, १२ लूणा, १३ शार्दूलसिंह, १४ सुजानसिंह, १५ महेश, १६ जगमाल राव लूणकर्ण की बेटी धीरबाई का पुत्र। सगर, अगर, साह, पंचायण और जगमाल सगे भाई थे। जगजाल बड़ा कर्त्ता आदमी था, उसका विवाह सिरोही के राव मानसिंह की बेटी से हुआ था। सिरोही पर भाण का पुत्र राव सुरताण गद्दी बैठा (राणा

---

(१) राणा उदयसिंह जेसलमेर व्याहने गया जिसका कोई उल्लेख टॉड साहब आदि के इतिहास में नहीं पाया जाता परन्तु एक प्राचीन गीत से इसका पता लगता है—

जेसलगिर चाढ संसारो जार्ये, सोहड़ तरंगम करे सज।
उदमासींह भला श्रोहाटिया, रिपगढ कटकां तणी रज॥
तो आगमण थमो सांगातण, रढ रावण मेवाड़ा राण।
पमगां भणी दुरग पींजरिया, खत्रवट तो खड़तां खुमाण॥
खेताहरे नत्रीठा काढ़िया, रिमहर माथै पमंग रह।
गहमह खेह घणा गूंदलिया, समियाणा कोटजा सह॥
महमा वदी मयक कुल मंडण, पोह अनवारां प्रभत पड़ी।
कटकां तणी दुयणचे कोटे, चोखी रज कांगरे चढ़ी॥

जगमाल राणी भटियाणी का पुत्र था जिसको महाराणा उदयसिंह ने अपना उत्तराधिकारी बनाया था।

उदयसिंहने पहले अपने पाटवी कुवर प्रतापसिंह को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर जगमाल को टीकैत कर दिया। राणा की मृत्यु के पश्चात् जगमाल गद्दी बैठा, परन्तु सलूंबर के राव ने उसको अधिकारी न समझ तत्काल ही राज्य विमुख कर दिया और प्रताप को पाट बिठाया। जिस पर नाराज हो जगमाल बादशाह अकबर की सेवा में चला गया उन दिनों में सिरोही का देवड़ा राव सुरताण बादशाह से बागी होरहा था इसलिये बादशाह ने सिरोही का आधा राज्य जगमाल को प्रदान किया। उसने अपना अधिकार वहा जा जमाया। एक दिन उसकी राणी ने ईर्ष्या वश पति से कहा कि मेरे देखते मेरे पिता के महल में दूसरों का रहना असह्य है। तिसपर राव सुरताण की अनुपस्थिति में जगमाल ने धावा कर महल लेना चाहा परन्तु सफलता न हुई, तब सहायतार्थ बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा)। बादशाह ने गिरनार सोरठ की सूबेदारी पर महाराज रायसिंह (बीकानेरी) को भेजे थे, जाता हुआ मार्ग में रायसिंह सिरोही ठहरा। राव सुरताण को बीजा देवड़ा हरराजोत ने निकाल दिया था अत सुरताण रायसिंह से मिला और सब हकीक़त कही। राजा ने राव की सहायता कर उसे राज पीछा दिलाया, परन्तु आधी सिरोही बादशाह के भेट कराली। बादशाह ने वह राज्य जगमाल को दे दिया। वह फर्मान लेकर सिरोही आया, राव सुरताण ने राज बाट दिया, बीजा देवड़ा जगमाल से आन मिला और उसे बहकाने लगा कि तू राणा सांगा का पोता और राव मानसिंह का जमाई है, सुरताण कौन है, सारी सिरोही क्यों नहीं ले लेता? जगमाल ने दो एक दांव घाव महलों पर अधिकार करलेने को किये परन्तु महल हाथ न आये, लज्जित होकर फिर दर्गाह गया और फर्याद की, तब बादशाह ने (मारवाड़ के) राव चद्रसेन के पुत्र रायसिंह को सोझत देने का क़रार करके जगमाल की सहायता पर भेजा। उनके सिरोही पहुंचने पर राव सुरताण नगर छोड़ कर पहाड़ों मे जा छिपा। इन्होंने भी पीछा किया। सं० १६४० में दताणी के मुक़ाम लड़ाई हुई, जगमाल रायसिंह और सिंह कोली तीनों मारे गये। जगमाल का जन्म स० १६११ आषाढ वदि ५ रविवार का था। उसके पुत्र १ रामसिह, २ शामसिंह। शामसिंह का बेटा मनोहर। ३ रूपसिंह देवीदास जैतावत का दोहिता, और ४ रुद्रसिंह थे।

(१७) सगर राणा उदयसिंह का, जगमाल का सगा भाई। जब राव सुरताण ने जगमाल को मारा तो सगर ने जाना कि हमतो दीवाण की आज्ञा

में हैं, वे अपने भाई का वैर राव से लेवेंगे, परन्तु दीवाण ने कभी राव को उलहना तक न दिलाया और उल्टी उससे प्रीति जोड़कर अपनी पुत्री उसको व्याहदी। सगर को इससे बहुत सन्ताप हुआ और वह, (कुंवर मानसिंह कछवाहा द्वारा) दर्गाह (बादशाह जहांगीर की सेवा में) चलागया। मेवाड़ की सब बात उसने बादशाह को अर्ज़ की और उसे विजय करलेना सहज बताया। राणा अमरसिंह पर आफत आई, सगर को बादशाह जहांगीर ने राणा बनादिया और चित्तोड़ व मेवाड़ सब उसको बख़्श दिये। इसके अतिरिक्त नागोर अजमेर आदि और भी परगने दिये और बड़ी कृपा जतलाई। उन्नीस वर्ष तक सगर राणा रहा और चित्तोड़ पर राज किया। बड़ा ठाकुर हुआ। सं० १६७२ (सन् १६१३ ई० सं० १६७० वि० होना चाहिये) में बादशाह जहांगीर आप अजमेर आन बैठा और शाहज़ादा खुर्रम उदयपुर आया, तब राणा अमरसिंह उससे मिला और एक हज़ार सवार से सेवा करना स्वीकारा, मेवाड़ पीछी राणा अमरसिंह को दीगई और सगर को रावत पदवी और पूर्व की तरफ जागीर दी। उसने पुष्करजी में वराह का मन्दिर बनवाया। उसका जन्म सं० १६१३ वि० भाद्रपद बदि ३ का था[1]।

सगर के पुत्र (१) इंद्रसिंह शेखावतों का भांजा सगर के जीते जी ही मरगया।
(२) मानसिंह रावताई पाया जन्म स० १६३६, (३) मोहनसिंह कटार खाकर मरा

(२) मानसिंह			(३) मोहनसिंह		
हरीसिंह	मोकमसिंह	आसकर्ण	बैरीसाल	रघुनाथ	मदनसिंह

(४) हरीराम राजा रायसिंह के चाकर रहा, इसका पुत्र फतहसिंह। (५) जगतसिंह विट्ठलदास गौड़ की सेवा में काम आया।

---

(१) बादशाह जहांगीर से मेवाड़ का राज्य पाकर भी सगर स्वामिभक्त सीसोदियों को सेवा में न ला सका, बादशाह आप लिखता है कि गढ में बैठे रहने के सिवा राना सगरा से कुछ भी न बनपड़ा। कर्नल टॉड लिखता है कि एक बार बादशाह ने भरे दरबार सगर को झिड़का जिसपर वह कटार खाकर मरगया। इस झिड़की का कारण शायद यह हो कि राणा अमरसिंह पर चढाई करने के वक्त सगर ने बादशाह के संमुख राणा को आधीन बनादेने की बात कही थी, परन्तु वह परास्त और लज्जित होकर पीछा लोटा था। पुष्कर तीर्थ में वराहजी का मन्दिर सगरा का बनवाया हुआ है जिसमें एक लाख रुपया खर्च हुआ था, शाहशाह जहांगीर जब अजमेर से पुष्कर गया और उसने इस मन्दिर और मूरत को देखा तो हुक्म दिया कि इस बुरी मूरत को तोड कर तालाब में डाल दो।

(१८) अगर—बादशाही नौकर था।

(१९) जसवन्त-जोधपुर रहा, सोझत की सींव में १२ गांव से सिणला, पट्टे में दिया। सं० १६७३ में वे गांव छोड़ दिये और बुरहानपुर में महाबतखां के पास जारहा। सं० १६६० में पीछा जोधपुर आया तब ११ गांव सहित धोलहरा का पट्टा पाया, परन्तु महाबतखां ने (जोधपुर के महाराज को) कहलाया कि इसे मत रक्खो, इसलिये वहां से विदा कर दिया। जसवन्त का पुत्र सबलसिंह सं० १६७६ में जोधपुर में था और जालोर पर्गने में ४ गांव कुरडा सहित उसकी जागीर में थे।

(२०) साह (या सीहा) जयसिंह का मामा था, साह का पुत्र मथुरादास (इसके वंशज छापरेड़ में हैं)।

(२१) पंचायण, (इसके वंशज जुलोला खजूरी हाजीवास व पंचाणपुर में हैं)।

(२२) कल्याणदास।

(२३) किशनसिंह।

(२४) वह्लू—चूंडावतों के वैर में मारा गया। उसका पुत्र सूरसिंह, और सूरसिंह का बेटा भीमसिंह था।

(२५) शक्तिसिंह—बादशाही सेवा में था, इसके १२ पुत्र बहुत अच्छे राजपूत हुए और परिवार बहुत बढ़ा। शक्ता की सन्तान की आज बड़ी शाखा है जो शक्तावत कहलाती है[१]।

(नीचे केवल वेही नाम दिये हैं जिनके साथ विवरण मिलता है। पूरी वंशावली के वास्ते शक्तिसिंह के पुत्रों का वंशवृक्ष देखो)।

(१) भाणा शक्तावत, मोटेराजा उदयसिंह की बेटी राजकुंवरी ब्याहा। भाणा के पुत्र—१ शामसिंह, २ पूरा, ३ मानसिंह, ४ गोकुलदास, ५ केशोदास।

---

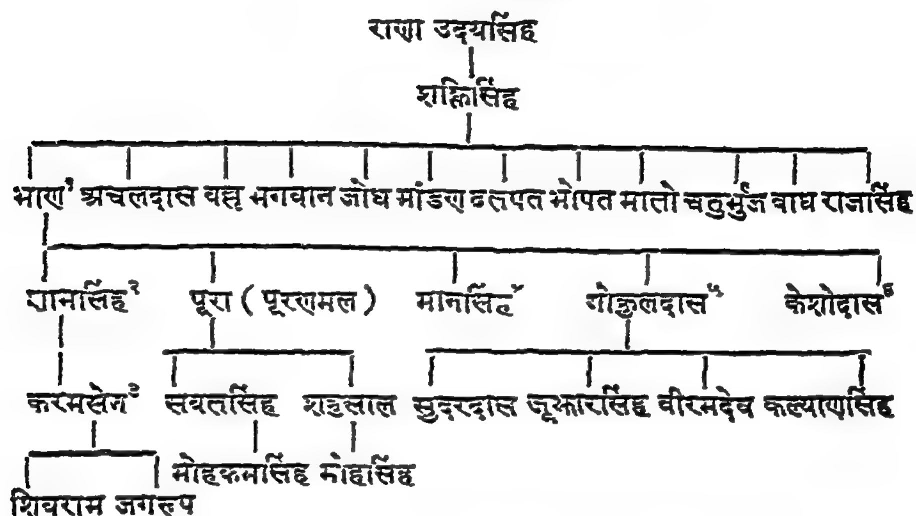
(१) राणा उदयसिंह के ऊपर कहे हुए पुत्रों में से वीरमदेव के वंश में लांगच, आवा, पूल्या, हमीरगढ, खैराबाद, महुवा, सणवाड़, मडप्या और बीगामकी आदि मेवाड़ के जागीरदार हैं। इनके सिवा रायसिंह और माइल नामी पुत्र भी थे। एक पुत्री हरकुंवरी थी जिसका विवाह सिरोही के राव रायसिंह के पुत्र उदयसिंह के साथ हुआ था।

(२) अचलदास—घेगम पट्टे, रावत कहलाता है। अपने हाथ से अपना गला काटकर मरा। इसके पुत्र—रावत केसरीसिंह, रावत नारायणदास, राणा सगर का नौकर, सगर ने रावताई दी थी।

(३) वल्लू—राणा अमरसिंह ने ऊंटाले में (बादशाही सेना से) युद्ध किया तब काम आया। इसके पुत्र-लाड़खान, कम्मा, खंगार, रामचन्द्र और सांवलदास।

(४) भगवान, राणा की दी हुई बूढ़त पट्टे। (५) जोध शक्तावत बड़ा शूर-वीर बॉका राजपूत था, राणा का चाकर, जीरण के थाने पर रहता था। देवलिये का स्वामी रावत भाणा मंदसोर के शाही फौजदार (सैय्यद मक्खन) को साथ ले २००० सवार व दो हजार पैदल की भीड़भाड़ से जोध पर चढ़ आया। जोध के पास केवल ६० अश्वारोही थे। खुले मैदान लड़ाई ली और फौजदार और रावत भाणा दोनों को मार कर जोध खेत पड़ा। इसके पुत्र भायरली, नाहर-खान और अर्जुन।

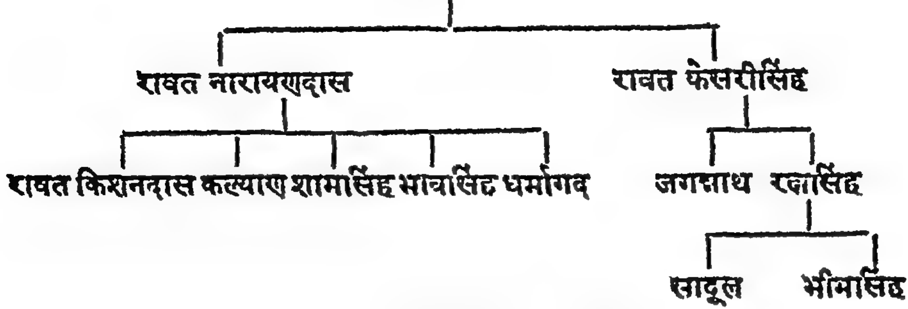
दासावतों का वंश वृक्ष ।



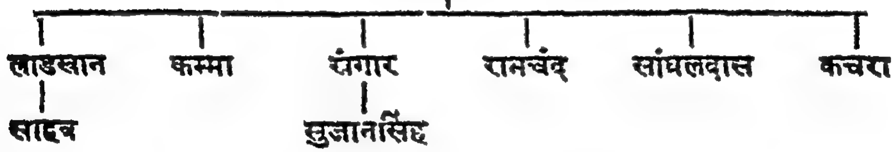
(नीचेके नोटों में नैणसी के लेख का ही भाषांतर है)

(१) मोटे राजा (जोधपुर का उदयसिंह) की पुत्री राजकुमारी ब्याहा। (२) महाराज जसवंतसिंह का सगा मामा था। (३) जोधपुर निवास, चूंडावत पट्टे। (४) राजा भीम (सीसोदिया) का चाकर, भीम के साथ मारा गया। (५) मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) का दोहिता, राजा भीम (सीसोदिया) का नौकर था। जब भीम युद्ध में (खुर्रम या शाहजहां के पक्ष में पर्वेज़ से लड़ कर) मारा गया तब गोकुलदास भी (भीम के साथ में) गहरे घाव खाकर रणखेत में पड़ा था, राजा गजसिंह (राठोड़ जोधपुर के) ने उसे उठाया, घाव बंधवाये, और गांव राहिण रु० २१०००) (वार्षिक आय की) जागीर में देकर अपने पास रक्खा। सं० १६६४ में जब खुर्रम तख़्त पर बैठा तब गोकुलदास उसकी सेवा में गया। बड़ा दातार और बड़ा जूझार था। मौत से मरा। (६) मोटे राजा का दोहिता और राजबाई भटियाणी उसकी नानी थी। कितनेक दिन उसके पास जोधपुर में रहा। गांव सरेचा मोटे राजा ने पट्टे में दिया था।

(२) अचलदास शक्तावत का वंश

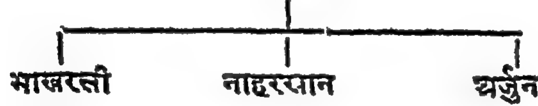


(३) वल्लू शक्तावत का वंश



(४) भगवान शक्तावत (इसका वंश मूल में नहीं दिया)

(५) जोध शक्तावत का वंश



(६) गांङण शक्तावत (इसका वंश मूल में नहीं दिया)

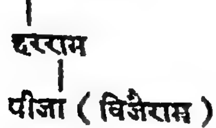
(७) दलपत शक्तावत का वंश



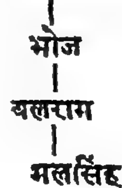
(८) भोपत शक्तावत का वंश



(९) माला शक्तावत का वंश



(१०) चतुर्भुज शक्तावत का वंश



(११) घाघ शक्तावत का वंश
|
जगमाल
|
मोहन
|
कान्ह

(१२) राजसिंह शक्तावत का वंश
|
फीता
|
सूरसिंह

राणा प्रताप राणा उदयसिंह का—सोनगिरा अखैराज का दोहिता, सं० १५९६ जेठ सुदि ३ रविवार को जन्मा था। कछवाहा मानसिंह को कुंवर पदे में अकबर बादशाह ने गुजरात भेजा तब चित्तोड़पति राणा प्रताप ने सोनगिरे मानसिंह अखैराजोत और डोडिये भीम सांडावत को उसके पास भेज बहुत कुछ शिष्टाचार दिखलाया था। जब लौटता हुआ मानसिंह डूंगरपुर आया तो वहां रावल सहसमल ने उसका अतिथि सत्कार किया। वहां से सलूंबर पहुंचा जहां रावत रत्नसिंह के पुत्र रावत खंगार ने महमानदारी की। राणाजी उसवक्त गोगूंदे में थे। रावत खंगार (शक्तावत) ने कुवर मानसिंह की सब रीति भांति और रहन सहन का निरीक्षण कर जाना कि इसकी प्रकृति एक ही प्रकार की (अर्थात् यवनों से मिलती जुलती, बन्धन रहित व स्वार्थी) है, तब रावत ने राणाजी को कहलाया कि यह मनुष्य मिलने के योग्य नहीं है, परन्तु राणा ने उसकी बात न मानी। गोगूंदे से आकर (उदयपुर के पास) मानसिंह से मिले और उसे भोजन दिया। जीमने के समय विरस हुआ[1]। मानसिंह ने दर्गाह जाकर राणा पर मुहिम (बादशाह से) मांगी और ४०००० सवार ले चढ़ आया। जब निकट पहुंचगया तो राणा ने पूरबिया दुरग पत्ततसिंहोत और सीसोदिये नेता भाखरोत को गुप्तचरके तौर भेजे। मानसिंह के कटक के डेरे बनास नदी के तट पर गांव मोलेला में हुए और राणा गांव लोहसींग में आन कर उतरा जो उदयपुर से ६ कोस उत्तर दिशा में है। दोनों अनियों के बीच तीन कोस का

(१) प्रसिद्ध है कि भोजन के समय राणा नहीं आया मानसिंह ने कारण पूछा तो राणा के सर्दार ने पहले तो कहा कि कुछ तबियत ठीक नहीं है, परन्तु जब मानसिंह ने ताने व क्रोध के साथ कुछ शब्द कहे तो उत्तर मिला कि तुर्कों को बहन बेटियां ब्याहने वाले के साथ राणाजी भोजन नहीं करसकते। इसपर बिना जीमेही मानसिंह उठकर चलागया और वह रसोई भी कुत्तों को खिला दी गई।

अन्तर था, उस वक़्त मानसिंह एक हज़ार सवार लिये शिकार खेलता हुआ राणा के डेरों से कोसेक की दूरी पर आगया और उसकी सेना दो कोस पीछे रही। तब राणा के गुप्तचरों ने उसको इस अवस्था में देख मनमें विचारा कि यह घात बहुत अनुकूल है, तुरन्त राणा को जाकर अर्ज़ की कि जैसे बैठे हो वैसे ही चढ़ चलिये, मानसिंह अभी भली घात में आगया है। चालीस सहस्र सैन्य पीछे छोड़कर केवल एक हज़ार सवार साथ लाया है। राणा ने कहा कि अहोभाग्य, अभी मारलेते हैं, भागकर कहां जायगा। ऐसा कह कर सवार होने ही को था, परन्तु झाला बीदा ने रोक दिया (बीदा सादड़ी के राज सुलतान झाला का पुत्र था)। दूसरे दिन बनास तट पर खमणोर गांव के पास युद्ध हुआ (प्रसिद्ध हलदी घाटी की लड़ाई जो सम्वत् १६३३ में हुई थी)। राणा के पास नौ दस हज़ार सवार थे। कछवाहे ने विजय लाभकिया और राणा लड़ाई हारगया[1]।

राणा प्रताप के पुत्रः—

१ राणा अमरसिंह पाटवी। २ शेखा-इसका बेटा चतुर्भुज जोधपुर रहा, सं० १६६६ में सिवाणे (पर्गने) का करमावस गांव ६ गांवों के साथ पट्टे में दिया गया था। ३ कल्याणदास। ४ कचरा (कहीं प्रभुर भी लिखा है)। ५ सहसा (सहसमल) बड़ा ठाकुर हुआ, आपत्काल में राणा अमरसिंह की अच्छी चाकरी की। सहसा का पुत्र भोपत बड़ा दातार था और राणा का भेजा हुआ ६ हज़ार आदमियों से दर्गाह (बादशाही) में चाकरी देता था और दूसरा पुत्र केसरीसिंह (जिसके वंशज धरियावद के जागीरदार हैं)। ६ पूरा (पूरणमल), जोधपुर रहता था, सं० १६६४ में मेड़ते का गांव और सं० १६६६ में ढाहा पांच गांवों सहित पट्टे में पाया। (इसके वंशज पूरावत भंगरोप, गुरलां, गाडरमाला और आरज्या में हैं)। ७ जसवन्त, ८ हाथी, ९ रामा, १० माना, ११ गोपालदास १२ चन्दा (चन्द्रसिंह), १३ सांवलदास, १४ करमसी, और १५ भगवान।

---

(१) अपनी वंश परंपरा की उज्वल कीर्ति और अपने देश की स्वतन्त्रता को स्थिर रखने के लिये अकबर जैसे सम्राट से बराबर लड़ाइयां लेने, सारे सांसारिक सुख को लात मार अपने प्राणों तक की भी पर्वाह न करने, और घोर विपत्तियां सहते हुए भी स्वधर्म में निश्चल रहने वाले महाराणा प्रताप जैसे शूरवीर संसार में थोड़े ही हुए होंगे। प्रताप का नाम भारत में प्रातःस्मरणीय हो रहा है। उनकी कार्यवाहियों का सविस्तर वृत्तांत मैंने

राणा अमरसिंह—सं० १६१६ चैत्रशुदि ७ का जन्म, पूरविये पंवारों का भाञ्जा था। पहले नौ वर्ष तो विपत्ति सही और बादशाह जहांगीर से कई लड़ाइयां लड़ी। अकबर के समय में जब राजा मानसिंह उदयपुर में ठहरा हुआ था, राणा (अमरसिंह) ने मालपुरा लूटा, फिर बादशाह जहांगीर अत्यंत हट पर आया। सगर बड़ा ग्रासिया होकर चित्तोड़ का स्वामी बनगया, देश के कितने ही राजपूत उससे जामिले और रहे सहे भी साथ छोड़ने पर उतारू होगये। बादशाह जहांगीर ने अब्दुल्लाखां को शाहज़ादे खुर्रम के साथ उदयपुर भेजा। राणा से उदयपुर छूटा और वह चावण्ड के पहाड़ों में जारहा। वहां भी अब्दुल्ला जा पहुंचा और वह स्थान भी छोड़ना पड़ा। तब राणा को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। एक दिन उसने भीम को कहा (यह भीम राणा का पुत्र था) कि भीम चावण्ड के मगरों की बड़ी ठौड़ अपने से छुड़ाली है, मुझे उदयपुर छूटने का इतना खेद नहीं जितना इस स्थान के छूटने से है। इसके छूटते छूटते यदि एक भी रातीवाला (रात्रि को छापा मारना) अब्दुल्ला के साथ न किया तो बहुत अपकीर्ति होगी। भीम ने तसलीम कर अर्ज़ की 'अवश्य दीवाण!' अब्दुल्ला से आज वह युद्ध करूं कि लड़ता लड़ता उसकी ड्योढ़ी तक पहुंच जाऊं। यह खबर अब्दुल्ला के पास पहुंचने पर उसने बहुत सी सेना और उमरावों को अपनी देहुड़ी पर नियत कर दिये। दूसरे दिन घड़ी ग्यारेक दिन चढ़े भीम विदा हुआ और पहले उन मेवाड़ियों से लड़ाई ली जो अपने स्वामी का साथ छोड़कर शत्रु से जा मिले थे। फिर आधीरात गये बादशाही सेना पर छापा मारा। पहले तो बलपूर्वक बढ़ता और जो सन्मुख हुआ उसे काटता चला गया, जिससे शत्रु के शिविर में के कई घोड़े और राजपूत मारे गये। अन्त में दो

अपनी पुस्तक 'राजस्थान रत्नाकर' भाग २ में लिखा है, यहां केवल राजपूताने के सुप्रसिद्ध कवि आढा दुरसा कृत कवित्त उनके मरसिये का दिया जाता है—

अश लेगो अणदाग, पाग लेगो अणनामी।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी॥
नवरोजे नह गयो, न गो आतसा नवल्ली।
न गो झरोखा हेट, जेथ दुनियाण दहल्ली।
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसना डसी।
नीसास मूक भरिया नयण, तो मृत साह प्रतापसी॥

सहस्र राजपूतों से भीम ड्योढ़ी पर जा पहुंचा। वहां पहले ही सब सावधान थे। घमसान लड़ाई हुई, तलवारों की झींक उड़गई (अर्थात् खूब तलवार चली)। बादशाही सेना के पचास साठ बड़े सर्दार मारे गए और भीम के भी २० तथा पचीस योद्धा खेत रहे। देहुड़ी तक तो पहुंचा परन्तु आगे न बढ़ सका, क्योंकि वहां शस्त्रबंद शूरवीर सजे सजाए तैयार खड़े थे। भीम के एक दो लोह लगे और उसके घोड़े का पग कट गया, तब दूसरे घोड़े पर चढ़कर वह लौट पड़ा। दीवाण नाहरमगरे में थे, जाकर मुजरा किया और रात के युद्ध की बात कही। सुनकर दीवाण बहुत प्रसन्न हुए और बड़ी प्रशंसा के साथ कहा कि शाबाश भीम! खूब झगड़ा किया। तदुपरान्त च्यार मास तक अब्दुल्ला ने दीवाण की सेना पर धावा न किया। गीत—

खितलागा वार विन्है खूंदालम, खुतो धणी सनाहां साथ।
धापै खुरम जेहड़ा थाणा, भीम करै तेहड़ा भाराथ॥
हुवो प्रवाड़ां हाथ हिंदुवां, असुर सिंघार हुवै आराण।
साह आलम मूकै सहिजादो, रायजादो थापलियो राण॥
मंडियो वाद दिली मेवाड़ां, समहर तिको दिहाड़े सींच।
भवसन पैठो किसे भाखरे, भाजर किसे न वड़ियो भींच॥
आरंभजाम अमरघर ऊपर, लड़ै अमर छळतो पलंग।
आथड़ियो घटियो असुरायण, खूमाणौ मांजयो खग[1]॥

---

(१) भीमसिंह पीछे मेवाड़ की जमीयत का अफसर होकर बादशाही सेवा में रहता था। बादशाह जहांगीर ने उसे राजा की पदवी, मनसब, और टोडे का पर्गना जागीर में दिया था। वहीं बनास नदी के तट पर एक नगर बसा कर भीमसिंह ने राजमहल का प्रासाद बनवाया। पीछे उसे महाराजा की पदवी और पंच हजारी मसब मिला। गुजरात की, गोंडवाने की और दखन की मुहिमों में महाराजा भीम शाहजादे खुर्रम के साथ रहा था और उसका इतना विश्वासपात्र होगया कि जब उसने अपने पिता से बग़ावत की तो महाराजा भीम को सेना सहित अपने भाई पर्वेज की जागीर का नगर पटना लेने को भेजा, और भीम ने उसे विजय कर वहां अधिकार जमा लिया। झांसी के पास जब सं० १६८३ वि० में बादशाही सेना का खुर्रम के साथ युद्ध हुआ तब भीम शाहजादे की सेना का हिरोल था। शाहजादे का तोपखाना छिन गया। दर्याखां पठान जो बाजू पर था भाग निकला और दूसरे लोगों ने भी पैर छोड़ दिये, उस वक़्त भीमसिंह ने अपने राजपूतों सहित बादशाही सेना पर आक्रमण किया। आप पापियादा हाथ तलवार

संवत् १६७१ में बादशाह जहांगीर आप अजमेर आया और शाहजादे खुर्रम को (सेना देकर) उदयपुर भेजा। राणा अमरसिंह खुर्रम से गोगूंदे में मिला और एक हज़ार सवार से (बादशाही) चाकरी देना क़बूल किया। बादशाह ने मेवाड़ पीछा राणा को दिया और सगर को रावताई देकर पूर्व की तरफ़ जागीर दी। राणा का मन्सब ५०००) जात पांच हज़ार सवार का किया।

संवत् १७११ में मांडलगढ़ और बदनोर के पर्गने जब्त कर लिये थे वे पीछे दिये। मांडलगढ़ २०००००) (?) का।

संवत् १६६४ में बादशाह शाहजहां ने फूलिये का पर्गना ज़ब्त कर लिया[1]। नीमच चित्तोड़ से १५ कोस गांव २४५ सहित २२५०००) का। इतने परगने पीछे दिये गये जीहरण (जीरण) गांव १२ देवलिये के पास, बसाड मंदसोर के पास, जिसको सं० १६६४ में रावत केसरीसिंह को मारकर जांनिसारखां ने ले ली थी। भैंसरोड़ १२४ गांव सहित, जंगल पहाड़ की जगह। रामपुरे के पास गांव १२ सहित 'सुणोर' जो सं० १६६४ में ज़ब्त की गई थी। और हंसवहाला भी सं० १७१५ में दिया। सं० १६६४ में डूंगरपुर जब्त करलिया गया था वह भी सं० १७१५ में औरंगज़ेब ने पीछा दिया। रावत जसवंतसिंह को मारने के कसूर में देवलिया पीछा लेलिया। चित्तोड़ से २२ कोस बूंदी की सीमा से मिलता हुआ बेगूं का

पकड़े शत्रुदल को काई के समान काटता पर्वेज के हाथी तक जा पहुंचा और पर्वेज की सिपाह ने उसे घेर कर मार लिया। बर्छे व तलवार के सात घाव कारी खाकर खेत पड़ा, परन्तु प्राणान्त होने तक खड्ग हाथ से न छोड़ा। साखी का गीत—

इस्या रूसमू भीम खग बाहतो आवियो, विषम भारत तणी बणी वेळा।
आज दळ पैठ गजसिंहसूं भेलिया, मार गजसिंह जयसिंह भेळा॥
खग्रवट प्रगट अमेरसरो खेलतो, ठेलतो टाट रहियो समर ठाय।
मार कूरम दिया रूसधजा दळ सही, मार कमधा दिया छूरमां माय॥
असुर दळ टिर्जा राठजादतो, समर भीमेण दीठो सवाई।
घेंच मडोर आमेर मह वातियो, घेंच आमेर मडोर माही॥
भीम साणाहरो सदा करतो भसम, भीमल आवसावरत खग उजाळो।
असुरे मुरे घणो माथा पटक, कटक मर मारियो नीठ काळो॥

(१) यह पर्गना मेवाड़ में से महाराणा अमरसिंह के एक पुत्र सूरजमल के बेटे सुजानसिंह को बादशाह शाहजहां ने दिया था, क्योंकि सूरजमल महाराणा को छोड़कर बादशाही चाकरी में चला गया था। उसके वंशज शाहपुरा वाले हैं।

परगना १०००००) की रेख का ६४ गांव सहित दिया। बांसवाड़ा एकवार उतार लिया था, अब तो राणा के (अधीन) है। संवत् १६७६ में उदयपुर में राणा अमरसिंह काल प्राप्त हुए।

राणा अमरसिंह के पुत्र—१ कर्णसिंह पाटवी, २ अर्जुनसिंह, देवड़ा बीजा का दोहित्र, सदा राणा की चाकरी में रहा, ३ सूरजमल, जिसके पुत्र—सुजानसिंह बादशाही चाकर, फूलिया पट्टे में पाया; वीरमदेव भी बादशाही नौकर था। ४ राजा भीम (टोडे का) बड़ा राजपूत हुआ, राणा के आपत्काल में ठौड़ ठौड़ शाही सेना से लड़ाइयां लीं, फिर शाहजादे खुर्रम की चाकरी में रहा, सं० १६७१ में राजा की पदवी पाया और मेड़ता जागीर में मिला। बग़ावत में खुर्रम के साथ रहा। सं० १६८१ कार्तिक सुदि पूर्व में कुंढस नदी पर शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतखां के साथ खुर्रम की लड़ाई हुई वहां भीम काम आया। भीम के पुत्र-किशनसिंह, राजा रायसिंह सं० १६६५ में राजाई पाया, पातावत नारायणदास का दोहिता था। ५ बाघसिंह अमरसिंघोत सं० १६६५ में एकवार महाराजा जसवन्तसिंह के पास आया था, गांव २० जागीर में देते थे परन्तु वह रहा नहीं। उसका पुत्र सबलसिंह बादशाही चाकर हुआ, वह पृथ्वीराज के पुत्र बाघ का दोहिता था। ६ रत्नसिंह-राणा अमरसिंह के आपत्काल में अचलदास का पुत्र, शक्तिसिंह का पोता, रावत नारायणदास राणा सगर से जामिला जब कि वह कई परगनों समेत चित्तोड़ पर आधिपत्य रखता था। सगर ने रावत का बहुत आदर कर ६४ गांव से बेगम और ६४ गांव सहित रत्नपुर की जागीर दी। जब राणा अमरसिंह की बादशाह (जहांगीर) के साथ संधि हुई तो सगर से चित्तोड़ उतरी और वह वहां से चला गया, राणा अमरसिंह का वहां अधिकार हुआ तब उसके आदमी बेगम गये, परन्तु रावत नारायणदास ने वह जागीर उनके सुपुर्द नहीं की, इसपर दीवाण ने रावत मेघ को बेगम पर बिदा किया, (यह मेघसिंह सलूंबर के राव खंगार के छोटे पुत्र गोविन्ददास का बेटा था)। उसने अपने आदमी भेजकर नारायणदास को कहलाया कि श्री दीवाण अपने माता पिता हैं, उनसे अपना ज़ोर नहीं उन्होंने मुझे भेजा है, अपना घर एक ही है, अतएव मेरे पहुंचने के पूर्व ही तुम गांव छोड़ देना। रावत भी समझ गया और बेगम छोड़कर बाहर एक गुढा (छोटा गांव) बना वहां जारहा। मेघ ने परगने पर अधिकार किया तब राणा ने चहुवाण बल्लू को बेगम

का मुजरा करादिया। रावत मेघ के भाइयों ने यह समाचार उसके पास भेजे। वह बहुत खिजा और कहने लगा कि " मरने के वक़्त तो मुझे नारायणदास के संमुख किया और बधारा (वृद्धि या सुख) बल्लू को दिया, हमको तो दीवाण ने चाकर ही न समझे। बेगम या तो शक्तावतों की या चूंडावतों की, चहुवाण कौन हैं जो उसे लेवें "। मेघ सीधा उदयपुर आया और पट्टा छोड़ दिया। उस वक़्त कुंवर कर्णसिंह ने ताने के साथ कहा कि ऐसा अहंकार रखते हो तो बादशाह के पास जाकर मालपुर पट्टे में कराओ। तत्काल अपना सामान दुरुस्त कर मेघ बादशाह जहांगीर की सेवा में चला गया। बादशाह ने उससे राणा का वृत्तान्त पूछा, उसने सब बात अर्ज़ की, जिस पर प्रसन्न होकर बादशाह ने मालपुर उसे जागीर में देदिया (मेघ के काले वस्त्रों को देखकर बादशाह ने उसे " काली मेघ " की पदवी दी थी)। कुछ काल बीता कि राणा ने कुंवर कर्णसिंह को दरगाह भेजा और यह भी समझा दिया कि जैसे बने वैसे मेघ को मनाकर लेते आना। कुंवर मालपुर गया, मेघ ने अगवानी की और गोठ दी। भोजन करने को बैठे, थाल परोसा गया, परन्तु कुंवर हाथ खींच कर बैठा रहा (भोजन न किया)। मेघ ने कारण पूछा तो कहा कि तुमको दीवाण ने याद फर्माया है, मेरे साथ चलो तो भोजन करूं। उसने अर्ज़ की कि हम तो आपके चाकर हैं, आपही ने हमको विसार दिये, अब जो आपकी आज्ञा होगी वही करूंगा, परन्तु बादशाहजी से रुख़सत लेकर आऊंगा। फिर बादशाह से आज्ञा मांगकर मेघ राणा के पास हाज़िर हुआ, राणा ने बहुत मया की और मुंह मांगा पट्टा उसे प्रदान किया। चौरासी गांव से बेगम, ८४ गांव से रत्नपुर, ४२ गांव से गोठीलाव (गोथलां), १२ गांव से दीनोता, १२ गांव बीसिया पीपलिया, और तीन गांव उदयपुर के निकट घास लकड़ी (खड़लाकड़) को दिये। ऐसी जागीर मेवाड़ में पहले किसी को न दीगई थी। अढ़ाई लाख टकों की रेख सुनी जाती है।

तत्पश्चात् शक्तावतों और रावत मेघ के दर्मियान एक उपद्रव उठा। रावत के बेगम पट्टे थी, उसके एक गांव में बाघा का बेटा पीथा नाम का शक्तावत रहता था। उसके साथ मेघ का कुछ मनोमालिन्य होजाने से मेघ ने उसको कहलाया कि तू मेरा गांव छोड़ दे, परन्तु उसने छोड़ा नहीं, तब रावत ने वह गांव जला दिया। उस वक़्त रावत नारायणदास (अचलावत) के बादशाह की दी हुई भिणाय जागीर में थी। पीथा नारायणदास के पास जाकर पुकारा कि

हमारे में तुमही मुखिया हो, तुम्हारे होते मेघ ने मेरी यह दशा कर दी है। नारायणदास ने खेड़ (लड़ने वाले आदमी) इकट्ठी की और राठोड़ जगमालोत और आपके भाई बन्धु चंद्रावत सीसोदियों के १२०० सवार साथ लेकर बेगम पर चढ़ धाया। इसके एक दो दिन पहले ही रावत मेघ बेगम से पांच छः कोस की दूरी पर किसी गांव में विवाह करने को गया था जहां उसने इस विषय की कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी। उसका पुत्र नरसिंहदास पीछे घर में था। नारायणदास ने यह समझ कर, कि मेघ घर ही पर है, अपने दो आदमियों को आगे बेगम भेजे और उनको कहदिया कि तुम जाकर मेघ को कहना कि बाहर आवे। पीछे से वह स्वयं भी आन पहुंचा। उन आदमियों ने आकर पूछ ताछ की तो पता लगा कि मेघ तो विवाहने गया है और नरसिंहदास घर में है। उसी को उन्होंने नारायणदास का संदेशा जा सुनाया। सुनते ही नरसिंह भयभीत होगया और गढ़ का द्वार बन्द कर भीतर बैठ रहा। शक्तावतों ने बेगम के गिर्द अपने घोड़े फिराये और सींव में बंधे हुए मेघ के एक हाथी को लेकर नारायणदास भिणाय लौट आया। दूसरा कुछ भी बिगाड़ न किया। जब मेघ पीछा आया और उसने सारे समाचार सुने तो बड़ा लज्जित हुआ, अपने पुत्र पर बहुत क्रोधित हो उसे घर से निकाल दिया और कहा कि मुझे मुंह मत दिखला! फिर चूंडावत सरदारों को निमंत्रण भेज बुलवाये और बहुतसा साथ इकट्ठा कर पांच सहस्र सवारों की भीड़भाड़ ले रावत मेघ बेगम से एक मंज़िल आगे बढ़ा। इधर भिणाय में शक्तावत भी मरने मारने को तैयार होगये। अनायास मेघ के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि हमारा और इनका घराना एक ही है, गोत्र हत्या होवेगी, ऐसा सोचकर वह पीछा लौट पड़ा। मानसिंह करणोत आदि भाई बन्धुओं ने उसको बहुतेरा समझाया कि देखो शक्तावत बोल मारेंगे, हम उनके संमुख जाने के न रहेंगे, परन्तु मेघ ने यही उत्तर दिया कि "चाहे जो हो मुझ से तो गोत्रहत्या नहीं हो सकती"। तदुपरान्त रावत केशवदास के साथ मेघ के कुछ बोलचाल होगई, वह भैंसरोड़ आया जो उस वक़्त रावत (केशव) की जागीर में था। केशवदास भी अपने गांव बेटोर से मुक़ाबले में आकर लड़ा और अपने दो बेटों सहित मारा गया। जब यह समाचार राणा ने सुने तो कोप किया और मेघ को लड़ने से रोक दिया।

राणा कर्णसिंह—संवत् १६४० श्रावण सुदि १२ का जन्म, सं० १६७६ में पाट बैठा, ढीला सा ठाकुर हुआ। और सं० १६८४ में काल किया। कर्णसिंह के पुत्र-१ राणा जगतसिंह मेड़तचा राठोड़ों का भाञ्जा, २ गरीबदास, पहले तो बहुत दिनों तक राणा के पास रहा पीछे बादशाही चाकर हुआ। सं० १७१४ के जेष्ठ मास में धौलपुर की लड़ाई में काम आया जो औरंगज़ेब ने अपने भाई मुरादबख़्श के साथ की थी[1]। ३ छत्रसिंह, ४ मोहनसिंह ५ गजसिंह।

राणा जगतसिंह—स० १६६४ भाद्रपद सुदि १२ का जन्म, सं० १६८४ पाट बैठा, और सं० १७१० में काल प्राप्त हुआ। बड़ा दातार और विवेकी महाराजा था, कलियुग में बड़े २ सुकृत किये और उदारता पूर्ण दान दिये। राणा जगतसिंह के पुत्र-१ राजसिंह टीकेत, २ अरिसिंह[2]।

राणा राजसिंह—को बादशाही तरफ से इतनी जागीर है-(मंसब छः हजारी जात छ० हजार सवार जिनमें ५ हजार (एक असपा) और एक हजार दुअस्पाथे। रुपिया दाम आसामी १७०००००) ६६००००००। तलब ज़ात ६ हजारी ३०००००) १२००००००। खासाजात ६ हज़ारी १४०००००) ५६००००००। तावीनदार असवार हज़ार छः जिनमें एक हज़ार दुअस्पा १७०००००) ६६००००००। ५०००००) २०००००००० इनाम २२०००००) ६६००००००, तनख्वाह १२५०००) ६६००००००। सूबे अजमेर। रु० २१५००००) ४७५००) ६६००००। सरकार अजमेर परगना १। ४७५००) १६। परगना जोजावर १७२७५००) ६६१०००००। सरकार चित्तोड़ महाल २७। २५०००) १०००००० परगना हवेली मोकीली महाल २। ५५०००) २२००००० परगना उदयपुर महाल ३। ४०००) २२००००० परगना अरणो महाल २७५००) ११०००० । परगना इसलामपुर कोसीथल ३७५०) १५००००। परगना इसलामपुर मोही ६७५००) ३५००००० । परगना ऊपरमाल और भैंसरोड़ महाल २। ५००००) २०००००० । परगना बेगू २००००) ६००००० ।

---

(१) मासिरुल् उमरा के अनुसार धौलपुर की लड़ाई औरंगजेब की दाराशिकोह के साथ हुई थी। राजपुर के मुक़ाम गरीबदास औरंगजेब के पक्ष में जूझकर काम आया। उसके वंशज मेवाड़ में केरया, बासड़ा व बोसूदा में जागीरदार हैं।

(२) उपरोक्त दो पुत्रों के सिवा राणा जगतसिंह के ४ पुत्र और थे जो निस्सन्तान मरे, और दो कन्या। जिनमें से एक का विवाह, बूंदी के राव शत्रुसाल के पुत्र बहादुरसिंह से, और दूसरी का बीकानेर के राजा अनूपसिंह के साथ हुआ था।

परगना बणोर २०००००) ६००००००। परगना पुर ७५०००) ३००००००। परगना जीरण २७५००) ११०००००। परगना शाहजादाबाद कणवीर ७५००) ३०००००। परगना सादड़ी २५०००) १००००००। परगना शाहजहानाबाद कपासण १२५००) ५०००००। परगना घोसमन (घोसूंडा ?) ३। ५०००) २०००००। परगना मदारें (मदारिया) ५००००) २०००००। नीमच महाल ३१२५०) ५००००। परगना हमीरपुर २५००००) १००००००००। परगना बदनोर २००००००) ६००००००। परगना मांडलगढ़ ४०००००) १६००००००। परगना डूंगरपुर २०००००) ६००००००। परगना बांसवाड़ा १७२७५००) ६६१००००० ॥ ३७५०००) १५०००००। सरकार कुम्भलमेर महाल ६५ जिन में से ६२ पहाड़ में बाकी महाल २३, उनमें से महाल ३ सादड़ी, नाडूल, , शाहजादा खुर्रम जब राणा अमरसिंह पर चढ़ आया तब राजा सूरजसिंह को इनाम में दिये थे, उनकी जमाबन्दी नहीं, वे अब राणा राजसिंह के हैं। बाक़ी महाल २० जिनके नाम पढ़े नहीं जाते, २१५००००) ८६०००००। ५००००) २००००००। सूबे मालवा में परगना एक वसाड़ २२००००) ८८००००००[1] ॥

गुहिलोतों की २४ शाखा—गहलोत, सीसोदिया, आहाड़ा, पीपाड़ा, हुल, मांगलिया, आसायच, केलवा, मंगरोपा, गोधा, डाहलिया, मोटसिरा, गोदारा, भींवला, मोर, टीवणां, माहिल, तिवड़किया, वोसा, चंद्रावत, धोराणिया, बूटीबाल, बूंटिया, और गोतमा[2]।

(१) ये अंक नैणसी ने किस हिसाब से लगाये हैं जो समझ में नहीं आते।

(२) इनके सिवा भटेवरा आदि अन्य भी शाखा बतलाई जाती हैं। महारावल समरसिंह के संवत् १३३१ विक्रमी के लेख में गुहिल वंश की अपार शाखा लिखी है—“ गुहिल वंशमपार शाखम् ”।

डूंगरपुर का गुहिलोत वंश।

रावल कर्ण के दो पुत्र थे, माहप और राहप। राहप के वंशज राणा चित्तोड़ के स्वामी, और रावल माहप के वंशज वागड़ के स्वामी जो सदा चित्तोड़ के राणाओं की चाकरी करते थे, फिर पीछे दिल्ली के बादशाहों की सेवा में भी रहने लगे। वागड़ में ३५०० गांव हैं जिनमें से आधे तो डूंगरपुर के और आधे बांसवाड़े के ताल्लुक़ हैं।

डूंगरपुर राज की सीमा—गांव १७५०, उदयपुर तरफ गांव ६, सोम नदी उत्तर में, ईडर की ओर गांव पंजूरी, गाव ६ भीलों का मेवास। पश्चिम में बांसवहाले (बांसवाड़ा) की तरफ माही नदी, डूंगरपुर से कोस १० गांव १२। यह नदी मांडू के पहाड़ों से निकलती और सिरोही के परगने में बहती हुई देवलिये से कोस ५ आकर पीछी मुड़ती डूंगरपुर बांसवहाले (बांसवाड़े) के बीच बहती हुई आगे गुजरात में लूणावाड़े चली गई है। शहर डूंगरपुर के उत्तर दक्षिण दोनों तरफ पहाड़ और बीच में मगरे की ढाल में नगर बसा है। चारों ओर छोटा सा कोट है। गाव में मन्दिर बहुत, बाज़ार अच्छा परन्तु पीठ (व्यापार) वैसी नहीं है। उत्तर में रावल पूंजा का बनवाया गोवर्धननाथ का बड़ा देवालय और ईशान में रावल गैपा (गजपाल) का बनवाया बड़ा तालाब है। नगर के पीछे पहाड़ी पर शिकार का स्थान है। डेढ़ मील के लगभग कोण में गागड़ी नदी के तट पर रावल पूंजा का लगवाया हुआ राजबाग है।

चित्तोड़ पर रावल समरसिंह राज करता था उसने एक बार अपने छोटे भाई से कहा कि तूने मेरी बहुत सेवा की है इसलिये प्रसन्न होकर मैंने चित्तोड़ का राज तुझे दिया। भाई बोला कि चित्तोड़ के स्वामी तो आप हो मुझे वह राज कौन देगा? समरसी ने कहा कि मेरा वचन है। जिस पर छोटे भाई ने निवेदन किया कि जो राज देते हो तो अपने सरदारों का वचन दिलवाओ। समरसी ने सरदारों से कहा कि ठाकुरों! तुम सब इसको वचन दो। वे कहने लगे कि क्या आप सचमुच राज देते हैं? हमारा वचन समझकर दिलाइये। समरसी ने उत्तर दिया कि हां मैं सच्चे दिल से कहता हूं, तब तो सारे सरदारों ने वचन दे दिया। सारे अधिकार और राणा पदवी भाई के सुपुर्द कर रावल समरसी गांव आहाड़ में जा रहा[1]।

---

(१) डूंगरपुर राज्य का स्थापक सामन्तसिंह था, न कि समरसिंह। सामन्तसिंह, राजा विक्रमसिंह या श्रीपुंज का प्रपौत्र और महणसिंह के पुत्र क्षेमसिंह का कुंवर था उसका

कुछ समय बीतने पर एक दिन रावल ने अपने साथवालों से कहा कि यह भूमि मैंने भाई को देदी, अतः अब यहां रहने का धर्म नहीं, हमें कोई दूसरी धरती लेनी चाहिये। उस वक़्त डूंगरपुर के पास वाटवड़ोद में ८४ मलक भूमिया ५०० योद्धाओं के स्वामी की सत्ता थी। उस भूमिए के एक डोम था जिसकी स्त्री के साथ भूमिया हिल गया था। चौड़ेधाड़े निःशंक उसके संग विहार करता और क्योंकि ज़ोरावर था इसलिये उसको कोई कुछ कहभी नहीं सक्ता था। डोम की स्त्री को लेकर आप महलों में सोता और मीरासी को नीचे बिठाकर रात भर गवाता, यदि किसी दिन गानेको न आवे तो पिटवाता था। डोम मन ही मन जला करता परन्तु करे क्या, बहुतेरा चाहता कि कहीं भाग छूटूं परन्तु उसकी रखवाली पर भूमिये ने अपने आदमी छोड़ रक्खे थे इससे भाग भी नहीं सकता था। सदा घात में लगा रहता और यही विचारता कि किस के पास जाकर पुकारूं। किसी ने उसको कहा कि रावल समरसी चित्तोड़ छोड़कर आहाड़ में आन रहा है, उसके पास बहुतसी जमैयत है वह तेरी सहायता कर सक्ता है। और कोई ऐसा नहीं जो तेरी सुने। तब एक दिन अवसर पाकर डोम वहां से निकल भागा और सीधा रावल समरसी के पास आहाड़ पहुंचा, कहने लगा आप यहां बैठे क्या करते हैं, मैं आपको बड़ोद की चौरासी दिलवाऊं। रावल तो यह चाहता ही था उसके मन में यह बात भाई, डोम से सारी हक़ीकत पूछी, उस ने भी सब वृत्तान्त कहा और बोला पांचसौ सवार लेकर शीघ्र चलिये। डोम को साथ ले रावल चढ़ चला और अचांचक बड़ोद के गोरमे जा खड़ा हुआ। अढाईसौ सवारों को तो पीछे रक्खे और दोसौ पचीस सवारों से कोटड़ी की तरफ बढ़ा, सवार चालीस पचास पौल पर छोड़ दिये और आप भीतर घुस

समय सं० १२२५–५० वि० के लगभग था। जब कि जालोर के चहुवाण राव कीतू या कीर्तिपाल ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर राजधानी आघाटपुर (आहाड़) पर अधिकार करलिया। सामन्तसिंह बागड़ की तरफ चला गया। उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव दूसरे की सहायता से अपना राज्य चहुवाणों से पीछा लिया। पृथ्वीराज रासे के कारण यह नाम की भूल पीछे से सर्वत्र फैली हो क्योंकि सम्भव है कि सामन्तसिंह ही का साधारण बोलचाल में समतसिंह होकर लेखक दोष से वही समरसिंह बन गया हो नहीं तो समरसिंह का समय तो डूंगरपुर राज्य की स्थापना से करीब एक सौ वर्ष पीछे का निश्चित है।

पड़ा। मालिक जिस घर में था डोम ने वह स्थान बतलाया अतः भूमिये को मार कर चोरासी पर अधिकार कर लिया और अपनी आण दुहाई फिरादी। डोम को रावल ने अपने पास रख लिया[1]।

रावल ने विचारा कि यह भूमि तो थोड़ी है इससे मेरा पूरा नहीं पड़ेगा (कोई अन्य स्थान भी लेना चाहिये)। उन दिनों डूंगरपुर की जगह एक भील पाच सहस्र मनुष्यों के दलबल से रहता था और उसकी वहां बड़ी ठाकुराई थी। रावल समरसी मन में कपट रख कर उस भील के पास नौकरी के निमित्त गया और उससे मिला। डूगर (भील) ने पुछवाया कि राज के यहां आने का कारण क्या है? रावल ने कहलाया कि चित्तोड़ तो हमने भाई को दे दिया अब कहीं अच्छा स्थान देख अपने मनुष्यों को च्यारेक महीने वहां रखना चाहते हैं, फिर कहीं अन्यत्र नौकरी के वास्ते चले जायंगे और यातो दिल्ली या माडू के बादशाह के पास जा रहेंगे (दिल्ली और माडू की बादशाहतें तो उस वक़्त क़ायम भी न हुई थीं), इतने तुम कहीं पगथंबन को ठौड़ बतलाओ तो वहां आन रहें। डूगर ने पहले तो यही कहा कि कलके दिन तो तुमने चौरासी मलिक को मारा है अब यहां आकर हमें मारोगे, मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता। समरसी ने उत्तर भेजा कि हमें चौरासी मारने से कोई अभिप्राय न था, परन्तु डोम आकर पुकारा तब वह काम करना पड़ा, वह धरती डोम ही भोगता है, यदि तुम चाहो तो खुशी से अपने आदमी भेज कर वहा अधिकार करलो। हमारा वहा कोई भी नहीं है और न हमें उस भूमि से कुछ सरोकार है। इस प्रकार डूंगर से बहुतसी लल्लोपत्तो की बातें कीं, तब भील ने रावल को रख लिया। डूंगर पहाड़ों के ढाल में डूगरपुर बसा कर वहीं रहता था-(डूंगरपुर का नगर रावल भर्तृहरि के पुत्र रावल डूंगरसिंह ने विक्रम की पंद्रवी शताब्दी के आरम्भ में अपने नाम पर बसा कर राजधानी वहा स्थापन की थी)। पहाड़ के पास ही मैदान में रावल को ठहरने के वास्ते ठौड़ बतलाई गई जहां उसने बस्ती सहित अपने छकड़े आन छोडे। बाड़ी वापियों के पास टपरियां बांधीं और अच्छी सेवा कर भील राजा का मन हर लिया। पांच छः महीने गाठ का खर्च

---

(१) पहले बटपद्रोद ही बागड की राजधानी था, शिलालेखों में उसका नाम 'बटपद्रक' मिलता है।

आया उससे कुछ भी न मांगा। एक आध मास फिर धीरे रह डूंगर को कहलाया कि अब हम अपने कुटुम्ब को तुम्हारे पास छोड़ विदा होने वाले हैं, परन्तु हमारी ४ बेटियां बड़ी होगई, उनके अब तक पीले हाथ (विवाह) नहीं किये हैं, इसकी फिकर है सो तुम कहो तो विवाह यहां कर लें। भील ने कहा कि खुशी से बाइयों का विवाह कीजिये, हम भी कामधन्धे में सहायता देंगे। रावल ने विवाह थापा, भाई बन्धु सगे सम्बन्धियों को निमंत्रण पत्र भेजे कि अमुक दिवस बहुत सा साथ ले शीघ्र आना, और इधर डूंगर को कहलाया कि हमारे यहां बड़े २ ठाकुर और बराती आवेंगे सो उनके उतारे के लिये कुटियां बंधवालें। उसने कहा कि बहुत अच्छी बात है। तब इन्होंने एक विशाल बाड़ा डूंगर के निवास स्थान के पास ही तैयार कराया और दूसरा अन्तःपुर के घरों के पीछे बहुत ऊंचा और दृढ़ बंधवाया। एक झोंपड़ा अपने गुढ़े के निकट बंधवाया। बरातियों के आने की भी तैयारी थी, न्योतिहारों में से कितनेक आन पहुंचे थे। लग्न दिवस से एक दो दिन पहले रावल ने भील को जाकर कहा कि कल परसों तक बरात आजावेगी तब तो हम उनके सत्कारादि में लग जावेंगे, हमारे तो अच्छी बात तुम्हारी है सो कल आप अपने सारे साथ सहित भोजन यहीं करें। भील ने न्योता मान लिया, रातों रात रसोई तैयार कीगई, उसमें धतूरा और बत्सनाग बहुतसा मिला दिया, पीने के वास्ते तेज़ दुबारा (शराब) खिंचवाया। दूसरे दिन डूंगर को अपने भाई बेटों, प्रधान, नौकर चाकरों सहित सातसौ मनुष्यों से जीमने बुलाया, बड़े बाड़े में पांतिया दिया, भलीभांति भोजन परोसा, और खूब शराब पिलाई जिससे वे सब अचेत होगये। नौकर चाकर व दूसरे ४०० जनों को दूसरे बाड़े में बिठाये थे। जब देखा कि ये सब लोट पोट होगये हैं तो दोनों बाड़ों में आग लगादी। कितनेक तो जल मरे और जो फलसे के द्वार पर आये उनको सहज में मार गिराये, रावल ने कई आदमी डूंगर के घरों पर भी भेज दिये थे, जो कोई वहां रहे थे उनको भी मार लिये। उसका धन माल सारा ले लिया और इस प्रकार डूंगरपुर पर अधिकार कर वहां अपनी राजधानी स्थापन की। बड़ी ठकुराई हुई, बणजारे चलने लगे और बहुतसा दाण महसूल आने लगा।

उन दिनों डूंगरपुर से १२ कोस गलियाकोट में टांटल राजपूत भूमिये डेढ़ दो हजार आदमियों की जोड़ वाले रहते थे, जिनके पांचसो ६०० सवार सदा

डूंगरपुर की सीमा में बिगाड़ किया करते और पीछे पकड़ने वालों का दल पहुंचता तो जाकर अपने गढ़ में घुसजाते थे। गढ़ दृढ़ और विना लगाव वाला था। रावल ने कई उपाय किये परन्तु कुछ दांव न लगा। एकवार अपने बन्धुवर्ग में से दो विश्वासपात्र राजपूतों को जोगी का भेष पहना गलियाकोट थान में भेजे और उन्हें बहुतसा खर्च देदिया। दोनों वहां पहुंचे परन्तु टांटल भूमिया किसी अजनबी आदमी को गाव में घुसने नहीं देता था। यह बात जोगियों ने सुनकर गांव के बाहर तालाब की पाल पर ही आसन जमाया। कहीं भीख मांगने को जाते नहीं और रात्रि में गुपचुप अपना भोजन बना, खा पी लिया करते थे, किसी आने जाने वाले से बोलते तक नहीं। तब तो उनका बड़ा मान बढ़ा, गाव के सेठ साहूकार, कोतवाल, कामेती उनके पास आने लगे और आग्रह पूर्वक उन्हें गाव में लिवा लेगये। कोट (गढी) के बाहर ही एक ठाकुरद्वारा था जहां टिकाये। ये न तो किसी के घर मांगने जाते न किसी से कुछ लेते और न बोलते थे। टांटलों का स्वामी स्वयं पांच सात बार उनके दर्शन को आया और एक दिन कहा कि कोट में पधारकर मेरा घर पवित्र करो। जोगियों ने दो च्यार बार तो नाही करी परंतु अन्त में वह आग्रहपूर्वक उनको भीतर लेगया, भोजन कराया, और वहीं आसन जमाया। यह सदा लगाव देखते रहते पर कहीं दिखाई नहीं देता था और पौल भी सुदृढ़ थी। छः मास तक वे वहा रहे परन्तु कोई छिद्र न पाया। गलियाकोट नदी के तट पर है और खाई में सुरंग रखी (सुरंग या गुप्त मार्ग के मुवाफिक) एक बारी थी जिसमें होकर गुप्त रीति से आव जाव होता था। यह भेद एक कामदार के पुत्र ने सद्भाव में बात करते खोला। जोगियों ने पूछा कि वह बारी कहां है? उसने बताया कि अमुक स्थान में। पाच सात दिन पीछे बाबाजी वहीं जा बैठे, रात्रि को उस खिड़की के मार्ग द्वारा आने जाने लगे और सारा भेद जाना। एक बार टांटलों के कहीं विवाह था, सो वे तो सब वहां गये और इन दोनों ने परस्पर सलाह की कि अपने को यहां आये एक वर्ष बीत गया, आज जैसा अवसर फिर हाथ आने का नहीं है। तुरंत एक भाई रावल के पास डूंगरपुर पहुंचा, सब बात कही और निवेदन किया कि यदि कोट लेने की कामना हो तो तत्काल चढ़ कर रातों रात वहा पहुंचिये, मेरा भाई खिड़की के मुंह पर बैठा है। रावल उसी वक्त एक हज़ार सवार और ५०० पैदल लेकर तुरन्त चढ धाया, अपने राजपूत को खिड़की पर बैठा पाया, और उसी मार्ग से सब कोट के भीतर

घुस गये, इतने में पौ भी फटगई। जिस टाटल को देखा काट डाला, स्त्रियों को बन्दी बना लिया, गलियाकोट हाथ आया और बागड़ के साढ़े तीन लाख गांवों में रावल की आण दुहाई फिरगई।

डूंगरपुर से एक कोस पश्चिम रुद्रपाल का मन्दिर नया बना है। गांव १७५० तो डूंगरपुर में मेवाड़ के पहले से हैं और गांव १२ परमारों के खाग-चाकियों कड़ावों (?) को मार कर लिये हैं। यह बात सं० १७१६ में जैतारण में सांइया झूला के पौत्र और भाग के पुत्र रुद्रदास झूला ने कही।

सं० १७०७ में मुंहता नरसिंहदास अखैराजोत डूंगरपुर गया और वहां रावल पूंजा के मन्दिर के एक स्तम्भ पर रावल ने अपनी वंशावली लिखवाई है वह उतार लाया सो इस प्रकार है—

१ आदि श्रीनारायण	२० यवनाश्व	३९ कुश
२ कमल	२१ मुमेधा	४० अतिथि
३ ब्रह्मा	२२ मांधाता	४१ निषध
४ मरीचि	२३ पुरन्ध	४२ नल
५ काश्यप	२४ वेणु	४३ नभ
६ सूरज	२५ पृथु	४४ पुण्डरीक
७ वैवस्वतमनु	२६ हरीहर	४५ क्षेमधन्वा
८ इक्ष्वाकु	२७ त्रिशंकु	४६ देवानीक
९ विकुक्ष	२८ रोहिताश्व	४७ अहिनगु
१० जन्हु	२९ अम्बरीष	४८ शिलांग
११ पवन	३० भागीरथ	४९ पारिजात
१२ अनेरण्य	३१ अरिमर्दन	५० शील
१३ काकुत्स्थ	३२ वीरपुर	५१ सनाभि
१४ विश्वचक्षु	३३ वीरज	५२ विजय
१५ महामति	३४ दिलीप	५३ पद्मनाभ
१६ च्यवन	३५ रघु	५४ वज्रधर
१७ प्रद्युम्न	३६ अज	५५ नाभ
१८ धनुर्धर	३७ दशरथ	५६ विजयनिधि
१९ महीपाल	३८ रामचंद्र	५७ क्षिप्ताश्व

५८ विश्वजित	८७ चांद्सेन	११६ भालो रावल
५९ द्बु	८८ वीरसेन	११७ श्रीपुञ्ज ,,
६० नाभिमुख	८९ सुजय	११८ करण ,,
६१ हिरण्य	९० सुजित	११९ नाग्नड़ ,,
६२ लौसल्य	९१ विलापानल	१२० हंस ,,
६३ ब्रह्ममन्य	९२ हंसनवसु	१२१ जोगराज ,,
६४ उदयकर	९३ विजयनित्य	१२२ वैरड ,,
६५ पद्मनेत्र	९४ भासादित्य	१२३ वीरसिंह ,,
६६ अंधनेत्र	९५ भोगादित्य	१२४ राहप ,,
६७ सुधन्वा	९६ जोगादित्य	१२५ देहू ,,
६८ हावसिद्ध	९७ केशवादित्य	१२६ नरू ,,
६९ सुदर्शन	९८ ग्रहादित्य	१२७ अरहड़ ,,
७० सहवर्ण	९९ भोजादित्य	१२८ वीरसिंह, ,,
७१ अग्निवर्ण	१०० बापा रावल	१२९ अरसी ,,
७२ विजयरथ	१०१ खुमाण ,,	१३० रासी ,,
७३ महारथ	१०२ गोवंद ,,	१३१ सामन्तसिंह ,,
७४ हैहय्य	१०३ माहित ,,	१३२ कुमारसिंह ,,
७५ महानन्द	१०४ अलू ,,	१३३ मथनसिंह ,,
७६ अनन्दराज	१०५ भावो ,,	१३४ समरसी ,,
७७ अचल	१०६ सीहो ,,	१३५ अरसी ,,
७८ अभंगसेन	१०७ शक्तिकुमार ,,	१३६ रतनसी ,,
७९ जयपाल	१०८ शालिवाहन ,,	१३७ पूंजा ,,
८० कनकसेन	१०९ नरवाहन ,,	१३८ करमसी ,,
८१ जितशत्रु	११० यशोब्रह्म ,,	१३९ पद्मसी ,,
८२ सुजाति	१११ नरब्रह्म ,,	१४० जैतसी ,,
८३ सलाजित	११२ अंबपसाव ,,	१४१ तेजसी ,,
८४ सुवीर	११३ कीरतब्रह्म ,,	१४२ समरसी ,,
८५ सुकत	११४ नरवीर ,,	१४३ रतनसी ,,
८६ सुमत	११५ उत्तम ,,	१४४ नरब्रह्म ,,

१४५ भझा	रावल	१५३ करमसिंह	रावल	१६१ सहसमल	रावल
१४६ केसरीसिंह	,,	१५४ प्रतापसिंह	,,	१६२ करमसी	,,
१४७ सामन्तसिंह	,,	१५५ गोपा	,,	१६३ पूंजा	,,
१४८ सीहड़दे	,,	१५६ श्यामदास	,,	१६४ गिरधर	,,
१४९ देवा	,,	१५७ गांगा	,,	१६५ जसवन्त	,,
१५० वरसिंह	,,	१५८ उदयसिंह	,,	१६६ खुमाण	,,
१५१ भटसूर	,,	१५९ पृथ्वीराज	,,	१६७ रामसिंह[1]	,,
१५२ डूंगरसिंह	,,	१६० आसकरण	,,		

(१) इस वंशावली में बीच के और अन्त के थोड़ेसे नामों के अतिरिक्त शेष सब नाम कृत्रिम हैं। शुद्ध वंशावली नीचे दी जाती है—

सामन्तसिंह (मेवाड़ का राजा)—राज अपने छोटे भाई कुमारसिंह को देकर बागड़ में गया और डूंगरपुर राज्य की स्थापना की (वि० सं० १२२८–३६)

१ रावल सीहड़देव सं० १२७७–९१ वि०,
२ रावल देवपालदेव,
३ रावल वीरसिंहदेव सं० १३४३–४९ वि०,
४ रावल भावचंद,
५ रावल डूंगरसिंह सं० १४२५ वि० के लगभग डूंगरपुर बसाया,
६ रावल कर्मसिंह सं० १४५३ वि०
७ रावल कान्हड़देव,
८ रावल प्रतापसिंह,
९ रावल गोपालदास सं० १४८९–९५ वि०,
१० रावल सोमदास या श्यामदास सं० १५१९ वि०,
११ रावल गंगादास,
१२ रावल उदयसिंह सं० १५८४ वि० में महाराणा सांगा के पक्ष में बाबर से लड़कर खानवे के युद्ध में मारा गया,
१३ रावल पृथ्वीराज सं० १५८८ वि०,
१४ रावल आसकरण सं० १६०४–४२ वि०,
१५ रावल सहसमल सं० १६४७ वि०,
१६ रावल कर्मसिंह दूसरा,
१७ रावल पूजा सं० १७०० वि०,
१८ रावल गिरधर सं० १७१६ वि०,
१९ रावल जसवन्तसिंह,
२० रावल खुमाणसिंह सं० १७५५ वि०,
२१ रावल रामसिंह,
२२ रावल शिवसिंह,
२३ रावल वैरीसाल,
२४ रावल फतहसिंह,
२५ महारावल जसवन्तसिंह दूसरा सं० १९०१ वि०,
२६ महारावल दलपतसिंह,
२७ महारावल उदयसिंह दूसरा सं० १९५५ वि०,
२८ महारावल विजयसिंह,
२९ राय रायान महारावल श्रीलक्ष्मणसिंहजी बहादुर, विद्यमान।

बांसवाड़े का गुहिलोत वंश।

सीमा—कुल गांव १३५०, डूंगरपुर से पश्चिम दिशा तीन देवलियें से मिली हुई, पश्चिम सरहद यह ही है। गांव १३५० तो पहले थे और कई भूमियों से लेकर नये मिलाये—नोपरड़ी गांव १५० सिरोही के मीणों के मेवास तथा देवड़ों के, मही नदी के परले तट पर कोस ६ पूर्व में १२ गांव थांदू के पूर्व, हैंस पाधी मगरा के महीड़ के गांव १२। यह हकीकत सं० १७१६ में मुहता (मुहणोत) नैणसी को गांव जैतारण में चारण खड़गल मूला भाण के पुत्र ने लिखाई।

बांसवाड़े की मूल ठकुराई तो वागड़ में डूंगरपुर ही की थी रावल जग-माल उदयसिंहोत ने गांव १३५० आधो आध डूंगरपुर के रावल पृथ्वीराज उदयसिंहोत से बंटवा कर बांसवाड़े को राजधानी बनाया। आज बांसवाड़े का राज डूंगरपुर से कुछ अच्छा है, हासिल भी अधिक बैठता है। मही नदी वहां से कोस २ पूर्व में बहती है। उसका निकास मांडू के पहाड़ों से है और डूंगरपुर से भी इस कोस के अन्तर पर बहती है। डूंगरपुर बांसवाड़े में मुख्यतः वागड़िये चहुवाण राजपूतों का थोक है जो डूंगरसी बालावत के वंश के हैं। इनके बाप दादे सदा से वहां के अधिपतियों को गद्दी पर बिठाते या उठाते थे और बाहर से राणा की तथा बादशाही सेना आती तो राणा की सीमा स्थान (सोम) नदी उल्लंघन पर ये चौहान मरते मारते रहे हैं। नदी के तटपर कई चहुवाण सरदारों की छत्रियां बनी हुई हैं जो यहां लड़ाई में मारे गये। वागड़ के पाडे (निकट) चहुवाण मईकिवाड़ (हट रजक) राहदेथी राजपूत हैं अतः उनके स्वामियों के साथ प्रायः उनकी अनबन ही रहती और यही कारण है कि मारवाड़ के राठोड़ों को वागड़ के राजा बड़ी २ जागीरें देकर अपने स्थानों पर रखते हैं। राठोड़ों ने वहां बड़े २ युद्ध किये और उनकी वहां बहुत प्रसिद्धि और भरोसा है।

(राज कैसे बंटा)—रावल गांगा के पुत्र रावल उदयसिंह तक तो सारी वागड़ एक ही इकछाया में थी। रावल उदयसिंह के पृथ्वीराज और जगमाल दो पुत्र हुए पिता के काम आने पर (वह राणा सांगा के साथ बाबर बादशाह के मुकाबले में बयाने के युद्ध में काम आये थे) पृथ्वीराज डूंगरपुर में पाट बैठा और जगमाल बारोटिया (बागी) हुआ तब रावल ने अपने सरदार वागड़िये चहुवाण भेरा और राव पत्तन लोलाड़िये को सेना सहित भेजे कि

जगमाल को राज्य के बाहर निकाल आवे। उन्होंने जाकर उसके गाड़े लूटे, कई राजपूतों को मारे और वह पराजित होकर भागा व पहाड़ों में आ छिपा। खोई हुई धरती को पीछी लेकर जब दोनों सरदार डूंगरपुर पहुंचे तब उन्होंने तो यह समझा था कि हम बड़ा काम करके आये हैं सो हमारी मान मर्य्यादा और जागीर में वृद्धि होगी, परन्तु रावल पृथ्वीराज का एक खवास पासवान या धाय भाई, जो सेना में सम्मिलित था, पहले से घर पहुंच गया और उसने एकान्त में रावल को सब वृत्तान्त कहा। ये लोग मरने मारने (युद्ध कौशल) में तो कुछ समझते नहीं, यह भिड़ादी कि जगमाल ऐसी घात में आगया था कि मारलिया जावे, परन्तु चहुवाण मेरा व रावत पर्वत ने उसे छोड़ दिया। रावल ने इस झूटी बात को सच्ची समझली और जब ठाकुर डूंगरपुर आये तो आप महल के भीतर जा बैठा और उनका मुजरा तक न लिया। वे खिन्न चित्त होकर घर चले गये। पीछे से रावल ने अपने विश्वासपात्र मनुष्य को भेज कर उन्हें बहुत उपालम्भ दिलाया और कहलाया कि तुम नमकहरामी हो, जगमाल को तुमने जाने दिया यह बहुत बुरा काम किया, अब मैं तुमको रखना नहीं चाहता। ठाकुर बोले कि हमने तो तन मन से सेवा की है, यदि रावलजी उसका मूल्य न समझें तो उनकी इच्छा। रावल ने तीन बीड़े पान के भेजे थे वह उस हजूरी ने उन सरदारों को देदिये। बीड़े पाते ही वे क्रोधित हो तत्काल चढ़ चले, घर पर भी न गये और सीधे उन पर्वतों में पहुंचे जहां जगमाल छिपा हुआ था। कोसेक के अन्तर से उतर कर डेरा डाला और अपने भरोसे के प्रतिष्ठित पुरुषों को जगमाल के पास भेज कहलाया, कि तुम्हारे दिन फिरे हैं यदि धरती लेने की इच्छा हो तो शीघ्र हमसे आकर मिलो। जगमाल कहने लगा कि मुझे उनका विश्वास नहीं, तिस पर उन प्रेषित पुरुषों ने सौगन्द शपथ करके उसका संशय निवृत्त करदिया। वह उनके साथ चहुवाण मेरा पर्वत के पास आया और वहां सब तरह से क़ौल वचन हुए। तत्पश्चात् उन सरदारों ने अपने भाई बन्धुओं को भी बुला लिया, अपने गाड़े जगमाल के गाड़ों के पास ला छोड़े और सब मिलकर देश में उपद्रव मचाने लगे। ठौड़ ठौड़ पर रावल पृथ्वीराज के थानों को मारकर च्यार पांच मास में राज के बड़े विभाग को ऊजड़ कर दिया। तब तो रावल घबराया, अपने मंत्रियों को बुलाकर सलाह पूछी। वे बोले कि हम कुछ नहीं जानते जिस मनुष्य ने आप से बात बीनती करके सरदारों को निकलवाये हो उसीसे पूछिये। रावल कहने लगा

कि जो होना था सो तो हुआ, विना विचारे जो काम किया उसका फल मैंने पाया, अब जो उचित समझो सो करो ! मुझसे राज की रक्षा नहीं होसकती है। मन्त्रीगण मेरा पर्वत और जगमाल के पास गये और कहा कि अब आन मिलो, जो तुम कहोगे वही करेंगे, जितनी तुम्हारी इच्छा हो वह जगमाल को दिया जावे और तुम्हारी जागीर भी बढ़ादी जावे। चहुवाण व राठोड़ों ने उत्तर दिया कि वह बात तो वहीं से गई, अबतो मामला ही दूसरा है। यदि तुमको सन्धि करना है तो इस शर्त पर होसकती है कि बागड़ के दो बराबर विभाग करके धरा आधो आध बांट दी जावे और दो रावल होवें, और किसी भी प्रकार सन्धि होने की नहीं। मन्त्री पीछे रावल पृथ्वीराज के पास आये, सारी हकीक़त यथातथ्य कह सुनाई, तब रावल बोला कि क्या करना चाहिये। मन्त्रियों ने निवेदन किया महाराज ! यह बड़ी बात है आज पहले ऐसा हुआ नहीं, अतः बात केवल हमारे विचारने योग्य नहीं राज के बड़े सरदारों और अन्य विश्वस्त सेवकों से भी इसमें सलाह लीजिये और स्वयं आप भी दस पाच दिन विचारिये ताकि पीछे किसी को उपालम्भ न दिया जावे। मन्त्रियों के मतानुसार रावल ने सबको पूछा तो यही उत्तर मिला कि धरती काबू से बाहर होगई, जिस तरह बने परस्पर मेल करलेना ही उचित्त है। तब रावल ने स्पष्ट-रीत्या अपने प्रधानों को कहदिया कि जितना उचित समझो वह जगमाल को देकर सन्धि कर आओ ! मन्त्री पीछे मेरा के पास गये, गांव ३५०० के आधे जगमाल को देकर मेल करलिया। दो रावल होगये और खड्गबल से बासवाड़े के धनी की बात ऊंची रही[1]।

---

(१) रावल जगमाल को आधा राज मिलने के विषय में और भी कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। बांसवाड़े वाले तो अपने भुजबल से आधा राज लेना कहते हैं, डूंगरपुर वालों का कथन है कि रावल पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर भाई को आधा राज बांटदिया, कोई ऐसा भी कहते हैं कि रावल उदयसिंह ही ने अपने दोनों पुत्रों को पृथ्वी बराबर बांट दी थी। यहभी सुना जाता है कि जगमाल अपने पिता उदय सिंह के साथ महाराणा सांगा की सेवा में बाबर बादशाह से युद्ध करने गया था। रावल उदयसिंह तो युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ, और जगमाल घायल हुआ। कुछ समय बीतने पर जब घावों से फुर्सत पाई वह अपने भाई के पास गया, पृथ्वीराज ने उसे फ़ितूरी ठहरा कर अपने राज में से निकलवा दिया, वह बासवाड़े के उत्तरी भाग के पहाड़ों में रहकर उपद्रव व उजाड़ करने लगा। जिस स्थान में वह रहा था उसे अबतक जगमेर (जगनेर ?) कहते हैं। उसवक्त मही नदी के पूर्व कूवानिये गांव का एक छोटा सा ठिकाना था, जहां का ठाकुर कई साल तक तो जगमाल से लड़ता रहा परन्तु अन्त

(वंशावली)—रावल जगमाल उदयसिंह का, जगमाल का पुत्र कृष्ण-सिंह (पिता की मौजूदगी ही में मरगया हो)। किशनसिंह का कल्याणमल पाट बैठा नहीं, कल्याणमल का पुत्र उग्रसेन था। (रावल जगमाल के पीछे उसका दूसरा पुत्र जयसिंह गद्दी बैठा था, जयसिंह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र रावल प्रतापसिंह हुआ जिसने सं० १६३१ में बांसवाड़े के मुकाम शाहंशाह अकबर की आधीनता स्वीकारी और बांसवाड़े का फर्मान हासिल किया)।

रावल प्रतापसिंह के पीछे रावल मानसिंह गद्दी बैठा जो रावल प्रताप की खवास पद्मनी के पेट से उत्पन्न हुआ था। रावल प्रताप के और कोई पुत्र न था और मानसिंह बहुत सुलक्षण (योग्य) था इसलिये देश के पांच राजपूतों ने मिल कर उसी को टीका दिया। उसके सम्बन्ध के लिये चहुवाणों के नारियल आये और वह उनके यहां ब्याहने गया। पीछे अपने प्रधान को छोड़ गया था। उस वक्त खांधू के भीलों ने राज में कुछ बिगाड़ किया तो रावल का प्रधान थोड़े से आदमियों को लेकर (भीलों को दण्ड देने के लिये) वहां गया, लड़ाई हुई और विजय भीलों की रही। प्रधान की प्रतिष्ठा बिगाड़ कर उसका घोड़ा छीन लिया और उसे वहां से निकाल दिया। जब ब्याह करके रावल मानसिंह लौटा तो उसने सारे समाचार सुने, कंकण डोरड़े भी न खोले व मारे क्रोध के उसी तरह खांधू पर चढ़ दौड़ा और वहां पहुंचकर गांव को घेर लिया। कई भीलों को मारे और गांव गमेती को बंधुआ बना पांवों में बेड़ी डाल अपने साथ ले चला। दस कोस पर जाकर डेरा दिया और लगा उस भील को धुतकारने।

में मेल करलिया और ठाकुर के मरजाने पर वह ठिकाना जगमाल के हाथ लगा, फिर जगमाल राणा रत्नसिंह की शरण गया और राणा की सिफारिश से गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने बागड़ का आधाराज उसको दिलवादिया। इस कथन की पुष्टि फारसी तवारीख़ों तबक़ाते अकबरी व मिराते सिकन्दरी आदि से भी होती है जिनमें लिखा है कि हि० स० ६३७ (ई० स० १५३१) में सुलतान बहादुरशाह ने बागड़ पर चढ़ाई की, पहले रावल पृथ्वीराज व जगमाल दोनों भाइयों ने सुलतान का मुकाबला किया पर अन्त में विवश होकर पृथ्वीराज ने आधीनता स्वीकार की और जगमाल पहाड़ों में भाग गया। फिर वह राणा रत्नसिंह के शरण गया और राणा ने अपने वकीलों के द्वारा सुलतान को जगमाल के वास्ते सिफारिश करवाई तो सुलतान ने बागड़ का आधा राज उसको दिलवा दिया, क्योंकि वह तो अपने सरहदी राजा व रावों का और दोकमा ही चाहता था।

गया तो उसकी दूसरी विधवा ठकुराणी हाडी बांसवाड़े वाली ठकुराणी के पास आई थी। हाडी बहुत रूपवती और अवस्था भी उसकी किशोर ही थी। मान-सिंह उस पर बुरी दृष्टि डालने लगा। हाडी बड़े घर की कुल वधू जैसी रूपवती वैसी ही शीलवती भी थी, उसने अपनी धाय को भेज कर मान को कहलाया कि तूने रावल के घर का तो नाश किया, परन्तु जो तू मनुष्य है तो मेरा नाम कभी मत लेना। और तब से वह सदा सावधान रहने लगी। मान को तो मन्मथ ने अंधा कर रक्खा था, एक दिन अवसर पाकर उसकी कोठरी में घुस पड़ा, हाडी ने देखा कि अब मेरा धर्म इस दुष्ट से बचने का नहीं तब वह तत्काल कटार खाकर मरगई।

रावत सूरजमल जैतमालोत रावल की सेवा में था, उसके नो हज़ार वार्षिक का पट्टा था। जब उसने हाडी के प्राण त्यागने की बात सुनी तो मन में बहुत दुखी होकर रावल को कहने लगा-तुम सिर पर खून बांधते, हाथों में हथियार पकड़ते और रजपूत कहलाते हो! तुम्हारे घर में यह क्या उपद्रव मच रहा है, तुम्हें लज्जा नहीं आती! रावल बोला क्या किया जावे? सब जानते हैं, देखते हैं, परन्तु ज़ोर कुछ भी नहीं चलता और कोई दांव नहीं लगता है। सूरजमल कहने लगा कि अपना बल बढ़ाकर हिम्मत के साथ इसको यहां से निकालेंगे। फिर रावल से बोल क़ौल किया और मानसिंह को कहलाया कि रावल के घर का नाश कर अब तू हाडों की ओर झुका सो अच्छा नहीं किया, परन्तु वह किसकी सुनता था। चोली माहेश्वर में केशोदास भीमोत एक प्रबल ठाकुर रहता था, सूरजमल ने अपना विश्वासपात्र मनुष्य उसके पास भेज कह-लाया कि यदि तुम उग्रसेन की सहायता करो तो उसकी छोटी बहन का विवाह तुम्हारे साथ कर दिया जावेगा और बहुतसा द्रव्य दहेज में देंगे, अमुक दिवस अचांचक आजाना! मान चहुवाण को इस रचना की कुछ भी खबर न हुई। नियत दिवस पर रावल और सूरजमल ने अपने सारे साथ को अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित कर रक्खा और उसी दिन केशवदास ने १५०० योद्धाओं सहित आकर गांव की सीमा पर नक़ारा बजाया। मानसिंह ने अपना आदमी खबर के वास्ते रावल उग्रसेन के पास भेजा तो वह क्या देखता है कि रावल के साथी सजे सजाये बैठे हैं, तुरन्त लौटकर मान को सूचना दी कि रावल और वह आने वाला दोनों मिलकर तुम से चूक करने वाले हैं। भयभीत हो मान गढ़ की

देवलिये (प्रतापगढ़) का गुहिलोत वंश।

देवलिये की सीमा इतने प्रदेशों से मिलती है—दसोर (मन्दसोर), रतलाम; धलोरका परगना राणा का, सोनगिरा बालावतों का वतन भाड़ी बहुत, जीहरण धीरावद (धरियावद) राणा की, वांसवाड़ा।

नदियां दो जाखम और जाजाली देवालिये के पहाड़ों से निकलती और देवालिये से कोस ५ पश्चिम और उदयपुर से देवलिये जाते मार्ग में पड़ती हैं। उनका जल, यहां तक खराब है कि पीने वाला तो रोगग्रस्त होता ही, परन्तु जो उस नले के जल में होकर जाता वह भी कष्ट पाता है।

देवलिये ताल्लुक़ सात सौ गांव है। उनमें से एकसौ गांवों में मीनों की वस्ती है, जो कई तो प्रजा और कई मेवासी होकर रहते हैं। गेहूं, उड़द, चांवल, ईख की खेती बहुत होती और आम महुवे के पेड़ वहुतायत से हैं। गांव तीन सौ तो पहाड़ी में, और गांव ४०० समभूमि में है। इतनी भूमि देवलिये वालों ने नई दबाई सुहागपुरा, सोनगिरे चहुवाणों का वतन, ८४ गांव से रावत सिंह ने लिया जहां अबतक सोनगिरों का निवास है, वे देवलिये के स्वामी को चाकरी देते हैं। देवालिये से ४ कोस पूर्व वंसाड़ परगना, गांव १४०, बहुत उपजाऊ है। नैणेर का परगना गांव ८४, देवालिये से दस कोस, दक्षिण सुहागपुरे के पास अरुणादत्त का तीर्थस्थान है। गेहूं, वाड़ (ईख) चण, जवार, चांवल अच्छे पैदा होते। गांव १२ सेवना से दसोर के, रावत हरीसिंह ने दबाये, देवलिये से कोस दस। ये गांव बहुत वर्षों के वास्ते मुकाता ठहराकर लिये थे, परन्तु अबतो नाम मात्र के वास्ते थोड़ासा मुकाता दाखिल करते हैं।

देवलिये परगने का प्राचीन नाम गयासपुर था, जिसमें देवलिया भी एक गांव था। अब तो गयासपुर देवलिये से ५ कोस ईशान, ५८ घरों की बस्ती का एक छोटासा गांव रहगया है। प्राचीन काल में वहां मेरों का राज्य था जो मेवासी होकर रहते थे। राणा मोकल के एक पुत्र खींवा (क्षेमराज) को उदयपुर से १५ कोस और चित्तोड़ से २० कोस दक्षिण तेजमाल की सादड़ी जागीर में मिली थी। जब राणा कुम्भा पाट वैठा, तो दोनों भाइयों में परस्पर ग्रासवेध पड़ा। खेमा मांडू के बादशाह के पास पहुंचा और वहां से सैनिक सहायता प्राप्त कर मेवाड़ को बड़ा धक्का लगाया। राणा कुम्भा और खेमा में लड़ाई चलती रही, परन्तु

राणा उसको मेवाड़ बाहर न निकाल सका, अन्त में दोनों इसी प्रकार लड़ते २ काल कवलित होगये। चित्तोड़ में राणा रायमल पाट बैठा और खेमा की जागीर पर उसके पुत्र सूरजमल का अधिकार रहा। राणा रायमल और रावत सूरजमल के दर्मियान भी झगड़ा चलता ही रहा। सूरजमल ने सादड़ी के सिवा और भी बहुतसी भूमि दबाली थी और १७ गांव शासन (उदक) में दिये जो आजतक पानेवालों के भोग में हैं। जब रावत बाघ गद्दी बैठा, वह चित्तोड़गढ़ पर हाडी करमेती के मामले में मारागया। उसने उन शासन के गावों के वास्ते हाडी की सही कराली थी। वे गाव ये हैं-भीमल, धारता, गोठिया, बीझणा, बोसोला, भरखिया, बालिया, थाहरून, चारणखेड़ी, खर देवला भाटकी, और सुआली। राणा रायमल के जेष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने सूरजमल से कई लड़ाइयां लड़ीं, अन्त में सादड़ी में बड़ी लड़ाई हुई। सूरजमल घावों में पूर होकर पड़ा। इसी लड़ाई से गिरवा हाथ से जाता रहा, जहा देवारी के बाहर गांव बीझणा बासोला आदि और भी गाव सूरजमल के शासन दिये हुए अब तक उदक लेने वाले खाते हैं। इस लड़ाई से भी सादड़ी नहीं छूटी, च्यार पीढ़ी तक सूरजमल के वंशजों का अधिकार वहा रहा था। एक दिन अचांचक कुंवर पृथ्वीराज रावत सूरजमल पर आन गिरा, इसके पहले ही दिवस राणा रायमल के साथ सूरजमल का युद्ध हुआ था, जिसमें उसका हाथ ऊपर रहा (राणा उसको विजय न करसका) और वह थोड़ासा घायल भी हुआ था। दूसरे दिन पृथ्वीराज आन पड़ा तब सूरजमल के बहुत घाव लगे और उसके राजपूत उसे डोली में डालकर पहाड़ों में ले गये। पृथ्वीराज ने पीछा किया। सूरजमल के राजपूत बन्ना देवड़ा और पृथ्वीराज के नौकर महिया भाखरोत में परस्पर युद्ध हुआ। बन्ना ने महिया को मार लिया। देवलिये में मुख्य राजपूत सहसावत सीसोदिया और सोनगरे चहुवाण हैं। जोगीदास जोधा का अच्छा राजपूत है। जोध, गोपाल, और पूरा, सहसमल के पुत्र थे।

१ रावत खींवा मोकल का, २ रावत सूरजमल, ३ रावत बाघ सूरजमलोत चित्तोड़ बहादुर (गुजराती) के हमले में काम आया, ४ रावत बीका-रावत बाघ के पीछे गद्दी बैठा बाघ के पुत्र रायसिंह का बेटा था। उसको राणा उदयसिंह ने अपने देश से निकाल दिया तब वह गांव बडेरी में आसारण नामी मेरों की दादी के पास आया उस बडेरी (वृद्धा) का मेर बड़ा आदर करते थे। पहले तो

मेरों ने उसे वहां न ठहरने दिया परन्तु जब उसने बहुत से सौगन्ध शपथ खाकर उनको विश्वास दिलाया तब रहने पाया। अन्त में होली के दिवस वीका ने दगा कर सब मेरों को मारडाले और देवलिया लिया। आसारण के सन्तानों के अबतक एक गांव जागीर में है और उनका बड़ा भरोसा है।

रावत वीका के पीछे उसका पुत्र भाना (भानुसिंह) टीकेत हुआ[1]। वह चित्तोड़ के राणा अमरसिंह का समकालीन था। जीरण नीमच पर सैय्यदों का अधिकार था, दीवाण की हद् नउवे बाघरेड़े तक थी जहां रावत खंगार का पुत्र रावत गोयंददास थाने पर रहता था। सैय्यदों से रावत गोयंद का युद्ध हुआ और वह मारा गया। फिर राणा की आज्ञा से सीसोदिये जोध शक्तावत ने मोखण कराड़िया, कुंडल की सादड़ी और जीरण के कितनेक गांव मुकाते लिये। वहां जोध और बाघ दोनों भाई रहने लगे। रावत की धरती आबाद न होने देवें, और अपने गांवों के तुल्य नीमच से भी चौथ मांगने लगे। सैय्यदों के साथ जोधकी खसमखस बनी रही। वह रावत भान के गांवों को भी लूटता और देवलिये के मेरों के गांवों को मारता था। रावत भाना और शक्तावत जोध के पूरी शत्रुता थी। एक वार भान ने सैय्यदों को कहा कि इन बलाओं को यहां क्यों रखते हो, कल्ह (अवसर पाकर) ये तुमको मारेंगे? सैय्यद मक्खन की समझ में यह बात आगई, पहले तो उसने राणा अमरसिंह के पास पुकार की कि जोध हमारे गांव लूटता है और हम से लड़ाई करने का विचार रखता है। जोध के कानों तक यह सम्वाद पहुंचने पर वह भी दर्बार में अपना पक्ष दृढ़ करने लगा, बात बढ़ी, रावत भाना और मंदसोर का फौजदार सैय्यद मक्खन १५०० सवार की भीड़भाड़ लेकर जोध पर चढ़ आये, वह भी एकसौ सवार और २०० पैदल से मुक़ाबले को आन उपस्थित हुआ। चीताखेड़े के परे एक वट वृक्ष के पास दोनों में युद्ध हुआ। जोध ने सैय्यद मक्खन और रावत भाना दोनों को मार लिये, परन्तु आप भी वहीं खेत रहा व उन गांवों पर जोध के पुत्र नाहरखां भाखरसी ने अधिकार जमाये रक्खा। सैय्यदों को भी धक्का पहुंचा।

भाना के पीछे उसका भाई सिंहा तेजावत देवलिये की गद्दी पर बैठा और नीमच, रामपुरे के शासक राव दुर्गा (सीसोदिया) को मिली। राव ने कहा

(१) रावत बीका के पीछे उसका पुत्र रावत तेजसिंह सं० १६२५ में गद्दी बैठा था जिसने तेजसागर का तालाव बनवाया भानुसिंह तेजसिंह का पुत्र था।

कि हम तो दीवाण के चाकर हैं, नीमच जीरण की धरती के जो गांव चाहें दीवाण लेलेवें और जो चाहें हमें देवें। तब राणा ने मनमाने गांव लेलिये और देवलिये को टीका भेजा और आश्वासना के साथ कहलाया कि रावत माना और गहलावत जोध दोनों हमारे मारे मरे, अब जोध के पुत्र वहां हैं तुम उनसे छेड़छाड़ मत करना। रावत सिंह ने राणा की आज्ञा शिरोधार्य रक्खी और धरती बर्ती। फिर राणा अमरसिंह पर विपत्ति का बादल टूटा, सात वर्ष तक वह आपत्ति भोगता रहा, राज सगर के सुपुर्द हुआ, फिर बादशाह से संधि होने पर नीमच व जीरण दीवाण को बादशाह की तरफ से दिये गये।

देवलिये और राणा के देश की सीमा के गांव—जीरण नीमच में गाव चीनाखेड़ा राणा का, म्यांवला देवलिये का सीसोदिया बाबखाना; जगरवप राणा का। अन्वनी का टूंक देवलिये का, बसोर का थाठा राणा का, धमोतर देवलिये की।

रावत सिंह तेजावत के मरने पर रावत जसवन्त देवलिये की गद्दी पर बैठा, जसवन्त वंसाड़ के गांव मोड़ी में रावत जसवन्त गहलावत नरहरोत राणा जगतसिंह की तरफ से थाने पर रहता था। मन्दसोर के फौजदार जांनिसारखां को रावत जसवन्त सिहावत ने बहकाया और राणा के थाने पर चढ़ाया। रावत आप तो साथ में नहीं आया परन्तु अपने बहुत से आदमियों को सहायतार्थ साथ दिये। युद्ध हुआ और रावत जसवंत गहलावत इतने योद्धाओं सहित खेत पड़ा—सीसोदिया जगनाथ बाबावत, सीसोदिया पीथा बाबावत, सीसोदिया कान्ह सादूल नरहरोत पूरबिया सबलसिंह चतुर्भुजोत आदि। इस घटना को मन में रखकर राणा जगतसिंह ने रावत जसवन्त सिंहावत को उदयपुर बुलाया। रावत अपने पुत्र महासिंह सहित आया, (चम्पाबाग में ठहराया) और रामसिंह कर्मसेनोत को (सेना सहित) भेजकर रावत जसवन्त और उसके पुत्र महासिंह दोनों को मरवा डाले[1]। इसके पूर्व राणा ने अपने मुसाहब अखैराज को धरावत (धरियावद) के पास, जो देवलिये से मिला हुआ है, बहुतसी सेना समेत भेजकर आज्ञा दी थी कि तू देवलिये पर चढ़ाई करके उस पर अपना अधिकार करलेना, परन्तु अखैराज गया नहीं। इस घटना के उपरान्त सीसोदिये जोध गोपाल रावत हरीसिंह को देवलिये की गद्दी पर बिठाकर फिर उसे दर्गाह

(१) राज प्रशस्ति में लिखा है कि राठोड़ रामसिंह ने देवलिये को भी लूटा था।

ले गए । बादशाह ने देवलिये को राणा के अधिकार में से अलग कर दिया और रावत की चाकरी उज्जैन अहमदाबाद की ओर नियत की[1] ।

चन्द्रावत सीसोदियों का गुहिलोत वंश ।

चन्द्रावत रामपुर के स्वामी (उदयपुर के) राणा वंश के हैं । राणा भुवनसिंह के पुत्र चन्द्रसिंह के वंशज चन्द्रावत कहलाये, पीढ़ी ११८ हुई । सं० १२८१ में रावल कर्ण का पुत्र माहप हुआ। (उदयपुर के राणा) पहले रावल कहलाते थे, माहप ने राणा पदवी पाई और सीसोदा गांव के नाम से सीसोदिये प्रसिद्ध हुए[2] । यहां से दो शाखा फंटी, एक तो राणा सीसोदा के धनी, और दूसरी रावल, चन्द्रसिंह के वंशज चन्द्रावत कहलाये । उनकी पीढ़ियां-राणा भीमसिंह, चन्द्रसिंह, सजनसिंह, जांझणसी, भाखरसी,[3] । चन्द्र की सन्तान में भाखरसी पाटवी था जिसके आंतरी परगने में भूमि थी, यह परगना आंमद (?) देशमें है जिसके पट्टे के गांव पथार में चन्द्रावतों का वतन है ।

भाखरसी और उसका काका छज्जू दोनों बड़े भूमिये थे जिनकी भूम मांडू के बादशाह की हदमें थी। आंतरी के ताल्लुक़ १४० गांव लगते थे, सब दुफसले और राजधानी आंतरी में थी । बादशाह अकबर के समय में राव दुर्गा ने रामपुरा बसाया[4] और वह चन्द्रावतों का राजथान हुआ । ये लोग आंतरी में भूम

---

(१) राणा राजसिंह ने अपने मुसाहब फतहचंद को देवलिये पर भेजा था, उसने वह नगर लूटा और रावत हरीसिंह भाग कर बादशाह के पास गया, हरीसिंह की माता अपने दूसरे पुत्र प्रतापसिंह को लेकर उदयपुर आई और राणा ने उसे अपने उमरावों में दाखिल किया ।

(२) राणा वंश का मूल पुरुष रणसिंह का छोटा पुत्र राहप था जिसे सीसोदा जागीर में मिला था, माहप शायद भूल से लिखा गया हो ।

(३) नैणसी ने चन्द्रसिंह प्रथम को पहले तो राणा भुवनसिंह का पुत्र बतलाया और फिर भीमसिंह का बेटा होना लिखा । चन्द्रसिंह राणा भीमसिंह के दूसरे पुत्र जेसोजी का बेटा था ।

(४) राव दुर्गा सीसोदिया के वास्ते फारसी किताब मासिरुलउमरा में लिखा है कि वह राणा प्रतापसिंह का विश्वासपात्र सेवक था, पीछे शाहंशाह अकबर की चाकरी में आरहा । बादशाह जहांगीर ने उसका मनसब च्यार हजारी कर दिया था । सं० १०१६

लागत की चौथ लेते थे। चन्द्रावतों में मुख्य पुरुष भाखरसी झांझणोत था और ये सब उसके हुक्म में चलते थे। छज्जू बड़ा राजपूत था और उसके पास बहुत सी घोड़ियां, सांडें और गायें भैंसें थीं। उसके पशु प्रतिदिन लोगों के खेत खाया करते तब लोग भाखरसी को आकर पुकारते थे। वह छज्जू को प्रायः उलाहने दिलवाता परन्तु पशु रुकते न थे। लोग अत्यन्त क्लेशित हुए तब एकवार भाखरसी ने फिर छज्जू को बुलाया और कहा कि तूं मानता नहीं, अब भला इसीमें है कि तूं यह स्थान छोड़ कर दस कोस आगे जा बस! यहां रहने में परस्पर विवाद होवेगा। छज्जू और उसका पुत्र शिवा बूंदी चित्तोड़ और आतरी के बीच पथार के गावों को छोड़कर कोस बारह पर आतरी के एक गांव मिलसियाखेड़ी से कोसेक परे बेतवा नदी के तट पर जा बसे, जहा बड़ा जंगल था और ढोरों के चरने के लिए घास भी पुष्कल था। वहीं उन्होंने बीस पचीस घर राजपूतों के बसाये। आंतरी के क़स्बे में बड़े २ महाजन रहते और चोर वहा बहुधा आया करते थे,

---

हि० (सन् १६०७ ई० स० १६६४ वि०) में ८२ वर्ष की आयु भोगकर राव दुर्गा का देहान्त हुआ। उसका पुत्र चन्द्रसिंह (दूसरा हो) पहले ७०० का मसबदार था, बादशाह ने उसका मसब बढ़ाकर राव की पदवी प्रदान की। चन्द्रसिंह के बेटे राव दूदा को मसब दो हजारी ज़ात १५०० सवार का और निशान बख्शा गया। दखन में दौलताबाद की लड़ाई में राव दूदा अपने किसी सम्बन्धी की लाश को लाने के वास्ते शत्रुओं के गोल में घुस-पड़ा और च्यारों ओर से घिर गया तब घोड़े से उतर कर पैदल हो लिया और नगी शमसेर घुमाता हुआ बचता निकल आया। दूदा के बेटे हस्तिसिंह को दो हजारी जात हजार सवार का मसब, खिलत और राव का खिताब अता हुआ था। कई साल तक दखन की मुहिम में रहकर उसने वहीं शरीर छोड़ा। उसके सन्तान न होने से बादशाह शाहजहां ने राव चन्द्रसिंह के पोते और मुकुन्दसिंह के बेटे रूपसिंह को रामपुरा देकर ६०० का मसब बख्शा। औरगजेब के साथ रूपसिंह बलख बदख़शा की लड़ाई में गया और वहां बड़ी वीरता दिखलाई। वह बादशाही लश्कर के हिरोल में रहता था। मसब उसका दो हजारी जात १२०० सवार का हो गया। राव रूपसिंह के पुत्र न होने से राव चांदा के पौत्रों में से अमरसिंह को रामपुरा मिला। वह औरगजेब के साथ सन् १६६८ ई० में कन्दहार की लड़ाई में सालहरे के गढ़ के नीचे काम आया और उसका पुत्र मोहकमसिंह राव पदवी पाया। मोहकमसिंह का पुत्र राव गोपाल था जिसको उसके बेटे रत्नसिंह ने राजच्युत कर दिया। राव रत्नसिंह बड़ा कजूस और ज़बान का हलका था। मालवे के सूबेदार अमानतख़ां के साथ उसका युद्ध हुआ, उसकी सेना ने साथ न दिया और वह मारा गया। स० १७७६ वि० में राणा संग्रामसिंह (दूसरे) को बादशाह फर्रुख़सियर ने रामपुरा पीछा दिया।

बादशाही करोड़ियों का भूमियों की भूमि में अमल नहीं था, तब महाजनों ने विचारा कि करोड़ी से तो कुछ होता नहीं, सीसोदिया छज्जू और शिवा भले राजपूत (वीर) हैं, गांव की रक्षा का भार इनको देदेवें तो ये चोरों का उपाय करलेंगे। छज्जू से बातचीत हुई, उसने भी स्वीकार कर लिया और महाजनों ने उसको रु० १) रोज़ाना शासन का करदिया, इसके अतिरिक्त जन्म मरण पर भी कुछ लागत बांध दी। पिता पुत्र दोनों क़स्बे की टहल करने लगे, आस पास के उनके भाई बन्धु भूमियों के जो चोर लगते थे उनको छज्जू ने रोक दिये और दूसरे चोरों को पकड़ मारे, क़सबे में चैन होगया। अब छज्जू शिवा का पलड़ा भारी पड़ा और उनके घोड़े राजपूतों की जोड़ चढ़ने लगी। शिवा बड़ा वीर और हट्टा-कट्टा जवान था, वह नदी तट पर प्राय: शिकार खेला करता था। उस वक़्त मांडू में होशंग घोरी बादशाह था (होशंग ने स० १४६२ से स० १४६२ तक बादशाहत की), जिसने दिल्ली के पठान लोदी बादशाह की बेटी के साथ विवाह किया था। होशंग शाह के जवान दिल्ली से शाहज़ादी को लिये आते थे, वे आंतरी के पास नदी पर पहुंचे। भादों आसोज के दिन थे, नदी बड़े वेग के साथ बह रही थी और पार उतरने को कोई घाट बाट न था। शाहज़ादी नदी में डोंगी डालकर उतरने लगी परन्तु मझधार में पहुंचते ही डोंगी टूटगई और उसके तख्ते अलग अलग होगये। डूबती हुई शाहज़ादी के हाथ एक तख्ता आजाने से वह उस पर चढ़ बैठी और धारा के प्रवाह में बहने लगी। शाही चाकरों ने शोर मचाया कि शाहज़ादी डूबी जाती है। शिवा पास ही शिकार खेल रहा था, उसने वह शब्द सुने, दौड़ कर पहुंचा और शाहज़ादी को बहती हुई देखा। वह बड़ा तैरू था, तत्काल नदी में कूद पड़ा और आडबहाव तैरता तख्ते के पास जा पहुंचा। शाहज़ादी को सलाम किया, उसने कहा तू मेरा भाई है मेरा प्राण बचा! शिवा बोला कि मेरा कंधा पकड़ले। इस प्रकार नदी को पार कर शाहज़ादी को निकाल लाया। सब बधाई बांटने लगे, शाहज़ादी शिवा पर बहुत प्रसन्न हुई, उसे घोड़ा सिरोपाव दिया और कहा कि तू मेरे साथ माण्डू चले तो मैं तुझे बादशाह से अर्ज़ करके मन्सब दिलवाऊंगी। शिवा घरसे अपने दस आदमियों को साथ ले शाहज़ादी के साथ हो लिया। उसके खानपान का खर्च बांध दिया गया और अकसर शाहज़ादी उसे इनाम इकराम भी दिया करती थी। मांडू पहुंचे, शाह-ज़ादी ने सुलतान से अर्ज़ की कि राणा के भाई एक सीसोदिया ने मुझे नदी में

से डूबती हुई निकाली है, उसको मैंने भाई कहा है। बादशाह उस पर बड़ी कृपा रखने लगा और वह भी बादशाह की चाकरी करता था। एक दिन बादशाह ने प्रसन्न होकर शिवा को कहा मांग ? शिवाने अर्ज़ की कि आंमद देशमें आंतरी का परगना मेरा वतन है वह मुझको मिल जावे। बादशाह ने पट्टा कर दिया और घोड़ा सिरोपाव दे विदा किया, शाहज़ादी ने भी चलते वक्त तीस चालीस हज़ार का माल और घोड़ा सिरोपाव शिवा को दिया। राव की पदवी पाई, मार्ग में अच्छे २ आदमियों को नौकर रखकर ४०० सवार साथ लिये वह घर आया और परगने में अपना अमल जमाया। जो आदमी वहां रखने योग्य नहीं थे उनको निकाल दिए। शिवासे चंद्रावतों की शाखा में ठाकुराई आई और १४०० गांव से उसने आंतरी का परगना पाया। राव शिवा, राव रायमल, और राव अचला तक तो राजधानी आंतरी में रही। अचला का बेटा दुर्गा बड़ा दातार और जूझार हुआ, उसने रामपुर का क़स्बा श्री रामचन्द्रजी के नाम पर बसाया जो बड़ा गांव है और भूमि वहां की दुफसली है। शिवा ने राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज से बड़ी लड़ाई की थी। शिवाके पुत्र रायमल को राणा कुम्भाने बलपूर्वक अपना चाकर बनाया जब कि माडू की बादशाहत निर्बल होगई थी। अचला रायमलोत भी राणा सांगा का चाकर था। राणा सांगा बड़ा प्रतापी हुआ जिसने मांडू और दिल्ली के प्रदेश भुजबल से विजय कर लिये थे। राव दुर्गा अचला का, राणा की चाकरी छोड़ बादशाह अकबर का सेवक बना, बादशाह ने उसका मान बहुत बढ़ाया और रामपुरे के सिवा चार परगने और जागीर में दिये। रायचंद दुर्गा का। चंद्राका टीकायत पुत्र नगजी तो अपने पिता की विद्यमानता ही में मरगया था उसका पुत्र दूदा टीके बैठा जो बादशाह शाहजहां के समय में मोहबतखां के साथ दौलताबाद की लड़ाई में अपने काका गिरधर सहित काम आया। दूदाके पीछे हटीसिंह (हस्तीसिंह) राव हुआ जो जवान ही निस्सन्तान मरगया। उसके पीछे रुक्मांगद का बेटा और चन्द्रसिंह का पोता रूपसिंह गद्दी बैठा, और उसके पीछे राव अमरसिंह हरिसिंहोत चंद्रावत को टीका हुआ। रूपसिंह की मृत्यु के पीछे उसके एक पुत्र हुआ था।

प्रकरण दूसरा

चौहान वंश।

बूंदी के चौहान।

सं० १७२१ के ज्येष्ठ मास में राव रामचंद्र जगन्नाथोत ने लिखायाः—राव भावसिंह के अभी इतने परगने हैं जिनके गांव ३१६। परगना बूंदी गांव ३६०; परगना खटकड़, बूंदी से ६ कोस, गांव ८४; पाटण बूंदी से १२ कोस,-गांव ४२, गौड़ों की लाखेरी, बूंदी से ६ कोस। बूंदी के पास हाड़ोती के परगने—मऊ, खीची (चौहानों का वतन), जिसमें (काली) सिंध अच्छी नदी सदा बहती रहती है। उसका निकास मऊ से ७ कोस, गांव धूलकोट के पास गूंडवाण से है। यही नदी गागरून के गढ़ तले बहती है। राव रत्नसिंह ने मऊ का परगना विजय किया था, जो बूंदी से ३० कोस पर है और उसमें १४०० गांव लगते हैं। खास शहर मऊ, अच्छा छोटासा क़स्बा, पीपाड़ के तुल्य एक टेकरी पर बसा है। आगे की तरफ गांव ७०० में समभूमि और पिछवाड़े गांव ७४० में झाड़ पहाड़ हैं। मऊ के कोट की पुश्ती के नीचे नदी सदा उतार बहती है, परन्तु वहां उसका सेजा नहीं (सेजा अर्थात् आसपास की भूमि का सजल होना)। भूमि काली है, जिसमें गेहूं, चने, ईख और चांवल बहुत पैदा होते हैं। प्रजा—लोधा, किराड़, धाकड़ और मीणे हैं। यह परगना हाडा भगवतसिंह ने जागीर में पाया, उसने वहां महल, तालाव बनवाये, और नये मोहल्ले बसाये। बस्ती २००० घर की है।

कोटा, बूंदी से १२ कोस, गांव ३६०, बहुत बड़ी जगह है। जैसे जोधपुर के स्वामी के सोजत ग्रासबेध का स्थान है, वैसे ही बूंदी का ग्रासबेध कोटा है। यह नगर चंबल नदी के तट पर बसा है और वहां हाड़ा मुकन्दसिंह के बनवाये हुए बड़े महल हैं[1]।

---

(१) मुहणोत नैणसी के समय से करीब चालीसेक वर्ष पहले ही कोटे का जुदा राज बूंदी में से निकल कर स्थापन हुआ था इसलिये उसका हाल ख्यात में नहीं है। मैं यहां कोटे राज्य का इतिहास संक्षेप से लिखता हूं। इस वक़्त उस राज्य का रक़बा क़रीब ४००० मील मुरब्बा, आबादी करीब ६४०००० आदमियों की, और गांव २५५८ हैं।

खैराबद बूंदी से ४० और मऊ से १४ कोस है। इसका दूसरा नाम मिर्ज़ा अभिरामपुर है, गांव ८४। पलायता बूंदी से १४ कोस और कोटे से ८ कोस है, गांव ८४ (अब यह कोटे के अधिकार में है)। सांगोद बूंदी से २५ कोस, गांव ८४। खातोली, खींचियों का वतन, बूंदी से २५ कोस, कोटे से ६ कोस, गांव ३१। घाटी, बूंदी से २५ कोस, कोटे से ७ कोस, गांव ४१। गागरन, बूंदी से ३० कोस मऊ से ४ कोस और कोटे से १० कोस है। खींची अचलदास का बनवाया हुआ पहाड़ पर बहुत चौड़ा गढ़ है, जिसमें १०००० मनुष्य रह सकते हैं। गढ़ के पिछवाड़े सिंध नदी सदा बहती रहती, जिसका जल गढ़ में लिया गया है। पहिले तो यह गढ़ उजड़सा पड़ा था, अभी झाला मुकुन्दसिंह ने इसकी मरम्मत कराकर वहां महल भी बनवाये हैं। गागरन के कस्बे में ७०० आदमी

कोटे राज का स्थापन करने वाला राव माधोसिंह, बूंदी के रावराजा रत्नसिंह [illegible]-राव का दूसरा पुत्र था, जो अपने पिता की मौजूदगी ही में बादशाही नौकरी में रहता था। बादशाह शाहजहां के तख्त पर बैठने के समय राव माधोसिंह का मनसब एक हजार जात ६०० सवार का था, परन्तु खाने जहां लोदी या पठान को, जो बादशाह से बागी होगया था, लड़ाई में मारडालने से मनसब बढ़ाया और निशान भी मिला। सं० १६८८ वि० में पोष वदी ३ को बालाघाट में बूंदी के राव रत्नसिंह का देहान्त हुआ तब बादशाह ने उसके पाटवी पोते शत्रुसाल को तो बूंदी का मालिक किया और माधोसिंह का मनसब बढ़ाकर कोटा और पलायता के परगनों के ३६० गांव, बूंदी में से जुदा कर उसको दिये। इस वक्त कोटा राज की वार्षिक आय करीब दो लाख रु० साल की थी। बूंदी के इतिहास वंशभास्कर में लिखा है कि राव रत्नसिंह ने (जब वह बुरहानपुर का किलेदार था और शाहज़ादा खुर्रम अपने बाप जहांगीर बादशाह से बागी होकर बुरहानपुर लेने आया था) शाहज़ादे (खुर्रम) और उसके (सेनापति) मुहम्मद तकी को लड़ाई में हराकर कैद कर लिये। बादशाह ने कई फरमान भेजे, परन्तु राव रत्नसिंह ने शाहज़ादे को हुज़ूर में न भेजा और अपने पुत्र माधोसिंह को उसके पास रक्खा। इसी सेवा के बदले खुर्रम ने तख्त पर आते ही माधोसिंह को जुदा राजा बना दिया। सर एचीसन की ट्रीटीज़ में कोटे के हाल में लिखा है कि, करीब २१० वर्ष पहले उदयपुर के महाराणा (जगतसिंह प्रथम) ने बूंदी के राव से उसके छोटे भाई (माधोसिंह) को राज बटवा दिया।

राव माधोसिंह ने बुरहानपुर, बुंदेलखंड, बीजापुर, बलख और कुन्धार आदि स्थानों में बड़ी वीरता के काम किये और नाम पाया। सं० १७०४ वि० में इस वीर राजा का शरीर छूटा। इसके पांच पुत्र थे, पाटवी मुकुन्दसिंह गद्दी बैठा, मोहनसिंह पलायता पाया, जुझारसिंह को रामगढ़ व रेलावन की जागीर दी, कनीराम कोटड़ा में रहा और किशोरसिंह को सांगोद दिया गया।

घर की वस्ती है। सिंध नदी मऊ के परगने में वहती है। मऊ के निकट इतने नगर हैं-पेवा का परगना गांव १२, सदा से हाडों के अधिकार में चला आता था परंतु अभी वादशाह ने दूसरे जागीरदार को बख़्श दिया है। यह परगना मऊ और कोटे के वीच में है। गूंगोर, खीचियों का वतन, मऊ से २५ कोस पूर्व की तरफ़, जिसमें ३६० गांव लगते हैं। नगर में १०००० घर की बस्ती (शायद भूल से एक विंदी ज्यादा लग गई है) और छोटासा गढ़ भी है। खाताखेड़ी, मऊ से २० कोस, भील चक्रसेन का स्थान, हाडा भगवंतसिंह की जागीर में है। मारली, गांव ७००। चाचरनी, खीची बाघ की, खीचियों का वतन, मऊ से २५ कोस और खाताखेड़ी से ५ कोस है, इसमें गांव ६४ हैं। वेहूसिंघल की गोपलदे, भगवंतसिंह की जागीर में है। खीची सांवलदास का चाचरड़ा, गांव ४२, खाताखेड़ी से ७ कोस है। मऊ के परगने में नामी गांव-देवीखेड़ा, हरीगढ़, जोलपे मोही, मोड़पुरा, और कूड़ी। वंमोरी परगना, गांव ६४। जरगा, अटरोह के गांव ८४। धूलोप, जीलवाड़ा के गांव ८४। भूमि प्रजा की है। लगान-चाड़ (ईख) वीघे एक के रु० ५), आल, वीघे एक के रु० ५), वण (कपास) वीघे एक का रु० १॥)। ऊनाली (रवी की शाख) पीवल नहीं होती, सेजा वहुत, साल, गेहूं, चना और ईख वहुतायत से पैदा होते हैं। प्रजा, गूजरगौड़ (ब्राह्मण), पारीक (ब्राह्मण), मीणे, धाकड़, किराड़ और अहीर हैं।

हाडोती में नदिया ४ हैं-चंवल, (काली) सिंध, पार और पूडण।

बूंदी नगर का वृत्तान्त—सं० १७२१ के जेष्ठ मास में राव रामचंद्र जगनाथोत ने लिखाया। यह नगर पहाड़ से सटा हुवा वसा है। राजमहल पहाड़ के मध्यभाग में है, वहां जल नहीं है, शहर से लाया जाता है। वाला का पहाड़ शहर से मिला हुवा है। उस पहाड़ पर वृक्षावली वहुत और जल पुष्कल है। नगर के निकट भी जल की कमी नहीं है। वड़े तालाव सूरसागर की नहर से वहुत से बाग वाड़ी सींचे जाते हैं, जिनमें आम, फुलवाद और चंपे के वृक्ष वहुत हैं। नगर की वस्ती ५०० घर के लगभग है, जिनमें १०० घर महाजनों के हैं।

बूंदी देश के राजपूत—मुख्य तो सावंत हाडा, जिनकी ५०० सवारों की ज़ोड़ है। हाडा लक्ष्मीदास मानसिंह का नांदेण गांव में रहता है। हाडा केशवदास का पुत्र पृथ्वीराज भोजनेर में, हाडा रायभांण रायसिंह का तालाव

सामियां के गुढ़े में है। ढींडोला के हाडा प्रताप की संतान, खजूरी के हाडा तिलोकराम का पुत्र लक्ष्मण। दहिया हमीर जयमाल की संतान—दहिया सांवलदास। गोवर्धन सुंदरदासोत के पट्टा रु० २००००) का है। दहिया आसामी तीस चाकर हैं, जिनके ३०० मनुष्य हैं। सोलंकी ४००—हरीसिंह राघोदास का, सूर नाहरखान का और रावत जगतसिंह मानसिंह का। गौड़ सांगावत—रावत आशकरण, गौड़ सुन्दरदास, गौड़ गहपावत। बालणोत सोलंकी १० तथा १५, जिनके मनुष्य १०० हैं। नव ब्रह्म के हाडा आसामी १० तथा १५, मनुष्य एकसौ। राठोड़ ऊदावत। कछवाहा आसामी १० आदमी १००। बीकावत सादूल के बेटे पोते, आदमी १००। राजावत आदमी १००। हाडा राम के वंशज रामोत कहलाते, आजकल इनकी चढ़ती है, आदमी २०० हैं।

ख्यात (इतिहास)—चौहानों की २४ शाखा-सोनगरा, खीची, देवड़ा, राकसिया, गीला, डेडरिया, बगसरिया, हाडा, चीबा, चाहिल सेलोत, बेहल, बोड़ा, बोलत, गोलासण, नहरवण, बैस, निर्वाण, सेपटा, ढीमड़िया, हुरडा, म्हालण, बंकट और ...[1]।

हाडों की पीढ़ियां:—राव लाखण नाडोल का स्वामी, बली, सोहि, महंदराव, अणहल, जिंदराव, आसराव, माणकराव, (संभारण), जैतराव, अनंगराव, कुंतसिंह, विजयपाल, हाडा, बाघा, और देवा बाघा का जिसने मीणों से बूंदी ली[2]।

---

(१) नैणसी ने केवल २३ ही शाखा के नाम लिखे हैं, २४ वां नाम नहीं दिया है। कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान' में ये २४ शाखा चौहानों की बतलाई है—चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवड़ा, पबिया, साचोरा, गोहेलवाल भदोरिया, निरवाण, मालण, पुरबिया, सूरा, माद्रेचा, सकरेचा, भूरेचा, बालेचा, तस्सेरा, चाचेरा, रोसिया, चादू, निकुंभ, भावर, और बंकट।

चौहानों का गोत्रोचार—सामवेद, सोमवंश, माध्यंदिनी शाखा, वत्सगोत्र, पांच-प्रवर, चन्द्रभागा नदी, अंबिका भवानी, कालन पुत्त (पुत्र), कालभैरव और आबू पर अचलेश्वर महादेव।

(२) बूंदी कोटा की ख्यातों तथा वंशभास्कर में हाडों की वंशावली और उनकी उपाधि आदि का जो वर्णन दिया है वह तो निराकपोलकल्पित ही प्रतीत होता है। बूंदी के महाराव वास्तव में नाडोल के चौहान वंशमें से निकले हैं। इस शाखा का मूल पुरुष शाकम्भरी या साम्भर के चौहान राजा वाक्‌पतिराज या बप्पयराज का एक पुत्र राव लाखण (लक्ष्मण)

चौहानों की चौबीस शाखाओं में एक शाखा राव लाखण के वंशज हाडा बूंदी के धणियों की है। बूंदी में पहले मीणे रहते थे, हाडा देवा बाघा का विपत्ति का मारा भैंसरोड़ से बूंदी में जाकर रहा। एक बात ऐसे सुनी है कि बूंदी में एक ब्राह्मण रहता था जिसकी बेटी को मीणों ने ब्याहना चाहा। ब्राह्मण ने बहुत कुछ आनाकानी की परन्तु उन्होंने एक न सुनी। हाडे (राजपूत) उस ब्राह्मण के यजमान थे, इसलिये वह देवा के पास भैंसरोड़ जाकर पुकारा। देवा ने कहा बेटी देनी करके विवाह थाप देना, और मीणों को कहना कि मैं तुम्हारी खातिरदारी बराबर न कर सकूंगा सो कहो तो अपने जजमान हाडा को भैंसरोड़ से बुलालूं। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया, मीणों ने भी कहदिया कि बुला ले। विवाह का दिन नियत कर ब्राह्मण ने हाडों को बुलाये। मदांध हुए मीणों ने खुटाई या चूक की

या लाखण हुआ जिसने सं० १०१० वि० से कुछ पूर्व नाडोल में अपना अधिकार जमाया और क्रमशः उनका बल बढ़ता गया। फिर लखमण का पुत्र शोभित या सोहिय, बलिराज, विग्रहपाल शोभित का भाई महेन्द्र, इसकी बहन दुर्लभ देवी और लक्ष्मी ने स्वयम्बर में गुजरात के सोलंकी राजा दुर्लभराज और उसके छोटे भाई नागराज को बरे थे। अणहिल्ल, जिसने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम से युद्ध किया, सम्भव है कि सोमनाथ पर चढ़ाई करते समय नाडोल के पास सुल्तान महमूद गजनवी से भी इसका युद्ध हुआ हो। बालप्रसाद, जेन्द्रराज, इसके तीन पुत्र थे—पृथ्वीपाल, जोजलदेव और आसराज क्रमवार नाडूल के स्वामी हुए। आसराज (अश्वराज) विक्रम की तेरवीं शताब्दी के प्रारम्भ में नाडोल की गद्दी पर बैठा था। इसने गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज की सहायता की जब उसने मालवे पर चढ़ाई की थी। कई मन्दिर, धर्मशाला, वापी, तालाबादि बनवाये। इसका बड़ा पुत्र आल्हण तो नाडोल की गद्दी पर बैठा और छोटे माणकराज के वंश के बूंदी के चौहान हैं। कर्नल् टॉड को मेनाल में हाडों का एक लेख स० १४४६ वि० का मिला उसमें दी हुई हाडों की वंशावली—माणिकराज, संभारण, जैतराव, अनगराव, कुलसिंह, जयपाल, हरराज (इसी का भाटों ने बिगाड़ कर "हाडा" कर दिया जैसा कि नैणसी की ख्यात में है। बाघा जिसको बंगदेव पढ़ा है और बाघा का पुत्र देवा या देवीसिंह था।

पथार प्रदेश में साभर अजमेर के चौहानों का राज्य था, मैनाल बीजोलियां (विंध्यवली) आदि में चौहान राजाओं के मिले हुए प्राचीन लेखों से यह बात स्पष्ट है। सम्भव है कि माणकराज के किसी वंशज को उधर कहीं जागीर मिली हो। नाडोल के राज्य का विध्वंस सुलतान कुतबुद्दीन ऐबक के समय में हुआ और गुहिलवंशी रावल जैत्रसिंह ने भी उसको विजय किया था। सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के समय में किसी कारण आपत्ति आने से वह जागीर छूट गई हो, तब राव देवा ने भैंसरोड़ में आकर निवास किया।

बात न समझी। लग्न दिवस के पहले हाडों ने सुदृढ़ सड़े (कांटों की छुईं और मिट्टी की कुटियां) बंधवाये और उस पृथ्वी के नीचे बारूद बिछवाकर ऊपर घास फैलादी। मीणों को बुलाकर जनवासा दिया और खूब मद्य पिलाया, जिससे वे मतवाले होकर बेसुध होगये; तब कितनेक को तो काट डाले, कई उस सड़े में जलकर मरगये और जो गांव में रहे उनको भी कूट मारकर देवा ने बूंदी पर अधिकार करलिया। कई मीणे भागगये जो बुंदेले मीणे कहलाते हैं।

बात एक ऐसे सुनी है कि हाडा देवा बाघा का आपत्ति का मारा बूंदी की तरफ आया और भैंसरोड़ में ठहरा। उसकी वली भी साथ थी। राणा अरिसिंह लखमसीहोत के साथ देवा ने अपनी बेटी का सम्बन्ध किया था, सो राणा अरसी बरात बनाकर बहुतसी सेना साथ लिये उसके यहां व्याहने को आया। विवाह होजाने के पीछे राणा ने देवा से उसका सारा वृत्तान्त पूछा और कहा कि तुम यहां क्यों रहते हो, हमारे पास क्यों नहीं आजाते? उसने एकान्त में कहा कि यह सरस धरती मिणों के अधिकार में है, वे लोग निर्बल से हैं, और आठों जाम मद में छके मतवाले बने रहते हैं, यदि दीवाण मुझे सेना की सहायता दें तो उनको मारकर यह प्रदेश लेलूं और दीवाण की चाकरी करूं। तब दीवाण ने वहीं देवा के कहने के अनुसार सहायता दी। वह सेना लेकर रातोंरात मीणों पर चढ़ गया, निकास पैसाव के घाट बाट तो वह जानता ही था, सब मार्ग रोक कर उसने मीणों को मारा और कई प्राण बचाकर भागगये। देवा ने अपनी आण दुहाई फेरी, और पीछा राणा के हजूर में हाज़िर होकर मुजरा किया। राणा बहुत प्रसन्न हुआ, और पूछा कि और जो कुछ चाहो सो कहो! अर्ज़ की कि दीवाण की कृपा से सब काम ठीक होगया, अब ४ मास तक पांचसौ सवार मदद के मिल जावें। राणा पांचसौ सवार वहां छोड़ चित्तोड़ को चला गया। देवा ने रहे सहे मीणों को फिर मारा और आपके भाई बन्धुओं को बुलाकर बसाया। जब वह भूमि बसगई दीवाण की सेना को विदा करदी, और पीछे से आप भी बड़ी जमैयत के साथ राणा के मुजरे को गया, और उसकी चाकरी करने लगा[1]।

(१) राणा अरिसिंह भद लखमसी का पुत्र सं० १३४०–६० में था। लखमसी चित्तोड़ का स्वामी नहीं किन्तु सीसोदे में राज करता था। जब सं० १३६० वि० में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ पर चढ़ाई की तब राणा लखमसी अपने सात पुत्रों सहित

एक बात ऐसे भी सुनी है कि हरराज डोड (परमारों की एक शाख) अकेला बूंदी के मीणों पर शासन करता और उनकी धरती में बहुत बिगाड़ करता था। मीणों ने उसका उपद्रव मिटाने के कई प्रयत्न किये परन्तु हरराज को न पहुंच सके। वह प्रतिवर्ष उनसे नालबन्दी के बहुत से रुपये लेता और उनके गांव भी लूट लेता था। हाडा देवा बाघावत के पास एक घोड़ा अच्छा था जिसको मांडू के बादशाह ने मंगवाया परन्तु देवा ने दिया नहीं, और इसी से वह भैंसरोड़ को छोड़कर बूंदी में मीणों के पास आया। मीणों ने उसको टूकी (सूड़ी) नाम एक वेश्या के घर में रहने को ठौड़ बताई और वह वहीं रहने लगा। उस वेश्या को भविष्यत् काल का कुछ ज्ञान था। साथ रहने से देवा की प्रीति वेश्या से जुड़गई, तब एक दिन वेश्या ने उससे कहा कि इस धरती के धनी तुम होओगे। एक दिन हथाई (वह स्थान जहां गांव के मनुष्य इकट्ठे होकर सलाह करते हैं) बैठे मीने कहने लगे कि इस हरराज ने हमारे पर बड़ी लीक लगाई है, हम से दण्ड भी लेता और हमारे गांव भी मारता है। तब देवा बोला कि यदि कोई इस बला को तुम्हारे सिर पर से दूर करदे तो तुम उसे क्या दो? मीणों के मुखिया ने कहा कि भूमि का जो भेज (हासिल) आता है उसमें से आधा दे देवें। देवा ने उनसे क़ौल करार और सौगन्द शपथ लेकर बात पक्की करली। हरराज प्रति दिवाली के दिन बूंदी में आता और धावा करता था। दीपमालिका आते ही देवा अपने इराक़ी घोड़े पर चढ़ बखतर पहन शस्त्र बांधकर तय्यार होगया। मीणे तो हरराज को आता देखकर भागे और अपने २ घरों में आघुसे, परन्तु देवा अपने द्वार पर खड़ा रहा। दोनों का परस्पर दृष्टि मिलाप होते ही देवा ने अपने घोड़े को चाबुक लगाकर बढाया। उसे आता देख हरराज लौटगया। देवाने पीछा किया। बीच में एक गहरा नला पड़ता था, सो हरराज का घोड़ा

रावल रत्नसिंह की सहायता के वास्ते आया था और शत्रु के सम्मुख सातों पुत्रों सहित युद्ध में शरीर छोड़ा। सम्भव है कि रत्नसिंह के खेत पड़ने पीछे जयमसी ने पाट बैठ कर युद्ध किया हो, उसके मारे जाने पर उसका पुत्र अरिसिंह या अर्सी पाट बैठा और दो एक दिन शत्रु से जूझकर काम आगया।

राव देवा का समय विक्रम की पचदवीं शताब्दी के अन्त में है, उस वक्त राणा हमीर राज करता था और सम्भव है कि हमीर ही की सहायता से देवा ने बूंदी पर अधिकार किया हो।

उस नाले को कूदकर दूसरे तीर जा खड़ा हुआ, और देवा इस तीर पर ठहरा। हरराज ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो? देवाने अपना नाम ठाम बतलाया। फिर पूछा कि यहां आये तुमको कितना अर्सा हुआ। कहा च्यार महीने। पूछा कि अब क्या विचार है? देवा बोला मैंने तुम्हें रोकने का बीड़ा उठाया है, अब यदि तुम यहां आओगे तो तुमको मारूंगा। तब हरराज ने कहा कि अब मैं कभी न आऊंगा। दोनों में मेल हुआ, घोड़े से उतरकर परस्पर मिले, हरराज अपना बना, देवा पीछा बूंदी आया। थोड़ा समय बीतने पर देवा ने अपनी पुत्री का विवाह हरराज के साथ करना ठहराया, परन्तु मीणों के मुखिया ने कहा कि यह कन्या हमें परणाओ। देवा ने बहुत कुछ उज़र किया परन्तु मीणों ने माना नहीं, तब उसने कहा कि बहुत अच्छा ब्याह दूंगा। सीथुर में हरराज डोड के सोलंकी सगे सम्बन्धी रहते थे उनकी सहायता से देवा और हरराज ने मीणों को खड्डों में बन्दकर मारडाले और बूंदी देवा के हाथ आई।

राव नारायणदास राव भांडा का बेटा—(मारवाड़) के राव सूजा की बेटी खेतबाई परणा था। अमल बहुत खाता था। एकबार लघुशङ्का करने बैठा सो वहीं पीनक आगई। खेतबाई राव पर अपनी साड़ी की छाया किये रातभर वहीं खड़ी रही। प्रभात होते जब राव की आंख खुली तो क्या देखता है कि खेतू खड़ी है, प्रसन्न होकर कहा कि हमारे घर मुवाफिक जो चाहो सो मागो! राणी ने कहा मुझे और कुछ नहीं चाहिये, आपकी कृपा से आनन्द है, परन्तु इतना चाहती हूं कि आपका अमल का पोता (थैली) मेरे पास रहे (अर्थात् मैं ही आपको अमल अरोगाया करूं)। राव ने पोता खेतू को दे दिया और वह दिन २ राव का मात्रा घटाने लगी। नारायणदास राणा सांगा की चाकरी में था, उसने माडू के बादशाह को (जब वह राणा से लड़ा था) क़ैद किया। नारायणदास के खेतू के पेट से सूरजमल पैदा हुआ।

–हाडा सूरजमल नारायणदासोत और राणा रत्नसिंह सांगावत के झगड़ा हुआ जिसका हाल—राणा सांगा रायमलोत चित्तोड़ में राज करता था, उसका टीकायत पुत्र रत्नसिंह, राठोड़ राणी धनाई (धनबाई) से उत्पन्न हुआ था। पीछे राणा सांगा ने हाडा नरबद की बेटी हाडी करमेती से विवाह किया जिससे वह बहुत प्रसन्न था। करमेती के दो पुत्र विक्रमादित्य और उदैसिंह हुए, इससे राणा का प्रेम उसपर और भी अधिक बढ़गया। एक दिन

करमेती ने दीवाण (राणा) से अर्ज़ की कि "आप बहुत दिन जीवित रहें, परंतु विक्रमादित्य और उदैसिंह बालक हैं, और राज्य का स्वामी टीकायत रत्नसिंह है, इसलिये आपके साम्हने इनका कुछ प्रबंध होजावे तो अच्छी बात है।" राणा ने पूछा कि तुम क्या चाहती हो? तब हाडी ने कहा कि रत्नसिंह को पूछ कर इनको रणथंभोर दीजिये, और हाडा सूरजमल जैसे राजपूत की बांह पकड़ाइये। दीवाण ने भी यह बात स्वीकारी। दूसरे दिन दरबार जुड़ा तब कुंवर रत्नसिंह को राणा ने कहा कि विक्रमादित्य और उदैसिंह तुम्हारे छोटे भाई हैं उनके निर्वाह के वास्ते कुछ जागीर देनी चाहिये। राणा सांगा बडा ज़बर्दस्त राजा था, रत्नसिंह उसके साम्हने कुछ बोल न सका, केवल इतना ही कहा कि जो आपकी इच्छा हो वही स्थान दे दीजिये। राणा ने कहा कि इनको रणथंभोर दें, रत्नसिंह ने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा। राणा ने विक्रमादित्य और उदैसिंह को सन्मुख कर कहा कि उठो रणथंभोर का मुजरा करो, उन्होंने खड़े होकर मुजरा किया। हाडा सूरजमल भी दरबार में बैठा हुआ था, राणा ने उससे कहा कि हम विक्रमादित्य और उदयसिंह को रणथंभोर देकर तुमको इनके नियंता नियत करते हैं तुम इनकी बांह पकड़ो। सूरजमल ने उत्तर दिया मुझे इस बात से कुछ सरोकार नहीं जो चित्तोड़ का राजा हो मैं उसी का चाकर हूं। राणा ने फिर आग्रह पूर्वक कहा कि ये बालक हैं तुम्हारे भानजे हैं, बूंदी से रणथंभोर निकट है, और तुम अच्छे राजपूत हो इसलिये इनका हाथ तुमको पकड़ाते हैं। सूरजमल ने अर्ज़ की कि दीवान फर्मावें वह मुझे शिरोधार्य है, हम तो हुक्म के चाकर हैं, परंतु आपके सौ बरस बीतने (मृत्यु) पर रत्नसिंह हमें मारने को तय्यार होवेगा, इसलिये दीवाण ही की आज्ञा से मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता, रत्नसिंह कह दे तो बात दूसरी है। तब राणा ने रत्नसिंह की तरफ देखा तो उसने कहा "सूरजमल! तुम दीवाण का हुक्म सिरपर चढ़ाओ। ये (विक्रमादित्य और उदैसिंह) मेरे भाई हैं, तुम हमारे संबंधी हो, और राजपूत हो, हम तुम से बुरा न मानेंगे"। तब सूरजमल ने दीवाण की आज्ञा को स्वीकारा, रणथंभोर उन (दोनों भाइयों) को दिया गया, और उन्होंने वहां जाकर अपना अमल जमाया। कुछ अर्से पीछे राणा रत्नसिंह गद्दी बैठा तब हाडी करमेती अपने पुत्रों को लेकर रणथम्भोर चली गई। राणा की छाती में रणथम्भोर नहीं समाता था, उसने पुरबिये (चौहान) पूरणमल को विक्रमादित्य व उदयसिंह को ले आने के

वास्ते भेजा। पूरणमल ने पीछे आकर कहा कि सूरजमल उन्हें नहीं आने देता है। राणा आखेट करता बूंदी की तरफ आया और सूरजमल को बुलाया। वह आया। उसे साथ लेकर राणा शिकार को जाने लगा। एक दिन पूरणमल सहित राणा व सूरजमल एक सूल में बैठे, दूसरे सबको दूर भेज दिये, सूरजमल के साथ उसका एक खवास (चाकर) था। तब राणा ने सूरजमल पर झटका किया, और पूरनमल ने भी हाथ चलाया। हाडा ने उसको गिराकर दबा लिया, वह चिल्लाने लगा तब राणा ने फिर पास जाकर दूसरा वार किया इतने में तो सूरजमल ने राणा के घोड़े की बाग थाम्ह कर राणा की गर्दन के नीचे के भाग में कटार मारा जो नाभी तक चीरता चला गया। घोड़े से गिरकर राणा मर गया, और सूरजमल के प्राण भी वहीं निकल गये। राणा उदयसिंह ने सूरजमल के पुत्र सुरताण को बूंदी का टीका दिया। (सूरजमल सम्बन्धी वृत्तान्त उदयपुर के राणा रत्नसिंह के हाल में सविस्तर लिखा गया है)।

सुरताण कुलक्षण था। हाडा सहसमल सातल बूंदी के बड़े उमराव थे, सुरताण ने क्रोध में आकर उनकी आंखें निकलवा डालीं, और दूसरी भी कई उपाधिया करने लगा, तब बूंदी के सब सरदार मिलकर राणा उदयसिंह के पास आये और कहा कि सुरताण राज करने योग्य नहीं है। राणा ने सुर्जन को बूंदी का टीका दिया, राजपूत सब सुर्जन से आन मिले और उसका बल प्रतिदिन बढ़ता गया। राणा ने उसका पूरा भरोसा कर गढ़ रणथम्भोर की कुंजी भी उसके सुपुर्द की और बूंदी, गाव ३६०१ से पाटण, कोटा, कटखड़ा, लाखेरी गांव ६४ से, नैणवा, आतरदा, खैराबद गांव ८४ सहित बूंदी से कोस ३५, जागीर में दिये। जब सुर्जन राणा की चाकरी में था तब १२ गांव उसकी जागीर में थे। एक बार जगनेर में दविाण की चाकरी पहुंचा तब फूलिये का पट्टा उसको दिया था, फिर फूलिया खालसे कर बदनोर दिया, उसी वक्त राव सुरताण के ये समाचार आये[1]।

---

(१) राजभ्रष्ट होकर सुरताण का अपने कुटुम्ब समेत रायमल खीची के पास जाना और वहा बड़ौद जागीर में पाना वंशभास्कार में लिखा है। फिर वह बादशाह अकबर की सेवा में गया और शाही तोपखाने के कुछ विभाग का अफसर नियत हुआ। जब बादशाह ने चित्तोड़ पर चढ़ाई की तो आज्ञा के बिना ही वह थोड़ी बादशाही सेना लेकर बूंदी पर चढ़गया, परन्तु राव सुर्जन के भाई रामसिंह ने उसे पराजित कर भगादिया। नाराज होकर बादशाह ने सुरताण को निकाल दिया और वह पीछा खीचीवाड़ में जा रहा। सुरताण के वंशज सुरताणोत हाडा कहाते हैं।

राव सुर्जन—राणा उदयसिंह ने रणथम्भोर की किलेदारी सुर्जन को दे रक्खी थी। राणा ने सांदू रामा के मामले में अपने सगोत्री सीसोदिये भाण को अपने हाथ से मारा इसलिये वह (इस पाप का प्रायश्चित करने को) द्वारिका की यात्रा को गया तब राव सुर्जन राणा के साथ था। उस वक्त रणछोड़जी का देवल सामान्य सा था, राव सुर्जन ने दीवाण से आज्ञा लेकर नया मन्दिर जो अभी है, बनवाया।

सं० १६२४ वि० में बादशाह अकबर ने चित्तोड़गढ़ तोड़ा और जयमल (राठोड़), सीसोदिया ईसर और पत्ता जगावत वहां काम आये। पीछे फिरते समय बादशाह ने रणथम्भोर का गढ़ घेरा। चवदह वर्ष तक वह गढ़ सुर्जन के हाथ में रहा था। जब सुर्जन का बल घटा तो उसने (आम्बेर के) कछवाहे राजा भगवन्तदास (भगवानदास) के मार्फत बादशाह से बात चीत कराके सं० १६२५ के चैत्र सुदि ६ को वह बादशाह की सेवामें हाज़िर हुआ और इन शर्तों के साथ गढ़ बादशाह के हवाले किया कि—"मैं सदा राणा की दुहाई कहूंगा, और राणा पर चढ़कर भी न जाऊंगा"। बादशाह ने वाणारसी की तरफ चरणाट (चनार) के ४ परगने उसको दिये। आगरे पहुंच कर अकबरशाह ने सीसोदिया पत्ता जगावत और रावत जयमल वीरमदेवोत की दो मूर्तियां हाथियों पर चढ़ी हुई गढ़ के द्वार पर बनवाई, और सुर्जन की मूर्ति कूकर (कुत्ते) की सी बनवाई, तब सुर्जन को बड़ी ही लज्जा आई। फिर काशी में जाकर रहने लगा, वहां उसके बनवाये हुए बड़े महल हैं। सुर्जन का छोटा पुत्र (भोज) तो बादशाह की सेवा ही में रहा और बड़ा पुत्र दूदा रणथम्भोर ही से राणा उदयसिंह के पास चलागया। राणा ने उसके निर्वाह को कुछ रोजीना करदिया, फिर राव सुर्जन जल्दी मरगया[1]।

बादशाह (अकबर) ने बूंदी (राव सुर्जन के छोटे बेटे) भोज को दी तब दूदा ने ग्रासखेध किया। निरन्तर उपद्रव करता और प्रजा को लूटता था। दस-बार आगरे (बादशाही) आमखास में जाकर भोजके साथ लड़ाई की। रतन दूदा के पास रहा। फिर दूदा को विष दिया गया, भोज बूंदी आया और उस बिगड़े हुए देश को बसाया।

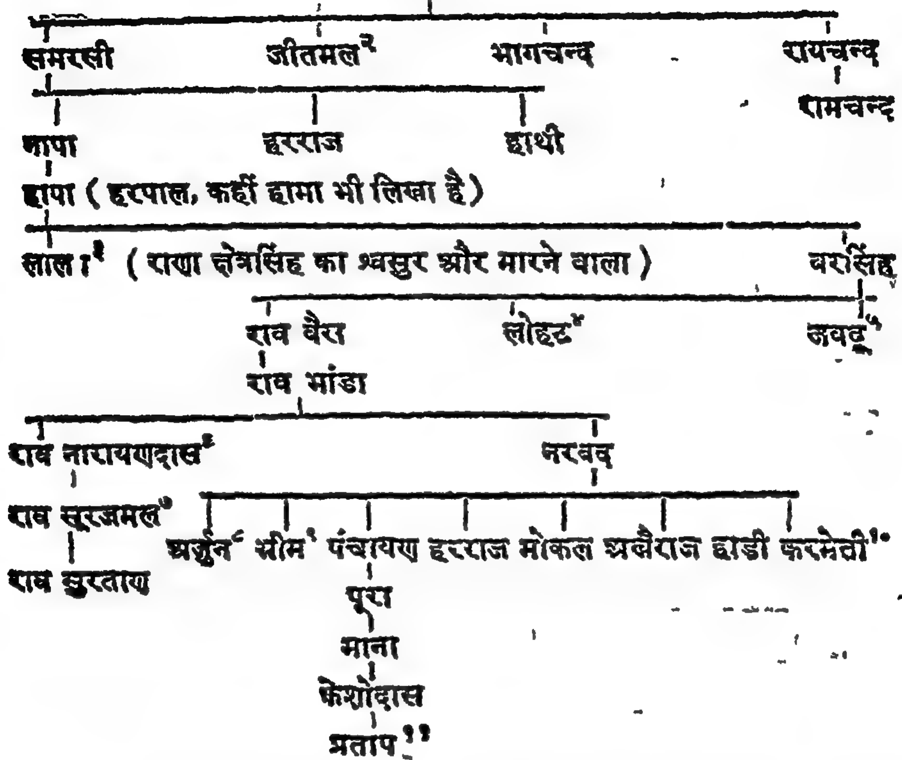
---

(१) अपने पुत्र दूदा को राजकाज सोंप कर राव सुर्जन ने काशी वास किया और वहीं सं० १६४२ वि० में उसका देहान्त हुआ मणिकर्णिका घाट पर बहुत गाली में उन राणियों के चबूतरे हैं जो राव सुर्जन के साथ सती हुई थीं।

दूदा-जग्गा भैरवदासोत चांदावत का दोहित्रा और भोज डूंगरपुर के रावल सहसमल का दोहिता था। दोनों भाइयों में परस्पर वैमनस्य हो गया तब राव सुर्जन ने दोनों को बुलाकर कहा कि तुम मेरा कहना नहीं मानते, मुझे राज्य से काम नहीं, तुम दोनों भाई उसे बराबर बांट लो। फिर ३६० गांव से बूंदी दूदा को दी और ३६० गांव से कड़कड़ का परगना भोज को दिया। हमीर दूहिये ने भोज को कहा कि तू दूदा के आगे ठहर नहीं सकेगा, तुझको वह थोड़े ही दिनों में मार डालेगा। तब भोज बोला कि मैं क्या करूं? दूहिया ने उसे अकबर बादशाह की सेवा में जाने की सलाह दी। भोज बोला कि जाऊं तो सही परन्तु इतना खर्च कहां से लाऊं? हमीर ने कहा मैं तुझको एक लाख रुपये देता हूं और लाखेरी के बोहरे के पास से अपनी जमानत पर लाख रुपये उसे दिलवाये। भोज सीकरी फतहपुर में बादशाह के पास हाजिर हुआ। यह खबर दूदा को हुई, वह बोला कि "भोज को मारूं और सिरे दरबार मारूं" और वह भी सीकरी फतहपुर गया और भोज का पता लगाने को गुप्तचर छोड़ा। गुप्तचर ने आकर कहा कि मैंने पता लगा लिया है, आज अमुक तरह की पोशाक पहन अमुक रंग के घोड़े पर चढ़कर भोज दरबार में आवेगा। दूदा बोला कि तूने खूब चौकस तो करली है? उसने उत्तर दिया कि इसमें शक नहीं है। भोज पोशाक पहनकर दरबार में आने को तैयार हुआ और घोड़े पर चढ़ने लगा तब घोड़ा चूका, डोंगा गौड़ ने कहा कि आप इस घोड़े पर सवार मत हूजिए, तब भोज ने वह घोड़ा और पोशाक एक खवास को बख्श दी और आप दूसरा बागा पहन दूसरे घोड़े पर चढ़कर गया। दूदा भी पीछे लगा। जब भोज बादशाह से मुजरा करके पीछा फिरा तब दूदा ने गुप्तचर के बतलाए हुए बागे और घोड़े के निशान से खवास के कटारी मारी। खवास ने हाय की, तब दूदा ने घोड़ा पलटा कर देखा और हेरू को कहा कि तेरी खबर सही न निकली, भला यह कब हो सकता है कि राव सुर्जन का बेटा कभी कटार लगने से हाय मारे! खबर कराई तो जान पड़ा कि वह बागा और घोड़ा भोज ने खवास को दे दिया था। दूदा पीछा बूंदी आया और पूछा कि भोज को दरगाह में किसने भेजा? किसी ने कहा कि हमीर दूहिया ने। यह सुनते ही तीन हजार सवार लेकर वह हमीर के गांव किरवाड़े पर चढ़ धाया, हमीर को कहलाया कि भोज को रुपये दिये सो मुझे भी लाख रुपये दे नहीं तो मारता हूं। तूने भोज को क्यों भेजा? तब हमीर सोचने लगा कि अब क्या करूं। उसने अपने

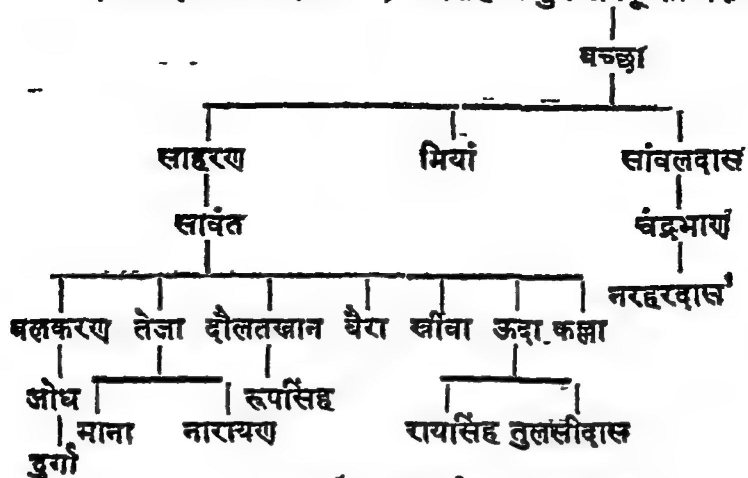
छोटे भाई दौलतखान को बुलवाया और कहा कि भाई अब क्या करें बड़ी आपत्ति आई है। जो रुपये देते हैं तो जाट गूजर कहलाते और हाडोती में बदनाम होते हैं और न देवें तो मारे जाते हैं। दौलत बोला, भाई दूदा के कटक में २५ बड़े सरदार हैं, जो इनको मारलें तो दूदा फिर जावेगा। हमीर कहता है-दौलत! ये अपने सगे सम्बन्धी हैं, उनको क्योंकर मारें। दौलत ने उत्तर दिया भाई समझ जा (ऐसे किये बिना काम नहीं चलेगा), तब हमीर ने अपना प्रधान दूदा के पास भेज कहलाया कि भोजको तो ज़ामिन होकर दूसरे से रुपये दिलाये, परंतु आपको मैं घर से दूंगा। पचास हज़ार तो रोकड़ लेलो और शेष पचास हज़ार के बदले हाथी घोड़े दे दूंगा। दूदा ने मंजूर किया। हमीर को बुलाया तो उसने कहा कि आपके साथ के सरदार वचन दें कि आज पीछे दूदा हमीर को न सतावेगा तो आऊं। दूदा ने कहा कि सरदारो जाकर वचन दो और हाथी घोड़े ले आओ। सरदार गये। हमीर ने ४०० राजपूत शस्त्रबंद एकस्थान पर छिपा रक्खे थे, उनको भी कुछ भेद न दिया, केवल इतना ही कहा कि सावधान रहना यदि काम पड़े तो तुरन्त निकल आना। दोनों भाइयों ने सलाह की कि सूग घोड़े के पास पहुंचने पर काम बनावेंगे। दूदा के प्रधान यन्ना और घन्ना गौड़ घोड़े हाथियों की क़ीमत आंकने लगे। चार सौ के घोड़े के ४०) लिखे। हमीर के सदाकुंवर नामकी एक कन्या थी, उसको मालूम हो गया कि चूक है, तब उसने कहा कि मेरे देवर को बचा लो। उत्तर पाया कि अब नहीं बच सकता, तो उसने कहा कि मैं अभी चिल्लाकर सारा भेद खोल दूंगी। तब दौला ने जाकर उसके देवर को कहा कि तुमको भीतर बुलाते हैं। पहले तो उसने इनकार कर दिया, परन्तु बहुत कहने पर गया। सदाकुंवरी ने उसके पास किसी ढब से तलवार कटार लेली और आप कोठरी के बाहर निकल आई, दासी ने तुरन्त द्वार बन्दकर कुण्डी चढ़ा दी। वह बहुत चिल्लाया कि भोजाई यह क्या बात है, द्वार खोल दे नहीं तो आपघात करता हूं, परन्तु यही उत्तर पाया कि "चुप रहो"। ऐसे ही उन सरदारों के साथ कविया गोविन्द नाम का एक चारण भी था, हमीर ने अपने भाई से कहाकि चारण को तो नहीं मारना चाहिए, तब दौला ने चारण का हाथ पकड़ कर कहा गोयंदजी चलो तुम कुछ नाश्ता करलो। चारण बोला बहुत अच्छी बात है। हमीर उसको भीतर लेगया, मिठाई परोसी और वह जीमने लगा। दहिया मोहन ने जो १५ वर्ष की अवस्था का था, अपनी ढाल तलवार

लेजाकर अपनी माता के साम्हने रखदी और कहने लगा " माता! हम शस्त्र काहे को बांधें जब कि जाट गूजरों के मुवाफिक दण्ड भरते हैं" । माता ने कहा- " बेटा शस्त्र मत डाल, बांधे रह ! बाई लहां के देवर को उसने बुला लिया है, शेर सब मारे जावेंगे । मृग नाम का एक घोड़ा है उसके पास पहुंचने पर काम बना दिया जावेगा, तूं बैठ मत, जल्दी जा" । तब मोहन शस्त्र पकड़ कर चला। बूंदी के सरदार घोड़े लिखते लिखते मृग के पास पहुंचे । उनसे कहा कि इसका मोल तो इतना है फिर तुम्हारी इच्छा हो वह लिखो । वन्ना गौड़ ने कहा कि १०००) रु० लिखेंगे । हमीर ने कहा कि कुछ अधिक लिखो । वन्ना कहने लगा कि मृग है तो हम क्या करें, अरे दहिया ! भेड़ी अपने वाल अपनी इच्छा से नहीं मूंडने देती, उसको तो नीचे गिराकर गुद्दी पर पाव दे मूंडे तब मुंडाती है। दौला दहिया बोला, सुनरे गौड़ ! एक बरछा हमारे हाथ का भी आता है। बरछा लगते ही कागज और कलम तो वन्ना के हाथ ही में रह गये और वह मृग घोड़े की पिछाड़ी के पास चूंतड़ों के बल जा गिरा । इतने में शोर हुआ और घर के भीतर छिपे हुए ४०० बख्तरी जवान आ निकले । लोहा बजने लगा और दूदा का सब साथ मारा गया । दूदा ने यह बात सुनी, और हमीर दहिया ने अपने साथियों समेत जाकर उससे कहा कि तेरे राजपूत मारे गये, अब तूं फिर ऐसे राजपूतों की जोड़ बनावेगा जितने में हम यहां से निकल जायंगे । अब तूं यहां से चला जा । हम तेरे बाप के राजपूत हैं, इसीलिए तुझे मारते नहीं हैं। दूदा बूंदी को लौट गया और हमीर सुख के साथ घर में बैठकर राज करने लगा । कितनेक वर्षों के पीछे जब दूदा मरगया तब भोज बूंदी में आया । उसको बादशाह ने यह देश दिया था । भोज के समय में, दहिया और गौड़ों का वैर टूटा और गोपालदास गौड़ को दहियों ने कन्या व्याहदी और मुल्क में सुख शान्ति होगई ।

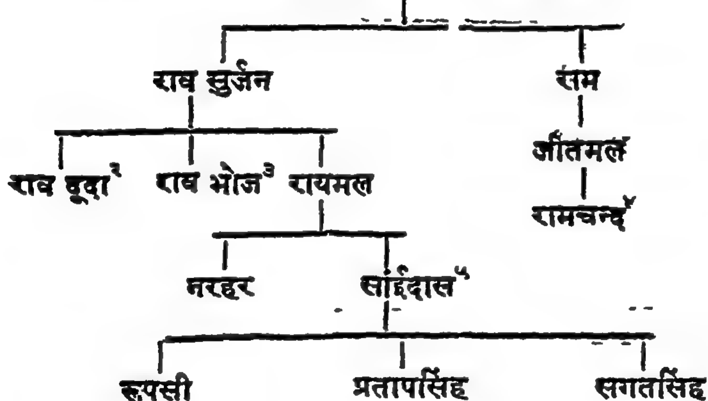


(१) मीणों से बूंदी ली। (२) इसकी बेटी हाडी जसमादे राव जोधा (राठोड़) की पटराणी, राव सूजा की माता थी। (३) इसके वंशज नव ब्रह्म आनखेड़ वाले हाडा हैं। (४) इसके वंशज लोहठवाली हाडा हैं। (५) इसकी सन्तान भियां के गुड़े रहती है। (६) बूंदी का स्वामी। राव सूजा (राठोड़) की कन्या खेतू को ब्याहा। (७) बड़ा बलवंड राजपूत हुआ, मरता मरता राणा रत्नसिंह सांगावत को ले मरा। (८) सुनते हैं कि जब चित्तोड़गढ़ की बुर्ज सुरंग से बादशाह अकबर के हमले में उड़ी, तब अर्जुन भी उसके साथ उड़कर मरगया। उड़ते हुए तीन आदमियों ने तलवारें निकालीं जिनमें से एक अर्जुन था। (९) भीम की संतान बूंदी से ६ कोस ठीकरदे गांव में है। (१०) यह राणा विक्रमादित्य और उदयसिंह की माता थी। (११) गांव हिंडोले में रहता है।

(राव देवा का वंश जारी) नरसिंह के पुत्र जवदू का वंश वृक्ष ।



नरवद के पुत्र अर्जुन का वंश वृक्ष ।



(१) राव भायसिंह का प्रधान, मिया के गुढ़े सादियाहेड़े रहता है । (२) जैता भैरवदासोत की बेटी जसोदा के पेट का । (३) आहाड़ा हींगोला की बेटी कनकावती के पेट का । कोई जगमाल लाखावत आहाड़ा की बेटी का पुत्र बतलाते हैं । इसकी सन्तान पीपलू में है । (५) बूंदी के गांव बणासेवे रहता है ।

सिरोही का चौहान वंश।

सम्वत् १७१७ भाद्रपद मास में मुंहता (मुहणोत) नैणसी गुजरात श्री जी (मारवाड़ के महाराज जसवन्तसिंह) के हजूर में गया और आश्विन में पीछा आया तब देवड़ा अमरा चन्द्रावत ने अपने प्रधान बाघेले रामसिंह को जालौर नैणसी के पास भेजा था। उससे सिरोही की हक़ीक़त पूछी तो उसने कहा कि सिरोही और जालौर में गांव बराबर हैं। राव के दाण (चुंगी का महसूल) बहुत आता था, अर्थात् पचास साठ हज़ार रुपये, परन्तु इन दिनों में कम होगया है। सिरोही का आधोआध अमरा चंद्रावत लेता है। विभोग के गांव एकसौ तथा १२५ हैं।

जालौर के ताल्लुक़ होने के वक़्त परगने सिरोही की फेहरिस्त में सुन्दरदास ने इतने गांव लिख भेजे थे। ग्यारह गांव रवाई भीतरोट के, २४ गांव भीतरोठ के पथग (परगने) के, ४० बाहरोट के, ४८ साठ मझार परगने के, ७२ मगरे तथा ओरा के, १२ आबू पर, ६ महादेवजी श्री सारणेश्वरजी के, ७७ सासण (शासन) चारण ब्राह्मणों के, ३० बागड़िया देवड़ों के वतन के, और २४ गांव सोलंकियों के वतन के थे।

सिरोही के गांवों की तफसील—उन्नीस गांव रवाई भीतरोट कहलाते—वालधा, लोधरी, सीहणवाड़ा, तेलपुरा, बीरवाड़ा, ऊंदरा, सीवेरी, काछोली, पर्वतसिंह का पिंडवाड़ा सहसमल का, बीरोलिया भाटों के शासन में, रामसिंह की अजारी ब्राह्मणों के शासन में, चवरली, नांदिया, काछोली, नीतोड़ा पुरा सूजा का, लोटाणा, भाहरू, धनीरी, और खाखरवाड़ा।

तेईस गांव भीतरोट के पथग कहलाते—सागवाड़ा, रोहिड़ा खालसेका, बांसा खालसा विभोगा, वाटेरा रामाका, मुदरड़ा, भीमाणा चीबा कर्मसीका, सिणवाड़ा, आमथला, तडूगी, मारजा, वूनाणी, फिरसूली, मानपुरा, सुरतपुरा, गिरवर, मुंगथला, ऊड़, कर, मांडवाड़ा, घाणता, मोकरड़ा, चनार।

बाहरोट पथग—सिंघणोता, सुरताणपुरा, मोडा, मेलांगरी, पावड़ा, सिणवाड़ा, सीरोड़ी, पमाणा, पोसीतरा, ठांकरा, ऊंडवाड़िया, हमीरपुरा, पालड़ी, मालगांव, डमाणी, धांधपुरा, हणाद्रा, डाक, थली, नीला, सेहलवाड़ा, रिवाड़ी, राणकवाड़ा, लोडेला, चापोल, अंहाणा, मकावल, नींबूड़ा, करहटी, ओसपुर, भीथली, दंताणी, मारेल, कंपासियो, मोटाणी, साडड़ा, पींथापुर, सेरवा।

साठ का पथग, इसमें मुख्य गांव—मांडाहड़ो, बड़ोदा, रोडुवा, जीरावल, वेदांपुर, गूंडसवाड़ा, सोलसमा, वाचेल, बड़वज, रायपुरिया, इणव-तिया, यांट, जैतवाड़ा, रीवी, आलवाड़ा, खीमत, वाचड़ोल, घूराल, भाटराम, घनियावाड़ा, खुहड़ला, भांडेतर, वाघोर, भात, मऊड़ी भाटों की, आढाल भाटों की, पासुवाला, आरखी, भाकुली, सातरवाड़ा, भीलडामा, सातसेण, भीलड़ा छोटा, झांवठा, कूजावाड़ा, जावाल, गींगोल, अठाल चारणों की, धनेरी, बेलावस, सोहड़-पुर, रोजेड़, गोयंदपुर, पीथावाड़ा, ढमढमा, पीथोली, आकेली, गुंडसवाड़ा।

मगरे तथा भोरे के गांव—गुढ़ोली, खांभार, अणवार, डेडवा, मकावली, तिवरी, कलाघा, जसोलाव, पाडीव रामाका, साणपुर, संकर, सीरोड़ी, वग, सिवराटी, महेसरी चीवा करमसी की, पाघोर, बूचोड़ा, वाहुल, उडन, मांडल, फागुणी, नोहर, हालीवाडा, आखूना, मांडोवाड़ा, फलवंध, भूतगांव, जावाल, देलोई, चरवाड़ा, मणोहरा, मूडेई, आंवेला, सतापुर, चीवली, मांडणी, जामेर, ओडू, नारदेरा, लोटीवाड़ा, लाल, मूणवद, भाड़ोली, अणदोर, वासण, मीरोली, पालड़ी, भीतरी, वाघसेण, भेव, अरटवाड़ा, पोसालिया, आलिया, मांचाल, लिखमीवास, कोरटा, नामी, उपमाणा, चीवा गांव, पालड़ी बाहरकी, राडवांरा, बड़गांव, वाचड़ा, डीघाड़ी, सीरोड़ीद्रंगडीरा, आफूड़ी, नागीणी, डीड-सोव, अवेल, बावडी, बाजी, मींडावाड़ा, वलदुगा।

आबू पर के गांव—अचलगढ़, तेला, देलवाड़ा, हेठमठी, सेहरा, साल, ओरिया, वासुदेव, नाहरलाव, वासथान, उमरणी, ऋषीकेश।

महादेवजी सारणेश्वरजी के गांव ९—देतरखा (दातराई), इकुरड़ा, धाणां, भामरा, वाचाहड़ा, पालसी, मांडवाड़ा, कोटड़ा, सीलोई।

वागड़िया देवड़ों के गांव ३० जालोर के परगने बड़भागा गूंदाउरा से सीमा मिली हुई, सांचोर से दस कोस सूर, आउवा, पाचला, सांचोर की सीमा से मिले हुए देवड़ा आपमल गोपालदास, नरहरदास का वतन। गांव इकसाखिया। धानेरा, धाखा, सांवलवाड़ा, सालवाडा, थावर, चीहरड़ा, बीचवाड़ा, कंवरला, वूसिया, मगराउवा, नानाओ।

गांव २४ सीरोही के सोलंकियों का वतन—एही, बड़गांव, सांचोर की सीमा पर-सीहा ७००), जड़िया, जाहडदेढा, लेडुरा, सिरोहणी,

भूकाणा, मेवड़ा, वेहड़ा, राजोड़ा, आनापुर, रींविया, पीगिया, आणीवाड़ा, गलथर, मांटपाए, दुणाद्र।

७७ गांव सासण ब्राह्मण चारण भाटों के—पेसवा चारणों का, झांखर आढों का, कोजड़ा, लखमेर, पुनपुरी, धांधपुर, लाज, फूलसरेड़, रींछड़ी, ब्राह्मणहेड़ा, मोलेसरी, कूचमा, सोनाणी, सोलावास, मोरवड़ा मोटासण, बांभणवाड़, वाचड़ा, वड़ोदरा, सीझोतरा, चुडियाला, फावरिया, वराहिल, मांडवा, उड महेसदास की, जाल्हकड़ी, कुलदड़ा, डूंगरी, वीठिया, साकदड़ा, दमदमा, ओझारी, वीरोली भाटों की, वीरोली ब्राह्मणों की, वासणड़ा, अहिचावा, देवखेत, हाथल, जसोदर, पेरवा, बूटड़ी, खोगड़ी, मीटाण, वीजावा, आसवड़ा, अहिचावा-खुर्द, आखवर, गोविल, पेवड़ी भाटों की, सेसूत्री तिरवाड़ियों की, खोडादरा, आयल, नेनरवाड़ा, पातंवर चारणों का, उडवाडिया चारणों का, कासंदरा वधि-वाड़िया खींवराज का, मोरथुला, आसवस, खाणां, मालावास, माडली, जुवादरा, धासडोसा भाटों का धूंवावस, देलांणा भाटों का, खुराणी भाटों की, तडतोली ब्राह्मणों की, खांडायत ब्राह्मणों की, कारोली भाटों की, गणकी भाटों की, पाडरी भाटों की, पालड़ी रावलों की, पीपला रावलों का, वाटेल ब्राह्मणों की, खडवलोदो, तिथमी।

बात सिरोही के स्वामियों की—आदि में चौहान अनल कुण्ड से उत्पन्न हुए। वशिष्ठ ऋषीश्वर ने राक्षस निकन्दन के वास्ते ४ क्षत्री उत्पन्न किये-पंवार (परमार), चौहान, सोलंकी, (चालुक्य) और डाभी (प्रतिहार या पडिहार होना चाहिये)। प्रायः वहुत से चौहान नाडोल के स्वामी राव लाखण (लक्ष्मण) के वंश में हैं। राव लाखण से कुछ पीढ़ी पीछे आसराव (अश्वराज) हुआ जिसके घर में देवी वचन बंध होने के कारण (पत्नी बनकर) रही। उसके पेट से अश्वराज के ३ पुत्र हुए जो देवड़े कहलाये[1]।

---

(१) सिरोही के राजवंशी देवड़े कैसे और कबसे कहलाये इसके लिये भिन्न भिन्न ख्यातें हैं—परन्तु नैणसी का यह कथन स्वीकारने योग्य नहीं कि देवी के पेट से पैदा होने से देवड़े प्रसिद्ध हुए, क्योंकि क्षत्रियों में माता के नाम से शाखा या गोत्र चलने की प्रथा नहीं है। (अश्वराज आशाराज या आसराज) नाडोल के चौहान राव ओजल देव का छोटा भाई था। ओजल के पीछे नाडोल की गद्दी पर बैठा था। उसके समय के दो शिलालेख सं० ११६७ और सं० १२२० वि० के गोडवाड़ के गांव सेवाड़ी और बाली में मिले हैं।

पहले आबू पर पंवार राज करते थे तब आबू से ५ कोस चमरणी गांव है यहां नगर बसता था। राजा पृथ्वीराज चौहान के जैत पंवार बड़ा सामन्त हुआ जिसने पृथ्वीराज के पक्ष में शहाबुद्दीन ग़ोरी से युद्धकर उसे क़ैद किया था। उस वक़्त जगजोत नामक ज्योतिषी ने कहा था कि दिल्ली का छत्रभंग होवे का योग है, तो जैत पंवार ने कहा कि आज के युद्ध में छत्र मेरे सिर पर रखा जावे जिससे पृथ्वीराज की बला मुझपर पड़े। पीछे जैत पंवार काम आया, उसके वंशज आबू पर राज्य करते थे[2] और रावल कान्हड़देव उस समय जालौर का स्वामी था।

उसने गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज को मालवा विजय करने में सहायता दी थी। वह बड़ा धर्मनिष्ठ राजा हुआ, और अनेक धर्मस्थान बनवाये। लेखों में उसके पुत्रों के नाम कटुक और आल्हणदेव मिलते हैं। आसराज के पीछे आल्हणदेव राजा हुआ।

सिरोही की ख्यात के अनुसार राव मानसिंह (महणसिंह या मोहनसिंह) के एक पुत्र देवराज के वंशज देवड़ा कहलाये। राव मानसिंह, जालोर के चौहान राव समरसिंह का पुत्र था। समरसिंह के लेख सं० १२३९ व सं० १२४२ वि० के मिले हैं। तो देवराज का सं० १२६० वि० पीछे होना बन सकता है, परन्तु पण्डित गौरीशङ्करजी हीराचंद ओझा रचित "सिरोही के इतिहास" के पृष्ठ १६३ की टिप्पणी में लिखा है कि "आबू पर अचलेश्वर के मंदिर के बाहर वि० सं० १२२५ और १२२६ के लेख हैं जिन में देवड़ा नाम मिलता है।" इस प्रमाण से सिरोही की ख्याति का लेख विश्वास के योग्य नहीं ठहरता।

बूंदी के कवि सूरजमल मिश्रणकृत वंश भास्कर में लिखा है कि नाडोल के राव माणकराव चौहाण के पुत्र निवाण के वंश में देवड़ नामी पुरुष हुआ जिसके वंशज देवड़े कहलाये, परन्तु निर्वाण (चौहान) अपनी शाखा को देवड़ों में से निकली बतलाते हैं।

चौहानों की एक ख्यात में नाडोल के राव लाखण के पुत्र सोहिय के बेटे का नाम देवराज दिया है। शिलालेख ताम्रपत्रों में शोभित के पुत्र का नाम बलिराज मिलता है। यदि शोभित या सोही ही का दूसरा नाम देवराज माना जावे तो उसका सं० १०५० वि० के लगभग होना सम्भव है, परन्तु क्या आश्चर्य कि धर्मनिष्ठ होने के कारण आसराज ही देवराज करके प्रसिद्ध हुआ हो या उसके देवराज नाम का कोई पुत्र हो जिसके वंशज देवड़े कहलाये हों।

(२) पृथ्वीराज चौहान के समय आबू पर जैत नाम का कोई परमार राजा न हुआ, उस वक़्त या उसके पहले से वहां धारावर्ष परमार, यशोधवल का पुत्र, राजा था, जिसके कई लेख सं० १२२० वि० से सं० १२७६ वि० तक मिलते हैं। वह चौहानों के नहीं किन्तु गुजरात के सोलंकियों के आधीन था। सोलंकी राजा भीमदेव दूसरे के पक्ष में उसने आबू के पास कायद्रां गांव में सुलतान शहाबुद्दीन ग़ोरी का मुकाबला किया था।

उन्हीं दिनों देवड़े बीजड़ के पुत्र जसवन्त, समरा, लूणा, लूंभा, लखा, तेजसी सिरोही के पास सिरणवा की पहाड़ी के निकट आनकर रहे। इनके पांव रखने को जगह नहीं थी। पांचों भाइयों ने परस्पर सलाह की कि अपने तो सब ऐसे ही हैं, जैसे तैसे करके पेट भरते है, कोई स्थान ठहरने तक को नहीं, और आबू लेने का विचार करने लगे। उस समय पवांरों का एक चारण इनके पास आया, ये उसको अफसोस के साथ कहने लगे कि हमारे पास धरती नहीं, भूखे हैं, इतने पर भी हम पांचों भाइयों के पांच पांच कन्याएं हैं, जिनको घर नहीं मिलते हैं। चारण ने कहा कि इसका क्या सोच करते हो, ये आबू के पंवार बड़े राजपूत हैं, इनको अपनी कन्याएं व्याह दो। इन्होंने कहा कि हमतो आज दीन दशा में हैं और पंवार आबू के स्वामी हैं, वे हमारी कन्याएं व्याहें या न व्याहें। चारण बोला कि मैं इस विषय में उनसे बात चीत करूंगा। आबू पर हूण पंवार राजा था, चारण उसके पास गया, और कहने लगा कि चौहानों के २५ कन्याएं हैं, उनको पंवार व्याह लें। पंवार बोले, बहुत अच्छा व्याहेंगे। इतने में किसी विचारशील पुरुष ने कहा कि ये (चौहान) काल पूंछिये भूमि दबाते हुए चले आते हैं, इनके साथ संबंध नहीं करना चाहिये। तब आबू के राव और दूसरे पंवारों ने कहा कि हम पहिले इक़रार करचुके हैं, अब इनकार नहीं कर सकते और उस चारन को कहा कि यदि वे चौहान अपने एक भाई को आबू पर ओल में रख देवें तो हम व्याहने को जावेंगे। चारन ने चौहानों को जाकर ओल की बात कही, तब प्रथम तो उन्होंने यही उत्तर दिया कि हम ओल क्यों देवें, परंतु पीछे एक भाई ने कहा कि विना किसी के मरे तो आबू हाथ आने का नहीं, यदि एक ही के ओल में आने के बदले काम बनता हो तो ढील न करनी चाहिये और लूणा बोला कि मैं जाऊंगा। फिर प्रकट में चारन को कहा कि हम दरिद्री हैं और बेटियां हमें ज़रूर व्याहनी हैं इसलिये पंवार हम को निर्बल जान कर ओल मांगते हैं तो देवेंगे। लूणा उस चारन के साथ होलिया। वह आबू के राव के पास रहा और पंवारों के २५ वर थोड़े ही आदमियों से व्याहने को आये। चौहानों ने सामेला कर उन्हें जनवासे में उतारे और भांग अमल व मदिरा से उनकी खूब खातिर की। लग्न के समय इन्होंने २५ जवान आदमियों को स्त्रियों का वेष पहना कर दुलहनें बनाई और प्रत्येक को एक २ कटारी देकर कहा कि इसको छिपाये रखना। जब हम कहें कि 'फेरे फिरो' उसी समय

दुलहों को कटारियों से मार गिराना। ऐसा संकेत करके चौहान जनवासे गये और कहा कि लग्न का समय होगया है, दुलहे व्याहने को चलें। कई आदमी तो मद्य में अचेत पड़े हुए थे, थोड़े से साथ मे २५ वर व्याहने को आये। ड्योढ़ी के मुंह पर चौहान बोले कि केवल वर भीतर जावें और दूसरे आदमी बाहर ही रहें, क्योंकि यद्यपि हम भूमिये हैं परंतु हमारे भी ठाकुराई है। दुलहे भीतर गये, चंवरियों में बैठे, ब्राह्मण ने हस्तमेलन कराया। चौहानों ने कन्या दान किया। ब्राह्मण ने कहा कि उठो फेरे फिरो। इस वचन के साथ ही हुकार करके पचीसों दुलहों को मार गिराये और जनवासे जाकर जानियों का भी काम तमाम किया। आबू पर अपने भाई लूणा के पास खबर भेजने का विचार कर रहे थे, तब उन्हीं में से एक राजपूत ने कहा कि मै जाऊंगा। वह मंगत का भेष बना कर आबू पर गया और जहां लूणा और पवार ठाकुर बैठे बात कर रहे थे वहां पहुंचा। कहा बधाई है, विवाह होगया। लूणा ने पूछा कि यश किसको आया। याचक बोला कि चौहानों को और पवारों की बड़ी भक्ति की। यह सुनते ही लूणा ने दलपत पंवार को कहा कि आबू हमारा है, जैसे वे मारे गये वैसे मैं तुझ को मारूंगा। दलपत और लूणा परस्पर लड़कर मर मिटे, इतने में तो नीचे के चौहान भी आबू पर आन चढ़े। इस प्रकार चौहानों ने आबू लिया।

बीजड़ का बेटा चौहान तेजसिंह पाट बैठा तब कितनेक पंवार तो इधर उधर चले गये और कितने ही तेजसिंह के चाकर हो रहे। तेजसिंह का विवाह मेहरा (पवार) की बहन लजसी (लज्जावती) के साथ हुआ था इसलिये गाव ४ तथा ५ मेहरा को जागीर में दिये थे। जब वह तेजसी के मुजरे को आता तब वह सदा उससे यही प्रश्न किया करता था कि "मेहरा! आबू हमारा या तुम्हारा?" मेहरा कहता कि "आबू आप का है," क्योंकि प्रकट में तो वह और कुछ कह नहीं सकता परन्तु मन ही मन क्रोधवश दुखी होता था। इस दुःख से उसका शरीर दुर्बल होगया। एक बार उसका एक अन्धा चचा उससे मिलने को आया। मेहरा ने उसके चरण छूए, और अन्धे ने प्रेम वश उसके मुख व शरीर पर हाथ फेरा तो जान पड़ा कि वह दुबला है। उसने कहा कि "मेहरा, पंवारों से आबू गया सो ठीक ही है क्योंकि उनमें तेरे जैसे मड़ियल पैदा हुए। मेहरा बोला "काका, रजपूत तो अच्छा हूं, परन्तु मुझे सदा एक दग्ध लगी रहती जिससे शरीर गिरता जाता है।" काका ने पूछा "वह दुख क्या है"?

तब उसने सारी बात कही। अन्धा बोला, धिक्कार है तुझे ! जो उत्पन्न हुआ उसको मरना अवश्य है। अबकी वार अपन दोनों (चौहान के पास) साथ चलेंगे, देख तो गोविन्द क्या करता है। तू मुझे देवड़ों के किसी भले सर्वार के पास बैठा देना, फिर तेजसी जब तुझ को प्रश्न करे तो यही उत्तर देना कि "आबू मेरा और मेरे बाप का, मेरे दादा का, तूं तो ऊपरी सांड आन घुसा है"[1]।

सिरोही के धनियों की पीढ़ियां—सं० १७२१ के माघ मास में आडा महेशदास ने लिख भेजी। सं० १४५२ (८२) वैशाख सुदि २ गुरुवार को सोभा के पुत्र राव सहसमल ने सिरणवा पहाड़ी की तलहटी में, आबू से दस कोस के अन्तर पर, नया नगर बसाया। आबू और यह पहाड़ी एक मिली हुई डांग है, पहाड़ कुछ विशेष विकट नहीं है।

पीढ़ियां—१ शालिवाहन, २ जैतराव, ३ अस्थराव व गोगा भाई, ४ दल-राव, ५ सिंहराव, ६ राव लाखण, ७ बल, ८ सोहि, ९ महिराव, १० अणहिल, ११ जिन्दराव, १२ आसराव, १३ आल्हण, १४ कीतू, १५ महणसी, १६ पत्ता, १७ बीजड़ को यहां तो महणसी का पुत्र लिखा और कई उसको कीतू का बेटा बतलाते हैं, १८ लूंभा, १९ सलखा, २० रिणमल, २१ सोभा (शिवभाण), २२ राव सहसमल ने सं० १४५२ वैशाख वदि ७ को सिरोही का नगर बसाया (१४८२ होना चाहिये, सं० १४५२ में सहसमल राज पर ही नहीं आया था)। २३ राव लाखा, २४ जगमाल, २५ अखैराज जगमाल का, २६ रायसिंह अखैराज का, २७ राव दूदा अखैराज का, २८ उदयसिंह रायसिंह का, २९ राव मानसिंह दूदा का, ३० राव सुरताण, ३१ राव राजसिंह सुरताण का, ३२ राव अखैराज (दूसरा) राजसिंह का[2]।

---

(१) रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा रचित सिरोही के इतिहास में प्राचीन लेखों के आधार पर तेजसिंह को राव लुंभा का पुत्र और उत्तराधिकारी लिखा है। सिरोही के स्वामियों की वंशावली में तेजसिंह, कान्हड़ देव, सामन्तसिंह के नामों को छोड़ कर राव सलखा को ही राव लुभा का उत्तराधिकारी बतलाया है। राव तेजसिंह की राज-धानी चन्द्रावती नगरी थी जो आबू रोड स्टेशन से क़रीब ४ मील दक्षिण में है। यह नगरी परमारों की प्राचीन राजधानी है।

(२) इस ख्यात में दिये हुए नाडोल व जालोर के राजाओं के नाम न्यूनाधिक हैं, क्रमवार नहीं हैं।

अखैराज (पहला) राव जगमाल का, बड़ा राजपूत हुआ, जिसने एक बार जालोर के खांन को क़ैद कर कारागार में रक्खा था[1]।

राव रायसिंह अखैराज का—जगमाल राव लाखा का टीकेत कुवर था, उसके हमीर और ऊदा दो भाई थे। हमीर ने अपने भाई राव जगमाल के पास आधी सिरोही बंटवाली परन्तु अन्त में जगमाल ने उसे मार डाला। राव रायसिंह बड़ा महाराजा हुआ, बहुत दान पुण्य किया और मेवाड़ व मारवाड़ के स्वामियों के साथ बड़े बड़े उपकार किये। माला नाम के आसिया चारण को कोड़ पसाव दिया जिस में गाव खाण उसको शासन कर दिया। वहां सुकाल दुकाल में अरहट ३०० (?) चलते हैं[2]। पत्ता कलहट को भी कोट पसाव में गाव मोटासण, गुजरात के मार्ग पर बड़गांव के पास, ५० अरहट का शासन कर दिया। राव रायसिंह भीनमाल पर चढ़ कर गया था, वहा कोट (गढ़) के भीतर विहारियों (जालोरी पठान) के थाने के आदमी थे। जब कोट का घेरा डाला तो भीतर से किसी ने तीर चलाया। वह राव के बख़्तर को भेदकर बग़ल में जा घुसा जिससे राव मरगया। दाग कालंधरी में दिया गया और वहीं उसकी राणी चम्पाबाई सती हुई, जो (जोधपुर) के राव गागा की बेटी थी और जिसके पेट से उदयसिंह उत्पन्न हुआ था। रायसिंह ने मरते वक़्त कहा कि मेरा पुत्र अभी तक बालक है सो टीका भाई दूदा को देना, वही उदयसिंह की रक्षा करेगा।

राव दूदा—राव रायसिंह की वसीयत के बमूजिब गद्दी पर बैठा। उसने राज्य की सारी साहिबी का स्वामी उदयसिंह ही को रक्खा, अपने पुत्र मानसिंह को कभी उसके पास फटकने तक न दिया। राव दूदा ने ऊदा बघेल को गांव डोप में मारा, जिसके कलहट पत्ताके कहे हुए कई छन्द हैं। (दूदा) ने मरते वक़्त (सं० १६१०) कहा कि टीका रायसिंह के पुत्र उदयसिंह को देना। मेरे पुत्र मानसिंह को नहीं। और उदयसिंह को कहा कि जो तुम चाहो तो लोहियाणा गांव मेरे पुत्र को दे देना। प्रधानों व राजपूतों ने उदयसिंह को पाट बिठाया और मानसिंह को लोहियाणा दिलाया।

---

(१) यह पालनपुर वालों का बुज़ुर्ग मजाहिदखां था जो गुजरात के सुलतान की तरफ़ से जालौर की हकूमत पर था।

(२) शायद ३० की जगह तीन सौ भूल से लिखे गये हों।

राव उदयसिंह—गद्दी बैठने के पीछे एक वर्ष तक तो मानसिंह से मेल रहा पीछे राव उसके दूषण का चिन्तवन करने लगा। कहा कि इसने मुझ पर एक तुक्का चलाया था। राजपूतों ने समझाया कि ऐसे विचार मन में मत ला! इसके पिता ने तेरे साथ बहुत भलाई करी है, यहां तक कि अपने पुत्र को टीका न देकर तुझ भतीजे को गद्दी बिठाया है। मानसिंह तेरा आज्ञाकारी सेवक है, परन्तु उदयसिंह ने तो यही उत्तर दिया कि मैं उसको लोहियाणे से निकालूंगा। फिर फौज भेज कर उसे निकाल दिया, तब वह मेवाड़ के राणा के पास जा रहा और वहां उसे १८ गांव बरकाणा, बींझेवा समेत जागीर में दिये गये। शिकार में वह राणा के साथ रहता था और राणा भी उस पर कृपा रखता था। एक ही वर्ष पीछे राव उदयसिंह को चेचक निकली और यह समाचार मानसिंह को सिरोही से एक क़ासिद ने आकर दिये। राणा उस वक़्त आखेट खेलने कुंभलमेर की तर्फ गया था, उस पर यह भेद न खुला। सिरोही से मानसिंह के पास एक और आदमी आया और कहा उदयसिंह की दशा अच्छी नहीं है।

उसी रोग से उदयसिंह मरगया तो सिरोही के पांच भले आदमियों ने मिलकर विचार किया कि इसके कोई पुत्र नहीं, मानसिंह दूदावत राणा के पास है, राणा यह समाचार सुन कर मानसिंह को मार कुम्भलमेर से सीधा इधर आजावे तो आज देवड़ों के घर से आबू चला जावेगा। तब उन पांच ठाकुरों ने दो पहर तक राव की मृत्यु का भेद किसी पर प्रकट न किया, और साहाणी जयमल को, जो बहुत योग्य और भरोसे वाला मनुष्य था, पत्र देकर मानसिंह के पास भेजा, व राव का अग्नि संस्कार किया। सारी रात चलकर पहर दिन चढ़े साहाणी मानसिंह के डेरे कुंभलमेर में पहुंचा। मानसिंह उस वक़्त गढ़ पर राणा के पास था। साहाणी ने चीवा सामन्तसिंह को सब बात गुप्त रीति से समझा बुझा कर कही और वह गढ़ पर गया, उसको देखते ही मानसिंह ताड़ गया कि जयमल आया है सो सिरोही में कुशल नहीं। कोई बहाना करके तुरन्त वहां से उठा और डेरे आकर जयमल से मिला। उसने सैन ही में सब हक़ीकत समझाई, तब मानसिंह ने चीवा को कहा कि हम जाते हैं, यदि राणा का कोई आदमी यहां आकर मेरे वास्ते पूछे तो कहना कि मानसिंह उन दो शूकरों को ढूंढने गया है जो जंगल में कहीं जा छिपे हैं। पांच सवार साथ लेकर वह जयमल समेत चल दिया और पहर रात गये सिरोही के निकट बाग में जा

उतरा। जयमल ने ठाकुरों को सूचना दी और ये सब रात ही में मानसिंह से आ मिले।

थोड़ी देर पीछे राणा ने मानसिंह के डेरे पर खबर कराई कि वह कहां है तब चीबा ने कहा कि अहेड़े में दो सूअर भाग गये थे उनको ढूंढने गया है, अभी आता ही होगा। संध्या होगई, मानसिंह न आया, तब राणा ने फिर उसे याद किया, उस वक़्त किसी ने अर्ज की कि मैंने कोस दसेक पर मानसिंह को पांच सवारों से मध्याह्न के समय सिरोही की तरफ भागता हुआ देखा था। राणा ने पूछा कि यह क्या बात है, दूसरे ने कहा कि मेरे पास एक आदमी सिरोही से आया था उसने समाचार दिये कि राव उदयसिंह को चेचक निकली है और वह बहुत बुरी हालत में है। तब राणा बोला कि जान पड़ता है कि उदयसिंह मर गया, और दूसरों ने भी इसकी पुष्टि की। राणा ने हुक्म दिया कि मानसिंह के डेरे पर जो राजपूत है उसको बुला लाओ। वहां देवड़ा जगमाल मुखिया राजपूत था वह हजूर में हाजिर हुआ। राणा ने उसको फर्माया, कि मानसिंह ऐसे क्यों भागा, हम उसके साथ क्या करते थे। जगमाल ने अर्ज़ की कि "यह बात तो वही जाने"। फिर हुक्म हुआ कि सिरोही के च्यार परगने हमको लिख दे। जगमाल ने सोचा कि यदि मैं इसमें उजर करता हूं तो आश्चर्य नहीं कि राणा का साथ मानसिंह का पीछा करे और जो वह मार्ग में कहीं ठहर गये होवें तो बात बे ढब हो जावे। तब बड़े विनय के साथ अर्ज़ कराई कि मानसिंह दीवाण का चाकर है, हमको क्या उजर है। चाहे जितनी धरती दीवाण लेवें, और जितनी इच्छा हो उतनी मानसिंह को बख़्शी जावे। राणा ने च्यार परगनों का लिखन उससे कराया और इस झमेले में रात बहुत बीत गई तब सोचा कि मता (लिखने वाले की सही) कल करा लेंगे। राणा ने सुख किया और जगमाल भी सो रहा। प्रभात ही उठकर वह राणा के पास रुख़सत लेने को जाता था कि रास्ते में राणा के आदमी उसको मिले जो उसे बुलाने को आये थे। वे राणा के हजूर में पहुंचे, हुक्म हुआ कि रात को जो काग़ज़ लिख दिया है उसमें मता कर दे। तब जगमाल ने अर्ज़ की कि मेरे दिये हुए परगने नहीं जा सकते हैं, मानसिंह और सिरोही के सर्दार जो वहां हैं, मता करेंगे। राणाने कहा कि इस रजपूत ने अच्छा दांव खेला। फिर फर्माया कि उन ४ परगनों में हमारा थाना बिठाने को हम अपने सवार तुम्हारे साथ भेजते हैं सो वे उनके सुपर्द कराके

पीछे आगे बढ़ना। जगमाल ने कहा कि सिरोही के स्वामी आपके चाकर और सगे हैं, दीवाण ऐसा क्यों करते हैं, किसी एक भले आदमी या पुरोहित को मेरे साथ भिजवा दें, जो उत्तर राव देवेगा वह पीछा हजूर में आकर मालूम कर देगा। दीवाण ने इसको मंजूर फर्मा कर पुरोहित को जगमाल के साथ भेजा। मानसिंह ने पुरोहित का बहुत आदर किया और एक हाथी व ४ घोड़े राणा के नज़र के वास्ते भेज लिखा कि ४ परगने ही पर क्या, सिरोही सब दीवाण ही की है और मैं दीवाण का रजपूत हूं। तब राणा भी राज़ी होगया।

राव मानसिंह बड़ा बीर सर्दार हुआ, बहुत राज किया, पादशाही फौजों से कई लड़ाइयां लीं, सिरोही के पास कोलियों के बड़े बड़े मेवासे थे जो पहले किसी राव से न टूटे थे, मानसिंह ने एक ही दिन में २२ जगह सारे मेवासों पर अमल कर लिया और कोलियों को निकाल दिया। छः महीने तक राव के थाने वहां रहे, तब तो कोली सब पांवों पर आन गिरे और राव की आज्ञा सिरपर चढ़ाई, तब प्रसन्न होकर उनको पृथ्वी पीछी दी और अपने थाने उठा लिये।

राव रायसिंह की राणी, राव उदयसिंह की माता चंपाबाई राव गांगा (राठोड़) की बेटी बहुत ज़बर्दस्त स्त्री थी। राव उदयसिंह की स्त्री के गर्भ था सो चंपा बकती कि " कल मेरे पोता हो जावेगा, मानसिंह कौन है जो राज भोगे। राव मानसिंह ने चंपाबाई और उसके बेटे की बहू गर्भवती (बीकानेरी) को खुल्लम खुल्ला मार डाला। बीकानेरी के पेट में से ८ मास का बालक निकला उसको भी वहीं पूरा किया, और सुरताण अभयसी की शत्रुता के लिये अपने प्रधान पंचायन को विष दिया। पंचायन पंवार का भतीजा कल्ला पंवार राव का खवास था। जब राव आबू पर गया तो वहां कल्ला को धक्का सा दिलवाया। रात्रि को जब राव मानसिंह भोजन कर रहा था तब कल्ला ने उसके कटार मारा और वे खटके निकल भागा। फिर एक पहर तक राव जीया। उस वक़्त सर्दारों ने पूछा कि आपके बेटा नहीं, पीछे टीका किसको दिलाते हैं? उत्तर दिया कि भाण के पुत्र सुरताण को (सं० १६२८ में इस घटना से राव मानसिंह का देहान्त हुआ[1])।

---

(१) राव मानसिंह की एक कन्या ऊकार कवर का विवाह जोधपुर के राव चन्द्रसेन के साथ हुआ था, और दूसरी कन्या का महाराणा प्रतापसिंह के भाई जगमाल सीसोदिया के साथ। पांच राणिया आबू पर राव मानसिंह के साथ सती हुईं।

राव सुरताण—(यह राव लाखा के तीसरे पुत्र ऊदा के पौत्र भाण का बेटा था)। मानसिंह की वसीयत के अनुसार सर्दारों ने इसे टीका दिया। राव सुरताण बीजा देवड़ा का बहुत आदर करता और वही सिरोही में कर्ता धरता था। राव मानसिंह की राणी बाहड़मेरी के गर्भ था। राव के मरने पीछे उसने पुत्र प्रसव किया। देवड़ा सूजा रणधीरोत, राव सुरताण का काका, अपने पास अच्छे अच्छे राजपूत और घोड़े रखता था। उसकी यह बात बीजा देवड़ा को पसंद न आई, उसने विचारा कि मानसिंह के पुत्र को (ननिहाल) से बुलाकर गद्दी बिठाऊं और सुरताण को निकाल कर सूजा को मरवा डालूं। उसने अपने भाइयों को सूजा के मारने के वास्ते कहा, तो सब ने यही उत्तर दिया कि ऐसी बात मत करो! सिरोही का धणी राव सुरताण हो चुका, तुम उसके काका को मत मारो! परन्तु बीजा ने किसी की न सुनी। देवड़ा रावत शेखावत को खड़ा किया, और रावत ने बालीसा जगमाल के डेरे पर सूजा को मार डाला। देवड़ा गोयंददास देवीदासोत डेरों के पास था। जब बीजा, देवड़ा सूजा के घोड़े असबाब लूटने को आया तब गोयंददास भी उससे लड़कर काम आया। अब तो बीजा ने बाहड़मेर से राव मानसिंह के पुत्र को बुलवाया, जब वह निकट पहुंचा तो बीजा उसको लेने को कालंधरी गया और राव सुरताण को एक कोठरी में बन्द कर अपने दो भरोसे वाले रजपूतों को यह कहकर वहां छोड़ गया कि इसे बाहर मत निकलने देना। राव सुरताण ने जान लिया कि पीछा आकर बीजा मुझे मार डालेगा, तब एक देवड़ा डूंगरोत को, जो भला राजपूत था, उसने समझा कर कहा कि तूं मुझे निकाल दे, रखने वाला तो मैं ही हूं। मेवाड़, जोधपुर में कहीं चला जाऊंगा तो वहां बीस हज़ार का पटा तो तुझे मिला ही रहेगा। फिर उसके साथ कौल वचन किया, महादेवजी को बीच में दिया, और वे दोनों शिकार का बहाना कर वहां से निकले। दूसरे राजपूत चीवा ने पहले तो इस भेद को न जाना परन्तु दो कोस पर जाने के पीछे वह बोला कि मैं इस बात को नहीं जानता, तुमको जाने न दूंगा। तब डूंगरोत बोला, इधर आ! मैं तुझको मारूं, तब तो झख मारकर चीवा चुप होरहा और राव सुरताण भाग कर रामसेण पहुंचा।

देवड़ा बीजा ने सूजा को मारने के लिये जब अपने आदमी भेजे तो वहां सूजा का एक पुत्र भाला भी अपने पिता के साथ मारा गया, सूजा की पत्नी

सब लूट ली। सूजा के दूसरे बेटों पृथ्वीराज और श्यामदास को उसकी माता ने एक गढ़े में छिपाकर ऊपर वस्त्र ढक दिये, जब लुटेरे चले गये तो रात्रि के समय निकाल कर वह उनको आबू के पास कहीं लेगई, और फिर ये रामसैण में राव सुरताण से जा मिले।

देवड़ा बीजा मानसिंह के पुत्र को लेने गया। उसकी माता ने बालक को बीजा की गोद में बिठाया ही था कि अचांचक किसी अकस्मात रोग से बालक वहीं मरगया। बीजा पीछा सिरोही आया और देवड़ा समरा को कहा कि मुझे टीका दो। बहुत कुछ कहा सुनी की, परन्तु समरा ने यही उत्तर दिया कि अब तक राव लाखा के सन्तानों में बीस आदमी मौजूद हैं, जब तक एक दो वर्ष का बालक भी उसके वंश का होवे तब तक तेरी क्या मजाल जो तू गद्दी पर बैठे। उन दोनों में विरस हुआ और समरा आदि रिसाकर वहां से चले गये। बीजा राव बन बैठा और ४ मास तक राज किया। यह बात राणा (प्रतापसिंह उदयसिंहोत) ने सुनी। राव कल्ला (देवड़ा) मेहाजलोत राणा का भाञ्जा था, उसको सिरोही की राज गद्दी का तिलक देकर राणा ने अपनी फौज के साथ सिरोही भेजा, जब वह वहां आया तो देवड़ा बीजा वहां से भाग कर ईडर चला गया और कल्ला सिरोही का स्वामी हुआ।

राव कल्ला का सिरोही की साहिबी का आधार विशेष कर चींवा खींवा भारमलोत पर था। देवड़ा समरा हरराज आदि भी नौकरी करते परन्तु मन में (कल्ला को) न चाहते थे। राव सुरताण ने भी आन कर उसको जुहार किया और कितनेक गांव सुरताण को जागीर में दिये गये जहां वह रहने लगा और कभी चाकरी भी देता था। एक दिन कल्ला तो दर्बार से उठ कर शयनस्थान में चला गया और देवड़ा समरा, सूरा, हरराज गालीचे पर बैठे थे। उस वक़्त चींवा पत्ता ने फर्राश को कहा कि गालीचा उठा ला। फर्राश आया, देखा कि यह तीनों सर्दार बैठे हैं तो पीछा फिरगया। चींवा ने पूछा—गालीचा लाया? फर्राश बोला—सूराजी व हरराज बैठे हैं। चींवा कहने लगा, क्या वे तेरे बाप लगते हैं, जा गालीचा ले आ! फर्राश पीछा आया और कहने लगा, गालीचा चींवा पत्ता मंगवाता है, आप तो सब बात जानते ही हैं। वे सब उठगये और बोले, ईश्वर ने चाहा तो अब हम कल्ला की जाजम पर न बैठेंगे। वे क्रोध वश वहां से चल दिये, राव सुरताण को कहलाया कि तू आकर हम से मिल।

सुरताण अपना माल असबाब लेकर उनके पास चला आया और वहां उन्होंने उसको टीका दिया। राव सुरताण व समरा ने देवड़ा बीजा को भी ईडर से बुलवाया, वह सरोतरे के पास आन पहुंचा। राव कल्ला ने सुना कि बीजा आता है तब उसने देवड़ा रावत हामावत को ५०० सवार देकर घाटा रोकने के वास्ते बिदा किया और वह गांव माल में पहुंचा। बीजा के डेरे वर्माण में हुए। वहां से एक कोस के अन्तर पर दोनों में परस्पर युद्ध हुआ। बीजा के पास १५० सवार थे परन्तु उसकी विजय हुई, कल्ला के ४० आदमी मारेगये और ६ घायल हुए, फौज का सरदार पूर्ण रीति से घायल होकर गिरा। बीजा के १३ आदमी काम आये। विजयी बीजा रामसैण में राव सुरताण से जा मिला। वह राहभेदी राजपूत था उसके आने से राव सुरताण का बल बढ़ गया। फिर उसने सलाह दी कि जालौर के मलिकखान को अपनी मदद पर बुलाओ। खान के पास दूत भेज कर कहलाया कि हम एक लाख रुपये देंगे, हमारी सहायता करो। उसने उत्तर दिया कि लाख रुपयों के वास्ते मैं अपने भाई बन्धुओं को मरवाना नहीं चाहता, सिरोही के ४ परगने सियाणा, बड़गांव, लोहियाणा, और डोडियाल दो तो आऊं। कितनेक सरदारों ने कहा कि ये परगने न देने चाहिये। तब बीजा बोला कि वह तो परगने सिर के साथ मांगता है, खुशी से देने चाहिये। वे च्यारों परगने उसको दिये गये, और वह १५०० सवार की सेना से राव सुरताण से आ मिला।

राव कल्ला सिरोही से ४००० सवार की सेना साथ ले कालंद्री आया, मोर्चे जमाये, नालें बांधी, और सब सामान ठीक करलिया। राव सुरताण के पास भी हज़ार तीनेक आदमियों की भीड़ भाड़ होगई, उसने सुना कि राव कल्ला ने कालंद्री पर अच्छी सजावट की है तो जाना कि यदि हम वहां गये तो धक्का खावेंगे। देवड़ा समरा व बीजा सब भेद जानने वाले थे, कहने लगे अपने कालंद्री से क्या काम है, सीधे सिरोही ही क्यों न चलें, यदि कल्ला को लड़ाई करनी होगी तो आप आ जावेगा। तब ये तीनों सेना सहित सिरोही को चले। कालंद्री से एक कोस के अन्तर से निकले, वहां राव कल्ला इनके सन्मुख आन उपस्थित हुआ। लड़ाई शुरू हुई, राव सुरताण जीता और कल्ला हार गया। इस लड़ाई में (जालौर के) बिहारी पठान ने बड़ी वीरता दिखलाई। सुरताण के दस बीस आदमी मारे गये, जिनमें मुखिया देवड़ा सूरा नरसिंहोत समरा का

भाई था। राव कल्ला के इतने सरदार काम आये-चीवा पत्ता, सीसोदिया मुकंद-दास व शामदास, सीसोदिया दलपत। कल्ला भाग गया, सुरताण ने खेत शोधा और फिर सिरोही पर आ जमा। राव कल्ला के अन्तःपुर की स्त्रियां आदि सिरोही में थीं उनको रथों में बिठाकर कल्ला के पास पहुंचा दीं (कल्ला के वंशज गोडवाड़ में बीसलपुर वांकली जा रहे)।

राज की सब थाप उथाप देवड़ा बीजा के हाथ में थी और वह प्रतिदिन ज़ोर पकड़ता जाता था। राव सुरताण की उससे नहीं बनती थी परन्तु बस कुछ नहीं चलता था। उन्हीं दिनों राव का विवाह बाहड़मेर हुआ और उसकी पत्नी सिरोही में आई। उसने बीजा का वर्ताव देखकर राव से पूछा कि यह ठाकुराई का कैसा ढंग है, राज के स्वामी तुम हो या बीजा है? सुरताण ने उत्तर दिया कि राज में कोई ऐसा रजपूत नहीं जो बीजा जैसी बलाय का साम्हना करे। तब बाहड़मेरी बोली कि भरपेट खाने को दो तो धरती पर रजपूत बहुत हैं। राव ने कहा कि तुम ही दस बीस को बुलवाओ। उसने अपने पीहर से २० आदमी बहुत अच्छे बुलवाये और उनको राव के पास रक्खे। जब देश के राजपूतों ने राज की हालत बदली देखी तो वे भी उसके पास आकर रहने लगे। बीजा के और राव के बीच इतनी शत्रुता हुई कि दोनों एक दूसरे को मार देने का अवसर ताकने लगे। बीजा के दो भाई लूणा और माना भी उससे फटकर राव से आन मिले और राव का पलड़ा प्रतिदिन भारी पड़ता गया, यहां तक कि एक बार बीजा को सिरोही में से निकाल दिया तब वह अपनी बसी में जा रहा।

उसी अवसर पर बीकानेर के महाराजा रायसिंह (बादशाही तरफ से) सोरठ को जाते थे, जब वह सिरोही के पास पहुंचे तो राव सुरताण उनकी पेश-वाई करके उनसे मिला, राजा ने उसका बहुत आदर किया। देवड़ा बीजा भी राजा रायसिंह के पास पहुंचा और उसको कई प्रकार से लालच दिखलाया परन्तु राजा ने उसकी बात न मानी। राव सुरताण से बात चीत कर सिरोही का आधा राज बादशाह के रक्खा और आधा राव के, और बीजा को सिरोही के इलाक़े में से निकाल दिया। बादशाही आधे राज पर राय रायसिंह मदना पत्तावत को ५०० सवार से सिरोही छोड़ गया। बादशाह को अर्ज़ लिखी कि "सिरोही का स्वामी राव सुरताण मुझ से आकर मिला, उसको आसिये बीजा ने दबा रक्खा था, राव ने आधी सिरोही देनी क़बूल की, तब मैंने उसकी सहायता कर बीजा को

निकाल दिया और अपने ५०० सवार रखकर आधा देश बादशाही खालसे में लिया है। हजूर की मरज़ी हो उसको बख़्शा जावे, या करोड़ी भेजदिया जावे। राव हुक्मी चाकर है।"

(इस अर्जी के पहुंचते ही) बादशाही दीवान बख़्शी आदि सिरोही के आध की तजवीज में लगे। राणा उदयसिंह का बेटा सीसोदिया जगमाल दर्गाह गया था और (सिरोही के) राव मानसिंह की बेटी का विवाह भी उसके साथ हुआ था, उसने मंसब में सिरोही की आध मिलने की अर्ज़ कराई, तो बादशाह ने फर्माया कि यह राणा का बेटा है और योग्य भी है, इसको वह जागीर दी जावे। फर्मान लिख दिया गया, उसको लेकर जगमाल सिरोही आया, राव सुरताण उसके साम्हने आकर मिला। बीजा देवड़ा भी दर्गाह गया था, वहां उसकी कुछ सुनवाई न हुई, तब वह भी जगमाल के साथ सिरोही आगया[1]।

राव सुरताण ने आधा राज्य जगमाल के सुपुर्द कर दिया। राव सुरताण महल में रहता और जगमाल दूसरे घरों में। जगमाल की ठकुराणी राव मानसिंह की बेटी से यह सहन न हो सका, कहने लगी कि मेरे होते मेरे बाप के घर में दूसरा रहने वाला कौन है। (बीजा इस वैर भाव को सुलगाता जाता था)। एक बार राव सुरताण कहीं बाहर गया हुआ था, पीछे से जगमाल और बीजा दांव देखकर महल पर चढ़ गये। सागा आसिया (चारण) और दूदा संगार राव के सेवक वहां पर थे, वे जगमाल के संमुख हुए, लड़ाई ठनी, महल हाथ न आया, तब तो खिसियाना होकर जगमाल दर्गाह जाकर पुकारा। बादशाह ने राव रायसिंह (राठौड़ चंद्रसेनोत) और दांतीवाड़े के राव कोली सिंह, व कई तुर्कों को जगमाल के साथ सहायतार्थ भेजे। वह सेना सहित सिरोही आया, राव सुरताण सिरोही छोड़ पहाड़ों में चला गया, तब तो जगमाल महल में जा बैठा।

---

(१) महाराणा उदयसिंह का देहान्त सं० १६२८ फागुण सुदि १५ को गोगूंदे में हुआ। महाराणा का प्रेम अपनी राणी भटियाणी पर विशेष था इसलिये उसके पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा, परन्तु महाराणा का शरीर छूटने पर सरदारों ने वीर प्रतापसिंह को गद्दी पर बिठा दिया जो पाटवी और सर्व प्रकार योग्य था। इसपर अपने भाई से रूठकर जगमाल बादशाही चाकरी में चला गया।

कुछ समय वीतने पर जगमाल ने सोचा कि नगर तो लेलिया अब राव सुरताण से आबू की तलहटी भी छुड़ा लूं, तब वह चढ़ चला। राव ने भी दो एक कोस पर आकर एक बिकट स्थान में डेरा दिया। जगमाल के सरदारों ने यह तजवीज बिचारी कि राव के राजपूतों के वस्ती के गांवों पर जुदी २ सेना भेजी जावे जिससे वे सब बिखर जावेंगे, तब हम आसानी से राव को पराजित कर सकेंगे। तदनुसार देवड़ा बीजा हरराजोत व खींवा मांडणोत व राम रणसीहोत आदि को कई तुर्कों सहित भीतरोट पर विदा करने का विचार बांधा। बीजा ने जगमाल व रायसिंह को कहा कि जो तुम मुझे अलग करोगे तो राव सीधा तुम पर आवेगा, तो राठोड़ ठाकुर बोले कि " जिस गांव में कुक्कुट नहीं होता वहां भी प्रभात होता है "। तब तो बीजा उधर चल दिया। राव सुरताण ने देवड़ा समरा को सूचना की कि बीजा भीतरोट की तरफ गया है, समरा बोला कि अब विलम्ब मत करो! सीसोदिये जगमाल और राव रायसिंह के डेरे गांव दताणी में थे वहां सुरताण नक्कारा देकर आया। दोनों के बीच एक दो कोस का अन्तर था। ये तो इसी विचार में रहे कि राव बीजा के पीछे जाता है, परन्तु वह तो अचांचक इन पर आ गिरा। सं० १६४० कार्तिक सुदी ११ को युद्ध हुआ, जगमाल, रायसिंह, और कोली सिंह तीनों सरदार मारे गये, और राठोड़ गोपालदास किसनदासोत गांगावत, राठोड़ सादूल महेसोत कूंपावत, राठोड़ पूरणमल मांडणोत कूंपावत, राठोड़ लूणकरण सुरताणोत गांगावत, राठोड़ केशवदास ईसरदासोत, पडिहार गोरा राघावत, चौहान सेखा भांझणोत, पडिहार भाण अभावत, देवा ऊदावत, भाटी नेतसी, (भाटी) जैमल, बारहट ईसर, सेलहथ, वाला, मांगलिया किसना, धांधू खेतसी, मूंता राजसी राघावत, भाटी कान्ह अमावत, मांगलिया गोपाल भोजावत, राव खींवा रायसलोत और ईंदा आदि सरदार मारे गये, देवड़ा समरा भी खेत रहा [1]। इस युद्ध के पीछे देवड़ा

---

(१) कहते हैं कि जब राव सुरताण ने खेत संभाला तो वहां आसा दुरसा को, जो रायसिंह के साथ था, घायल पड़ा देखा। देवड़ों ने कहा कि इस राजपूत को भी दूध पिलाओ (मारडालो) तो दुरसा बोला कि मैं चारण हूं, मुझे मत मारो। सुरताण ने कहा कि चारण है तो देवड़ा समरा की प्रशंसा में कोई रूपक कह! उसने तुरन्त यह दोहा बनाकर सुनाया—" धर रामा अग डूगरां, धव पोसां सम्रहाय। समरै समर सुधारियो "बहु-

राव राजसिंह का पक्षपाती बना रहा। परस्पर दोनों दलों में लड़ाई हुई, राव जीता, और सूरसिंह ने हार खाई[1]। कई एक दिवस पीछे राव राजसिंह की देवड़ा प्रथीराज के साथ अनवन होगई। प्रथीराज मुल्क लूटने लगा, और उसके बेटे व भतीजों ने पूर्ण आवेश के साथ राव के विरुद्ध कमर कसी। राव राजसिंह महाराणा अमरसिंह का दोहिता था इसलिये महाराणा के कुंवर कर्णसिंह ने राव और प्रथीराज के बीच मेल करा देने की इच्छा से दोनों को उदयपुर में बुलाये और कहा सुनी की। राजसिंह, प्रथीराज, नाहरखान, और चांदा सब एक ही प्रकृति के पुरुष थे, उन्होंने राणा के साथ बुराई करने का विचार बांधा। राणा के भले आदमी जो वातचीत करने वाले थे उन्होंने राणा से अर्ज़ की कि अपने को इस बीच बिचाव करने में कुछ लाभ नहीं है, तब राणा ने उस बात को छोड़ दी और उनको उदयपुर से विदा किये।

फिर कई दिन तक परस्पर वही खटाखट चलती रही। प्रथीराज का बल बढ़ता गया। राव राजसिंह देवड़ा भैरवदास समरावत को अपने पास रखता था। सं० १६७४ भादवा शुदि ६ को (जोधपुर के महाराजा सूरसिंह के) कुंवर गजसिंह ने जालौर फतह किया और वहां भाटी गोकलदास आसावत और भाटी दयालदास को थाने पर रक्खे। राव राजसिंह ने उनको कहलाया कि यदि देवड़ा प्रथीराज को सिरोही के इलाक़े से निकाल दो तो गांव १४ तुम को दिये जावें। उन्होंने कुंवर गजसिंह से आज्ञा लेकर इसको स्वीकारा। भाटी दयालदास राव की सहायता पर आया और प्रथीराज को निकाल दिया, तब ये १४ गांव दिये गये–कोरटा, पालड़ी, नामी, रहवाड़ा, चमला, आलोपा, पोसाणा, बांसड़ा, थाथार, सेजड़िया, भेव, अणदोर, नारदणा, अरटवाड़ा। प्रथीराज पीछा आगया

---

(१) सूरसिंह ने जोधपुर के महाराजा सूरसिंह से सहायता चाही, और कुंवर गजसिंह को अपनी कन्या ब्याह देने और दूसरे राठोड़ सरदारों को जिनके सम्बन्धी दताणी की लड़ाई में मारे गये थे, देवड़ों की २६ कन्या ब्याह कर राव रायसिंह (राठोड़) का बैर धो डालने की कोशिश की। इसके अलावा यह भी ठहराव हुआ कि जो सामान व नक्कारा राव रायसिंह का राव सुरताण ने छीना था, पीछा दिया जावे; महाराजा उसको सिरोही की गद्दी पर बिठा दें और बादशाही चाकरी में दाखिल करावें। महाराजा ने भी इसको मंज़ूर किया, परन्तु अन्त में सूरसिंह की हार होजाने से यह सब मामला

इसलिये एक साल तो राव ने ६०००) फीरोजी (रुपये) और १३०००ऽ मण गेहूं मारवाड़ वालों को दिये फिर कुछ न दिया।

एक बार राव राजसिंह महादेवजी के दर्शन को गया था और देवड़ा भैरवदास समरावत उसके साथ नहीं था, पीछे रहगया था। प्रथीराज और उसके भाई बेटे सदा घात में लगे रहते थे, उस दिन अवसर पाकर उन्होंने भैरवदास को जा मारा। राव ने जब यह सुना तो मन ही मन में जल भुनकर रह गया। भैरव के बेटे को उसके बाप की जागीर का गांव पाडाव दिया। एक वर्ष बीत गया, प्रथीराज, नाहरखान, चांदा आदि अवसर तकते रहते थे। एक बार ये सब राव के पास गये। राव, देवड़ा रामा व सीसोदिया पर्वतसिंह के साथ बैठा बातें कर रहा था। इन्होंने भीतर घुसते ही राव को मारडाला और पर्वतसिंह को भी मारना चाहा परन्तु उसके दिन बाकी थे, बचगया। शोर मचा, राव राजसिंह का पुत्र अखैराज दो वर्ष का था उसको उसकी धाय एक कोठरी में ले घुसी और सुलाकर ऊपर गुदड़िया डालदीं। प्रथीराज ने उसको बहुत ढूंढा परन्तु पता न लगा। इतने में तो सीसोदिया पर्वत, देवड़ा रामा, खंगार आदि राव के साथी इकट्ठे होकर आये और प्रथीराज आदि को रावालय में घेर लिये और उनपर तीर व गोली बरसाने लगे। अखैराज की खोज की कि कहां है तो जनाने में से समाचार आये कि अबतक तो वह कुशलता पूर्वक है अमुक कोठरी में बन्द है, और प्रथीराज के आदमी उसके द्वार पर बैठे हैं। बड़े बड़े सर्दारों को जल पिये दो पहर बीत गये हैं, उस कोठरी के अमुक अलंग पर कोई नहीं है सो सिलावट को बुलवाकर दीवार तुड़वा के अखैराज को निकाल लो। सीसोदिया पर्वतसिंह और देवड़ा रामा ने वैसा ही किया, दीवार तुड़वाकर बालक अखैराज को निकाल लिया। अब तो इनका बल बढ़ा, और पुकार पुकार कर कहने लगे हरामखोरों! अखैराज हमारे हाथ आगया है। यह सुनते ही प्रथीराज के पग छूट गये, रात हो चली, राव के चाकर च्यारों ओर से मारने लगे, तब उसने विचारा कि यदि रात को यहां रहगये तो मारे जावेंगे, अपने भले भले राजपूतों को च्यारों तरफ रख कर चला गया। राव के साथियों ने भी पीछा किया जिनके साथ लड़ाई करने में कई राजपूत मारे गये, परन्तु वह सर्दार सकुशल ने[illegible] पहुंच गये और वहां से सवार हो पालड़ी में आन कर ठहरे।

सीसोदिया पर्वतसिंह, देवड़ा रामा चीवावत, दूदा, करमसी और साह तेजपाल ने मिलकर सं० १६७५ में राव अखैराज को राज-तिलक दिया। प्रथीराज की कार्यवाही के समाचार चित्तौड़ के राणा और ईडर के राव कल्याणमल ने, जो ज़बर्दस्त सरदार था, सुने और सबने राव अखैराज का पक्ष लिया। पर्वतसिंह आदि ने अपना बल बढ़ाकर प्रथीराज को देश से निकाल दिया। वह देवल राजपूतों के यहां व्याहा था, वहां चला गया, उन्होंने वेखला नामी पहाड़ी में एक विकट स्थान उसके रहने को बतला दिया और उसका बेटा चांदा अम्बा भवानी की तरफ चला गया। इन्होंने धरती में कई डाके डाले, और बहुत बिगाड़ करने लगे, कई गांव ऊजड़ कर दिये और चांदा सिरोही का आधा दाण लेने लग गया, परन्तु अपनी हरामख़ोरी के कारण वह दिन दिन निर्बल ही पड़ता रहा। प्रथीराज का भतीजा रामसिंह एक गांव लूटने को गया था, वहीं मारा गया। थोड़े अर्से पीछे राजसिंह, जीवा, और देवराज के पुत्र डूंगरोत देवड़े कपट क्रिया करके सिरोही से प्रथीराज के पास पहुंचे और कहा कि हम रामा भैरवदासोत आदि से लड़कर तुम्हारे पास आये हैं। उसने उनकी बात पर विश्वास कर उन्हें अपने पास रख लिये। अवसर पाकर एक रात उन्होंने प्रथीराज को मार डाला और सिरोही चले आये। प्रथीराज के दूसरे पुत्र तो सब मरगये परन्तु चांदा बड़ा विकट राजपूत हुआ। सिरोही में कोई ऐसा रजपूत नहीं था जो दो च्यार बार चांदा के साम्हने से न भागा हो। वह गांव नींबज में रहता था। सं० १७१३ कार्तिक शुदि १४ को सीसोदिया पर्वत, देवड़ा रामा, करमसी, और खवास केसर आदि राव अखैराज का सारा साथ नींबज पर चढ़ गया, चांदा ने लड़ाई की, दो पहर तक युद्ध होता रहा, अन्त में विजय चांदा की हुई। राव के ५० आदमी खेत पड़े और सौ एक घायल हुए। सेना नायक देवड़ा राघोदास जोगावत लाखावत काम आया और बाक़ी ने पीठ दिखाई। चांदा भी थोड़े ही काल पीछे मरगया, उसके पुत्र अमरा को राव अखैराज ने समझा कर अपने पास बुला लिया और पालड़ी जैतवाड़ा, देदपुर, मकरोड़ा, बापला, पीथापुर, टीकली, मेड़ा, गिरवर, मूंगथला, कालंधरी, मूसावल, भनारी, आंवल, और देलवाड़ा गांव जागीर में दिये, दाण जो वह लेता था लेता रहा, परन्तु अन्य गांवों का हासिल लेना रोक दिया।

सं० १७२१ में राव अखैराज के बड़े पुत्र उदयभाण ने डूंगरोत देवड़ों को मिला कर अपने पिता को क़ैद कर लिया (और आप राज का मालिक बन बैठा)। अन्त में देवड़ा रामा भैरवदासोत और सीसोदिया साहबखान आदि ने मिल कर राव को बन्दीगृह से निकाला तब उसने उदयभाण को उसके पुत्र सहित मारडाला।

कवित छप्पय सिरोही के टीकायतों की पीढियों के आसिया माला के कहे हुए।



आद अनाद असंभ, आप मुद्रा उप्पाये।
ओंकार अपार, पार परमहि नहिं पाये॥
कालिका जग कृतो, कंध रूढा कोमारी।
कमला यला कलाप, कला प्रमहंस पियारी॥
देचाए विद्या वत्तावरी, देवी धन वत्तावरी।
चौहान वंस रूपक चवां, सारमत्त भुवनेश्वरी॥ १॥
वंस चहुवाण वखाण, आण सुरताणां ऊपर।
अनल कुंड उतपत्त, मुद्रा की चंद महेसुर॥
मार मार वितथार, वार उठियो विक्रासै।
खुरसाणां खलभलै, निहंग सावन्ना नासै॥
सवा लख सिंध सागर सतर, जिये खंड जितावरी।
तेहवंस समो नहं कोइ जग, को संग्राम न समवड़ी॥ २॥
जेण वस जैराव, जेण गोगो जग जाणै।
जेण वंस जैतराव, जेण सोमेसुर ताणै॥
जेण वंस प्रथिमल्ल, साल हुवो सत्राणां।
गढ़ चौरासी गहे, साकि थंपे सुरताणां॥
कैमास सूर सारिख कियत, जास मोहल न पामता।
चौतीस लाख चतुरंग दल, हुय आयस व्है हालता॥ ३॥
तिण छंडे पंड चोसाण, त्रंब तिण में उल्लालै।
मालव घर मलवटै, पैज दखण हू पालै॥

गुज्जरवे पोह ग्रहै, सिंध समुद्रो नीहट्टे।
देतो पे परदलणा, आय दिल्ली अरहट्टे॥
अनत देस धर गिर अधर, संकोड़ो संसार सहि।
चहुवाण पीथल सूं आखड़े, गज्जणवे सुरताण गहि॥ ४॥
गज्जणवे सूं ग्रहे, लीध भंडार पहल्ली।
दूजे गयंद तुरंग, गोरियां नींद गेहेली॥
तीजे साह महंत, लेय नव लाख धरावै।
चौथे मारग माल, भोग संयुगत भरावै॥
पंचमै डंड प्रथमाल रै, वात एह मानी असुर।
दस सहस लाद अलावदी, पूरवै अजमेर पुर॥ ५॥
प्रथीमाल परमाण, वधै चहुवाण तणै दल।
घसणे वंस बलाल, दान दीन्हो दस ' घल॥
चाहड़दे (जग जाण!), जेण पंडवो प्रजाले।
चाहड़दे अस चढ़े, वैर गज्जणवो घाले॥
अजमेर हुवा नर पे भला, नव लखी उग्रह लिया।
सीलत पाण सुरताण सूं, कंदल सुरताणी किया॥ ६॥
रायसिंह तिण पाट, रहै सेवे तुरकाणो।
लाखणसी धर छांड, हुवो नाडूलो राणो॥
सेवा कीध सकत्त, वधे वरदान वडाई।
व्यातो गढ़ वधनोर, मान मन हुवो सवाई॥
चहुं भाई चहुवाण, जेन वंस रूपक वड़ो।
राघां गजन वैरड़ो, खुरासाण ऊपर खड़ो॥ ७॥
तेरह सहस तुरंग, सकत्त वरदान समप्पै।
नाडूलो नाडूल, थान आसावर थप्पै॥
पाटण ऊली प्रोल, दाण चहुवाण उग्राहै।
पंच लक्ख पोहकरण, वरस वरसै निरवाहै॥
मेवाड़ मंडल डंड दै, प्रसरे पूरवही परै।
प्रियराय सीस लाखण तपै, जो आरंभे सो करै॥
अग लालण संपनो, पाट सोही परगट्टे।

सोनी रै महेन्द्र, जेण नाम हूणो मटे ॥
मंडल राम मद्रीक, सुतन आलण संभम्रो ।
आलण रै असराज, आण जिंदराव उपन्नो ॥
जिंदराव तणै कीत जिम्मा, जे लीधो जालोर जुद ।
कर न्यूं समां पूर्जन करो, न्येम क्रूग पूजंन जुद ॥ ९ ॥
सिरियाणो गिर सोन, जग छेकण दिन जीना ।
धीरनगाय दल, घंटै चेम्मान वर्जीना ॥
दहियावत हूडाण, मार न्याम मनावै ।
फर सह पल्न फटण, पढ्न नाडूल पजावै ॥
सुरताण नरल सामहा, आप प्राण अवरज्जियो ।
कीत पधार मल्लीक कुल, ग्रह पे घढ़े गरज्जियो ॥ १० ॥
निरनेन्न पनुवाह, सुनन ऊठिया पाद ।
सायनन्नी क महणन्नी, घंध धीजार पहाड़ ॥
धीजड़ तणे निराव, पान्च पान्च पाडन पर ।
पर्वती आगाक, आम गढ राजे अन्मर ॥
जसवन समर लूणा जिम्मा, लोहनद्ध लूंना लन्ना ।
इक पक तिग्द गढ ऊठियो, मार मार करता सुग्ना ॥ ११ ॥
अरबुद्दर पम्मार, कान्ह एका कायिनागर ।
सीर पत्र सदूदण, घेसहै कोटा ता सिर ॥
वीजड़ रा धर वध, वसे विन लोध विचालै ।
फाम तहे का करै, चक्र है काहू चाले ॥
माचं नहिं सेविहै न मन, पोहव प्रमाण प्रगट्टिया ।
देवड़ा दूठ देग्नादहण, आग साय कर ऊठिया ॥ १२ ॥
पंच वीन्न पावार, तेड़ जोना तिड़ तोडै ।
थाणा गूजर खंड, मुगल मडाहड़ मोडै ॥
लूणो सामो लोट, मुवो दलपत्तह मारे ।
तेजसीह अरबुद, सेस पीतिये वंधारे ॥
न आणधरा गिर पालटै, घणा विरद आवत घणा ।
सुरथान गया सरचै तिको, तपै तुंग वीजड़ तणा ॥ १३ ॥

तेजसीह पांवार, उभै चूकै आवट्टे।
दसमो ग्राह लुंभेण, पुत्रते सकल प्रगट्टे॥
सलख सूर संग्राम, लक्ख सुरताणां सल्ले।
सलख तणो रिणमल्ल, झूझ भर दूणो झल्ले॥
सराणिये वसै रिड्मल्ल, सुदड़ खंडाखंड आराड़ै।
चहुवाण जिकण ऊपर चढ़ै, घणनरिंद घोवे घड़ै॥ १४॥
अरबुद्द रिणमल्ल, अनै चीकल फाचोलै।
सोलंकियां सटाय, बोल हुय भारी घोलै॥
कटै कटक अरजक, निवद देवड़ो निहट्टे।
थोड़ो घिरद पगार, आव बीसर आदट्टे॥
पलखंड चंड भुव डंड लिड़, ते कारण थल खुंदिया।
चापड़े बीस चवदह चड़े, आरोयण आचट्टिया॥ १५॥
दल चोड़ो देवड़ाह, सहित थिकलत संघारे।
रहै टेक रजपूत, तेण रिणमल्लह मारे॥
तेण पाट सुरताण, थपै सोभ्रम थड़ाई।
सोभ्रम रै सहसमल्ल, सूरै कथ सवाई॥
चहुवाण देस ब्यारह चरै, पगढ़िन हल्ले पाधरै।
अर्बुद राव बल थापरै, जां आरंभै तां करै॥ १६॥
कुम्भकरण अरबुद, लियो सरणुवो सहेतो।
सहसमल्ल सुरताण, जाय अगवार पुहंतो॥
कर ऊपर कुतुबदी, इतो क्यूं येगो आवे।
गयो राण ओघाट, घाट परगह पाड़ावे॥
धीटेव तुरंग धाणे वढ़े, पनरैती पालट्टिया।
मछरीक सुकर मेवाड़रा, असंख सेर आहुट्टिया॥ १७॥
पग आणे धर प्राण, समर साहसमल मांगे।
तेणपाट लखधीर, मयंक उग्रे जगमागे॥
जेवालो तो सीह, नलां आकासह नांथै।
ओवासै ऊससै, ढाण कोटानूं धांथै॥
सिवपुरी वसै ग्रह सरणुवो, देसां ऊपरे

पतसाह सर सद सधार पिड, जे टंटोले गोवलां।
अखैराज साल हलन अंतरे उरे निमंधे पतलां ॥ २३ ॥
कोड़ प्रवाड़ा करे, सरग आवह संपतो।
रायसिंह तिण पाट, अरक वेधे ऊगंतो ॥
किरण झाळ झळहळे, शंम शंयर ओहासे।
सपतदीप सारीख, वदन उद्योत विकासे ॥
नयनेक छत्र छाया निजर, न अठारह पिलफले।
यह सिंह प्रतच्छे सिवपुरी, जोत पिंच जिम झळहळे ॥ २४ ॥
काय भोज विकम्म, काय रुद्र नाग अरजन्न।
काय राम बलराज, कायजु जैटल अर गंजन ॥
कन्न कहा हरचंद, फंज जुग हर कहंता।
काय समर दाधीच, काय जीवाहन जंता ॥
सुर्जसिंह सही सुजसिंह सत, पहन आरण आयरां।
यात न माने काय पर, किणी रुद्धि उलतो करां ॥ २५ ॥

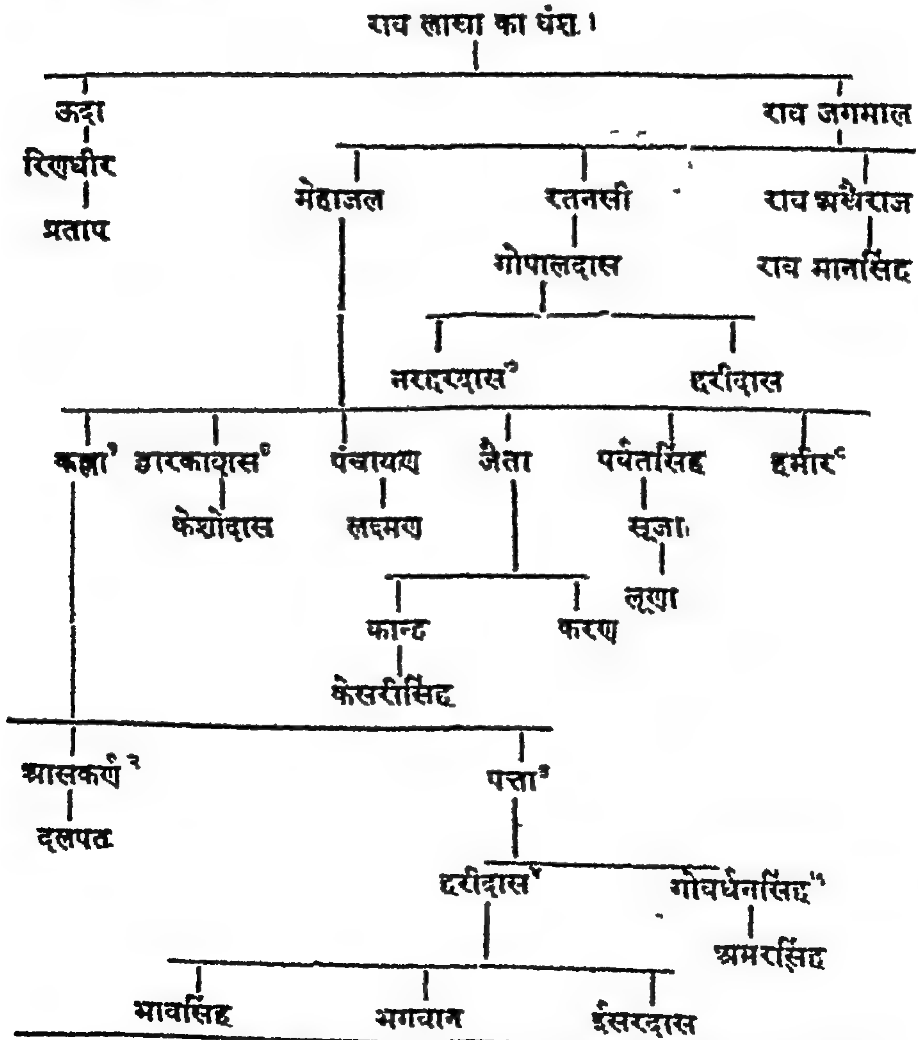
कवित्त राव रायसिंह सिरोहीवाले के, आसिया करमसी खींवसरोत के कहे हुए—

जै ऊपर रो तमर, सुतर चैहयार लहंतो।
जिण धूं आ ऊपरिय, फाड़ फड़यक फाडुंतो ॥
जिण समये सौवग्र, जेण धवरा बंधावे।
जिण सोभावे हाट, जेण लाणां लूटावे ॥
सुनिभारस संभार सदन, (घणां) रूपणां तणो पिरामियो।
कर भूपर कीरत करमसी, रायसिंह विसरामियो ॥
जहां अंब फल प्रच्छ, तहं निंब फल न पामासि।
जहां चीणी पकवान, तहां को कसरथ मानासि ॥
जहां जायसं जपे, तहां आदर नह पायस।
जहं उपाय सवद्योत, तहं योहतेरो वायस ॥
औषध दान देसी कवण, कवण नैणां विद्रोयिये।
हयरथ सरीर छूटो नहीं, रायसिंह अपरोयिदे॥
राव राय रखवाल, राव रहडण रिमराहां।

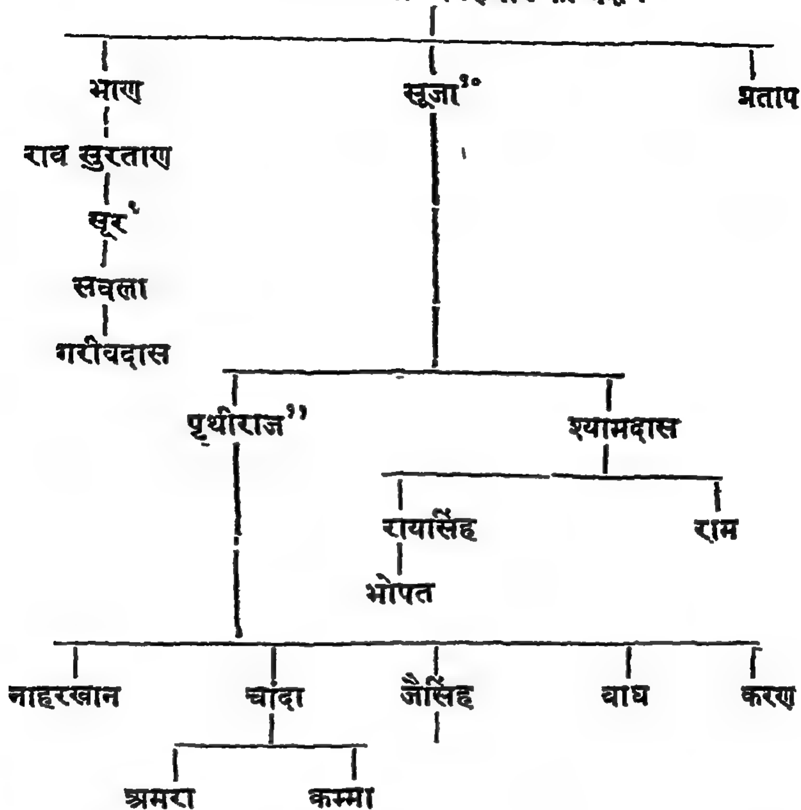
राव कुरूप रायह, राव वैरी पतसाहां ॥
राव रोर विड्डार, राव संसार उधारै ।
राव भ्रम्म उद्धरै, राव इक्कोतर तारै ॥
तण जास पास नय कुलतणी, सिवे भोर आचार हीं ।
अभिनमो क्रन्न दानेसवर, रायसिंह विवनोम कहि ॥
केहिज राव राखिया, भोम निगमी अमंता ।
केहिज राव राखिया, भयै खुरसाण पुलंता ॥
केहीज लोभ राखिया, तणै पतसाह उहकाले ।
केहिज रंक राखिया, महा रौरव, दुकाले ॥
रणखेत पिसण केहि राखिया, कन्ही काय कवि पात्रकहि ।
अभिनमो क्रन्न दानेसवर, रायसिंह विवनोम कहि ॥
कुण चारण कुण चंड, कवण वंभण वंभेसर ।
कुण जोगी कुण जती, कवण दरवेस दिगंवर ॥
कुण पंडित कुण पात्र, कवण पंथी परदेसी ।
जावै जौतलानट्ट, कवण नियभट्ट निवेसी ॥
रिण हुवो सीस दुहिला रहै, रुलियो नहं चूकै रिणं ।
हिंदवै राव विवनै हुवै, मोटो छै हो मांगणां ॥
कहिम मेर डोलहै, कहिम जलहल है सायर ।
कहिम चंद लुकि जहै, कहिम छहलहै दिवायर ॥
कहिम वीस ब्रह्मंड, गाट छेहै हेकागल ।
कहिम सक्क पाताल, चलेजा पहुंत अणच्चल ॥
खड़हले इंद्र कालंतरे, पड़ै रुद्र ब्रह्मा पड़ै ।
रूपक नाम रासिंघरो, तोहि जरा नहं आमड़ै ॥
वित सुमाग खरचियो, चित्त लीन्हों हर पाये ।
जिसो वेदे वांचियो, तिसो परलोक सिधाये ॥
सुरा पान नहं कियो, कदै परनार न रत्तो ।
सगला धरम सांचवे, परम दरगह सम्पत्तो ॥
आखंत ब्रद तूं बर अधिक, करै आरती अपछरै ।
कुम्भेण राव प्रभु आड़मल, जै जै कार उच्चरै ॥

सिरोही के महारावों का वंश—राव सोभा (शिवभाण) का पुत्र राव सहसमल और सहसमल का पुत्र राव लाखा था। राव लाखा के पीछे क्रमवार-उदा टीका नहीं हुआ, रिणधीर, भाण, सुरताण, राव राजसिंह (राणी) सीसोदणी के पेटका, राव अखैराज राणी वीरपुरी का (पुत्र), उदयसिंह, और उदय भाण सिरोही की गद्दी पर बैठे।

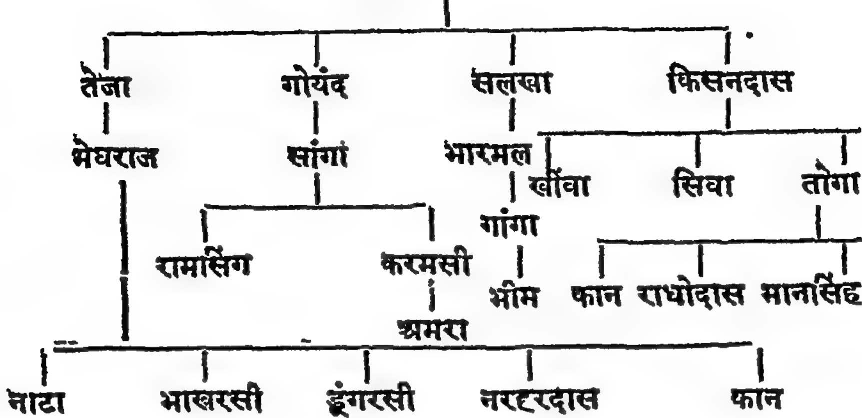
राव लाखा का वंश।



(१) एक वार राणा उदयसिंह ने सहायता करके [illegible] गद्दी पर विठा दिया था परन्तु डूंगरोत देवड़ों से उसका मनोमालिन्य होगया। फिर राव



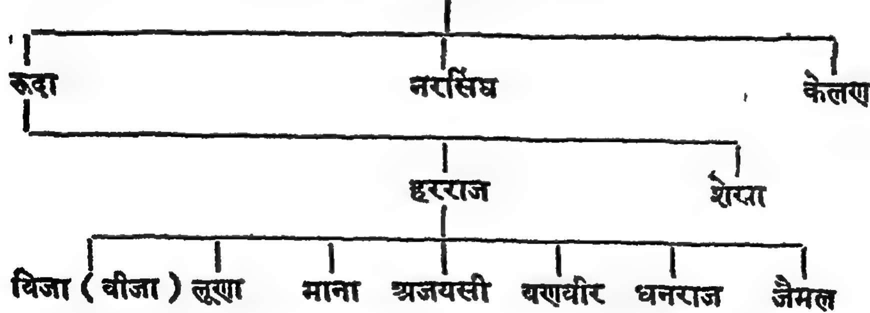
सुरताण से लड़ाई हुई। सं० १६४६ में मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) के पास नागोर जोधपुर जा रहा और भाद्राजण की जागीर पाई। सं० १६६१ में मरा। (२) जोधपुर रहता था। नवसरा गांव जागीर में था। (३) राणा के पक्ष में लड़कर मारा गया। (४) जोधपुर रहता था, भाद्राजण पट्टे में था। (५) कल्ला ने मारा। (६) सं० १६८० में जोधपुर था। गांव नवसरा पट्टे में था। (७) राव अखैराज ने चूक करके मारा। (८) राव जगमाल से आधा हिस्सा मांगता था इसलिये राव जगमाल ने उसे मारा। (९) जोधपुर रहा, गांव २५ से भाद्राजण पट्टे में था। सं० १६७५ में मरा। (१०) देवड़े बीजा ने सेखा के पुत्र रावत के हाथ से मरवाया। (११) सीरोही का बड़ा आसिया हुआ, सं० १६७५ में राव राजसिंह को [illegible] नीवा ने सं० १६८१ में पृथ्वीराज को मारा।



राव जगमाल के पुत्र राव अखैराज के दो पुत्र थे दूदा और राव रायसिंह। दूदा का पुत्र माना और राव रायसिंह का राव उदयसिंह हुआ।

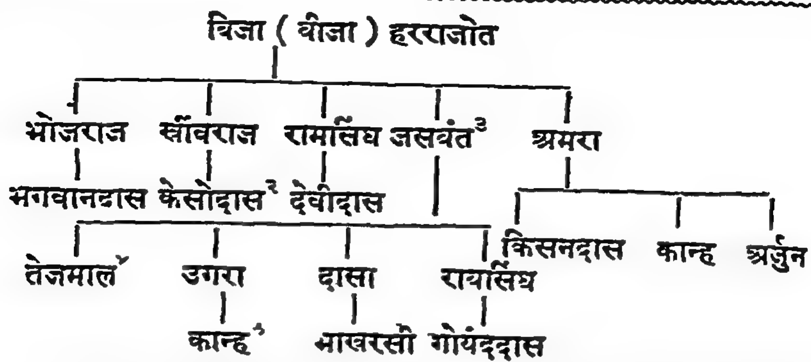
सिरोही के डूंगरोत[1] (देवड़ा) चौहानों का वंश वृत्त। *

बीजड़ के पुत्र राव लुंभा ने (आबू लिया)। लुंभा का पुत्र सलखा, सलखा का रिणमल, रिणमल का डूंगर, डूंगर का झांझा, झांझा का गज्जा, गज्जा का भींदा, भींदा का आल्हण और आल्हण का तेजसी हुआ।



(१) सिरोही के देश में डूंगरोत देवड़े बड़े राजपूत हैं। ये देश के रक्षक, और सदा सिरोही के स्वामियों को गद्दी पर स्थापित करने या अलग करने वाले रहे हैं।

* डूंगरोत देवड़ों के मूल पुरुष डूंगर को राव रणमल के दूसरे पुत्र, [illegible] और राव सोभा या शिवभाण का भाई बतलाते हैं।



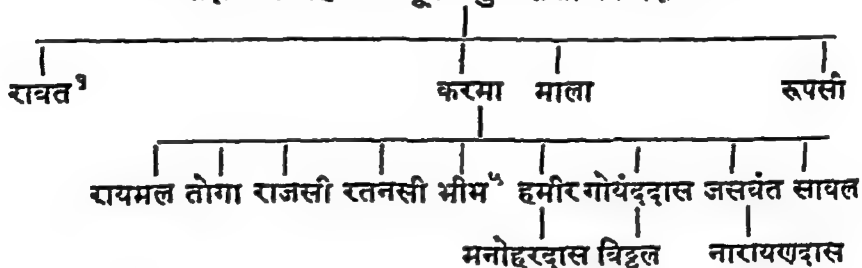
हरराज के दूसरे पुत्र लूणा का वंश—लूणा बड़ा रजपूत हुआ उसको राव सुरताण ने मारा। उसका पुत्र महेश, और महेश का बेटा भोपत था।

हरराज का बेटा माना भी अच्छा राजपूत था, उसको भी राव सुरताण ने मारा। माना का पुत्र सादूल राव राजसिंह के साथ मारा गया।

हरराज के बेटे अजयसी का पुत्र सुरताण जोधपुर में था, गांव समूझा उसके पट्टे में था। सुरताण का बेटा बाघ, और बाघ के दो बेटे, पीथा और उदयसिंह थे। उदयसिंह का बेटा करण।

हरराज के बेटे वणवीर के दो पुत्र—चांदा और रामदास थे।

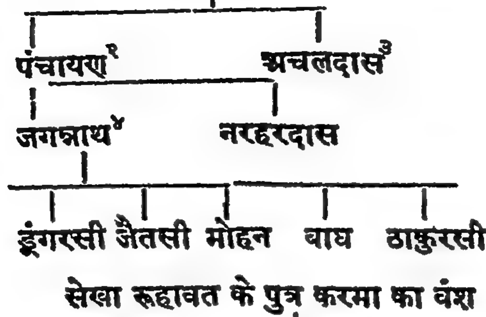
रूदा तेजसीहोत के दूसरे पुत्र सेखा का वंश।



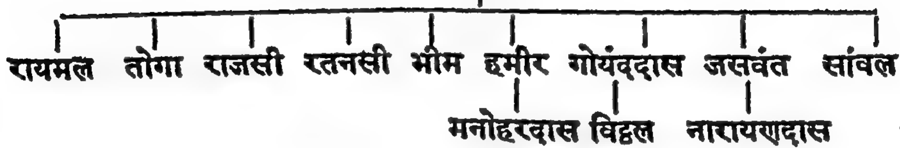
(२) राव राजसिंह के साथ मारा गया। (३) जोधपुर रहता था और गाव कुल्याणा पट्टे में था। (४) राव राजसिंह के साथ मारा गया। (५) जोधपुर में रहता था।

(१) बड़ा राजपूत था देवड़ा बीजा के पास रहता था। रावत ने बीजा के कहने से सूजा रिणधीरोत को मारा, पीछे सं० १६५८ में जोधपुर जा रहा, जहां उसे सिवाणे का गाव देवली वाली पट्टे में दिया गया। सं० १६६३ में मरा। (५) [illegible] की लड़ाई में मारा गया।

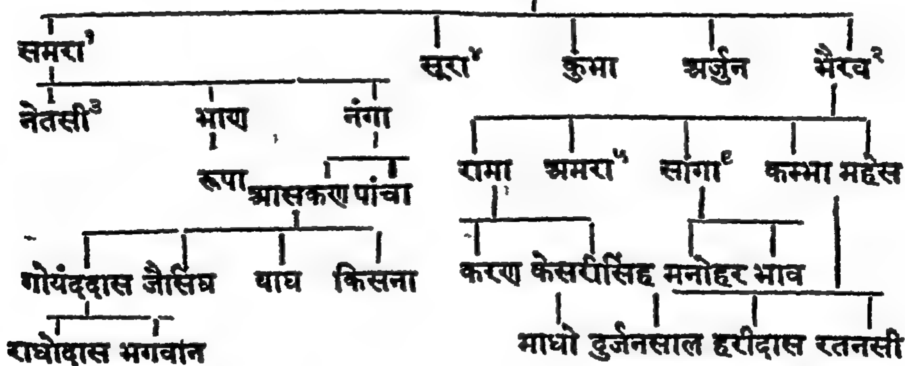
सेखा के पुत्र रावत का वंश।



सेखा रूहावत के पुत्र करमा का वंश

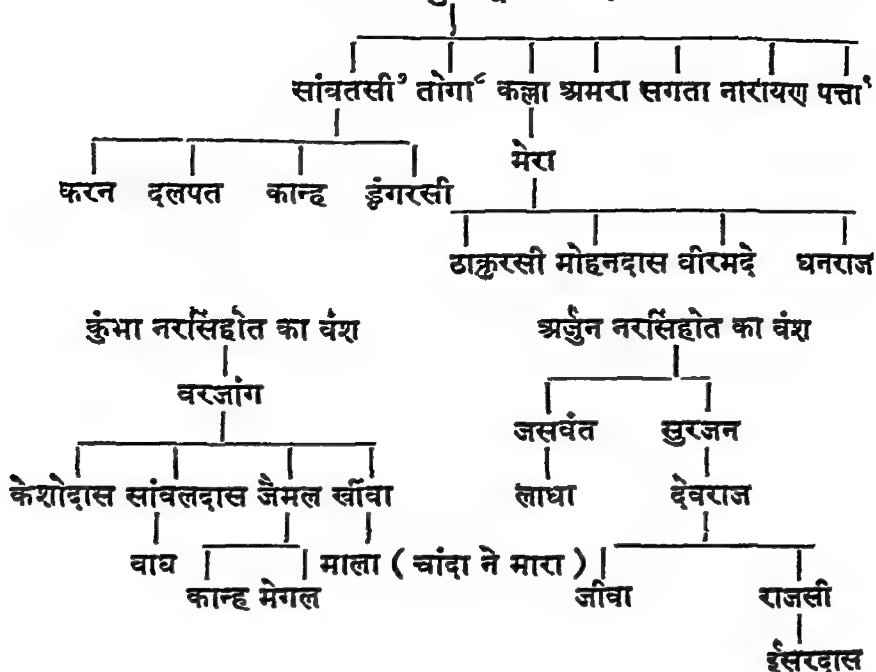


तेजसी के दूसरे पुत्र नरसिंह का वंश



(२) जोधपुर वास, गांव खडाला नीबली पट्टे में थे। (३) जोधपुर वास, गांव नवसरा रु० १००००) की रेख का, पट्टे में था। सं० १७०३ में काबुल में मरा। (४) जोधपुर वास, गांव नवसरा पट्टे. सं १७२१ चेत सुदी ७ को मरा।

(१) राव सुरताण ने राणा जगमाल व रायसिंह को दताणी के युद्ध में मारे तब सं० १६४० कार्तिक शुदि ११ को काम आया। (२) सं० १६७२ में देवड़े प्रथीराज ने मारा। (३) राजा जैसिंह के साथ काम आया। (४) बड़ा राजपूत था, कल्ला के साथ कालंधरी के मुक़ाम राव सुरताण की लड़ाई हुई तब सुरताण के पक्ष में मारा गया। (५) किसनबाई राठोड़ क... ... सं० १६४६



केलण तेजसी का इसके दो पुत्र देदा और पत्ता थे। देदा पालड़ी में रहता था, उसको रतना के पुत्र देवड़ा हामा ने मारा। पत्ता का बेटा उगरा था।

में मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) ने छल से मारा। (६) देवड़ा सूरा के साथ काम आया। (७) जोधपुर रहता था, गांव करमावस पट्टे में था। (८) (९) तोगा और पत्ता को मोटे राजा ने चूक करके मारे।

चीवा शाखा के देवड़े।

(मूल पुरुष) कीतू (जालौर का राव), इसके दो पुत्र समरसी और अभयसी। समरसी के पीछे (क्रमवार) १ मोहनसिंह, २ माला, ३ चीवा, ४ सांगण, ५ रणसिंह, ६ दल्लू, ७ सौभ्रम (शोभा), ८ बला, ९ स्यामसिंह, १० भारमल हुए। भारमल के बेटे खींवा और चीवा। खींवा का मेहरा, मेहरा का दूदा, दूदा का पुत्र उदयसिंह था।

कीतू के दूसरे पुत्र अभयसी के वंशज अभयसी देवड़ा कहलाये, ये बड़े राजपूत, ५०० आदमियों की जोड़ है। सुरताण अभयसीहोत राव मानसिंह के समय में बड़ा राजपूत हुआ था[1]।

गीत चीवा जैता का आढ़ा दुरसा का कहा हुआ। मोटे राजा उदयसिंह ने सूरा देवड़े के बेटे सत्ता, तोगा, और सांवतसी को चूक कर मारे तब चीवा काम आया था।

"सोभाहर तिलक सींचतो सावल, करतो खग दीती कर।
रिणरोहियो घणै राठोड़ै, चीवो एकल वाड़वर।
भांजे छड़ा बरड़के भाला, पड़े न पिंड देतो पसर।
ऐकल जैत सलख आहेड़ी, सकै न पाड़ै भड़ सिहर।
ऊपाड़िये तूठ आधतर, जण जण पूगो जुवो जुवो,
खीवर हाक लियो खीमावत, हौंकर भाड़ विहाड़ हुवो"॥

गीत—चीवा खींमा भारमलोत का, आसिया दल्ला का कहा हुआ जब कि खींवा राव कल्ला के साथ राव सुरताण के मुक़ाबले में काम आया था।

"विढरी असत विजो थोथियो वांसै, वाजै हाक थई विकराल।
चाला वालण हारज चूको, खत्रवट खाग वाहो खीमाल।
एकारम रव ऊपर आयो, लोह आवगो डूंगरां साथ।
मिटै न घणै नरे मोडाणां, भारमलोत सरस भाराथ"॥

(१) नैणसी ने चीवा को जालौर के राव समरसी का पौत्र और मोहनसिंह का पुत्र बतलाया और अभयसी को राव कीतू का बेटा होना लिखा है, परन्तु पंडित गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा रचित सिरोही के इतिहास में चीवा और अभा को जालौर के राव मानसिंह के पुत्र लिखे हैं। चीवा के वंशजों का सिरोही राज्य में एक [illegible] जामठा है, बाक़ी पालनपुर इलाके में चले गये हैं।

जालौर के सोनगरा चौहान ।

चौहानों की २४ शाखा में एक शाखा सोनगरा, जालौर (इसका दूसरा नाम सुवर्णगिरि या सोनगिर था उसी पर सोनगरे प्रसिद्ध हुए) के स्वामी थे। (ये नाडूल के चौहानों में से फंटे हैं) राव लाखण पर देवी आसा पूरी(आशा पूर्णा) प्रसन्न हुई और उसे नाडूल का राज दिया, तब राव ने देवी से प्रार्थना की कि मेरे पास घोड़े नहीं हैं । उत्तर दिया कि अमुक दिवस सोवत (सोहवत या कारवान) के घोड़े खुल कर आपसे यहां आवेंगे। तदनुसार तेरह हज़ार तुरंग टलकर नाडूल आये। घोड़ों के स्वामी सौदागर भी पीछे लगे हुए आन पहुंचे, परन्तु देवी ने सब घोड़ों का रंग बदल दिया तब सौदागर पीछे चले गये।

राव लाखण के पुत्र—वीसल, जिसके (वंशज) हाडोती में हैं, आसल, जिसने आसल कोट बसाया, जोजल, जोलावर बसाई, और जैतल जिसने जैतकोट बनवाया। फिर वलि, सोहित, महींद्रराव, आल्हण, और जिन्द‌राव (क्रमवार) नाडूल के स्वामी हुए। जिन्द राव (जयेन्द्र राव) के पीछे आसराव (अश्वराज) बड़ा ज़बर्दस्त राजा हुआ। एक बार वह नाडूल के पास शिकार खेलता था, वहां देवी उसको डराने लगी, परन्तु वह डरा नहीं और मृग के मारने को जो बाण धनुष पर चढ़ाया था उसको छोड़ा । तब देवी ने प्रसन्न होकर कहा कि मांग ! देवी का रूप देख कर आसराव मोहित होगया और विचारा कि यदि ऐसी सुंदर स्त्री मिले तो क्या बात है। प्रकट में देवी से कहा कि यदि तूं तूठी है तो यही मांगता हूं कि तूं मेरी भार्या बन कर मेरे पास रह। वचनबंध होने से देवी ने इस बात को स्वीकारा, परन्तु बोली कि यह मैं चिताये देती हूं कि यदि किसी पर मेरा भेद खुलगया तो मैं तुरन्त चली जाऊंगी। फिर वह उसके घर में आन बैठी। कहते हैं कि उस देवी के पेट से आसराव के च्यार पुत्र हुए—माणकराव, मोकल, आल्हण, · · · · । आल्हण का पुत्र केलण, और केलण का बेटा कीतू (कीर्तिपाल) था, वह बड़ा राजपूत हुआ। उस वक़्त जालौर में पंवार कुंतपाल राज करता था और सिवाने में पंवार वीर नारायण। कुं[illegible]ल के प्रधान दहिया राजपूत की मिलावट से कीतू ने जालौर और सिवाना [illegible]

राव कीतू के पीछे उसका पुत्र रावल समरसी जालौर पाट बैठा। समरसी का अरिसिंह, और अरसी का उदयसिंह, रावल हुआ। सं० १२६८ माघ शुदि ५ को सुलतान जलालुद्दीन (फीरोज़ खिलजी) ने जालौर पर चढ़ाई की, और हार खाकर भागा। उसकी साखी का दोहा-"सुंदर सुर असुरह दले, जल पीयो चवणेह, ऊदै नरपत काढियो तसनारी नयणेह"।

जसवीर उदयसिंह का, करमसी जसवीर का, रावल चाचगदे करमसी का जिसने सूंधा के पहाड़ पर चावंडाजी का मंदिर सं० १३१२ में बनवाया। सामन्तसिंह (दूसरा) रावल चाचगदे का टीकेत, और चाहडदे व चंद्र दो पुत्र दूसरे थे। रावल सामंतसिंह का पुत्र रावल कान्हड़देव था, जो दशमा शालिग्राम और गोकुलनाथ भी कहलाया। सं० १३६८ में जलौर के गढ़ के नीचे अलोप हुआ। उसका पुत्र, कुंवरों का गुरु, वीरमदेव अपने पिता के पीछे तीन दिन तक बादशाही सेना से लड़कर काम आया। रावल कान्हड़देव के भाई मूंछाळे मालदेव ने, जो सामन्तसिंह का दूसरा पुत्र था और जिसको कान्हड़देव ने अपना वंश बना रखने के वास्ते गढ़ से नीचे भेज दिया था, फिर तुर्कों की फौज का बहुत बिगाड़ किया। सिवाने का खान उसके पीछे लगा, मालदेव देवी सेणी चारणी के साथ हिंगी गया। जब देवी एक गुफा में घुसी तो मालदेव भी उसके साथ लगा चला गया। आगे बहुली (वेहरी) नामकी जोगिनी बैठी थी जिसने अपने गले का जड़ाऊ हार मालदेव को दिया, और रुधिर भरा एक पात्र भी उसके सामने रक्खा। मालदेव ने उसको (ग्लानिवश) पिया नहीं यह अमृत था, उसने थोड़ासा मुख से लगा कर रख दिया। उसमें से कुछ रुधिर उसकी मूछों से छूगया जिससे मूंछें बहुत बढ़गई और इसी कारण मूंछाळा कहलाया। फिर कान्हड़देव की आज्ञा पाकर बादशाह से मिला, बादशाह के ऊपर बिजली गिरी थी जिसको मालदेव ने तलवार के झटके से टालदी। इस सेवा से प्रसन्न होकर बादशाह ने चित्तोड़ का गढ़ मालदेव को दिया। सात वर्ष तक गढ़ उसके अधिकार में रहा फिर वह काल प्राप्त हुआ[1] उसके तीन बेटे थे जैसा, कीर्तिपाल और वणवीर। जैसा

(१) चित्तोड़गढ़ विजय कर पहले तो सुलतान (अलाउद्दीन खिलजी) ने अपने शाहज़ादे खिजरखां को दिया था परन्तु जब उससे वहां का प्रबन्ध न हो सका तब बादशाह ने राव मालदेव को वहां का हाकिम मुकर्रर किया।

का पुत्र धरणीधर (रणधीर), धरणीधर के केलण और राजधर। राजधर के पुत्र डूंगर, नींबा और राघव और जैसा। जैसा के कान्ह, बींजा, देवा, रायमल, मेह मालमल, गंगा और नरा नामी पुत्र हुए। ? सींवा, दूदा, दूजा। राजधर राठौड़ों का सं० १४८? में राव रणमल (राठौड़) से युद्ध कर मारा गया। इसी रणधीर के अड़कमल, नाथू, हरराज नामी और बेटे भी थे। रणधीर का पुत्र केलण और केलण का बेटा करमचन्द बड़ा दातार हुआ, सं० १४९६ में राव रणमल के मुकाबले में काम आया। करमचंद के बेटे सामन्त, उदयसिंह, खेतारचंद और नेता थे। वणवीर भाटीदेवोत का बेटा राणा बड़ा वीर राजपूत था जिसको वीरमदेव (कान्हड़देव का पुत्र) बादशाह के पास ओल में रख आया था जब वीरमदेव अपने करार के मुवाफिक बादशाही हजूर में न पहुंचा तो बादशाह ने अपने दीवान तोगा को कहा कि राणा को बेड़ी पहना! यह सुनते ही राणा ने भरे दरबार तोगा को कटार से मार दिया और आप लाखा नामी घोड़े पर सवार होकर कुशलता पूर्वक जालौर पहुंच गया।

राणा का बेटा लोला हुआ। जब राव रणमल (राठौड़) नाडूल रहता था तब उसका विवाह नाडूल में किसी सोनगरे राजपूत की कन्या के साथ हुआ था। सोनगरों ने राव को चूक कर मारने का विचार किया तब उसकी रानी सोनगरी ने उसको स्त्री का वेष पहना कर निकाल दिया। राव ने फिर नाडूल में १४० सोनगरों को मारकर कुए में डलवा दिये, और इसी शत्रुता को लिए हुए जहां किसी सोनगरे को पाया उसको वहीं ठिकाने लगाया। एक राणा का बेटा लोला अपने नाना भाटियों के घर होने से बच रहा था। जब भाटियों के साथ राव रणमल की शत्रुता मिटी तो राव उनके यहां जेसलमेर ब्याहने को गया। एक दिन जेसलमेर का रावल और राव रणमल दोनों शिकार खेलने गये तब लोला भी रावल के साथ था और उस वक्त उसकी उमर केवल १२ वर्ष की थी। जंगल में सिंह निकला, जिसके डर से दूसरे लोग तो भाग गये परन्तु लोला ने अपना घोड़ा भाला इस ढब से फुर्ती के साथ सिंह के मारा कि उसके च्यार दांत तोड़ कर बर्छी गुद्दी के पार निकल गई। यह देख कर राव रणमल बोला कि यह तो कोई सोनगरा होवे जैसा दीखता है। रावल ने उत्तर दिया कि दूसरे तो सब सोनगरों को तुमने मार डाला, एक यही बालक अपने नाना के आश्रय से बचा है। जब राव रणमल जेसलमेर से विदा हुआ तब लोला को रावल ने

पास से मांग कर अपने साथ ले आया। राव जोधा की कन्या (राव रणमल्ल की पोती) सुन्दरबाई के साथ उसका विवाह कर दिया और सिंधल भींवावत से पाली का (क़स्बा) लेकर लोला को पट्टे में दिया। तब से सोनगरे जोधपुर के चाकर हुए और वहां के राजाओं के बड़े बड़े काम किये[1]।

लोला का पुत्र सत्ता, सत्ता का खींवा, खींवा का रिणधीर, और रिणधीर का अखैराज हुआ। यह बड़ा दातार जूझार और बांका राजपुत्र था, उसके जैसे रजपूत थोड़े ही हुए होंगे। सं० १६०० के पोष महीने में जब बादशाह (शेरशाह सूर) का समेल गांव में राव मालदेव (राठोड़) के साथ युद्ध हुआ तब अखैराज बादशाही सेना के मुक़ाबले में बड़ी वीरता के साथ काम आया। राव मालदेव का दिया हुआ पाली का परगना उसकी जागीर में था। अखैराज की कन्या का विवाह राणा उदयसिंह के साथ हुआ था। एकबार बणवीर ने राणा को बहुत दबा लिया तब राणा ने अपनी सहायता के वास्ते अखैराज को बुलाया। राठोड़ कूंपा मेहराजोत, भदा, कान्हा, खींवा, जैसा भैरवदासोत आदि मारवाड़ के कई सरदारों को साथ लेकर अखैराज पहुंचा। गांव माहोली में बणवीर से युद्ध हुआ, अखैराज जीता और राणा उदयसिंह को कुंभलमेर पर पाट बिठाया।

अलाउद्दीन (खिलजी) बादशाह ने गुजरात पर चढ़ाई कर वहां की बहुतसी प्रजा को मारा; सोरठ में देव पट्टन में सोमइया (सोमनाथ) महादेव के ज्योतिर्लिङ्ग को उठा कर गीले चमड़े में बांधा और गाड़ी में पटक कर लेजाने लगा, परन्तु लिङ्ग स्थान से न हटा। बादशाह आरम्भराम (जो विचारे उसको

(१) एपिग्राफिया इण्डिका जिल्द ११ के पृष्ठ ७६–७७ मे सोनगरा रिणधीर वणवीरोत का एक लेख सं० १४४३ का छपा है, वहां दी हुई वंशावली भी ख्यात से मिलती है "वणवीर सं० १३६४ वि०, उसके दो बेटे रिणधवल सं० १४४३ वि० और राणा। रिणधवल के राजधर और केल्हण। राजधर के खींवा और दूदा, और केल्हण के करमचंद; करमचंद के पुत्र सावन्त और जयसिंह"। "राणा का बेटा लोला; लोला का सत्ता; सत्ता का खींवा; खींवा का रणधीर; रणधीर का अखैराज सं० १६०० वि०। अखैराज के भोज व मानसिंह। भोज के सिंध और मान के जसवन्त, जो भटनेर में भाटी की कन्या ब्याहने [illegible]आ, उसी समय भटनेर को तुर्कों ने घेरा व जसवन्त लड़ाई में मारा गया"।

पूर्ण करने वाला) था, उसने हठ पकड़ी, गाड़ी में पांचसौ बैल जोड़ी की बेल लगाकर जोती। महादेव के लिंग में से अग्नि की ज्वाला निकलने लगी, तब पांचसौ सक्के (भिश्ती) उस पर जल छांटने को नियत कर दिये। बैल जुतते जाते और मरते जाते थे। महादेव बहुत करामाती थे परन्तु देवों ऊपर के दानव के आगे करामात चली नहीं। इस प्रकार बड़ी कठिनता से गाड़ी एक कोस रोज़ चलती थी। उसको लिये हुए बादशाह जालौर के गांव सकराणे आया, महादेव की आपत्ति की सब बात राव कान्हड़देव के कर्णगोचर हुई।

कहते हैं कि कोई तपस्वी ब्राह्मण गंगाजी के सौरों घाट से गंगोदक की एक कावड़ भर कर प्रतिवर्ष सोमनाथ महादेव पर जा चढ़ाता था। इस तरह छः कावड़ उस ब्राह्मण ने चढ़ाई, सातवीं बार गंगोदक लिये आता था, संध्या समय किसी नगर में बटाऊ की भांति एक घर के बाहर चबूतरे पर रात भर विश्राम लेने को ठहरा। उस घर के स्वामी की स्त्री की किसी पर पुरुष से प्रीति थी और वह सदा उसके पास जाती थी। उस स्त्री का पति कहीं बाहर गया हुआ था वह भी उसी दिन अपने घर आया, जिस दिन वह ब्राह्मण वहां जाकर उतरा था। पति के आने के कारण वह स्त्री अपने जार के पास कुछ देर से पहुंच सकी, इसलिये जारने उस पर क्रोध किया और पास न आने दी। स्त्री ने कहा कि आज मेरा पति घर आया था इसलिये कुछ विलम्ब होगया, तब जार बोला कि जो तुझे अपना पति इतना प्यारा है तो यहां काहे को आती है? जा अपने घर चली जा! वह कहने लगी कि किसी भांति तुम मुझे अपने पास आने भी दो? तो जार कहता है कि यदि तू अपने पति का सिर काट लावे तो मेरे घर में घुसने दूं। व्यभिचारिणी बोली मुझे कोई शस्त्र दो तो सिर काट लाऊं। तब उस पुरुष ने अपना एक बड़ा छुरा उसको दिया, वह लेकर चली, और नींद में अचेत सोते हुए अपने पति का मस्तक काट कर अपने जार के पास ले आई। कटा हुआ मस्तक देख कर वह जार पुरुष बोला कि "फिट् रंडा! तेरा काला मुंह, मैं तो तेरा मन लेता था, तूने सचमुच सिर काट ही लिया, अब तू मेरे काम की नहीं।" ऐसा कहकर उस रांड को निकाल दी। वह पीछी अपने घर आई, चबूतरे पर ब्राह्मण सोया हुआ था उसके वस्त्रों में छुरा धर दिया और रुधिर के छींटे भी उस पर डाल दिये. फिर घर में आकर चिल्लाने लगी कि मेरे पति को मार कर चोर जाते हैं। लोग शोर सुनकर इधर उधर से दौड़े

आये, और राज के चौकीदार आदि भी आन पहुंचे। खोज देखने लगे। चौकीदार देखता भालता उस कावड़िये ब्राह्मण के निकट गया। वह तो निश्चिन्त सोया हुआ था; उसके वस्त्रों पर लोहू के छींटे देखकर उसे पकड़ा, तलाशी ली तो बिछौने में से छुरा भी निकल आया। तब तो पूरा प्रमाण मिलगया, बन्दी बनाकर उसे लेचले, और कोतवाल ने सारा वृत्तान्त राजा से निवेदन किया और आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। हुक्म हुआ कि इसके दोनों हाथ काट डाले जावें। न तो उस ब्राह्मण से कुछ पूछा, और न उसने कुछ कहा, हाथ काट डाले गये। जब कुछ आराम पड़ा तो वह अपनी कावड़ कंधे पर धर चलता हुआ, परन्तु महादेव पर उसको बड़ा ही क्रोध आया, मन ही मन कहने लगा कि मैंने ऐसी सेवा की जिसका फल मुझे शङ्कर ने यह दिया। मैं भी अबकी वार कावड़ चढ़ाने के बहाने से मंदिर में जाकर एक बड़ा सा पत्थर लिंग पर पटक उसे तोड़ डालूंगा। ऐसे विचारता हुआ जब वह देवालय के निकट पहुंचा तो सोमनाथ ने पुजारी को कहदिया कि अमुक ब्राह्मण क्रोध में भरा हुआ आता है सो उसे भीतर मत घुसने देना। इतने में तो ब्राह्मण आन पहुंचा। पुजारी ने भीतर न घुसने दिया। ब्राह्मण कहने लगा तुम जाकर महादेव से पूछो कि तुम्हारी इतनी सेवा करते हुए भी तुमने मेरे हाथ क्यों कटवाये। महादेव ने पीछा कहलाया कि पूर्व जन्म में तू राजपूत था, और जिसका कण्ठ काटा गया वह भी राजपूत था। तुम दोनों मित्र थे। एक दिन तुम दोनों ने मिलकर एक बकरी को मारा, तूने तो दोनों हाथों से उसके कान पकड़े और उसने उसके गले पर छुरी चलाई। बकरी मर कर वह स्त्री हुई, और तेरा मित्र उसका पति। स्त्री ने अपने पूर्व जन्म का वैर पति का सिर काटकर लिया; और क्योंकि तूने उस बकरी के कान पकड़े थे इस अपराध में तेरे दोनों हाथ काटे गये। अब इस में मेरा क्या दोष है।

इतना होने पर भी ब्राह्मण का कोप महादेव पर कम न हुआ, वह काशी गया और वहां गंगा स्नान कर करवत लेने को तय्यार हुआ। करवत देने वाले ने पूछा कि तूं क्या चाहता है सो कह। ब्राह्मण ने प्रश्न किया कि क्या यहां मांगा हुआ आगे मिल जाता है? उत्तर मिला कि मिलजाता है। तब तो ब्राह्मण ने कहा कि "मैं अगले जन्म में सोमइया महादेव के लिङ्ग को उखा[illegible]र गीले चमड़े में बांधने वाला होऊं।" यह सुनकर पास खड़े हुए लोग कहने लगे कि धिक्कार

है तुझको, काशी में करोत लेता और ऐसा क्या मागता है, विचार के मांग। तब फिर ब्राह्मण बोला कि " मेरा आधा धड़ तो महादेव को बांधने वाला हो जैसा कि मैंने पहले कहा है और आधा उनके बंधन छुड़ाने वाला हो।" यह कह कर करवत ली सो कामनानुसार आधे धड़ से तो अलाउद्दीन बादशाह का और आधे धड़ से राव कान्हड़देव का अवतार हुआ।

बादशाह (अलाउद्दीन) का डेरा जालौर के गाव सकराणे हुआ, जो जालौर से ६ कोस है। रावल कान्हड़देव ने सुना कि बादशाह सोमइया महादेव को बाध कर लाया है तब उसने काधल ओलेचा और दूसरे ४ अच्छे राजपूतों को बादशाह के पास भेजे और कहलाया कि " इतने हिन्दुओं को मारे और क़ैद किये और महादेव को बांधकर लाये, मेरे गढ़ के नीचे मेरे ही गांव मे ठहरे, यह आपने अच्छा न किया। क्या आपने मुझको राजपूत ही नहीं समझा ? रावल के राजपूत शाही लश्कर में पहुंचे और बादशाह के वज़ीर सिहपातला के, जो उसका भाञ्जा भी था, डेरे के पास डेरा किया। उससे मिले और रावल कान्हड़देव का सन्देशा सुनाया। वजीर बोला कि बादशाह ने राव का क्या विगाड़ा है जो वह ऐसी अर्ज़ हजूर में कराता है, ऐसी बात कहलाना उसको मुनासिब नहीं है। काधल बोला यह तो कान्हड़देजी जाने, तुम तो निश्चिंत अर्ज़ करो। काधल और दूसरे राजपूतों को देखकर वज़ीर बहुत खुश हुआ, बादशाह के हजूर में जाकर कान्हड़देव का सन्देशा अर्ज़ किया और साथ ही यह भी कहा कि उसका राजपूत कांधल देखने के योग्य है। हुक्म हुआ कि हाज़िर कर! तब सिहपातले ने अर्ज़ की कि ये लोग अनाड़ी होते हैं, राव कान्हड़देव के सिवा किसी दूसरे के आगे सिर नहीं झुकाते और अजब नहीं कि कोई अपराध कर बैठे, इसलिये जो हज़रत उनका क़सूर माफ फर्मा देवें तो हाजिर करूं। ऐसा कह बादशाह का वचन लेकर वज़ीर कांधल को हजूर में लेगया और एक तर्फ खड़ा कर दिया। बादशाह ने फर्माया कि कान्हड़देव तो उलटा हमको आंखें बताता है, हमारा यह नियम है कि मार्ग में कोई गढ़ आजावे तो उसको लिये बिना आगे न बढ़ें। हमतो चले जाते थे मगर क्योंकि कान्हड़देव ने ऐसी अर्ज़ कराई है तो अब जालौर फतह करने के बिदून आगे न जावेंगे। इतने में एक चील उड़ती हुई, बादशाह जहां बैठा था, वहां ऊपर को आई। बादशाह ने उस पर तुक्का चलाया, जिसकी चोट से चील

मरकर गिरने लगी, तब पास खड़े हुए तीरंदाज़ों को हुकम हुआ कि गिरने न पावे। उन्होंने ऐसे तीर मारने शुरू किये कि वह चील नीचे न गिर सकी। तब कांधल ने क्रोध कर मनमें विचारा कि यह तीरंदाज़ी मुझको दिखलाने के वास्ते कराई गई है। उसी वक़्त एक बड़ा भैंसा जिसके सींग उसकी पूंछ तक पहुंचते थे, और ऊपर पानी से भरी पखाल लदी थी, कांधल के पास से निकला। इसने तलवार खोल कर उस भैंसे पर ऐसा झटका किया कि जिससे उसके सींग कट, पखाल को चीरती और भैंसे के दो टुकड़े करती हुई उसकी तलवार पृथ्वी पर जाकर लगी। इसी अवसर में वह चील भी नीचे गिरी और भैंसे के रुधिर व पखाल के पानी में बह गई। कांधल ने मनमें कहा शकुन तो अच्छे हैं, बादशाही सेना भी हमारे सन्मुख इसी तरह बह जावेगी। यह देख तीरंदाज़ों ने कमान की मूठ कांधल की तर्फ़ की, तब सीहपातले ने बीच में पड़ कर अर्ज़ की कि मैंने तो पहले ही हज़रत में मालूम कर दिया था। बादशाह ने तीरंदाज़ों को रोक दिया। कांधल बाहर आया, जहां गाड़ी में महादेव लदे हुए थे वहां गया, दर्शन किये और बोला कि "जल पिये बिना तो रह नहीं सकते परन्तु अन्न तो जब ही खावेंगे जब आप को छुड़ा लेंगे।" फिर गढ़ की तरफ चला। आगे उसको बादशाही उमरा मंमूशाह (मुहम्मद) मीरगाभरू मिले जिनका भाई किसी हरम के मामले में पकड़ा गया था। यह क़िस्सा बहुत लंबा चौड़ा है। वे लोग पचीस हज़ार सवार के स्वामी, उदास होकर बैठे थे। उन्होंने कान्हड़देव व कांधल की बात सुनी और उसको आता देख कर उससे मिले और कहा कि हम भी तुमारे शामिल हैं तुम्हारे काम आवेंगे। क़ौल वचन हुए, कहा हम रात को छापा मारेंगे। एक तरफ से हम आवेंगे और दूसरी तरफ से तुम आना। कांधल कान्हड़देव के पास आया और सब वृतान्त सुनाया। तीसरे दिन अपनी सारी सेना को इकट्ठी करके रावल ने रात को बादशाही लश्कर पर छापा मारा, मंमूशाह व मीरगाभरू भी दूसरी तर्फ़ से आन पहुंचे, बादशाह के बहुत आदमी मारे गये, और बादशाह किसी ढब से बच कर भाग गया। कान्हड़देव के राजपूतों ने भागते हुए तुर्कों का पीछा किया और बहुतों को मारे। फिर सोमइया महादेव के पास जाकर कान्हड़देव ने पीठ में हाथ दे उसे उठाया और उस लिंग को मकराणे (गांव) में स्थापन किया और

वहां मंदिर बनवाया। रावल कान्हड़देव ने हिन्दुस्थान की बड़ी मर्यादा बनी रक्खी[1]।

मम्मूशाह और मीरगभरू कान्हड़देव के पास आन रहे और उनको बड़ा रोज़ीना कर दिया गया, परन्तु वे तो बादशाही के रहने वाले थे सो नित गौवें मारने लगे। हिन्दुओं को यह बात बहुत बुरी लगी। रावल ने कहा कि इनको किसी ढब से यहां से विदा करने चाहिये, तब किसी ने कहा कि इनके पास सुन्दर पतुरिया (वेश्याएं) हैं उनको मंगवाओ, ये देवेंगे नहीं और आप ही चले जावेंगे। रावल ने अपने दो मनुष्यों को भेजकर पतुरिया मंगवाईं। उन्होंने कहा कि महादेव का मंदिर सम्पूर्ण होने पर हम आप ही चले जाते, परन्तु रावलजी ने हमारी पतुरिया मंगवाईं इससे जान पड़ता है कि वे हमको विदा करना चाहते हैं। तब वे वहां से रुख़सत होकर राजा हमीरदेव चौहान के पास जारहे। हमीर ने उनका बहुत आदर किया। जब बादशाह अलाउद्दीन हमीर पर चढ़ आया और गढ़ (रणथम्भोर) को घेरा तो सं० १३४२ श्रावण वदि ४ को हमीरदेव बादशाह से युद्ध कर काम आया[1]।

---

(१) फ़ारसी तवारीख़ों से भी यह लड़ाई होना पाया जाता है, परन्तु बादशाह उसमें शरीक न था। फ़िरिश्ता लिखता है कि स० ७०४ हि० स० १३०४ ई० स० १३६१ वि० में जब बादशाह अलाउद्दीन के सेनापति अलफ़ख़ाँ व नुसरतख़ाँ मालवा व गुजरात फ़तह करके जालौर पहुंचे तो यहां के राजा नैहरदेव (कान्हड़देव) ने मुक़ाबला किये बिना ही गढ़ उनके सुपुर्द कर दिया। फ़िरिश्ता का यह लेख विश्वास करने योग्य नहीं है क्योंकि जो कान्हड़देव ऐसा भय खाता तो इसी तवारीख़ के मुताबिक़ दूसरी बार खुद बादशाह को ऐसा कब कह सकता था कि "मैं आपकी फ़ौज से लड़ सकता हूं।"

(१) रणथम्भोर के चौहान महाराजा पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज के वंश में थे। हमीर महाकाव्य में उसे पृथ्वीराज का पौत्र लिखा है। सम्भव है कि फ़ारसी तवारीख़ों का गोलाराय और गोविन्दराज एकही हों। इस गोविन्दराज को सुलतान कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर का राजा बना दिया था। परन्तु पृथ्वीराज के भाई हरीराज ने उसको वहां से निकाल दिया और वह रणथम्भोर चला गया। गोविन्दराज के पीछे उसका पुत्र वाल्हण देव राज पर आया। वाल्हण के दो पुत्र थे प्रल्हाददेव, और वाग्भट्ट (वाहड़देव)। प्रल्हाद को शिकार में सिंह ने जख़मी किया जिससे वह मरगया। उसका पुत्र वीर नारायण बालक था इसलिये वाहड़देव राजकाज करने लगा। सयाना होने पर वीर नारायण की काका से न बनी, वाहड़[illegible] मालवे की तरफ़ चला गया, सुलतान शमशुद्दीन अलतिमश ने रणथम्भोर छीन लिया था परन्तु उसके मरते ही चौहानों ने पीछा वहां अधिकार कर लिया। पीछे

बादशाह अलाउद्दीन की सेवा में पञ्जू नाम का एक पायक (हक्का) रहता था वह किसी कारण से बादशाही सेवा छोड़ रावल कान्हड़देव के पास एक बार आरहा था। उसने रावल के पुत्र वीरमदेव को विछोट की विद्या सिखलाई थी। कुछ समय बीतने पर बादशाह ने पंजू को पीछा बुला लिया। एकबार बादशाह ने उसको फर्माया कि आज हिंदुस्थान में कोई ऐसा है जो तुझ से बाज़ी लेजावे, क्योंकि पञ्जू ने बादशाह के अन्य सब पायकों को परास्त कर दिये थे। उसने अर्ज़ की कि ईश्वर की सृष्टि बड़ी है, उसमें किसी बात की कमी नहीं है, इस पृथ्वी पर बहुत से ऐसे होंगे जिनको मैंने देखे नहीं, परन्तु जालौर के रावल कान्हड़देव का पुत्र वीरमदेव, जो मेरे पास ही सीखा है, मेरे समान खेलने वाला है। बादशाह ने रावल को लिखा कि वीरमदेव को तुरन्त हमारे पास भेजदो। अहदी फर्मान लेकर जालौर आया तब कान्हड़देव ने अपने भाई बेटों को बुलाकर सलाह की कि क्या करना चाहिये। सब ने यही कहा कि हमने बादशाह को खिजाया है, दिल्लीश्वर ईश्वर और आरम्भराम है जो चाहे सो करे। यदि वह अपना अगला अपराध क्षमा करता है और कृपा के साथ कुंवर को बुलाता है तो भेज देना चाहिये। तब रावल ने बड़ी तय्यारी के साथ वीरमदेव को हजूर में भेजा। कुंवर ने दिल्ली पहुंच कर मुजरा किया, बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। दस पांच दिन बिताकर वीरम को कहलाया कि एक बार पंजू के साथ खेल! हम देखना चाहते हैं। वीरम ने अर्ज़ कराई कि हमारा यह काम नहीं है, परन्तु जो हज़रत की यही मर्ज़ी है तो कहीं एकान्त में जहां बादशाह चाहें, मैं उसके साथ खेलूंगा। बादशाह ने अपनी ख़ासा बैठक में जगह तय्यार करवाई, हरमसरा की बेगमें भी चिकों की ओट में देखने को आई, और वहां दोनों

रज़िया बेगम ने भी वहां सेना भेजी थी, वीर नारायण के पीछे वाहड़देव मालिक हुआ तब सुलतान जलालुद्दीन फीरोजखिलजी ने स० १२९१ ई० में रणथम्भोर पर चढाई की और दो बार अलगखा ने भी घेरा दिया परन्तु उन्हें शिकस्त खाकर हटना पड़ा। वाहड़देव के पीछे उसका पुत्र जैत्रसिंह गद्दी बैठा। इसके तीन पुत्र थे सुरतान, हमीर और वीरम। हमीर को राज देकर जैत्रसिंह तप करने चला गया, अलाउद्दीन के अपराधी को हमीर ने शरण दी जिसपर सुलतान खुद चढ़ आया। हमीर ने शरणागत को न दिया, एक साल तक बादशाह गढ़ घेरे पड़ा रहा, अन्त में स० १३५६ वि० में गढ़ फतह हुआ और हमीर [illegible] गया। हमीर के मृत्यु कालमें ख्यात और फारसी तवारीखों में ७ वर्ष का अन्तर है।

आदमी खेल दिखलाने को बुलाये गये। एक दो वार तो पंजू और वीरम बरावर उतरे, वादशाह वहुत ही राजी हुआ। दोनों बराबरी के खिलाड़ी थे और कुंवर ने उसी से (पंजू से) सीखा था, परन्तु जब पंजू पीछा बादशाही चाकरी में चला गया तब कोई कर्णाटक के पायक जालौर आये थे, उनके पास से वीरमदेव ने एक नई कला यह सीखी थी कि पाव के अंगूठे से उस्तरा बाध कर उलटी गुलाच खाना और उस्तरे की चोट दूसरे खिलाड़ी के ललाट पर पहुंचाना। तीसरी बार वीरम ने वह कलाबाजी की और पंजू को उस्तरे की हलकीसी चोट पहुंचाई। इससे वीरम जीता। बादशाह बहुत ही प्रसन्न हुआ, बेगमें भी खुश होगई, और बादशाह की एक बेटी, जो कुमारी थी, वह तो इतनी रीझी कि वीरम पर आशिक़ होगई। खेल खतम हुआ, पंजू व वीरम दोनों रुखसत होकर अपने २ डेरों को गये, तब शाहजादी किसी एकान्त स्थान में जाकर सोगई। अन्न जल छोड़ दिया, महल के लोगों ने कारण पूछा तो कहने लगी कि ब्याह करू तो कुंवर वीरमदेव के साथ करूं, नहीं तो विना अन्न जल के मरू। एक दिन तो उसकी माता व दूसरी बेगमों ने उसको बहुत समझाया कि वह हिन्दू, तू तुर्कनी विवाह कैसे बने, परन्तु उसने तो अपना हठ न छोड़ा, प्राण तजने पर तय्यार होगई। तब बेगम ने यह बात बादशाह के कानों तक पहुंचाई। बादशाह ने भी यही कहा कि यह बात कैसे बनसकती है। शाहजादी को अन्न जल लिये तीन दिन बीतगये, तब फिर बादशाह से अर्ज़ हुई कि अब तो शाहज़ादी मरती है, तब शाह ने अपने भले आदमी भेज वीरमदेव को कहलाया। उसने बहुत से उजर किये, परन्तु बादशाह ने एक न सुना। तब उसने सोचा कि बात बेढब है यातो मरना, या विवाह क़बूल करना। फिर वह एक चाल चला, अर्ज़ कराई कि "बहुत अच्छी बात है लग्न दिखलाया जावे, हमको विदा दीजावे कि जालौर जाकर ठाटपाट से बरात बनाकर आवें, और विवाह करें। बादशाह ने फर्माया कि तू वहां जाकर बैठ रहे और पीछा न आवे तो क्या ठिकाना, किसी को ओल में रखजा! बणवीर के बेटे राण को ओल रखकर वीरम जालौर आया, सारा हाल पिता को कह सुनाया, कान्हड़देव ने विचारा बात बिगड़ गई, उसने गढ़ सजाया और सब सामान शीघ्रता के साथ ठीक कराया। अवधि बीतगई, वीरमदेव न आया, बादशाह ने राण को बुलाकर फर्माया कि वीरम के न आने का कारण क्या है। राण ने समझाया कि बरात

का सामान करता होगा, जल्दी ही आजावेगा। इस तरह से दो च्यार महीने बीतगये, तब तो बादशाह ने अपने हजूरियों को जालौर भेजे। वे पहुंच कर कान्हड़देव व वीरमदेव से मिले (परन्तु जवाब साफ पाया)। पीछे आकर अर्ज़ की कि वीरम न आवेगा उन्होंने तो जंग का सामान दुरुस्त कर रक्खा है। बादशाह को क्रोध आया, अपने कोतवाल तोगा को बुलाकर हुक्म दिया कि राण को बेड़ी पहना! उसने राण के सन्मुख बेड़ी ला डाली, तब राण ने कटार पर हाथ पटका, तोगा का काम तमाम कर चलता बना और कुशलता पूर्वक जालौर पहुंच गया। साक्षी के दोहे—

काय आडां पग आण, कायकर घात कटारियां,
राण रावत वठ ताण छोगाळा छल छांडिया।
तोगो न जाणै तोल, मूरख मछरीका तणो।
कारण किणीक बोल, मारै काय आपण मरै।
सुध पूछे सुरताण, कोलाहल केहो कटक।
काय रिसाणो राण, मैंगल खंभ मरोड़िया।

राण का घोड़ा गांव भांतड़ा के पास मरगया।

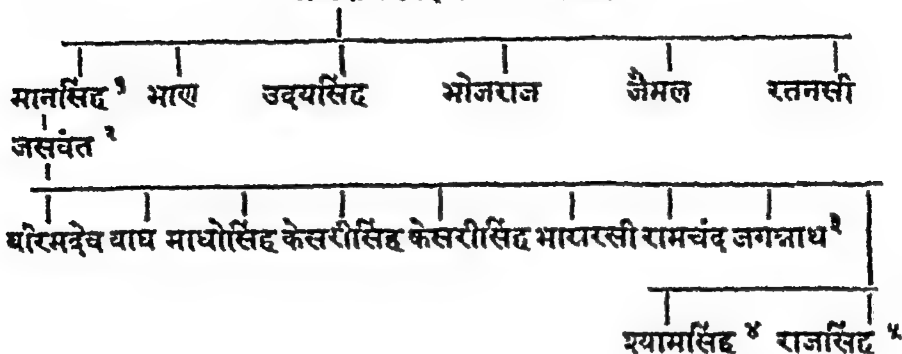
बादशाह ने पांच लाख सवार की फौज से मुदफ्फर खान (मुज़फ्फरखां) और दाऊदखां को जालौर भेजे उन्होंने आकर गढ़ घेरा, रोज धावा होने लगा, जिसकी खबर ढोल की आवाज़ से बादशाह के पास पहुंचाई जाती थी। कहते हैं कि बारह वर्ष तक विग्रह रहा। फिर दन्तकथा ऐसी है कि दो दहिया राजपूतों को रावल कान्हड़देव ने किसी अपराध में सूली पर लटका दिये थे, हवा से उनकी लाशों का रुख बदल गया और पूठ पीछे को और चेहरा सन्मुख होगया। तब रावल कान्हड़देव उनको देखकर हंसा और कहने लगा कि दहिया सन्मुख हुए सो अब गढ़ जावेगा। उन दहियों का कोई भाई बन्धु उस वक़्त रावल के पास खड़ा था उसके चोट लगी। कोट उड़ा और गढ़ मिल गया। कांधल ने खड्ग के मुंह बड़ा पराक्रम बतलाया। रावल कान्हड़देव अलोप हुआ, कुंवर वीरमदेव बहुत राजपूतों सहित युद्ध में मारागया, तुर्कों ने उसका सिर काटकर दिल्ली भेजा। शाहज़ादी ने उस मस्तक को थाली में रख उसके साथ फेरे लेने का इरादा किया, तब वह मस्तक उलटा फिरगया। कहते हैं कि शाहज़ादी फेरे फिर कर मस्तक के साथ सती होगई। सं० १३६८ वैशाख शुदि ५ बुधवार को जालौर का गढ़ टूटा। इतने राजपूत काम आये—कांधल देवड़ा, कान्हा ओलेचा, लक्ष्मण सोभावत, जैता

देवड़ा,जैता वाघेला, लूणकरण,मान लणवाया, उरजन वीहल,चादा वीहल,जैतमाल, राठोड़ सांनल, सोमदेव व्यास, सल्ला राठोड़, सल्ला सेपटा, भाभण भंडारी, गाढण सहजपाल, अडवाल वीहल, आल्हण देवड़ा, आल्हण सोहड़, धारा सोढा, भांणा धांधल, सींधल पत्ता और भाभण पडिहार आदि। तीन राणियां उमादे, कमलादे, जैतलदे, जोहर कर जल मरीं। गहलोत लुढा, मेरा, अरसी, विजैसी, सागा शिलार, सल्हण जैसा, लखमण, लूणा। दहिया, धूंधलिया सहाणी, पत्ता दहिया, वीलण सोभत, मूला सेपटा, लाला, नरसिंह सिंधल,जगसी सिंधल,करमसी। वीका दहिया तो बड़ा स्वामिद्रोही हुआ इसी के भेद से गढ़ टूटा, ये सब बचकर निकलगये[1]।

(१) सुलतान अलाउद्दीन खिलजी का दो एक वार जालोर पर सेना भेजना फारसी तवारीखों से भी प्रमाणित ठहरता है, मगर उन में जो कारण दिया है वह विचित्र सा है। फिरिश्ता लिखता है कि–" स० ७०८ हि० (स० १३०८ ई० स० १३६५ वि०) में जालौर का क़िला भी फतह हुआ। राजा कान्हड़देव खिदमत में देहली हाजिर आया। एक दिन बादशाह ने कहा कि आज हिंदुस्थान में किसी राजा की ताकत नहीं कि हमारे लश्कर का मुकाबला करसके। कान्हड़देव हाजिर था, अर्ज की, कि मैं मुकाबला कर सक्ता हूं, अगर न करूं तो कत्ल किया जाऊं। बादशाह को उसकी अर्ज बहुत नागवार गुजरी मगर चुप होकर उसे वतन की रुखसत दी और दो तीन महीने बाद अपनी एक लौंडी गुलविहिश्त को फौज देकर जालौर भेजी। उसने किले को जा घेरा और इस बहादुरी के साथ हमला किया कि कान्हड़देव मुकाबले की ताब न लासका। करीब था कि किला फतह होजावे कि एकाएक गुलविहिश्त बीमार होगई। उसके बेटे शाहीन ने लड़ाई शुरू की मगर कान्हड़देव के हाथ से मारा गया, और बादशाही फौज भाग निकली। यह खबर सुनकर बादशाह बहुत रंजीदा हुआ और कमालुद्दीन को फिर लश्कर देकर भेजा, उसने किला फतह कर लिया और राजा अपनी औरतों व बाल बच्चों समेत मारा गया। " क्या सम्भव है कि जब रावल कान्हड़देव ने हार खाकर बादशाही सेवा स्वीकारली थी और वह खिदमत में हाजिर था, फिर अलाउद्दीन खूनी जैसे बादशाह के साम्हने ऐसी बेतुकी बात जबान से निकाले कि " मैं आपसे लड़ने की ताकत रखता हूं " ताज्जुब नहीं कि मुसलमान इतिहास लेखकों ने असली बात को छुपाकर ऐसा लिखा हो। इस हालत में तो ख्यात का यह लेख स्वीकारने योग्य है कि पहली वार सुलतान ने शिकस्त खाई, और सम्भव है कि वह लड़ाई उसी वक्त हुई हो जब अलाउद्दीन ने सोमनाथ का मंदिर तोड़ा था, और बादशाही फौज ने शिकस्त खाई हो, तब दुबारा जालौर पर फौज भेजी गई हो, जिसमें रावल अपने बेटे वीरमदेव समेत काम आया और जालौर फतह हुआ। बादशाह की बेटी का वीरमदेव पर आशिक होने, और उसके मस्तक के साथ फेरे फिरकर सती होजाने का किस्सा विश्वास योग्य नहीं है। ख्यात और फारसी-तवारीखों में दिये हुए रावल कान्हड़देव के मृत्यु संवत् मे दो वर्ष का अन्तर है, कान्हड़देव पर जालौर के राज का खातमा हुआ।

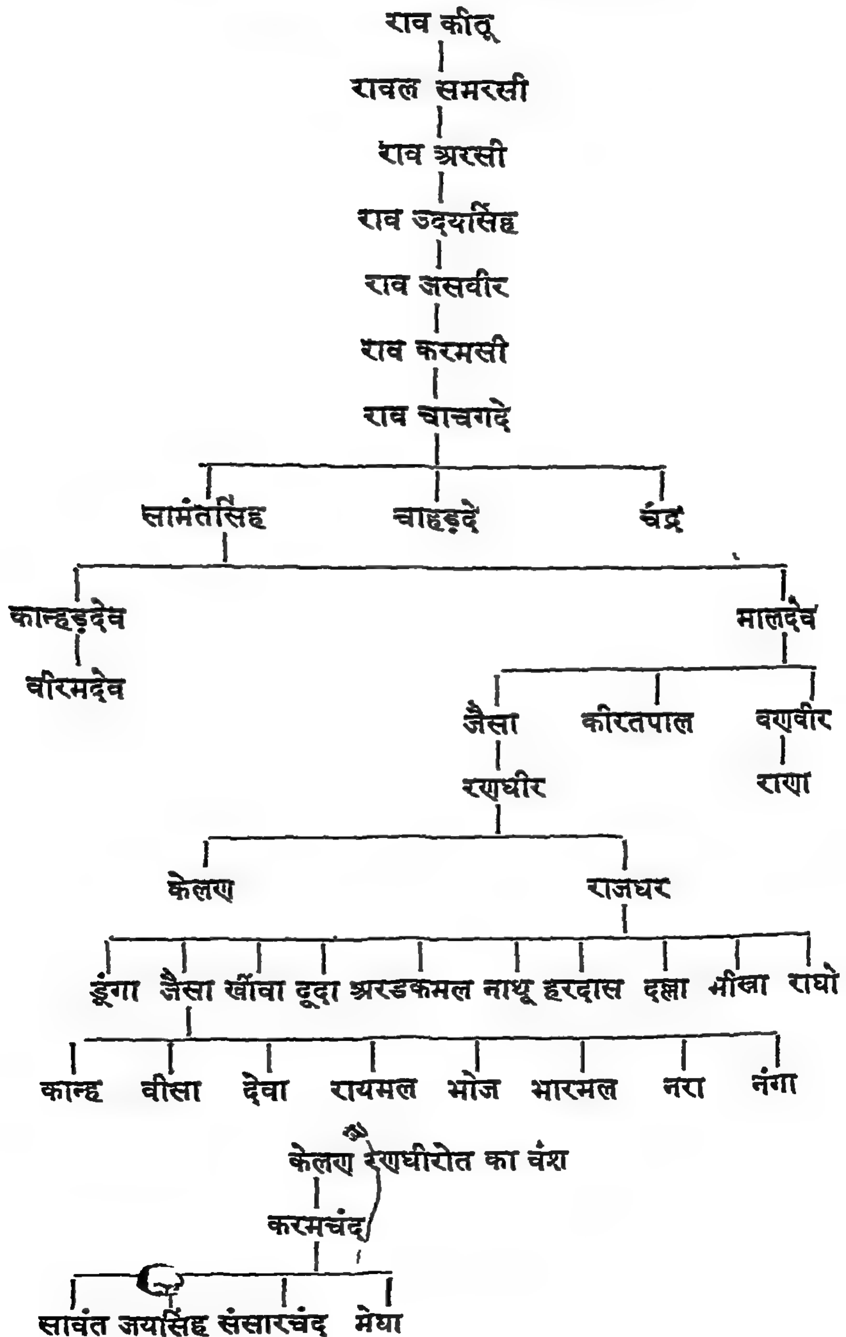
राण बणबीरोत का वंश-राण का पुत्र लोला, लोला का पुत्र सत्ता, सत्ता का पुत्र खींवा, खींवा का पुत्र रिणधीर और रिणधीर का पुत्र अखैराज।

अखैराज रिणधीरोत का वंश।



(१) जोधपुर के राव चंद्रसेन के समय में जब जोधपुर के गढ़ के घेरा लगा तब मानसिंह जोधपुर में था, उसने राव चंद्रसेन की बहुत सेवा की, फिर सं० १६२१ चैत्र महीने में राणा प्रताप के पास जारहा। सं० १६३२ में हल्दी घाटी में मानसिंह के साथ राणा प्रताप का जो युद्ध हुआ वहां मारा गया। (२) बड़ा सरदार था, मोटे राजा (उदयसिंह) ने राणा के पास से बुलाकर जसवंत को पाली का परगना सं० १६४४ में २७ गांवों से जागीर में दिया। फिर ३० गांव दिये। सं० १६६५ महाराज जसवंतसिंहजी ने पाली के पट्टे का गांव देवीखेड़ा इससे लेकर धनराज मांगलिया को देदिया और कहा कि बदले में दूसरा गांव देंगे। तब महाराज की सेवा छोड़कर जसवंत राणा के पास चला गया और वहीं मरा। (३) सं० १६६७ में राणाजी के पास से आया, तब जोधपुर की तरफ से सिनगारी गांव पट्टे में दिया गया। सं० १६७७ में पाली का पट्टा दिया और सं० १६६१ में कुंवर अमरसिंह (राठोड़) के साथ चला गया तब पाली उतारली गई। (४) सं० १६७६ में जोधपुर का गांव गुड़ा पट्टे में था, सं० १६६७ में भाद्राजण पाया जो एक वर्ष तक जागीर में रहा। (५) सं० १६६६ में राणाजी के पास से आया तब जोधपुर की तरफ से २ गांवों सहित गांव कूडणा पट्टे में दिया गया। सं० १६७२ में सूरजमल ने पाली का पट्टा छोड़ा तब वह राजसिंह को दिया गया, फिर सं० १६७७ में पाली जगन्नाथ को देदी, तब राजसिंह सेवा छोड़ कर रायसिंह सीसोदिये के पास जारहा। सं० १६६२ में कछवाहों ने मारा।

जालौर के चौहानों का वंश वृक्ष ।



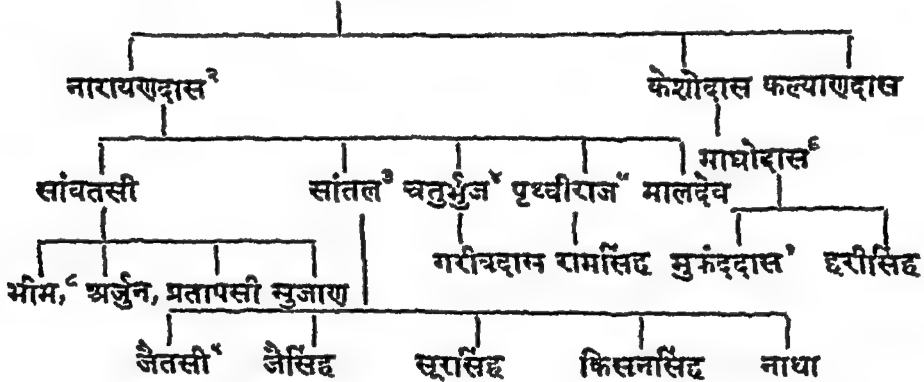
वीरमदेव जसवंतसिंहोत के पुत्र—हरीसिंह और सांवलदास । वाघ जसवंतसिंहोत का पुत्र भीम ।

माधोसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—तेजसिंह, बिहारीदास और कुशलसिंह । भाखरसी जसवंतसिंहोत का पुत्र गोकुलदास । गोकुलदास के पुत्र नारखान, सबला और सत्रसाल ।

जगन्नाथ जसवंतसिंहोत के पुत्र—दलपत और भोजराज । दलपत का पुत्र पृथ्वीराज ।

स्यामसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—सुजानसिंह, जोध और करण।

राजसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—महासिंह, जगतसिंह (सोने ही पट्टे, उज्जैन की लड़ाई में घायल हुआ और धोलपुर काम आया), दुर्जनसिंह, सुजानसिंह, पूने में मौत से मरा ।



---

(१) राणा उदयसिंह के पास नौकर था । जब (अकबर के सेनापति) शाहबाज़खां ने कुंभलगढ़ घेरा, तब भांण वहां काम आया । मोटे राजा का विवाह भांण की पुत्री से हुआ था । (२) पहले बादशाही चाकर था, पीछे मोटे राजा ने बुलाकर सं० १६४१ में भाद्राजण पट्टे में दिया । सं० १६४५ में जब मोटेराजा सिरोही पर चढ़ कर गये तब नारायणदास ने राव सुरताण देवड़ा को पहले से सूचना करदी थी, इसलिये उसकी जागीर छीनली गई, तब वह राणा के पास जा रहा और सोड़ जागीर में पाया । (३) सं० १६८२ में २१ गांव सहित भाद्राजण पट्टे में थी । सं० १६८३ में १० गांव से नवसरा जागीर में दिया गया ।

उदयसिंह अखैराजोत का एक पुत्र **'सूरजमल'**—सं० १६५७ मे सगतसिंह के शामिल पाली जागीर में थी, सं० १६६५ में सगतसिंह मरा तब देवीदास के शामिल पाली का पट्टा रहा, सं० १६७१ में पट्टा छोड़कर राणा के पास जा नौकर हुआ और सं० १६७३ में पीछा आया तब ७ गाव सहित नवसरा पट्टे में दिया। पीछे सं० १६७४ में ६ गांव सहित गांव ढेछू जागीर में पाया। दूसरा पुत्र ' सगतसिंह सूरजमल के साथ आधी पाली पट्टे में थी, स० १६६२ (१६६५) मे मरा। सूरजमल के दो पुत्र पहला देवीदास, जिसके आधी पाली पट्टे में थी और दूसरा पुत्र वणवीर, इसके सं० १६७७ मे २ गांवों सहित भंवरी गाव पट्टे में था। सगतसिंह का पुत्र मुकंददास था, इसके सं० १६८५ में भाद्राजण और जालौर का गांव दामण पट्टे में थे।

भोजराज अखैराजोत—कूंपा महाराजोत के पास रहता था, पीछे उसी के साथ मारागया। भोजराज का पुत्र सिंह, जिसके जसवंत नामी पुत्र था। जसवंत, (वीकानेर के राजा) रायसिंह के पुत्र दलपत के पास रहता था। उसने भटनेर को बचाया लेकिन पीछे जब वहां बादशाही फौज आई तब उससे लड़कर काम आया।

जयमल अखैराजोत—बीकानेर रहता था और रिणी के पास उसके वाय गांव पट्टे मे था। जयमल का एक पुत्र अचलदास और दूसरा पुत्र सारंगदे था।

सं० १६८८ में छोड़कर चलागया। (४) बड़ा सरदार था। बादशाही चाकर हुआ। वर और पखेरीगढ़ जागीर में पाया। (५) सं० १६७८ में पेहनला पट्टे में था। पीछे सं० १६८८ में गांव कुंडण पाया। (६) बड़ा राजपूत था। सं० १६८४ में गाव १० से भरवाणी जागीर में थी। पंवार जस्सा और मूंता जयमल के लड़ाई हुई तब जयमल ने माधोदास के चाकर को मारडाला इसलिये माधोदास जागीर छोड़कर चलागया। सं० १७०० मे फिर महाराजा जसवंतसिंह के पास चाकर हुआ और १६०००) रु० की रेख से गूंदक का पट्टा पाया। स० १७१४ के वैशाख मास में उज्जैन की लड़ाई में काम आया। (७) इसके १६०००) रु० की रेख से गलणिया पट्टे में था। (८) राणाजी की सेवा में मारा गया। (६) सं० १[illegible] में जोधपुर के महाराजा ने सेना सहित आसा नींबावत के साथ देश में भेजा जहां मारा गया।

अचलदास के पुत्र—केशोदास जिसे जाटों ने मारा, प्रयागदास, बलभद्र, और अनिरुद्ध थे। अनिरुद्ध का पुत्र जूझारसिंह था। सारंगदेव का पुत्र नरहरदास।

रतनसी अखैराजोत—इसका पुत्र कान्ह था कान्ह के राव और अमरा दो बेटे थे। राव जसवंत मानसिंहोत के पास रहता था।

बागड़िया चौहान।

ये मुंधपाल की सन्तान कहलाते हैं।

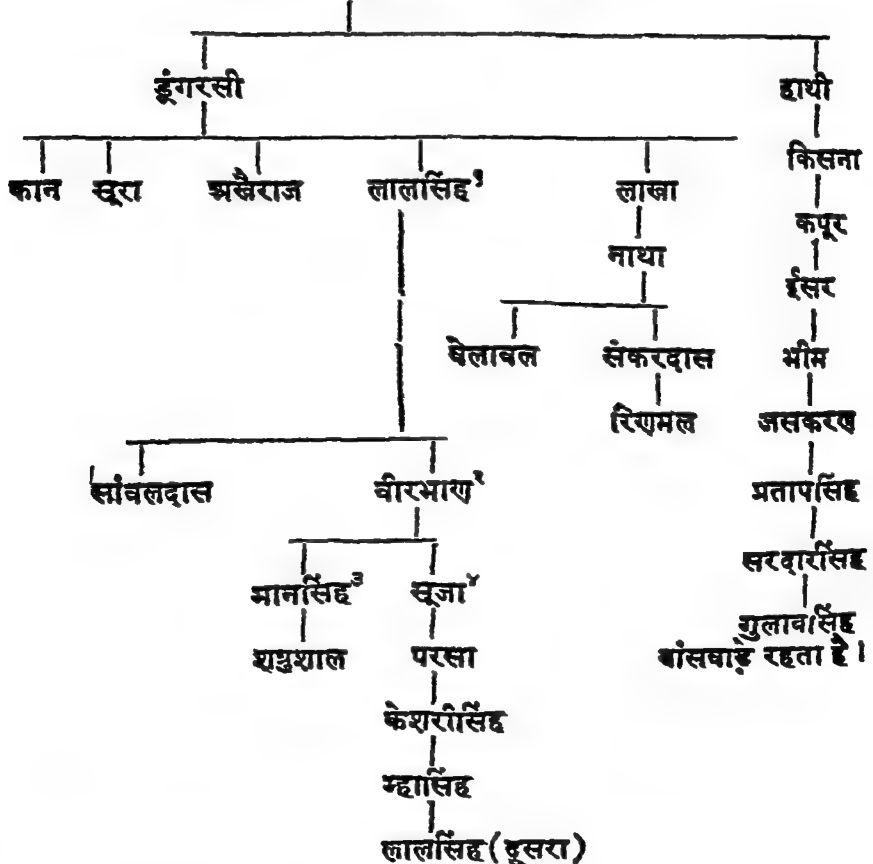
वंशावली—ब्रह्मा, वैवस्वत, रावण, धुंध, तपेसरी, तप, चाय, चौहान, तपेसरी (दूसरा), चंपराय, सोम जिसने सांभर बसाई, साहिल, अम्बराय, सिंधराव, राव लाखण, बल, सोढी, जिंदराव, आसराव, सोहड़, मुंध, छापा, महिपा, पत्ता, देदा, सहराव, मुंधपाल, बीसलदेव, वरसिंहदेव, भोजा, वाला, डूंगरसी, लालसिंह, वीरभाण, सूजा, परसा, केसरीसिंह, महासिंह, लालसिंह (दूसरा)।

चौहान डूंगरसी वालावत बड़ा रजपूत हुआ, कई दिन बागड़ में रहकर पीछे राणा सांगा के पास गया। वहां बहुत आदर पाया और बड़ी जागीर मिली। राणा ने बदनोर पट्टे में दी, जहां डूंगरसी के बनवाए हुए बड़े महल तड़ाग और वापियां हैं। जब राणा सांगा की गुजरात के (सुलतान) मुदाफर (मुजफ्फर) के साथ अहमदनगर में लड़ाई हुई[1] तब डूंगरसी ने बड़ी वीरता से युद्ध किया, पूरे घाव खाकर खेत पड़ा और उसके बेटे, भाई भतीजे शत्रु से लड़कर काम आये। डूंगरसी के पुत्र कान्ह ने बड़ा ही पराक्रम बतलाया। अहमदनगर के दरवाज़े के लोहे के कपाट बहुत गर्म होने से हाथी (उनको तोड़ने के वास्ते) मोहरा न कर सकता था, तब कान्ह ने महावत को कहा कि मैं अपना शरीर किंवाड़ों पर लगाता हूं तू हाथी को मुझपर हूलकर किंवाड़ तुड़वा दे। इतना कह वह वीर क्षत्री बीच में जा खड़ा हुआ, हाथी ने कान्ह के शरीर पर दांत टेक कर मोहरा किया और किंवाड़ तोड़ दिये और कान्ह का शरीर भी किंवाड़ों के साथ ही पड़ा।

(१) यह लड़ाई सं० १५७७ वि० में हुई थी।

डूंगरसी के दो पुत्र कान्ह और सूरा। सूरा का भांण, भांण का करमसी, करमसी का जसवंत, जसवंत का केशोदास, केशोदास का सांवलदास, सांवल का गोपीनाथ, गोपीनाथ का सूरतसिंह जो मही (नदी) के तट पर काम आया। सूरतसिंह का पुत्र सरदारसिंह, राणा जयसिंह के समय में था।

बागड़िये चौहानों का वंश वृक्ष।



(१) चित्तोड़ पर काम आया। (२) रावल करमसी और उग्रसेन (बांसवाड़े का) लड़े तब काम आया। (३) सं० १६५१ में मानसिंह और रावल उग्रसेन में खटाखट चली, तब मानसिंह बादशाह के पास जा रहा। सं० १६५८ में राव सूरजमल ने बुरहानपुर में मानसिंह को मारा। (४) राणा जगतसिंह ने अखैराज को फौज देकर डूंगरपुर भेजा और उसने वह नगर फतह किया तब सूजा काम आया।

बावसूई के चौहान

थिराद के परगने में बावसूई गांव के चौहान भी (नाडूल के) राव लाखण के वंश के हैं। १ राव लाखण, २ बल, ३ सोही, ४ महंदराव, ५ अणहिल, ६ जिंदराव, ७ आसराव, ८ माणकराव, ६ आल्हण, १० वेदा, ११ रतसी, १२ धुंधल, १३ महिपा, १४ भरमा, १५ पत्ता, १६ पूंजा, १७ बीजा, १८ सिवा। सिवा के पुत्र राम और रूदा। २० सीहा रूदा का, २१ मेरा, २२ बणबीर, २३ सांगा। २४ पत्ता सांगा का बाव का स्वामी, २५ कन्ना, २६ राणा भोजराज, और राजसी दोनों भाई। भोजराज का २७ पंचाइण सूई गांव, २८ हिंगोल।

---:o:---

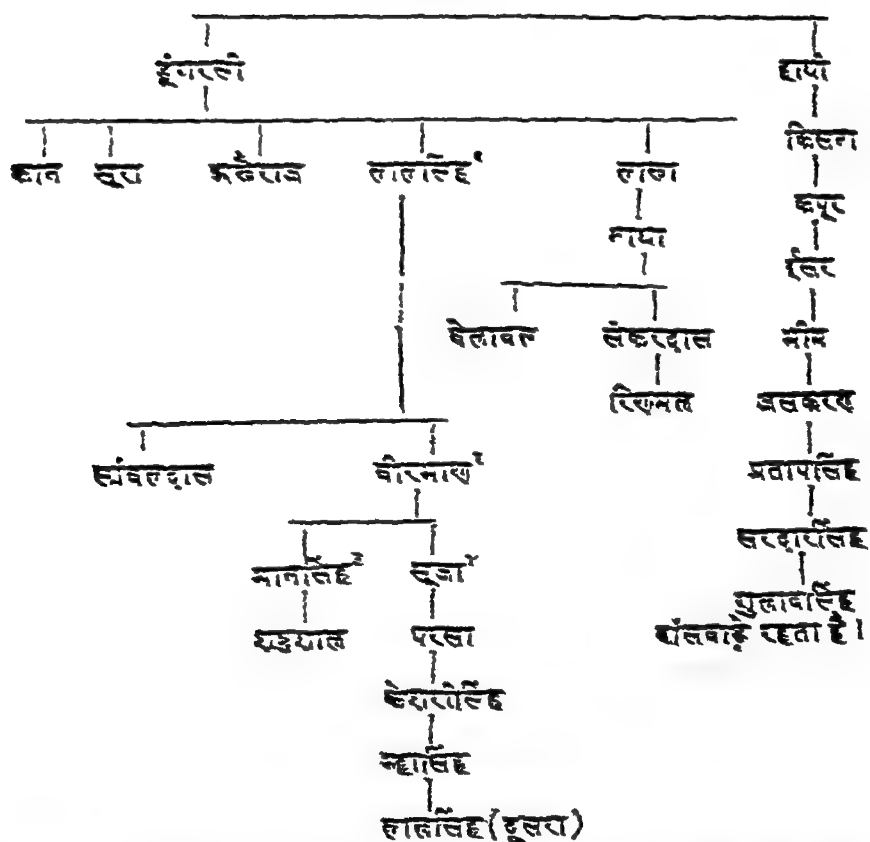
सांचोर के चौहान

सांचोर का नगर प्राचीन है जो समभूमि में बसा है। नगर के बीच ईंटों का कोट था वह तो गिर पड़ा, केवल एक दर्वाज़ा रह गया है। राज के बरों के पीछे या उस दर्वाज़े के पास थोड़ीसी दीवार बच रही थी। सं० १६८१ में जब महाराजा गजसिंह (जोधपुर) को सांचोर जागीर में मिली तब काछियों (कच्छ देश) के ५००० मनुष्य सांचोर पर चढ़ आये, उस वक़्त वहां मुंहता जयमल जैसावत हाकिम था। जयमल के आदमियों ने लड़ाई कर काछी कटक को भगादिया। उसने कोट की मरम्मत करवाई। नगर का दिखाव बहुत अच्छा, और बाज़ार बड़ा तथा गुजरात के ढंग पर केलुओं से छाया हुआ है। दो मंदिर जैनमत के हैं जिनमें से एक मुंहता जयमल ने कराया है। कोट (गढ़) के भीतर एक कुंवा है परन्तु उसमें जल नहीं। नगर में जल की तंगी है। एक बावड़ी कुंए जैसी, चौहान तेजसिंह की बनवाई हुई खारे पानी की है जिस पर ३ चड़स चलते, नगर के बहुत से लोग उसी का जल काम में लाते हैं। जब राव बल्लू को सांचोर मिली तब उसने एक कुंवा दक्षिण की तरफ खुदवाया था। उसमें मीठा जल बीस पुरुष (करीब १६० फुट) नीचे निकला। उस कुंए पर छोटासा बाग लगा हुआ है। तालाब कोई नहीं, दो तीन नाडे हैं, जिनमें दो तीन महीने तक पानी रहता है। गांव के आसपास तो जुनी का कष्ट ही है। राव बल्लू का कुंवा गांव से दक्षिण एक कोस पर है, वहां से बाहनों पर

डूंगरसी के दो पुत्र कान्ह और सूजा। सूजा का मांडण, मांडण का करमसी, करमसी का उदयकरण, उदयकरण का केसोदास, केसोदास का सांवलदास, सांवल का गोविंददास, गोविंददास का सूरजसिंह जो मही (नदी) के तट पर काम आया। सूरजसिंह का पुत्र सरूपसिंह राणा जयसिंह के समय में था।

बागड़िये चौहानों का वंश वृक्ष।

पाता मोडावत का वंश



(१) चित्तोड़ पर काम आया। (२) रावल करमसी और उग्रसेन (बांसवाड़े का) लड़े तब काम आया। (३) सं० १६२१ में मानसिंह और रावल उग्रसेन में खटपट चली, तब मानसिंह बादशाह के पास जा रहा। सं० १६५८ में राव सूरजमल ने बुरहानपुर में मानसिंह को मारा। (४) राणा जगतसिंह ने अखैराज को फौज देकर डूंगरपुर भेजा और उसने बड़ा जोर फतह किया तब सूजा काम आया।

बावसूई के चौहान

थिराद के परगने में बावसूई गांव के चौहान भी (नाडूल के) राव लाखण के वंश के हैं। १ राव लाखण, २ बल, ३ सोही, ४ महंदराव, ५ अणहिल, ६ जिंदराव, ७ आसराव, ८ माणकराव, ९ आल्हण, १० वेदा, ११ रतसी, १२ धुंधल, १३ महिपा, १४ भरमा, १५ पत्ता, १६ पूंजा, १७ बीजा, १८ सिवा। सिवा के पुत्र राम और रूदा। २० सीहा रूदा का, २१ मेरा, २२ बणवीर, २३ सांगा। २४ पत्ता सांगा का बाव का स्वामी, २५ कान्हा, २६ राणा भोजराज, और राजसी दोनों भाई। भोजराज का २७ पंचाइण सूई गांव, २८ हिंगोल।

सांचोर के चौहान

सांचोर का नगर प्राचीन है जो समभूमि में बसा है। नगर के बीच ईंटों का कोट था वह तो गिर पड़ा, केवल एक दर्वाज़ा रह गया है। राज के घरों के पीछे था उस दर्वाजे के पास थोड़ीसी दीवार बच रही थी। सं० १६८१ में जब महाराजा गजसिंह (जोधपुर) को सांचोर जागीर में मिली तब काछियों (कच्छ देश) के ५००० मनुष्य सांचोर पर चढ़ आये, उस वक़्त वहां मुंहता जयमल जैसावत हाकिम था। जयमल के आदमियों ने लड़ाई कर काछी कटक को भगादिया। उसने कोट की मरम्मत करवाई। नगर का दिखाव बहुत अच्छा, और बाज़ार बड़ा तथा गुजरात के ढंग पर केलुओं से छाया हुआ है। दो मंदिर जैनमत के हैं जिनमें से एक मुंहता जयमल ने कराया है। कोट (गढ़) के भीतर एक कुंवा है परन्तु उसमें जल नहीं। नगर में जल की तंगी है। एक बावड़ी कुंए जैसी, चौहान तेजसिंह की बनवाई हुई खारे पानी की है जिस पर ३ चड़स चलते, नगर के बहुत से लोग उसी का जल काम में लाते हैं। जब राव बल्लू को सांचोर मिली तब उसने एक कुंवा दक्षिण की तरफ खुदवाया था। उसमें मीठा जल बीस पुरुष (करीब १६० फुट) नीचे निकला। उस कुंए पर छोटासा बाग लगा हुआ है। तालाब कोई नहीं, दो तीन नाडे हैं, जिनमें दो तीन महीने तक पानी रहता है। गांव के आसपास तो पानी का कष्ट ही है। राव बल्लू का कुंवा गांव से दक्षिण एक कोस पर है, वहां से ब्राह्मणों पर

लादकर जल नगर में लाते हैं। सांचोर से एक कोस उत्तर में गांव लाछड़ी में एक कुंवा है जिसका जल पालर पानी (वर्सोती जल) जैसा मीठा है। वहां से भी पानी नगर में लाते है। सांचोर का परगना निर्जल और एक शाखिया है। नगर के पास जाल और कैर के वृक्ष वहुत, प्रजा जाट राजपूत, गांव १२६, उनमें से २८ गांवों में सूराचंद राडधरा के पास होकर लूणी नदी वहती हुई जाती है। इन गांवों में नदी की रेल आने पर तो गेहूं चने सेजे से पैदा होजाते और जो रेल न आवे तो २८ गांवों में २०० चड़स चलते हैं। बाकी सब गांवों में एक शाख बाजरे, मोठ, मूंग, तिल, कपास की होती है। परगने में भूमिये देवड़े, गड़िये और पूरेचे चौहान हैं। साचोर में तुर्कों के घर १५० हैं, वे सकना तुर्क कहलाते और उनके एक सौ खेत गांव में माफी के हैं। उनके डूम वहलीम झरडिया, और पायक हैं जिनको गाव प्रति २) मिलते हैं। गाव १२६ पर रेख दाम २४८०००० । साचोर में क़रीब १२४५ घरों की बस्ती है, जिनमें ७०० महाजन ओसवाल श्रीमाल, ८० श्रीमाली ब्राह्मण, १० राजपूत, १५० सकना, १५ दरज़ी, १२ मोची, ४० तेली, ३५ सुनार, २५ पिनारे, १५ सूत्रधार, १२ छींपे, धोबी, ४ कुंभार, ५ रंगरेज, १५ भोजक, ५ माली, २ लोहार, ५ गंधर्व, ३ ढेढ (चंडाल), और ४० घर भीलों के हैं।

पहले सांचोर में दहिया राजपूतों का राज था। दहिया विजयराज के समय में चौहान विजयसिंह आल्हणोत सिंहवाड़े रहता था। दहिया विजयराज का भाणा महिरावण वाघेला किसी कारण अपने मामा से बिगड़ बैठा और जाकर चौहान विजयसिंह से मिला और कहा कि अपन साचोर लेवें, आधा हिस्सा उसमें मेरा है। विजयसिंह ने इसको मंजूर किया। पीछे वाघेले के बुलाने पर विजयसिंह सांचोर पहुंचा। दहियों को मारकर नगर में अपनी दुहाई सं० ११४१ फागुण वदि ११ को फिरादी और साथही महिरावण वाघेले को भी मारडाला[1]।

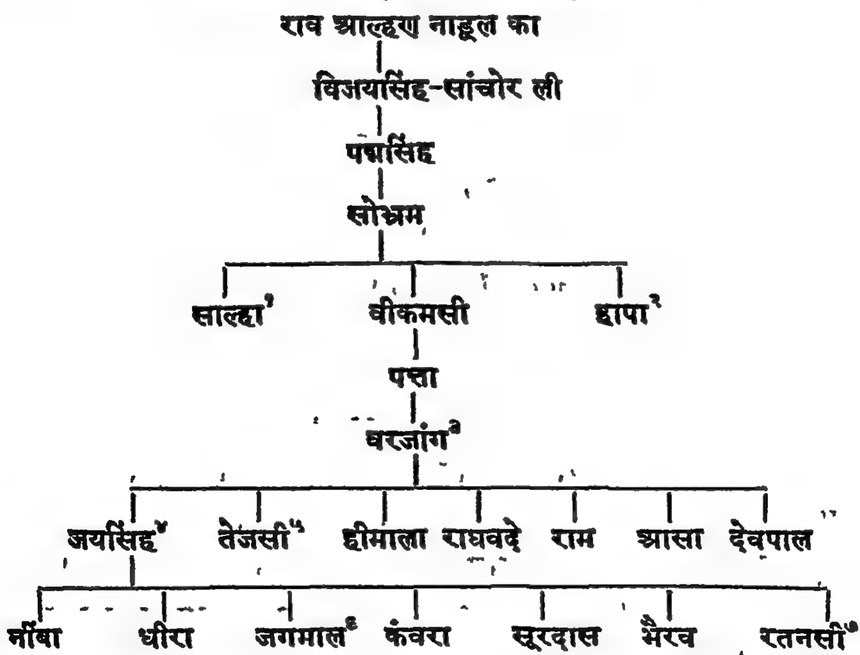
कवित्त छप्पय—

(१) सांचोर लेने वाले विजयसिंह को नाडूल के राव आल्हण का पुत्र बतला कर उसका स० ११४१ में सांचोर पर अधिकार कर लेना लिखा सो ठीक नहीं जंचता है। राव आल्हणदेव के लेख दान पत्रादि से उसका समय स० १२०६–२० निश्चित है, तो फिर स० ११४१ में होने वाला विजयसिंह आल्हण का पुत्र कैसे हो सकता है, या तो स० १२४१ की जगह ११४१ भूल से लिखा गया हो, या विजयराज, आल्हण का नहीं किन्तु अणहिल्ल का पुत्र हो जो विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी के अन्त में नाडूल का राव था।

धरा धूण धकचाल, कीध दहिया दहवट्टै।
सबदी सबलां साल, प्राण मेवास पहट्टै।
आल्हण सुत विजयसी, बंस असराव प्रागवर।
लाग त्याग खत्रवाट सरण··· विजै पंजर।
चौहान राव चोरंग अचळ, नरांनाह अणभंग नर।
धू मेर सेस जा लग अचळ, तास राज सांचोर घर॥

(भावार्थ—आसराव की सन्तान में से आल्हण के पुत्र चौहान राव विजयसी ने दहियों से युद्ध कर पृथ्वी ली। चिरकाल तक सांचोर में उसका राज रहे)

सांचोर के चौहानों का वंश वृक्ष।



(१) साल्हा बड़ा राजपूत हुआ। जब बादशाह अलाउद्दीन (खिलजी) ने जालौर के गढ़ को घेरा तब साल्हा वहां काम आया। गढ़ की पहली पोल में चढ़ते ही साल्हा चौकी है। उसने पुराणों में सुना था कि युद्ध में लड़ने को आने के लिये जितने क़दम आगे बढ़े उतने ही अश्वमेध यज्ञों का फल होता है। इस बात को मन में लाकर रावल कान्हड़देव के विद्यमान होते उसने अश्वारोही

तेजसी वरजांगोत का वंश ।

तेजसी का पुत्र पीथमराव[1] या प्रथीराव

- वाघा[2]
  - सिंघा
- अज्ञा, सेखा और देवीदास का मामा था। सेखा मारा गया और देवीदास को राजपूतों ने निकाल दिया तब अज्ञा उसके साथ गया। फिर चित्तोड़गढ़ के घेरे में देवीदास के साथ मारा गया।

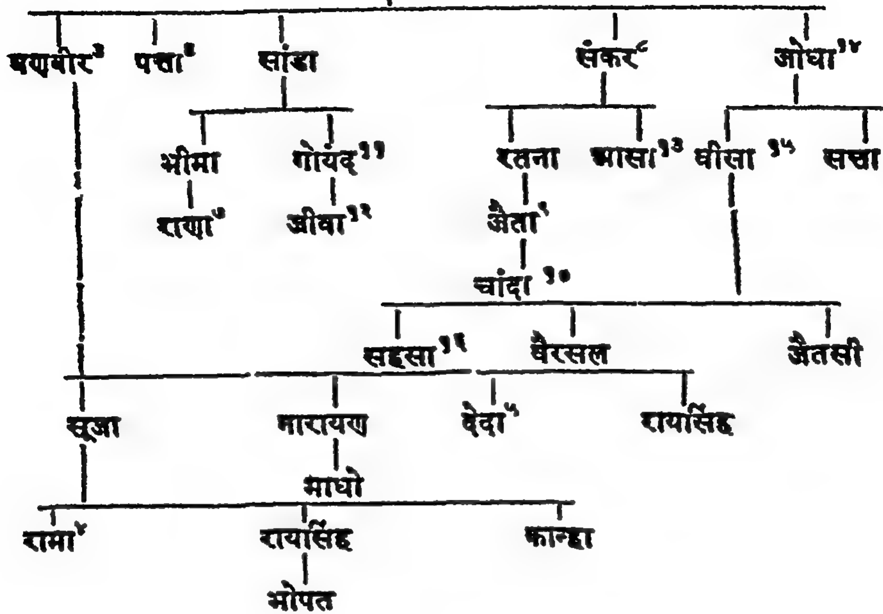
होकर अपनी जंघाओं को कीले पत्तियों से कसकर जकड़ लीं और बादशाही कटक में घोड़ा पटका। कान्हड़देव ऊपर महल में बैठा हुआ उसका युद्ध देखता था। खूब लड़ाई की और बड़ी वीरता के काम कर मारा गया।

कवित्त—अलावदी प्रारंभ, कीध सोनागर ऊपर।
हुओ समर तलहटी, जुड़े चौहान मछर भर।
सकतीपुर वेसाम, प्राण सुरताण संकायो।
गांजे घड़ गजरूप, चित्त आलम चमकायो।
राजियो राव कान्हड़ रिणह, कोतक रिवरथ थंभियो।
वरमाल कंठ अपछर वरै, सालह विमाणै मालियो॥

(२) हापा के वंशज सूराचंद के स्वामी हैं। (वंशावली आगे दीजावेगी) (३) राव वरजांग की लड़ाई मलिक मीर के साथ हुई। सं० १४७८ में वरजांग को मारकर मुगलों (पठानों) ने सांचोर छीन ली। वरजाग बड़ा राजपूत था। जब जेसलमेर व्याहने को गया तब वहां इतना खर्च किया कि आज तक उस चमरी पर किसी दूसरे का विवाह नहीं होता है। उस ठौड़ को सब जानते हैं। (४) सांचोर का स्वामी, मेवाड़ के राणा उदयसिंह की बहन को व्याहा। (५) सांचोर का स्वामी। (६) साचोर का स्वामी जिसको तेजसी के पुत्र पथिमराव ने मारा। (७) इसने ४६ आखड़ी (प्रतिज्ञाएं) ले रक्खी थीं।

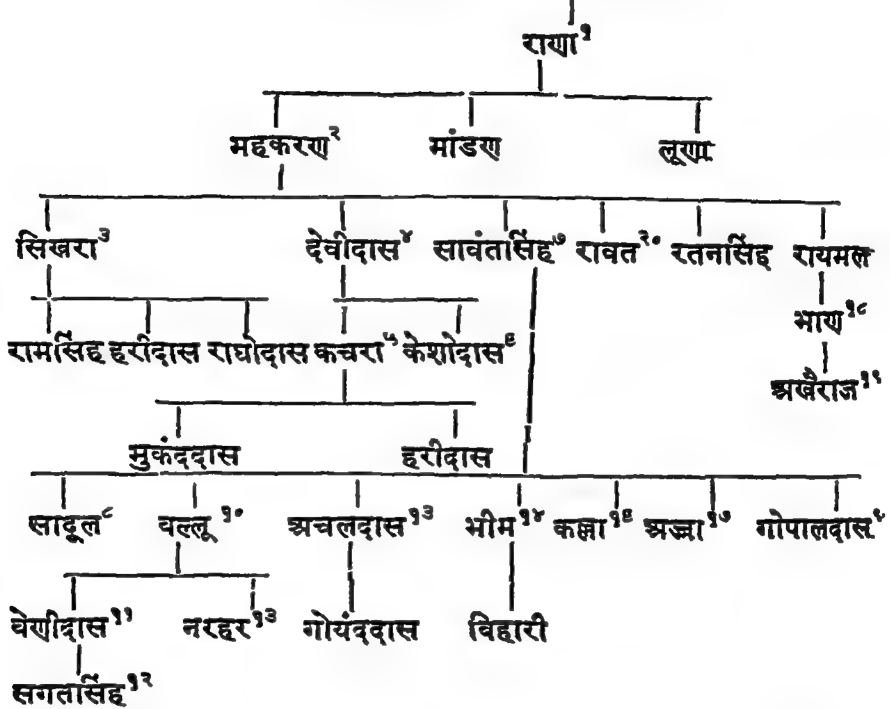
(१) सेखा सूजावत और देवीदास का नाना। राव सूजा (जोधपुर का) इसके यहां व्याहा था। इसने जगमाल जयसिंहदेवोत को मार कर सांचोर ली, जीवन पर्यन्त सांचोर इसके अधिकार में रही। (२) कोढणे का वाघावास बसाया। सांचोर का तिलक हुआ था, परन्तु जब चौहान राणा नींबावत ने देश को उजाड़ा तब यह सांचोर छोड़कर कोढणे में आया।

बाघा के पुत्र सिंघा का वंश



(३) मोटे राजा का सुसरा। (४) सं० १६६३ में थोम की बारड़ी पट्टे में थी, अच्छा राजपूत था। (५) पाटाऊ गांव पट्टे में था। (६) गोपालदास ऊहड़ का नाना। (७) रात को पानीले गांव में व्याहा, प्रभात में बाहड़मेरों ने आकर गांव के पशु घेर लिये तब उनके साथ लड़कर मारा गया। (८) गोपालदास ऊहड़ के साथ मारा गया। (९) मोहबतखां की सेवा में काम आया। (१०) मांडण की सेवा में रहता था। (११) पाटोदी में भाटियों ने मारा। (१२) मांडण ऊहड़ की नौकरी में था। (१३) मांडण की नौकरी में था। (१४) राव चंद्रसेन के पास था, गढ़ के घेरे में काम आया। (१५) गोपालदास ऊहड़ के साथ काम आया। (१६) मांडण ऊहड़ के साथ काम आया।

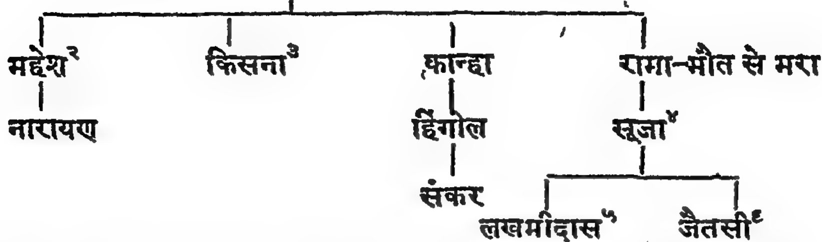
जयसिंहदे के पुत्र नींवा का वंश।



(१) राणा को (मारवाड़ के) राव मालदेव ने सिवाने का समदड़ली गांव जागीर में दिया था। (२) मोटे राजा (उदयसिंह) का सुसरा और दलपत का मामा था। मुसलमानों के साथ लड़ाई में मारा गया। (३) राजसिंह का सुसरा और मोटे राजा का चाकर था। तीन गांवों सहित खेजड़ली पट्टे में थी। (४) मोटे राजा का चाकर सं० १६४० जोधपुर का गांव चवाड़ी, सं० १६   ओईसां का गांव तांतूवास सं० १६   दूनाड़े गोयंद का वाड़ा, और सं० १६   में जोधपुर का दहीपुरा पट्टे में रहा। (५) तातूवास पट्टे में था, सं० १६७४ में सोजत का हुणगांव मिला; और सं० १६७७ में मरगया। (६) सं० १६७३ में जोधपुर का दहीपुरा पट्टे में था। (७) दलपत का मामा और उन्हीं का नौकर था, बडी ठाकुराई वाला था। (८) सं० १६६   में बुरहानपुर में महाराज जसवंतसिंह ने नागोर के ६ गांव रु० ४७००) की आय के पट्टे में दिये थे। पीछे मोहबतखां के पास जा रहा और दक्षिण में लड़ाई में काम आया। (९) दौलताबाद में मोहबतखां की नौकरी में लड़कर काम आया। (१०) दलपत के पुत्र महेशदास (राठोड़) का नौकर

(नींवा के पुत्र राणा का वंश जारी है)

लूणा[1] राणावत का वंश



था। सं० १६८५ में महेशदास मोहबतखां के पास रहा तब वल्लू भी उसी की चाकरी में चला गया, दक्षिण में युद्ध में मारा गया। जब मोहबतखां मरा तो महेशदास और वल्लू दोनों बादशाही चाकर हुए। महेशदास को जालौर और वल्लू को साचोर सं० १६९९ में मिला। मंसब सातसौ ज़ात ४०० सवार का था। पूरब में मरा। (११) इसका मंसब ४०० ज़ात एकसौ सवार का था, विहानू का परगना भी मिला। (१२) इसका मंसब २५० जात, ३० सवार का था। (१३) सं० १७१४ के जेष्ठ मास में धौलपुर की लड़ाई में मारागया। (१४) मोहबतखां की नौकरी में दक्षिण में मारा गया। (१५) सं० १६७७ में जालौर का चवराट पट्टे मे था। दलपत के पुत्र जूझारसिंह की सेवा में काम आया। (१६) दलपत के पुत्र जूझारसिंह की सेवा में काम आया। (१७) सं० १६७५ में पाली का गाव केरला पट्टे में था, फिर दलपत के पुत्र कनीराम के पास नौकर हुआ और उसी के साथ बुरहानपुर में काम आया। (१८) दलपत की सेवा में (राठोड़) किशनसिंह के साथ मारा गया। (१९) सं० १६४० में हीरादेसर पट्टे में था, पीछे बीसलू दिया गया।

(१) बड़ा राजपूत था। (२) जालौर काम आया। (३) उग्रसेन चंद्रसेनोत (राठोड़) के साथ रह लड़ाई में मारा गया। (४) दलपत की सेवा में लड़ाई में मारा गया। (५) भीम करणोत के पास था। (६) सबलसिंह के पास था। (७) सं० १६५२ में धना के शामिल भाद्राजण का गांव वाला पट्टे में पाया, फिर सं० १६६६ में उसी (सांवल) को सुगालिया गांव मिला। पीछे भाद्राजण का राखाणा दिया था। सं० १६७१ में (राजा सूरसिंह राठोड़) की सेवा में खिरालू के परगने में काम आया। सं० १६७१ में गांव राखाणा जागीर में था। (९) सं० १६ में सूजा और सावल को वाला, नीलकंठ और भाद्रा-

मांडण राणावत का वंश

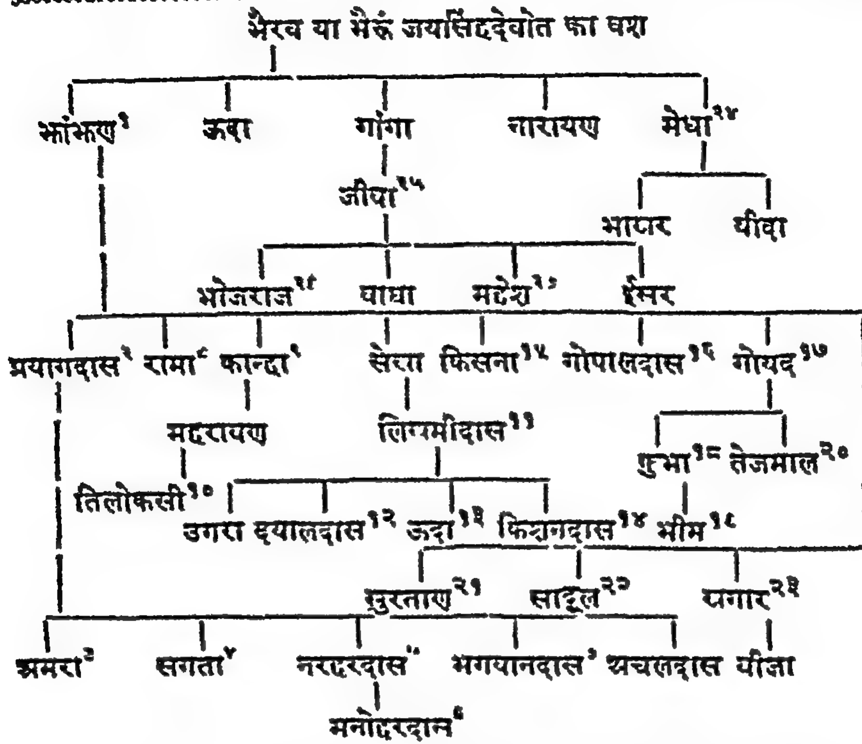
- मांडण
  - सांवलदास[7]
    - कम्मा[8]
    - जस्सा
    - जगन्नाथ
      - नरसिंह
  - सूजा[9]
    - पत्ता[10]
      - खेतसी
      - नाथा
  - धन्ना[11]
    - तेजमाल[12]
      - सुरताण

जयसिंहदेव के पुत्र धीरा का वंश

- धीरा
  - वरसिंह[1]
    - वीका[2]
      - हमीर[3]
        - पंचायण[4]
          - रायसिंह[5]
          - केशोदास[6]
          - अर्जुन[7]
          - भोजराज
        - वीरम
          - भाण
          - नारायण[8]
        - जैतसी[10]
        - देदा
          - मनोहर[9]
          - भोपत
  - अखैराज
    - कूंपा
      - राम[11]
      - कान्ह[12]
    - गोपा[13]
      - लोला
        - माना[14]
          - आसा
          - करण
        - जोधा
          - भोपत
        - सूरा
      - लाखा[15]

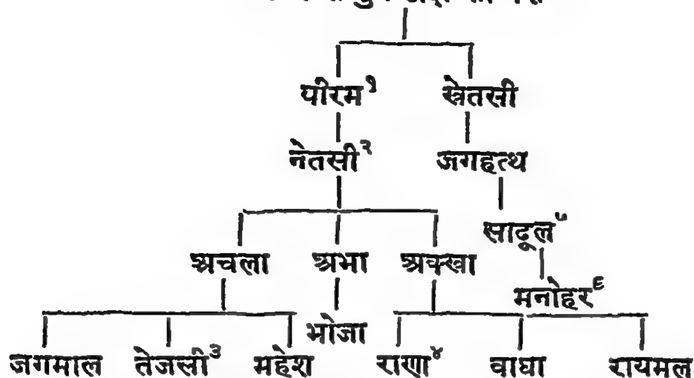
जण पट्टे में मिले थे। (१०) पत्ता के सं० १६८५ में जालौर का गांव सिराणा पट्टे में था। (११) धन्ना के सं० १६७० में सिवाने का गांव मेहली और सं० १६८३ में इंद्राणा पट्टे में था। पीछे धन्ना मर गया। (१२) धन्ना के बदले चाकरी करता था, गाव तिमरणी में मरा।

(१) सांचोर काम आया। (२) भाचरणे गांव में सिंधलों ने मारा। (३) राव चंद्रसेन (मारवाड़) का सुसरा था, महेश के पुत्र हरदास ने मारा। (४) सं० १६६६ में भाद्राजण का गांव बीजली पट्टे में था, चाकरी इसका पुत्र अर्जुन करता था। (५) सं० १६ में जोधपुर का गांव रोहेचा, सं० १६६६ में केशोदास के शामिल भाद्राजण का गाव रायमा, और सं० १६८५ में भाद्राजण का गांव सीहराणा पट्टे में था। (६) वालपुर में मरा। (७) सं० १६८६ में साहरियाणे में था। (८) भाद्राजण का गाव खेड़ा पट्टे में था। (६) गांव भवराणी



में रहता है। (१०) जब तुर्कों (मुसलमानों) ने जैतसी मंगावत को पकड़ा तब वहां काम आया। (११) भाखरसी दासावत की सेवा में काम आया। (१२) सिंह जैतसिंहोत की सेवा में काम आया। (१३) जैतसी ऊदावत के साथ बड़ी लड़ाई में काम आया। (१४) गांव सुगालिये में नुगधल आप वहा लड़ाई में मारा गया। (१५) ईंदे (पड़िहारों) के यहां सासरे (श्वसुरालय) गया था वहां लड़ाई में मारा गया।

(१) राव मालदेव के पास नौकर था, सिवाणे का गांव मेहगढ़ा पट्टे में था। (२) भरोसे वाला मनुष्य था, सं० १६४० में मोटे राजा ने लवेरे का गांव गोदरी पट्टे में दिया। (३) सं० १६ गोदरी बरक़रार। (४) सं० १६६ "में सिवाने की गोपड़ी और सं० १६७२ में लवेरे का गांव रूंदिया कूवा पट्टे था, फिर छोड़ दिया। (५) सं० १६७० में जोधपुर का गांव नरावस पट्टे में था, फिर सं० १६७१ में अजमेर में गोयंददास (भाटी) के साथ काम आया। (६) नरावस बरक़रार, सं० १६८१ में महलांणा दिया था। सं० १६८२ में कुंवर अमरसिंह (राठोड़) के पास जारहा। (७) सं० १६७८ में तांतूवास पट्टे में थी। (८) राव चंद्रसेन के साथ देवराज की लड़ाई में पोकरण के



गाव में मारा गया। (९) मेहगड़े में मौत से मरा। (१०) सिवाने का गाव वाघलोप पट्टे में था। (११) लिखमीदास के सं० १६४० में हरढाणे की वासणी और सं० १६७७ में जालौर का सिराणा पट्टे में था। (१२) स० १६८० में जालौर का एक गांव था। (१३) मेड़ते का भानावल पट्टे में। (१४) ऊदा के शामिल पाली का रूपावास सं० १६८२ में और स० १६८३ में मेड़ते का भानावस पट्टे। (१५) राव चंद्रसेन के पुत्र उग्रसेन के साथ मारा गया। (१६) कल्याणदास रायमलोत का नौकर, उसी के साथ सिवाने में मारा गया। (१७) गांव गोदरी करमसीसर प्रयाग के शामिल पट्टे में थे। फिर कुंभा के शामिल हीरादेसर का पट्टा मिला। (१८) गुजरात में मांडवै काम आया। (१९) स०१६७८ में भाद्राजण का कोराणा, सं० १६८६ में जोधपुर का संभाड़ा और मेड़ते का पोलावस पट्टे में था, फिर सं० १६९१ में कुंवर अमरसिंह के साथ चला गया। (२०) हीरादेसर पट्टे। (२१) एक मास तक हीरादेसर पट्टे रहा, फिर गोदरी, और पीछे आसोप की चीनड़ी दीगई। (२२) धवेचों की लड़ाई में मारा गया। (२३) किशनसिंह (राठोड़) के पास नौकर था। (२४) पृथीराज के साथ मेड़ते काम आया। (२५) समावली में मोटे राजा का चाकर था, सं० १६४० में दांतनिया और पीछे माणकलाव, पट्टे में दी। (२६) भोजराज के माणकलाव बरकरार, पीछे देवराज के भय से छोड़ कर दलपत के पास जारहा और वहीं काम आया। (२७) जालौर के गाव भूतेल भाटीव पट्टे में थे।

(१) मेड़ते काम आया। (२) स० १६८१ में देवीदास के साथ मेड़ते की लड़ाई में काम आया। (३) सं० १६८२ में भाद्राजण का उदारा और सं० १६८५ में जालौर का तालियाणा पट्टे में था। (४) सं० १६७७ में जालौर की,

हीमाला राव वरजांग का—इसका पुत्र सोभा बड़ा रजपूत हुआ, उसके आधी सांचोर रहगई थी, आधी गुजरात के बादशाह ने प्रेम मुगल को देदी थी। जब मुगलों ने गढ़ में गो हत्या की तब उनके साथ युद्ध हुआ, सोभा ने प्रेम को मारा। हीमाला का दूसरा बेटा ऊदा, तीसरा देवा, चौथा सांगा था।

चौहान सोभा के दोहे—

छायल फूल बिछाय वीसमतो वरजांगदे।
तिण अवास अड़ाविया गैमर गोरी राय॥ १॥
इसड़े ऐ अहनाण चहुवाणो चौथे चलण।
सुजड़ी आयो सोभड़ो डकडकती दीवाण॥ २॥
काला काल कलास सरस पलासां सोभड़ा।
वीकमसीहां वास मांहि मसीतां माडजे॥ ३॥
हीमाळा उतहीज सुजड़ी साही सोभड़ै।
ढीलपहा रिमहां घड़ी राखल पलकी बीज॥ ४॥
सोमड़ सूअर सीत दूछर धावै ज्यां दिसी।
भीत हुवा भड़ भडचड़े रोद्रत कर गजरीत॥ ५॥
चोल वदन चहुवाण मिलक अढारै मारिया।
सुजड़ी आयो सोभड़ो डखडख तो दीवाण॥ ६॥
वणवीरोत वखाण हीमालावत मनहुवा।
त्रिजड़ी काढै तां तणी चलण दियै चहुवाण॥ ७॥
सोमड़ कियो सुगाळ मुंहंगो एकण ताल में।
खेतल वाहण सड़हड़ै, चुड़ऐै चामरियाल॥ ८॥
लोद्रां चीलू आंध भागी सो कोई भयै।
सोभ्रमडा अग सातमै, बावा तोरण वांध॥ ९॥



खीरोहरी और सं० १६८४ में अहर, सं० १६६० में डांगरा, सं० १६७५ में जालौर का समूजा पट्टे में था। (५) सं० १६७२ में पाली का गांव भूंभादड़ा पट्टे। (६) सं० १६८१ में भूंभादड़ा और सं० १६८८ में सोजत का गांव सापा पट्टे में था।

वोड़ा चौहान

चौहानो मे एक शाखा वोड़ा की है, जो राव लाखण की सन्तान हैं और जालौर सिरोही के चौहानों की भाति राव कीतू के वंश में है। वोड़ा भाखर का पुत्र था, जिसके वंशज वोड़े कहलाते हैं। वतन इनका जालौर के परगने में सैणे का छोटासा इलाका है। पहले तो सैणा सिरोही के अधिकार में था, परन्तु जव राव सुरताण और राव कल्ला मेहाजलोत के कालंद्री गाव के पास लड़ाई हुई तव राव सुरताण ने जालौर के विहारी मलिकखान को सहायता के एवज़ ४ परगने सिरोही में से दिये जो अवतक जालौर के ताल्लुक़ है, उन्हीं मे का परगना सैणा जालौर से १० कोस उत्तर सिरोही की तरफ है। सिरोही से उसकी सीमा मिलती है। यह परगना दुफसला, और गांव सैणा छोटीसी पहाड़ी के नीचे वसा हुआ है। उसके साम्हने खुला हुआ मैदान है। ऊनालू की फसल अच्छी होती है। सैणा ताल्लुक गाव १२, और छोटे मोटे ३०० रहट हैं। आय रु० १००००) साल।

यहां वोड़े वहुत दिनों से वसते थे, सं० १६९९ में जव दलपत के पुत्र राव महेशदास को जालौर मिली (रवलाम राज्यका मूल पुरुष) तो च्यार वर्ष, तक महेशदास जीता रहा तव तक, तो वोड़ा कल्याणदास नारायणदासोत के भोमिये के मुवाफिक, सैणा अधिकार में रहा। सं० १७०३ में राव महेशदास मरा और वादशाह (शाहजहां) ने उसके पुत्र राव रत्नसिंह को जालौर दी, तव रत्नसिंह सैणे आया और कल्याण को कहा कि हम आगे चलते हैं तुम जल्दी से आन पहुंचना। कल्याण थोड़े से साथियों से आया, तव रत्नसिंह ने वर्छा मार कर उसको ठिकाने लगाया और सैणे पर अपना अधिकार जमाया। दूसरे चौहाण भागके सिरोही इलाक़े में जारहे।

पहले भी (वोड़ों में) नवघण व बीजा बड़े वाके राजपूत हुए थे। थोड़े ही दिन पहले सं० १६८० में महाराजा गजसिंह (जोधपुर) के समय में वोड़ा नारायणदास बाघावत बीर राजपूत हुआ। सं० १६७४ में कुंवरपदे में जब गजसिंह को जालौर मिला तब नारायणदास विहारियों से फूटकर कुंवर गजसिंह से आमिला। राजा सूरसिंह का विवाह नारायणदास की बहन के साथ हुआ था और वह बड़े उमरावों की भांति रहता था। गांवों के नाम-

सैणा, चांदण, भैटाल, मेड़ा, वाहरलोवास, मांहेलो (भीतर का) वास, तुंड, देवड़ा, दहीगांव, नागण, उंडवाड़ा, कणावद ।

वंशावलीः—राव लाखण, वल, सोढी, महंदराव, आल्हण, जिंदराव आसराव, आलण, कीतू, समरसी, भाखर, वोड़ा, लक्खा, महिपालदेव, हाजा, सावंत, सिखरा, नवघण, करमा, वजा, वाघा, नारायणदास, कल्याणदास ।

और तो वोड़े कहीं सुनने में नहीं आये एक वोड़ा मानसिंह नरवदोत जालोर के गांव बापडोतरे में रहता था । वह गाव पांच सात दूसरे गांवों सहित दहियावत पट्टी में, उसके पट्टे था । अर्थात् सहिाणा, खारी, सांधाणा, देवसीवास, आलघाड़ा और आलाराण । माना के २०० भाई बधु की जोड़ थी, सवार ४० उसके साथ चढ़ते थे । मेहवे के गांव भांडेवले में भी सोढा, ठाकरसी, सूरा आदि वोड़े चोहान रहते हैं ।

—:o:—

कांपलिया चौहान ।

चौहानों में एक शाखा कांपलिया है जो सांचोर के गांव कांपला के रहने वाले हैं । ठिकाने के नाम पर ही इनका नाम कांपालिया पड़ा है । पहले कुम्भा कांपलिया बड़ा रजपूत हुआ, उसके गांव कुम्भावतों के कहे जाते थे । कुम्भावतों में मुखिया घन्नाधारी सांचोर के पास ओखरड गांव में रहता था ।

कुम्भा कांपलिया के पास एक घोड़ी बहुत अच्छी थी उस वक़्त रावल माला (मल्लिनाथ) ने पश्चिम दिशा में बहुतसी धरती ली थी और पश्चिम के सब भूमिये रावल की आज्ञा मानते थे । कुम्भा भी भूमिये की भांति चाकरी करता था । रावल ने उसकी घोड़ी लेने का विचार किया । रावल का प्रधान भीमा नाम का एक नाई था उसको कहा कि यह घोड़ी किसी ढब से लेना चाहिये । भीमा बोला कि सीधी तरह से तो कुम्भा घोड़ी देने का नहीं, तब उसको बुला कर कचहरी में बिठाया और ५०० आदमी सिलह सजकर उसके सन्मुख बैठगये व ५०० बंदूकची तोड़े सुलगाकर खड़े होगये । फिर रावल ने नाई को कुम्भा के पास भेज कर कहलाया कि “ रावलजी तुम्हारी घोड़ी मंगवाते हैं ” । यह शब्द उसके मुंह में से निकलने थे कि कुम्मा तलवार की मूठ पर हाथ डालकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा “ मैं घोड़ी रावल को देकर पीछे अपना पलान

रावल की मा पर धरूं या तेरी मा पर'' और साथ ही तलवार खींचली, शोर हुआ। कुम्भा का मुख क्रोध के मारे लाल सुर्ख होगया और सिर के केश खड़े होगये। तब किसी ने रावल को जाकर कहा कि कुम्भा को मारते तो हो परन्तु रजपूत को सूरापन चढ़ा है वह सूरत तो उसकी एकवार देखलो। रावल बाहर आया, और कुम्भा को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और अभय दिया, कहा कि जैतमाल की बेटी पत्ती के लिये वर की आवश्यकता थी सो आज मिल गया। फिर कुम्भा का विवाह पत्ती के साथ कर दिया। उसके पेट से कुम्भा के दो पुत्र खेता और भोजा बड़े वीर रजपूत हुए। इसके पूर्व मल्लिनाथ के पुत्र राव जगमाल ने जैतमाल को मार डाला, और जब उसका माल असबाब बंटने लगा तो उसके ५ हिस्से किये गये, तीन तो तीनों बेटों के, एक बेटी पत्ती का, और एक भाग व एक उजाला बछेरा जुदा रक्खा गया और कहा कि इसको वह लेवे जो जैतमाल का वैर लेने को समर्थ हो। वह भाग भी पत्ती ने यह कहते हुए लिया कि "मेरे बाप का वैर मेरे बेटे खेता व भोजा लेवेंगे"। सयाने होने पर खेता भोजा ने राव जगमाल के साथ बहुत उपद्रव किये, उसके तीन भाइयों को मारडाले और '' के सात पुत्रों को मारे।

खीची चौहान

ये भी (नाडोल के) राव लाखण के वंशज हैं। पीढावली—राव लाखण, बल, सोही, महंदराव, अणहिल, जिंदराव, आसराव, माणकराव। एकवार आसराव अपने पुत्र माणकराव से प्रसन्न हुआ और कहा कि तूं प्रभात से संध्या समय तक जितनी पृथ्वी में फिर आवे वह भूमि तुझको देदी जावेगी। तब माणकराव दिन निकलते ही चला और संध्या तक बराबर फिरता रहा। वह साभर का चढ़ा, इतनी जगह गया—नागोर पट्टी के ८४ गांव और सारी भद्राण जहां इसने गढ़ बांधने का विचार किया। संध्या होते जायल की तरफ निकला, वहा गवार (बैल लादने वाली एक जाति) ठहरे हुए थे, उन्हो ने भोजन की मनुहार की, यह भी दिन भर फिरता २ भूखा होगया था, कहा कोई पका पकाया अन्न हो तो लाओ। उस वक्त उनके खिचड़ी तय्यार थी वह कटोरे में ले आये। माणकराव ने ऊंट की सवारी पर चढ़े चढ़े ही वह चावल

मूंग की खिचड़ी खाई और संध्या होते पिता के पास पहुंचा। पिता ने पूछा, कितनीक धरती में फिर आया? उसने सब हकीकत कह सुनाई। फिर पूछा कि कहीं गढ़ की ठौड़ भी निश्चय की है? कहा भदाणा के पास गढ़ बांधने का विचार किया है। पिता बोला दिन भर में कुछ खाया भी? उत्तर दिया कि गंवारों के यहां खिचड़ी खाई है। पिता ने कहा तूने खिचड़ी खाई इसलिये तेरी सन्तान खीची कहलावेगी[1] और जो धरती उसने देखी थी वह उसको देदी, और भदाणा व जायल में गढ़ बंधवा कर दोनों जगह राजस्थान रखने की आज्ञा दी। माणकराव ने वैसा ही किया। माणकराव, अजैराव, चंद्रराव, लखमणराव, गोयंदराव, संगमराव, और गुंदलराव, पृथ्वीराज चौहान का सामन्त।

राजा पृथ्वीराज चौहान की राणी सुहवदे जोइयाणी अपने पति से रूठ कर पिता के घर आन बैठी थी, उसके पिताने राहू (गांव) की पहाड़ी पर पुत्री के लिये एक महल बनवा दिया। वह इतना ऊंचा था कि उसमें जलता हुआ दीपक अजमेर में नज़र आता था। जोइयाणी की आशनाई गुंदलराव से हो गई। गुंदल ने अपने गांव से उस महल तक एक सुरंग (गुप्त मार्ग) खुद-वाई जिसमें होकर वह जोइयाणी के महल में आया जाया करता था। एक बार पृथ्वीराज की दूसरी राणी अजयदेवी दहियाणी ने उस दीपक को देखकर अनुमान बांधा कि यहां अवश्य कोई मर्द आता जाता होवेगा और उसने यह बात पति को कही, तब अपनी चौकी के घोड़े पर सवार होकर पृथ्वीराज अचांचक सुहवदे के महल की ड्योढी पर जा पहुंचा और घोड़े से उतर पड़ा। द्वारपाल ने राणी के पास खबर पहुंचाई इतने में तो पृथ्वीराज भी महल में पहुंच गया। गुंदलराव तो तत्काल सुरंग के मार्ग से चलता बना परन्तु उसके पांव का जोड़ा वहां रह गया। प्रभात को जब पृथ्वीराज ने वह जोड़ा देखा तो सुहवदे से पूछा कि यह किसका है और यहां कौन मर्द आता है। थोड़ी देर तक तो वह टालमटोल का उत्तर देती रही परन्तु जब देखा कि सच कहे बिना चलेगा नहीं तो स्पष्ट कहदिया कि यहां गुंदलराव खीची आता है। यह सुनकर

---

(१) खिचड़ी खाने से खीची प्रसिद्ध होना तो भाटों की कल्पना मात्र ही मालूम देती है, सम्भव है कि या तो इनके मूल पुरुष का नाम खीचीराव हो या पहले खीची नाम के किसी गांव में बसते हों।

पृथ्वीराज पीछा अजमेर को लौट आया और दूसरे ही दिन दाहिम चामुण्डराज को फौज देकर जायल की तरफ खींचियों पर विदा किया[1]। गुंदलराव वहां से छोड़कर मालवे की तरफ भागा। मऊ मैदाना, गागरूण, वालाभेट, सारंगपुर गूंगोर, वार, वड़ोद, खाताखेड़ी, रामगढ़, चाचरणी के बारह गढ़ों पर डोडिये राजपूतों का अधिकार था। गूंदल ने उनको मारकर वे गढ़ उनसे छीन लिये और जायल में राजस्थान किया। गोरे की सन्तान ने खींचीवाड़े पर अधिकार जा जमाया, भदाणे में राव गालण का राजथान हुआ जिसने नागोर में गीदाणी का तालाव बनवाया। दोहा—"गीदा हुता भदाणिया, कूंगै जायलवाळ"।

कवित्त—खण्ड पूंगल खलभले, कोट मरवट्टां टळकै।
देरावर डिगमिगै, लसे वरिहाहा संकै।
लुद्रवो थरथरै, छेलपुर नेह संगट्टै।
बुट्टां अनै भाटियां, सास नीवट्ट नीवट्टै।
बीकमपुर बसै न वारही, धूजै घर पाटण पढ़ै।
गीदो रोद्र भदाणियो धाये सोमेई धढ़ै।

कहते हैं कि गीदा के अधिकार से पश्चिम की ओर ८४ गढ़ थे। गीदा का पुत्र महंगराव हुआ जिसका दोहा—

आंखड़ियां रतनालियां, मूंछ अवंदा फेर।
तिण भय कांपै गज्जणो, आगी दाणी केर।

गुंदलराव की सन्तानों में खीचीवाड़े में वड़े २ वीर हुए, उनमें धारू आनलोत बड़ा दातार और बड़ा जूझार था। सांखले सीहड़ ने अपनी पंगु पुत्री को छल से आनल को ब्याह दी, आना ने उसको सुहाग दिया और उसके पेठ से धारू का जन्म हुआ।

(१) यह 'सुहवदे' अंतिम पृथ्वीराज (चौहान) की राणी नहीं किन्तु पृथ्वीराज दूसरे (पृथ्वी भट) की राणी थी। मेवाड़ के जिले जहाजपुर के कसबे से ७ मील अग्निकोण में धोड़ गांव के एक मन्दिर के थंभे पर सं० १२२५ जेठ वदि १३ को अजमेर के राजा पृथ्वीराज (पृथ्वी भट) चौहान का एक लेख खुदा हुआ पण्डित गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा को मिला जिसमें पृथ्वीराज की राणी का नाम सुहवदेवी लिखा है जो रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है। मेवाड़ के जागीरदार बेगूं के रावत की जागीर के गांव मैनाल (महानाल) में सुहवदेवी के महल और उसी (,1 बनवाया हुआ सुहवेश्वर का शिवालय है जो वि० सं० १२२४ में बना था।

खीची आनल दुष्काल का मारा अपनी बस्ती समेत अपने सासरे डोडवाड़े डोड राजपूतों के यहां जाता था। मार्ग में कोटे के गांव सूरसेन में आकर उतरा। उसकी स्त्री सांखली गर्भवती थी, प्रसव काल आगया था। आना की दशा उस वक़्त अच्छी न थी, खाने के लिये पूरा खर्च भी पास नहीं था। वहीं सांखली को प्रसव वेदना हुई। डेरा डंडा तो पास कुछ था ही नहीं, निकट ही एक फूटा टूटा मंदिर था उसमें उसको जा रक्खी, जहां धारू का जन्म हुआ। उसको एक पीढ़ी (मुंजकी बणी हुई छोटी सी बैठने की चौकी) पर सुलाया। उस पीढ़ी के नीचे एक सर्प की बंबी थी जिसमें से सर्प ने निकल कर प्रथम तो उस बालक की प्रदक्षिणा की और एक मोहर पांच तोले सुवर्ण की उसके पास रख कर पीछा बिल में घुस गया। धारू की माता यह सब देखती रही, सर्प के जाने पर उसने मोहर लेली। प्रभात को आना ने अपनी स्त्री से आनकर कहा कि प्रिये! चलना पड़ेगा, साथ के लोगों के पास खाने को कुछ भी नहीं है। स्त्री बोली कि आज तो मुझसे चला नहीं जाता और वह सुवर्ण मुद्रा निकाल कर पति के हाथ में दी कि इससे काम चलाओ। आना प्रसन्न हुआ, उसने जाना कि यह अशरफी सांखली ने वक़्त बेवक़्त के वास्ते चुपके से अपने पास रक्खी होगी सो आज गुढ़ा के लोगों को लंघन होता जान कर मुझे दी है। दूसरे दिन भी वही सर्प उसी प्रकार परिक्रमा देकर एक मोहर रखगया। ऐसे पांच सात दिन तक सर्प आता और मोहर रखके चला जाता और सांखली उसे उठाकर अपने पति को देती रही। आठवें दिवस आना ने अपनी स्त्री से इसका भेद पूछा, उसने सारी बात कह सुनाई और यह भी कहा कि आज तुम भी आकर इस रचना को देखना। नियत समय पर आना आया और सर्प को निकल कर परिक्रमा करते व मोहर रखते देखा। जब वह पीछा बिलमें प्रवेश करने लगा तब आना ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और इस बालक के साथ तेरा क्या सम्बन्ध है कि तूं इसकी रक्षा करता है? सर्प ने मानुषी भाषा में उत्तर दिया कि पहले इस प्रदेश का राजा हूए बड़ा महाराजा हुआ था उसी का जीव इस बालक के रूप में तेरे घर अवतरा है। उस राजा के और मेरे बड़ी मित्रता थी, उसने मुझको तीस चरू अशर्फियों से भरे सौंपे थे वे इस मंदिर में मेरे बिल के पास अमुक स्थान में गड़े हैं। इतने दिन तक तो मैंने उनकी रखवाली की अब यह धन तेरे पुत्र का है सो तूं

खोद कर लेले, और तू यहीं गढ़ बांधकर रह, इधर उधर दूसरे स्थान में मत जा, यह सब प्रदेश तेरे बेटे पोतों के अधिकार में आ जावेगा। इतना कह कर सर्प तो चला गया और आना वहीं रहने लगा। उसने जाकर डोडों से वह जगह मांगी और उन्होंने भी स्वीकार कर लिया। धन निकाल कर उसने वहां गढ़ बधवाया। जब धारू सयाना हुआ तब उस धरती के स्वामी डोड थे। वह अपने मामा के पास जाकर उसकी सेवा करने लगा। भाञ्जे को सपूत देखकर मामा ने अपने राज्य का सारा भार उसी के सिर पर रख दिया और बादशाही चाकरी में भी डोडों के एवज धारू ही जाने लगा। डोड दिन दिन निर्बल पड़ते गये और खीचियों का प्रताप बढ़ा। बादशाह अकबर के समय तक तो खीची बड़े प्रबल थे, अकबर ने कछवाहे राजा भगवन्तदास (भगवानदास) के कुंवर मानसिंह को खीचीवाड़े पर भेजा और खीची रायसल और मानसिंह के दर्मियान युद्ध हुआ। खीची हारे और राव पृथ्वीराज हरराजोत, रायसल का चाकर राव देवीदास सूजावत का पोता, काम आया। उसके पीछे फिर एक बार बादशाह ने राव पृथ्वीराज कल्याणमलोत बीकानेर वाले को गढ़ गागरून बख़्शा था तब भी पृथ्वीराज और खीची राव में लड़ाई हुई थी परन्तु उसमें भी हार खीचियों ही की हुई। जब बादशाह जहांगीर ने खीचियों पर ख़फगी की और मऊ का परगना बूंदी के राव रत्नसिंह (हाडा) को इनाम में देकर हुक्म दिया कि इसे खोस लो! राव रत्न ने वहां २००० सवारों के अपने ४ थाने बिठा दिये और गांव अपने रजपूतों को बांट दिये। खीचियों ने कई बार राव से लड़ाइयां लीं। राव ने राठोड़ गोयंददास उग्रसेनोत और राठोड़ कान्ह रायमलोत को वहां रक्खे। अन्त में राव के आदमियो ने राजा शालिवाहन (खीची) को मारा, तब से दिन दिन खीची निर्बल पड़ते गये और हाडों का वहां जमाव होगया।

मऊ के परगने में १४०० गाव तिनमें से ७०० अगवाड़े के जहां भूमि समतल, और ७०० पिछवाड़े के जहां बहुत से झाड़ पहाड़ हैं। राव गोपाल मऊ मैदाने का स्वामी बांका बीर राजपूत बादशाही चाकर था। खीचियों का दूसरा इलाक़ा तो बहुत दिनों से छूट ही गया था परन्तु जब हाडों ने व बादशाही सेना ने चाचरणी लेना चाहा तो खीची राव बाघसिंह की माता, सिंघल राजपूतानी, गोपालदेवी ने शस्त्र बांधकर कई बार मुग़लों की व हाडों की सेना से युद्ध किया (अपने जीते जी चाचरणी पर शत्रु का अधिकार न होने दिया); जब वह मरी तब नवशेरीखां ने चाचरणी ली।

मोहिल चौहान।

(मोहिलों का राजथान छापर द्रोणपुर में था जो अब राठोड़ों के अधिकार में है) पहले यह छापर का परगना करके प्रसिद्ध था। पाण्डव कौरवों के समय में द्रोणाचार्य ने अपने नाम पर, छापर से दो कोस, द्रोणपुर बसाया, जिसे अब कालाडूंगर कहते हैं। उसकी तलहटी में नगर बसाया था। इस डूंगर से मिली हुई आठ तथा ९ पहाड़िया हैं। विनायक की डूंगरी, लहर डूंगरी, भैंसासिर की डूंगरी, देवीजी की डूंगरी, कोढ़णी डूंगरी, चरला की डूंगरी, चिमर डूगरी, काला डूंगर। छापर परगने में गांव १४०० लगते हैं। इतने स्थान छापर, लाडणू, कर्णावटी रिणी के परली तरफ हैं। करणावटी कीरत आहेड़ोत की ठौड़, पहले पाण्डव कौरवों के समय में भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य के थी। फिर द्रोणपुर शिशुपाल वंशी डाहलिये पंवारों के रहा, उस वक्त वागड़ी राजपूतों का इलाक़ा नागोर था जहा उनका बड़ा मेवासा था। वे बड़े राहबेधी राजपूत थे। डाहलियों और वागड़ियों में परस्पर शत्रुता हुई और वागड़ियों ने उनको मारना चाहा। वे सेना सजकर चढ़ धाये, डाहलिये भी मुक़ाबले पर आये, युद्ध हुआ जिसमें डाहलियों के ६०० आदमी मारे गये और शेष ने भाग कर प्राण बचाये। इलाक़ा वागड़ियों के हाथ आया, उन्होंने उसे बसाया और अपनी जमैयत बढ़ाकर प्रबल पड़ गये। सं० ६३१ (वि०) तक द्रोणपुर उनके अधिकार में रहा।

पूर्व दक्षिण के बीच श्रीमोर नामी परगना है जहां सजन चौहान राज करता था, राणा सजन के ज्येष्ठ पुत्र का नाम मोहिल था। पिता पुत्र में परस्पर प्रेम न होने से मोहिल ने विचार किया कि कोई नई भूमि लेनी चाहिये। वह एक वीर प्रकृति का राजपूत था। अपने विश्वासपात्र दो पुरुषों को यह समझाकर विदा किये कि अमुक ओर जाकर कोई प्रदेश देख आओ, यदि कोई स्थल अपने हाथ लगे ऐसा निगाह में चढ़ जावे तो सूचना देना। दोनों राजपूत इसी खोज में फिरते फिरते छापर द्रोणपुर आये, वह जगह उनके मन भाई और उसके लेने में भी विशेष कठिनाई उनकी दृष्टि में न आई, क्योंकि वहा गढ़ में मनुष्य थोड़े ही थे। पीछे आकर उन्होंने मोहिल से सब हक़ीकत कही। वागड़ियों के पांच सहस्र मनुष्यों की जोड़ थी मोहिल ने भी सोलह

बहै अजीत जिस्या वैराई, वसुधा राव जोधै वसाई।
रूके वछो सिंघारो राणो, थापे जोधो छापर थाणो॥
बीदो बांको दुरग वसायो, अेतहथो राव जोधे आयो।
सिरे फेर वांस सवां सिर, गढ़ बीदो तपियो द्रोणगिर॥
केवी बीदे धरोधर कीधा। लिया देसग्रास दंड लीधा।

दोहा—चारण चांपै सोमौर के कहे हुए:—

सेलहथा देव डाण सह, गोरांहां गीलांह।
बाघोड़ा बंगाह वरण, पकै गोत इतांह॥
सोनगरा हाडा सकल, रासासिया निरवाण।
चाहिल मोहिल खीचिया, पता सौह चौहान॥
चाह हुवो चौहानरै, प्रथमी गढ़ जस पूर।
चक्रवत उदयो चाहरै, समवड मघवन सूर॥
मुहि पड भीच प्रवाड मल, भूवल आपण भाव।
सिंघ हुवो घणसूररै रूपक वंस इंद्रराव॥
पात वड़ा सारी प्रथी, जपै सदा जस जीह।
रढ रावण इंद्ररावरै, उदियो अजाना वीह॥
पूर वली पण पालया, सुरताणां गहचंत।
अजव तणो वंस ओपियो, सजन हुवो सामंत॥
सुयस किया खेड़ा सकल, चक्रवत चवदह चाल।
तपियो (मोहिल) महपती, सजनतणो सींगाल॥
रेणा कीधी आपरी, सह अचसाले सत्र।
मोहिल तण उदियो मछर, दीपक वंस हरदत्त॥
रण वड़ मच्छल राखवां, आपण पाण अबीह।
दल नायक हरदत्तरै, सोहे वंस वरसीह॥
कुल दीपक चढ़ती कला, सुत वरसीह सुचाव।
हाथालो जुग पुड़ हुवां, राणो वालहराव॥
राज वंस रारेहलो चूको जाय सुचह्न।
डाहल रो टीको वडम, ले दीयो आसह्न॥
अतुलित बल रावण अवड़, भुजा निबाहण भार

आलणरै अड़ियो अभंग, आहड़ दल उजार ॥
सह मेवाड़ी संकिया मूपत जारे मांह ।
आहड तर तपियो इला, साहूलो सिरनाह ॥
सुरहे चवडे चालते, जीने अमर जुवाह ।
साहणनत रिणलीहरो, पतगरियो पतसाह ॥
वरहट अब वड (मंडरा), हुवा मुरधा दह ।
पाट सु साहरपात रै लाज सुजै लोहट ॥
धरकै खत दूदैधरा, अड़त वरवै आंप ।
लोहट पाट विराजियो राजन वोलो राण ॥
सिरां टहू साधज हवै, जग नालन लग जेत ।
वैले गाडी वोवडत, वेगो वंस वतेन ॥
छावर धरी छवपति सामन्त वेग सुजाव ।
धर लागा दल धूपटे धरो मालकराव ॥
राव चोहलां सोहिनां, नपं चढ़ावै नीरं ।
धरा मालकरावरै सांगो पाट सधीर ॥
सोहै चवडे चात से, टेवींजे मुव लाज ।
सांगारी सुगढ़ , धरा तपै वछराज ॥
साह सिकंदर संकियो, ठेले सुरां सिरजोड़ ।
रूप गाडी वछराजरो नेथो वंस मुनोड़ ॥
मोहिल साना मोहिरी, उल गाहक गुण आण ।
सकवी पालक चौर सर नेथावत महाराण ॥
मोहिल जीधा मांगणा हित शखै वरजाल ।
वेरावत कुल वावडे जीपक आलवजाल ॥
परवाड़ियो या जग प्रथी, कलहंस वारे काल ।
जात पेर हद जो घरे, वेणो वंस पर धाल ॥
सांगाळो कुल मैं सदा, जुधवे लाख गजेत ।
चाल न चूकै रामचंद, देणावत वानेत ॥

अजीतसिंह सामंतसिंहोत बड़ा वीर क्षत्रिय हुआ राव जोधा ने उस को अपनी कन्या राजबाई ब्याही थी। अजीत अपने मुसाल मंडोवर गया हुआ

था, उन दिनों में राव जोधा बड़ा ज़बर्दस्त था और मोहिल उसके बड़े सगे थे, जिनके पास धरती बहुत थी। राव ने मोहिलों से भूमि लेने का विचार किया परन्तु प्रबल अजीतसिंह के रहते वह प्रदेश हाथ नहीं आ सकता था। तब राव ने (अपने जामाता) अजीत को मार डालने का मंसूबा बांधा,। राव की राणी भटियाणी अजीत की सास को अपने पति के प्रयत्न का पता लग गया, उसने अजीत के खवास प्रधानों को गुप्त रीति से कहलाया कि रावजी तुम्हारे साथ चूक करेंगे और अब जो तुम यहां रहे तो दुःख पाओगे। प्रधानों ने शोचा कि अजीत भागना तो जानता ही नहीं यदि यह भेद उस पर खोल दिया जावे तो वह कदापि यहां से न टलेगा, अतएव किसी प्रकार छल करके उसको यहां से ले चलना चाहिये। सबने मिलकर कहा कि छापर से आदमी आये वे कहते हैं कि यादवों की सेना राणा वछराज सांगावत पर चढ़ आई है और उसे घेर रक्खा है, उसने कहलाया है कि मेरे मरने के पूर्व यदि तुम मेरी सहायता को पहुंच सको तो शीघ्र आना। यह सुनते ही अजीत नक़ारा बजवा कर सवार हुआ। राव जोधा ने नक़ारे का शब्द सुना और पूछा कि यह कहां बजा है। किसी ने उत्तर दिया कि अजीतसिंह सवार होकर गया है। जोधा ने जान लिया कि उस पर चूक का भेद खुला, और जो वह जीता बचकर गया तो पीछे दुःख देवेगा। तुरन्त राव ने उसका पीछा किया, द्रोणपुर से कोस ३ और छापर से कोस ५ पर उसे जा लिया। अजीत ने अपने आदमियों से पूछा कि यह अपने पीछे किसका साथ आता है? तब उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि राव जोधा ने तुम पर चूक करने का इरादा किया था, उसकी खबर राणीजी को होगई और उन्होंने हमें कहलाया कि जमाई को लेकर भागो, तब हमने तुमसे बात बनाकर कही और वहां से ले आये, अब रावजी ने पीछा किया है। यह बात सुनते ही अजीत बहुत बिगड़ा, कहा रे! तुमने मेरी बीरता में बट्टा लगा दिया। फिर वह अपने साथियों समेत खड़ा रह गया, रावजी ने भी घोड़े बढ़ाये, दोनों अनियां मिलीं, और लगा लोहा बजने। खूब युद्ध हुआ और अजीत अपने ४५ राजपूतों सहित खेत पड़ा, उसकी स्त्री उसके साथ सती हुई। यह लड़ाई गांव गणोड़े में हुई थी।

राठोड़ों और मोहिलों में बड़ा बैर बंध गया। इस घटना के एक वर्ष पीछे राव जोधा ने अपने भाई बेटों को इकट्ठे कर मोहिलों पर चढ़ाई की, राणा वछराज

सांगावत १७६ साथियों समेत मारा गया राव जोधा की जीत हुई और मोहिलों ने खेत छोड़ा। दोवाराव का पुत्र मेघा वहां से निकल गया, और छापर के इलाके में राव जोधा का अमल हुआ, परन्तु मेघा ज़ोरावर था, उसने देश बसने नहीं दिया और राठोड़ों पर रात को छापे मारने लगा। राव जोधा ने जान लिया कि मेघा जबतक जीवित है तबतक बसुधा बसने की नहीं, दो साल राव वहां रह कर पीछा मंडोर चला आया और उसके पीठ फेरते ही मेघा छापर द्रोणपुर में आ जमा। वह बड़ा तलवार का धनी साहबेगी और ज़बर्दस्त आदमी था राव ने कई उपाय उसको मारने के किये परन्तु कुछ काबू न चला। थोड़े वर्ष पीछे मेघा का शरीर छूट गया तब उसके भाई बन्धु माल के वास्ते परस्पर लड़ने लगे और देश के १८ भागों में विभक्त होजाने से उसका बल जाता रहा। राणा मेघा के पाट राणा वैरसल बैठा। वह एक निर्बलसा ठाकुर था और भाई बन्धु सबल। राणा वैरसल चित्तोड़ के राणा कुम्भा का दोहिता और उसका छोटा भाई नरबद रावत कांधल (राठोड़) रिणमलोत का नाती था। अब मोहिलों के भाइयों भाइयों में सदा परस्पर लड़ाइयां होने लगीं, जिनमें बहुतसे कट मरे, उस वक्त राव जोधा ने देखा कि अब ये निर्बल होगये हैं और यह अवसर अच्छा है, तब फिर कटक लेकर आया। राणा वैरसल व नरबद अपनी अपनी बस्ती लेकर बिना युद्ध किये ही चल निकले कितनेक दिन तो फतहपुर, झुंझरूं और भटनेर में रहे और पीछे मेवाड़ में राणा कुम्भा के पास चले गये। एक अर्से तक तो वहां रहे और फिर विचारा कि अब हमें यह तो आशा नहीं कि हम अपने बल से अपनी भूमि पीछी लेसके, इसलिये किसी सबल की शरण लेना चाहिये, तब नरबद मेघावत और राठोड़ बाघा कांधलोत दोनू मामा भाणे सलाह करके देहली के लोदी बादशाह की हजूर में जाकर पुकारे, बादशाह ने उनको ढाढस बंधाई, इन्होंने भी दस ग्यारह मास अच्छी सेवा बजाकर बादशाह को खुश कर लिया। लोदी शाह ने सारंगखां पठान को पांच हजार सवार देकर इनकी कुमक पर भेजा। सारंगखां को साथ लिये नरबद व बाघा झुंझरूं के पास पहुंचे, वहां राणा वैरसल भी इनसे आन मिला। छः हजार सेना से राव जोधा ने भी संमुख मोर्चे आ जमाये, दोनों तरफ जंग की तय्यारियां होने लगीं। उस वक्त राव ने बाघा राठोड़ को गुप्त रीति से अपने पास बुलाया और कहा "शाबाश भतीजे! मोहिलों के वास्ते तूं अपने भाइयों पर तलवार उठाकर भोजाइयों और स्त्रियों को कैद करावेगा"।

तब तो बाघा के मन में विचार बंधा कि मोहिलों के वास्ते भाइयों को मारना उचित नहीं है और राव को कहा कि "मैं आपके शामिल हूं, वही काम करूंगा जिसमें आपको लाभ हो, और चिता दिया कि मोहिलों के घोड़े अति दुर्बल हैं इसलिये मैं उनको पैदल लड़ाई करने का मंत्र पढ़ाऊंगा। पठान सवार होकर लड़ना स्वीकारेंगे, तब पैदल मोहिलों की अनी बांई तरफ और पठान दाहिनी तरफ रहेंगे। आप पहले मोहिलों पर ही घोड़े उठाना तो वे भाग निकलेंगे फिर तुर्कों पर हाथ साफ करना"। ऐसी सलाह करके बाघा पीछा फिरा, मोहिलों से मिल कर लड़ाई का ठाट जमाया और लोहा बजने लगा। राठोड़ उन पर टूट पड़े, वे पैदल थे, उनका हमला न संभाल सके और निकल भागे। पीछे सारंगखां से ठनी, ५५५ पठान खेत पड़े, सारंग मारा गया और कई घायल हुए, खेत जोधा के हाथ रहा। द्रोणपुर में रावजी का जमाव होगया, वैरसल पीछा मेवाड़ को गया, और नरबद फतहपुर के पास पड़ा रहा। राव जोधा ने अपने कुंवर जोगीदास को द्रोणपुर में रक्खा और आप मंडोर को लौट गया। जोगीदास भोला भाला आदमी था उससे वह इलाक़ा न सम्भला, मोहिल पीछा दख़ल करने लग गये, जगह जगह से प्रजा की पुकार आने लगी, तब जोगीदास की ठकुराणी झाली ने अपने श्वसुर को कहलाया कि "आपके पुत्र योग्य नहीं हैं, कठिनता से प्राप्त की हुई पृथ्वी पीछी जाती है, सो आप इसका उचित प्रबन्ध कीजिये" तब राव जोधा ने राणी सांखली नवरंगदे के पुत्र बीदा को, जो कुंवर बीका का छोटा भाई था, द्रोणपुर दिया और जोगीदास को पीछा बुला लिया। विदा होते वक़्त बीदा को कहा कि "बेटा देखें कैसा उत्तम प्रबंध करता है।" पिता के चरण छूकर बीदा द्रोणपुर पहुंचा, अच्छा अमल जमाया।

मोहिलों में परस्पर फूट चल रही थी, सो उनको पट्टे दे देकर बीदा ने अपनी चाकरी में ले लिये। सिंगट जगराम के पुत्र और जवणसी के पौत्र ने बीदा के पास अपनी कन्या के सम्बंध के नारियल भेजे और बेटी ब्याह दी। वह धनाढ्य आदमी था, एकसौ घोड़े, २०० ऊंट और एक लाख रुपये का माल बीदा को दहेज में दिया। मोहिलाणी पर पति की पूरी कृपा होने से जवणसी ने कितनेक मोहिलों को, जिनके साथ उसकी अनबन थी, देश से निकलवा दिये। सं० ६३१ में बागड़ियों से मोहिलों ने धरती ली थी, नौसौ बरस तक छापर द्रोणपुर का राज मोहिलों के अधिकार में रहा और सं० १५३२ में उनसे

राठोड़ों ने वह प्रदेश लिया। केवल च्यार या पांच महीने ही उनका आधिपत्य वहां रहा होगा कि कुंवर मेघा वछराजोत ने अपनी भूमि पीछी ले ली। मेघा के मरने पर राणा वैरसल नरवद से फिर राव जोधा ने छापर द्रोणपुर छीन लिया और अपने पुत्र बीदा को वहां का राज दिया। उसकी सन्तान बीदावतों का अब तक उस पर अधिकार है।



कायमखानी।

ये दरैरे के निवासी चौहान थे। हंसार का फौजदार सैय्यद नासिर उन पर चढ़ आया, दरैरा लूटा, वहां की प्रजा भागी और केवल दो बालक, एक चौहान और दूसरा जाट, गांव मे रह गये। फौजदार ने उन दोनों को अपने महावत के सुपुर्द किये और हिसार आकर उन्हें अपनी बीबी को दे दियें। वह उनको बेटों की तरह पालने लगी। जब वे दस बारह वर्ष के हुए तब हांसी के शेख़ के पास रख दिये। सैय्यद नासिर मरगया, तब उसके लड़के बादशाह बहलोल लोदी की हजूर में भेजे गये। बादशाह की निगाह में सैय्यद नासिर के लड़के वैसे योग्य न ठहरे जैसे चौहान और जाट के लड़के थे। चौहान का नाम बादशाह ने कायमखां रक्खा और उसे सैय्यद नासिर का मंसब बख़्शा। दूसरे (जाट) का नाम जैनू देकर उसे भी कुछ जागीर दी। जैनू के वंश के थोड़े से जैनोत (जैनंदोत) झुंझणूं फतहपुर में हैं। कायमखां हिसार का फौजदार हुआ, तब उसने अपने लिये कोई ठिकाना बांधना विचारा। झुंझणूं का स्थान उसके चित्त पर चढ़ा और वहां के चौधरी को बुलाकर कहा कि यदि तुम्हारी इजाज़त हो तो हम यहां अपने रहने को एक मकान बनवालें। चौधरी ने कहा "बहुत अच्छी बात है, यहां आबादी करो, परन्तु इस स्थान के साथ मेरा भी कुछ नाम रहना चाहिये"। चौधरी का नाम झूंझा था, इसी से कस्बे का नाम झुंझणूं दिया। झुंझणूं की भूमि ही में फतहपुर बसाया। उसी कायमख़ां के वंश के कायमख़ानी कहलाये। जब अकबर बादशाह ने माडण कूंपावत को झुंझणूं बख़्शी तो फतहपुर भी उसी के साथ गया जो गोपाल सूजावत कछवाहे की जागीर में था। वहां कायमखानी भूमिये के तौर रहते और ठेका देते थे। पीछे

जहांगीर बादशाह के चाकर हुए, और पीछे क़ासमख़ां और अलमख़ां झूंझणूं वाले के चाकर रहे। दोहा—

पहली तो हिन्दू हुता, पाछे हुवा तुरक़, ता पीछे गोले भये, तातें घडपण तुक्क।
आये काम आवै नहीं, क्यामखानी गन्दे, वन्दी आद जुगाद के, सैदनासर हन्दे॥

बात पताई रावल साकायत की—बेगड़ा महमद गुजरात का बादशाह पताई रावल पर चढ़ आया[1]। बारह वर्ष तक पावागढ़ का घेरा रहा, फिर रावल के साले सइया वांकलिया ने बादशाह से साज़िश करली। सइया पर रावल का बड़ा भरोसा था और गढ़ की क़ुञ्जियां भी उसी के हाथ थी। उसने महमद से कहा कि जो मुझ को सब के ऊपर करदो तो गढ़ की क़ुञ्जी देता हूं। बादशाह ने (उसकी बात को स्वीकार) वचन दिया तब उसने क़ुञ्जियां देदीं। पताई रावल को खबर हुई कि गढ़ भिलगया है तब उसने अपनी राणियों और ज़नाने की दूसरी स्त्रियों को कहा कि जोहर करो। राणिया बोलीं 'हम भी राजपूतानियां हैं, गढ़ के नीचे लकड़ियां जला कर धधकती हुई ज्वाला तैयार करो, हम गढ़ पर चढ़ जावेंगी और ज्यों ज्यों तुम काम आते जाओगे त्यों त्यों हम भी आग में कूद कूद कर भस्म होती जावेंगी'। गढ़ के जाते ही राजपूत काम आने लगे, उस वक़्त सइया वांकलिया बादशाह को दिखलाने लगा कि यह अमुक राजपूत खेत पड़ा और उसकी स्त्री आग में कूदी। यह देख कर बादशाह कहने लगा "शाबाश इन राजपूत और राजपूतानियों को"। जब सब राजपूत जूझ जूझ कर काम आचुके और राजपूतानियां आग में ऊपर से कूद कूद कर जल मरीं, तब सइये वांकलिये को शाबासी देकर बादशाह गढ़ में आया और कहा

---

(१) जब हमीरदेव चौहान को मारकर सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने रणथम्भोर लिया तो हमीर का पुत्र रामदेव गुजरात की ओर गया और पावागढ़ के पास का प्रदेश जीत चांपानेर में राज जमाया। रामदेव के पीछे चांगदेव, चाचिगदेव, सोमदेव, पाल्हणसिंह, जैतकरण, क़ुंपूरावल, वीरधवल, शिवराज, राघोदेव, त्र्यंबकभूप, गंगराजेश्वर, और राजाधिराज जयसिंहदेव क्रमवार चांपानेर की गद्दी पर बैठे। जयसिंहदेव पाताई रावल के नाम से प्रसिद्ध था। सं० १५३६ में गुजरात के सुलतान महमूद बेगड़ा ने चांपानेर लिया और डूंगरसिंह प्रधान के सहित राजा जयसिंहदेव कैद होकर कत्ल किया गया। जयसिंहदेव का बेटा रायसिंह पहले ही मरगया था, उसके दो बेटे थे पृथ्वीराज और डूंगरसिंह। पृथ्वीराज ने छोटे उदयपुर में और डूंगरसिंह ने बारिये में अपना राज जमाया। नैणसी ने अपनी ख्यात में "किला

कि धन दौलत वतला दे! उसने वताया। फिर जो जो राजपूत काम आये थे उनके मस्तक काट कर इकट्ठे किये और सइये का भी सिर उड़ा कर उन सब

फतह हुआ तिणरी बात" इस मद में तो ऐसे लिखा है कि स० १५६२ श्रावण शुदि ११ को हुमायू बादशाह चांपानेर आया, राव प्रतापसी चौहान जोहर कर काम आया।

इस ख्यात में चौहानों के मूल राजस्थान साभर अजमेर के नरेशों का कुछ भी वृत्तान्त नहीं दिया है अतएव आधुनिक शोध के अनुसार उनका बहुत ही सक्षेप वर्णन कर देना उचित समझ कर चन्द सतरें लिखदी जाती हैं।

चौहान नाम इस वंश के मूल पुरुष चापमान या चाहमान का पर्याय है। राजस्थान के इतिहास में इस वंश की प्रसिद्धि का पता विक्रम की छठी शताब्दी के पीछे ही लगता है। वास्तव में ये कौन और कहा के थे इसका उत्तर निश्चित रूप से देने को कोई प्रमाणभूत साधन अबतक उपलब्ध नहीं हुआ है केवल इतना जाना जाता है कि इनकी प्राचीन राजधानी अहिछत्रपुर (नागोर) और इनकी पदवी सपादलक्षीय थी।

वर्त्तमान समय में तो चौहान, परमारों के सदृश्य, अपने को अग्निवशी मानते और अर्बुदाचल पर वशिष्ठ ऋषि के अग्निकुण्ड में से अपने मूल पुरुष चाहमान का उत्पन्न होना कहते हैं, परन्तु यह भ्रान्ति पदरवीं शताब्दी के पीछे वने हुए पृथ्वीराज रासे नाम के ग्रंथ से फैली है, नहीं तो प्राचीन शिलालेख, पृथ्वीराज के दरबारी कवि की लिखी हुई पृथ्वीराज विजय नामी पुस्तक व हमीर महाकाव्य में तो चौहानों को सूर्य्यवशी या पुष्कर में सूर्य्य के योग से उत्पन्न होना लिखा है, और कर्नल टाड ने उनका गोत्रोचार दिया उससे वे सोमवशी सिद्ध होते हैं, ऐसे ही कई दूसरे लेखों में भी उनको सोमवशी लिखा है।

चापमान के उत्तराधिकारी वासुदेव को एक विद्याधर की सहायता से शाकम्भरी का आधिपत्य प्राप्त हुआ। वासुदेव के पीछे सामन्तराज, जयराज या अजयपाल, विग्रहराज या बीसलदेव क्रमश. साभर की गद्दी पर वैठे। विग्रहराज के दो पुत्र चामुण्डराज और गोपेन्द्रराज थे। चामुण्ड का पुत्र दुर्लभराज गौड़ों से लड़ा और दुर्लभ का पुत्र गोविन्दराज या गूवक, मण्डोर के पडिहार वशी राजा नागभट्ट या नागावलोक का समकालीन था जिसका एक लेख स० ८७२ वि० का मिला है। गूवक का पुत्र चन्द्रराज और चन्द्रराज का गूवक दूसरा हुआ, जिसने अपनी कन्या कलावती का विवाह स्वयम्बर द्वारा किया था। गूवक दूसरे का पुत्र चन्दनराज जिसने रुद्रेण तवर राजा को युद्ध में परास्त कर मारा। इसकी राणी ने पुष्कर में एक सहस्त्र शिवलिङ्ग स्थापन किये। चन्दन या चन्द्र का पुत्र वाक्पतिराज या बप्पयराज बड़ा योद्धा था, १८८ लड़ाइयां जीतीं। इसके तीन पुत्र सिंहराज, लक्ष्मण या लाखण, और वत्सराज थे। सिंहराज साभर का राजा हुआ, लाखण ने नाडूल में जुदा राज स्थापन किया और वत्सराज को दूसरी जागीर मिली। सिंहराज का राज समय स० १०१० वि० के लगभग था। तवरों ने लवण नामी राजा की सहायता लेकर उस पर चढ़ाई की परन्तु पराभव हुए। वह म्लेच्छों (मुसलमानों) से भी लड़ा था। सिंहराज के पुत्र विग्रहराज

सिरों के ऊपर रख दिया। बादशाह बोला कि "मेरा क़ौल पूरा हुआ, इसने

या वीसलदेव दूसरा और दुर्लभराज थे। विग्रहराज स० १०१२-१३ वि० में पाट बैठा, नर्बदा तक देश विजय किया, गुजरात के प्रथम सोलङ्की राजा मूलराज को कथाकोट में भगाया, अणहिलवाड़े के पास वीसलपुर का नगर बसाया और भरोंच में आसापूरा देवी का मंदिर बनवाया। उसका एक लेख स० १०३० आषाढ़ सुदि १५ का शेखावाटी में हर्ष-नाथ के मंदिर में मिला है। दुर्लभराज दूसरा या दुर्लभ विग्रहराज का भाई। वाक्पति-राज गोविन्द का पुत्र, इसने आघाटपुर (आहाड़ मेवाड़ की पुरानी राजधानी) के गुहिल राजा अम्बाप्रसाद को मारा। इसके दो पुत्र चामुण्डराज और वीर्यराम।

वीर्यराम—स० १०४० वि० में, इसके भाई चामुण्डराज ने नरवर में विष्णु का मन्दिर बनवाया। वीर्यराम के पुत्र-विग्रहराज और दुर्लभराज। दुर्लभराज तीसरा या वीरसिंह, मुसलमानों के मुक़ाबले में मारा गया। इसकी सहायता से मालवे के राजा उदयादित्य परमार ने गुजरात के सोलङ्की राजा करणदेव को जीता था। विग्रहराज या वीसलदेव तीसरा-वीसलदेव रासे में लिखा है कि वीसल ने भोज की कन्या राजमती से विवाह किया था। पृथ्वीराज (प्रथम) स० ११६२ वि० में था। सातसौ सोलङ्की राजपूत पुष्कर लूटने को आये थे उनको युद्ध में मारे। राणी का नाम रासलदेवी जो जैन यति अभयदेव मलधारि की शिष्या थी। अजयराज या जयदेव या अजयदेव या अल्हण, पृथ्वीराज का पुत्र, स० १२०० के लगभग हुआ। अजमेर नगर बसाकर राजधानी बनाया, एक गढ़ भी वहां तैयार कराया, चाचिग, सिंधुल, और यशोराज नामी तीन राजाओं को युद्ध में मारे, मालवे के राजा के सेनापति सोल्हण को क़ैद कर अजमेर लाया। राणी का नाम सोमलदेवी जिसने अपने नाम का जुदा सिक्का चलाया था। अजयराज ने मुसलमानों से युद्ध कर उन्हें परास्त किये थे। पुत्र अर्णोराज। अर्णोराज या आनलदेव या अग्निपाल स० १२०७-८ वि०। इसके दो राणियां थीं—मारवाड़ सधवा जिसके पेट से जगदेव और वीसलदेव उत्पन्न हुए; दूसरी काञ्चन देवी गुजरात के सोलङ्की राजा जयसिंह सिद्धराज की कन्या, जिसने सोमेश्वर से जन्म लिया। सिंध देश की ओर से तुर्कों ने चढ़ाई की परन्तु हार खाकर भागे और इस फतह की यादगार में आनलदेव ने आनासागर तालाब अजमेर में बनवाया। गुजरात के सोलङ्की राजा कुमारपाल ने स० १२०७ वि० के लगभग अर्णोराज पर चढ़ाई कर उसे पराजित किया था। उसके पुत्र जगदेव ने उसे राज के लोभ से मारडाला। जगदेव भी विशेष राजसुख भोगने न पाया था कि उसके भाई वीसलदेव ने राज उस से छीन लिया। वीसलदेव चौथा, चौहानों में यह राजा बड़ा प्रतापी और विद्वान् हुआ। स० १२०८ वि० में तवरों से दिल्ली का राज लिया और मुसलमानों से कई लड़ाइयां लड़ कर उन्हें देश से निकाल दिये। दिल्ली की लाट पर इसका एक लेख स० १२२० वि० वैशाख शुदि १५ का है। अजमेर नगर में जो प्रासाद अब अढाई दिन के झोंपड़े के नाम से प्रसिद्ध है वह वास्तव में वीसलदेव की बनवाई हुई नाटकशाला थी जिसमें उस नरेन्द्र का रचा हुआ हरिकेली नाम का नाटक, और राज कवि सोमेश्वर रचित ललित विग्रहराज नाटक शिलाओं पर खुदे हुए हैं।

जिसका अन्न खाया था उसका ही न हुआ तो हमारा क्या होगा "। बादशाह ने गढ़ लिया।

अमर गाङ्गेय, वीसलदेव का पुत्र, जब गद्दी बैठा तब बालक था इसलिये जगदेव के पुत्र पृथ्वीभट ने उससे राज छीन लिया। पृथ्वीभट या पृथ्वीराज दूसरा, इसका एक लेख सं० १२२४ वि० माघ शुदि ७ शनिवार का मिला है। देहान्त सं० १२२६ वि०।

सोमेश्वर–अर्णोराज का पुत्र सिंहराज का दोहिता। इसकी माता बाल्यावस्था में इसे लेकर शत्रुओं के भय से अपने पीहर चली गई थी। उसका विवाह त्रिपुर या चेदी के कलचूरि राजा की कन्या कर्पूरदेवी से हुआ था जिसके पेट से प्रसिद्ध पृथ्वीराज और हरीराज दो पुत्र उत्पन्न हुए। पृथ्वीभट के मरने पर वह अजमेर के राजसिंहासन पर बैठा। अजमेर में वैद्यनाथ और त्रिमूर्ति के विशाल देवल बनवाये, कोकनदेश के राजा मल्लिकार्जुन से युद्ध कर खड्ग प्रहार से उसकी भुजा काटी। सं० १२३६ वि० के लगभग देहान्त हुआ।

पृथ्वीराज चौहान तीसरा–दिल्ली अजमेर का अन्तिम महाराजाधिराज हुआ। उसके समय में चौहानों के विस्तीर्ण राज की सीमा उत्तर में लाहौर और दक्षिण में विन्ध्याचल तक थी, करीब २ सारा राजपूताना चौहानों के आधीन था। पृथ्वीराज ने चन्देल राजा परमार्दिदेव को जीता, प्रसिद्ध आल्हा ऊदल इसी राजा के सामन्त थे। सुलतान शिहाबुद्दीन गोरी ने पृथ्वीराज पर चढ़ाई की, भिटण्डे का गढ़ लिया, परन्तु पृथ्वीराज से युद्ध होने पर सं० १२४७ में शिकस्त खाकर घायल हुआ और भागकर पीछा गोर को चला गया। दूसरे साल फिर ताजा फौज लेकर आया, पृथ्वीराज भी १५० राजा व रावों के साथ असंख्य दल लेकर मुकाबले को गया, तराइन के मुकाम युद्ध हुआ और पृथ्वीराज पराजित होकर कैद होगया और उसके गले पर छुरा चलाया गया। उसके पुत्र गोविन्दराज को अजमेर का राज दिया, परन्तु गोविन्दराज के काका हरीराज ने उससे अजमेर लेलिया और गोविन्द रणथम्भोर में जा रहा। अन्त में कुतबुद्दीन ऐबक ने सं० १२५० में दिल्ली अजमेर हरीराज से छीनकर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया, गोविन्दराज की सहायता कर लड़ाई में हरीराज को मारा। हरीराज का एक लेख सं० १२५१ का अजमेर इलाके के टाटोई गाव में मिला है। गोविन्दराज की सन्तान रणथम्भोर में राज करती रही। राजा हमीरदेव चौहान को सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने सं० १३५८ वि० में विजय कर मारा और रणथम्भोर लेलियां।

नैणसी अपनी ख्यात में एक जगह लिखता है कि " सं० ११२७ दिल्ली मे तुरकाणा हुआ, चौहान रतनसी जोहर कर काम आया, गजनी से बादशाह सहाबदी ने आकर दिल्ली ली।" यह लेख बिल्कुल विश्वास के योग्य नहीं, किसी ने नैणसी को ऐसा कह दिया होगा वही उसने अपनी याददाश्त में दर्ज कर दिया।

प्रकरण तीसरा

सोलंकी वंश (चालुक्य या चौलुक्य)

सोलङ्कियों की शाखा—सोलङ्की, वाघेला, खालत, रहवर, वीरपुरा, खैराड़ा, घहैला, पीथापुरा, सोभतिया, डहर सिंध में तुर्क होगये, रूभा तुर्क होगये ठट्टे की तर्फ हैं। भूहड़, सिंध में तुर्क होगये। सोलङ्कियों की उत्पत्ति पहले चौहानों के वर्णन में अग्नि कुण्ड से दी है।

सोलंकियों की वंशावली—आदि नारायण, जुगादि ब्रह्मा, ब्रह्मऋषि, धूमऋषि, चाच, वालग सुकर, अर्जुन, अजयपाल, देवपाल, राज (राजि) मूलराज।

सोलंकी पाटण (अणहिलवाडे) में आये जिसकी कथा—टोडे के स्वामी सोलङ्की राजा के दो पुत्र राज और बीज थे, जब उनका पिता मर गया तब दूसरे छिमात भाइयों ने उनसे राज छीन लिया और इन दोनों भाइयों को वहां से निकाल दिये। वे अपने थोड़े से साथ से चलकर कहीं आस पास जा ठहरे। बड़ा भाई बीज जन्म से ही अंधा और छोटा राज बालक था। भाइयों ने वहां उनकी कुछ भी पूछ न की, तब उन्होंने विचारा कि अब यहां रहने से तो कोई लाभ नहीं चलो द्वारिका की यात्रा ही करें। कई दिनों तक चलते चलते पाटण (अणहिलपुर) जाकर उतरे। वहा चावड़े राज करते थे। उसी अर्से में राजा की घोड़ियों को चरवादार न्हलाने के वास्ते तालाब पर लाये। इनका डेरा ताल की पाल पर ही था, जब साईस घोड़ियों पर चढ़े हुए इनके पास से निकले तो बीज एक घोड़ी की प्रशंसा करके कहने लगा कि इस नीली के क़दम बहुत अच्छे पड़ते हैं। यह सुन कर साईस ने उसकी ओर देखा और कहने लगे कि भाई! यह तो अंधा है, इसने घोड़ी का रंग कैसे पहचाना। इतने में घोड़ी ने पग धीमे कर दिये तो साईस ने उसके चाबुक फटकारा, चाबुक का शब्द सुनते ही बीज को क्रोध आया और साईस को गाली देकर कहने लगा कि अरे कम्बख़्त तूने लाखीणे बछेरे की एक आंख फोड़ डाली। साईस बड़बड़ाने लगा कि यह अंधा क्या बकता है और घोड़ी को तालाब पर ले आया। उसी

घोड़ी ने रात को बछा दिया जिसकी सचमुच एक आंख फूटी हुई थी। तब तो साईस ने अपने स्वामी को सारा हाल कहा और बोला कि तालाब की पाल पर दो भाई पांच च्यार आदमियों से ठहरे हैं, उनमें से अंधे भाई ने पहले से बछेरे की आंख फूट जाना बतला दिया था। पाटण के चावड़े राजा ने उनकी खबर मंगवाई, कहने लगा कि यदि ऐसे बुद्धिमान पुरुष हमारे पास रहें तो अवश्य रख लेवें। फिर सवार होकर राजा स्वयं उनके पास पहुंचा, मिला और पूछा कि तुम कौन हो, कहां रहते हो? बीज ने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया कि हम टोडे के स्वामी के पुत्र सोलंकी राजपूत हैं, हमारे द्विमात भाइयों ने राज छीन कर हम को अपनी धरती में से निकाल दिये हैं। क्योंकि मैं तो आंखों से अंधा और मेरा यह भाई बालक था, सो एक अर्से तक तो हम वहीं आसपास ठहरे रहे, अब यह भाई भी सयाना होगया है, सो किसी के पास जा रहेंगे। अभी तो द्वारिका की यात्रा को जाते हैं। चावड़े राजा ने बीज और राज को बड़े आदर से अपने पास रक्खे और बीज को कहा कि मैं अपनी कन्या आप को व्याहना चाहता हूं। बीज बोला मैं तो चक्षुहीन हू सो व्याह करना नहीं चाहता, यदि आपकी यही इच्छा है तो मेरे भाई के साथ विवाह कर दीजिये। तब राज को चावड़े ने कन्या व्याह दी, दहेज में बहुतसा माल असबाब दिया और कई गांव जागीर में देकर उनको वहां रक्खे। चावड़ी के गर्भ रहा और पुत्र उत्पन्न हुआ, नाम मूलराज रक्खा। अब राज ने अपने भाई से कहा कि अपन द्वारिका की यात्रा को जाते जाते ही मार्ग में यहां ठहर गये सो यात्रा करनी चाहिये। दोनों भाई वहां से बिदा होकर चले और चावड़ी को अपने पिता के ही घर रक्खी। जाड़ेचा लाखा (फूलाणी, कच्छ का स्वामि) के कान पर पहले घोड़ी और बछेरे की बात पड़ चुकी थी, जब उसे मालूम हुआ कि राज बीज इधर आते हैं तो उसने अपने आदमी उनके पास भेज कर उनको बुलवाये। जब दोनों भाई निकट पहुचे तो जाड़ेचा राजा उनकी पेशवाई को आया और आदर सत्कार के साथ उन्हें अपने महलों में लेगया। फिर लाखा ने अपनी बहन का विवाह राज के साथ कर दिया और उनको वहीं रक्खे। साला बहनोई हर वक्त साथ रहें और बीज दूसरे स्थान में। लाखा की साहिबी में राज के दिन इतने आनन्द से कटते थे कि एक अर्से तक उसको अपने भाई की सुधि तक न आई। एक दिन बीज ने उसे कहलाया कि तू तो अपने साले का होगया, अब तुझे हमारी याद क्यों

आवे, हम भी अब यहां रहना नहीं चाहते, पाटण जाकर मूलराज को गोद में खिलावेंगे, चावड़ी भोजन परोसेगी वही खावेंगे और वहीं रहेंगे। राज ने अपने उस आनन्द और आराम को छोड़ कर पाटण का जाना पसन्द न किया और बीज वहां से चल दिया, व मूलराज के साथ रहने लगा।

जाड़ेची के पेट से राज के राखाइच नामी पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन साले बहनोई चौसर खेल रहे थे सो राज का पासा पड़ा और गोट मारते वक्त उसका एक टुकड़ा फटकर उछला और लाखा के जा लगा जिससे कुछ लोहू निकल आया। तब तो लाखा मारे क्रोध के लाल होगया, पास ही बर्छा पड़ा हुआ था, सम्भाल कर राज पर चलाया, घाव कारी लगा और उसके प्राण पखेरू तत्काल उड़गये। यह घटना देख लाखा हकाबका होगया, बड़ा पश्चाताप करने लगा और विचारा कि मुझको ईश्वर ने यह क्या कुमति दी, परन्तु भावी प्रबल है। इसकी खबर लाखा की बहन को हुई, वह पति के संग चिता पर चढ़ने को तैय्यार होगई। लाखा बोला कि मैंने बहनोई को मारा है, तूं इसके साथ जलती है, भाञ्जा बालक है, वह भी तेरी हर करके मर जायगा। यह सब हत्या मेरे सिर पर चढ़ेगी, अतः मेरा जीना ही धिक्कार है। ऐसा कह कटार खाकर मरने को उद्यत हुआ, तब तो लाखा के कुटम्बियों ने बड़ी हठ से जाड़ेची को सती होने से रोका। अन्तमें उसने अपने भाई से कह दिया कि तूने मेरे पति को मारा है और मुझे सत करने से मना किया तो अब तू मुझे कभी अपना मुंह मत बतलाना। लाखा ने भी बहन का वचन अङ्गीकार किया और अपने पापमोचन के हेतु बहुत दान पुण्य करने लगा, कई नियम व व्रत लिये और नाना प्रकार के प्रायश्चित्त किये। भाञ्जे को सदा वह पास रखता और अत्यन्त प्यार करता था, किसी की मजाल नहीं कि राखाइच की आज्ञा उल्लंघन कर देवे। यहां तो यह बनाव बना, अब पाटण की बात सुनिये।

पाटण में चावड़ा चामुण्ड राज करता था वह मर गया। उस के च्यार पुत्र थे च्यारों ही योग्य और समान बल बुद्धि वाले। पिता के मरते ही च्यारों भाइयों में राज के वास्ते खटाखट चली यहांतक कि एक दूसरे के प्राण का गाहक होगया। पांच भले आदमियों ने मिलकर उनको समझाये और ऐसा प्रबन्ध विचारा कि छत्र चमरादि राज्यचिन्ह तो सिंहासन पर रक्खें, और च्यारों भाई आसपास राजारूप से बैठें, राज्यकार्य्य प्रधान कामदार करते

यदि यह चली गई तो बात फूट जावेगी और फिर धरती हाथ आने की नहीं। झट तलवार खींच कर उसका मस्तक उड़ा दिया[1] और पीछा काका के पास आया। अंधे ने पूछा कौन थी ? कहा कि माता थी, परन्तु जाने नहीं दी है, काम तमाम कर दिया है। बीज बोला "बहुत खूब किया, मैं तेरी बुद्धि की प्रशंसा करता हूं, अब मुझे निश्चय होगया कि अवश्य तूं पाटण के राज सिंहासन पर बैठेगा और तेरा प्रताप बहुत बढ़ेगा।" फिर दोनों ने मिल कर लाश को वहीं खड्डा खोद कर गाड़ दी। दूसरे दिन मूलराज अपने पक्ष के राजपूतों को साथ लिये जहां मामाजी जल क्रीड़ा कर रहे थे वहां पहुंचा और सब को ठिकाने लगाया और पाटण का राजा बन बैठा।

मूलराज का लाखा (फूलाणी) को मारना–मूलराज पाटण का राज करता था और उसका भाई रागादच केलाट कोट में अपने मामा लाखा के पास रहता था। लाखा पिछली रात को जब सोकर उठता तो सदा जोर ज़ोर से आहें मारकर रोया करता था। उसकी साहबी का सारा दार मदार रागादच पर था। उसको इस प्रकार रोते देखकर रागादच को बड़ा आश्चर्य होता था। एक दिन उसने मामा से पूछा कि आप सदा फूट फूट कर पिछली रात को रोते हो सो ऐसा आपको कौनसा दुःख है ? लाखा ने भाणजे को तो कुछ भी उत्तर न दिया, परन्तु अपनी नौका के मुखिया मल्लाह को बुलाकर समझाया कि कल प्रभात को तुम रागादच को नाव पर चढ़ाकर समुद्र के अमुक तट पर उतार नाव पीछी ले आना। फिर भाणजे को बुला कर कहा कि कल नाव पर सवार होके दर्या की सैर कर आना। तदनुसार रागादच प्रभात ही नौका पर चढ़ा, मल्लाहों ने स्वामि की आज्ञानुसार उधर ही नाव चलाई और नियत स्थान पर उसे उतार कर पीछे फिर गये। रागादच तट पर इधर उधर फिरने लगा तो देखता क्या है कि एक पगडंडी मनुष्य के आने जाने की बनी है, उसी मार्ग से वह आगे चला। एक सुंदर विशाल महल उसको साम्हने

---

1 मेरुतुङ्ग कृत प्रबन्ध चिन्तामणि में लिखा है कि मूलराज के जन्मते समय उसकी माता लीलादेवी प्रसव वेदना से मरगई और बालक पेट चीर कर निकाला गया।

नज़र आया। निकट पहुंचते ही उस महल में से पांच सात अप्सराएं निकलीं और भाणेज! भाणेज! करती हुई उसके पास आईं। वह बड़ा चकित हुआ कि यह बात क्या है, उनसे पूछा कि तुम कौन हो और यह महल किसका है? अप्सरा बोलीं यह महल लाखाजी का है और हम उनकी स्त्रियां हैं। आगे महल के भीतर जाकर देखा तो एक पलंग पर कोई मनुष्य गहरी नींद सोया हुआ है। पूछा यह कौन है? कहा कि यह तुम्हारे मामा की देह है। राखाइच ने प्रश्न किया कि मामाजी रोया क्यों करते हैं? उत्तर मिला कि जब लाखाजी सो जाते तब उनका जीवात्मा उस काया को त्यागकर यहां आता और इस देह में प्रवेश होकर रात भर हमारे साथ हंसता खेलता है, प्रभात होने के पूर्व ही पीछा उसी काया, में चला जाता, इसीलिये जब लाखाजी जागते तो हमारे वियोग में डाढ़ें मार मार कर रोते हैं। यह विचित्र कहानी सुनकर उसने मन में विचार किया कि यह बात सत्य है। फिर पूछा कि यह तो तुमने कहा सो ठीक, परन्तु ऊपर जो यह दूसरा महल है वह किसका है? तब एक अप्सरा बोली कि अभी तो इसका स्वामी कोई है नहीं, परन्तु जो पुरुष बापके वैर और स्वामि के काम में मालिक की आखों के साम्हने उसके शत्रु से जूझ कर काम आवे वही इन महलों को पावे। रात को तो राखाइच वहीं रहा, प्रभात को जब जागा तो अपने को मामा के पास पाया। अब तो उस लोक में पहुंचने की उसके मनमें चटपटी लगी, लाखा का ख़ासा घोड़ा महुवा था उसपर सवार होकर पाटण अपने भाई मूलराज के पास पहुंचा और उससे मिलकर लाखा का सारा भेद उसको बतलाया और कहा कि यदि बापका वैर लेना चाहता हो तो अभी अच्छा अवसर है। दीपमालिका के कारण लाखा ने अपने सब सर्दारों को घर जाने की छुट्टी दी है, तुम अमुक दिवस पहुंच जाना। इतना कह कर वह तो तुरन्त अश्वारुढ़ हो पीछा लौट आया और मूलराज प्रबल सेना सजकर चढ़ गया। लाखा उन दिनों चिरयात कोट में रहता था। घुड़साल में जाकर जब उसने अपने घोड़े पर हाथ फेरा तो हाथ के धूल लग गई, देखकर कहने लगा कि यह धूल तो पाटण की है, इस घोड़े पर कौन चढ कर गया? साईस ने अर्ज़ की कि राखाइच सवार हुआ था। इतने में तो राखाइच भी मुजरे को आगया। उसकी ओर दृष्टिपात कर लाखा मुसकुराया और कहा भाणजे अच्छी प्रीति पाली।" राखाइच समझ गया और उसने सब

बात सत्य सत्य कहदी। उसी समें में खबर मिली कि पाटण का कटक पास आन पहुंचा है। लाखा भी युद्ध को तैय्यार होगया, रायाह्न ने भी मामा के साथ पाटण की सेना से युद्ध कर स्वामि के काम और बापके वैर में अपना सिर दिया और मनवाञ्छित लोक में जा पहुंचा। लाखा भी मारा गया।[१]

सिद्धराव (सोलंकी) ने रुद्रमाल प्रासाद कराया जिसकी कहानी—राजा सिद्धराव रात को जब सोवे तो स्वप्न में क्या देखे कि पृथ्वी स्त्री का रूप धारण कर उसके पास आती और कहती है कि मुझ को एक उत्तम आभूषण दे! ऐसा स्वप्न राजा सदा देखता, तब एक दिन स्वप्नपाठक पंडितों को बुला कर उसकी व्याख्या पूछी। पंडितों ने कहा कि भूमि का भूषण प्रासाद है, आप कोई निराला मन्दिर बनवाइये। राजा ने मन में ठाना कि एक ऐसा देवमंदिर बनवाऊं कि मृत्यु लोक (पृथ्वी) पर उसके जैसा दूसरा न निकले। उसने अपने राज्य के सब सूत्रधारों को बुलाये और उन्होंने भांति भांति के चित्र खींच कर राजा को बताये परन्तु एक भी चित्त पर न चढ़ा।

राजा के राज्य में खापरिया और कालिया नाम के दो नामी चोर रहते थे, वे दीपमालिका के दिन जूआ खेलने लगे। खापरिया ने सिद्धराव की सवारी का घोड़ा घोड़ध्वज दांव पर लगाया, और कालिया ने वैसी ही कुछ चीज़ देनी बदी। कालिया जीता और खापरिया बाज़ी हारगया। कालिया बोला कि घोड़ा ला, तब दूसरे ने आगामी दीपमालिका पर लौटने का वचन दिया। समय आने पर खापरिया पाटण पहुंचा और मज़दूर का भेष धारण कर उस घोड़े के वास्ते प्रति दिन दूब का भारा लेजाने लगा। इस तरह उसने वहां अपनी जान पहचान बढ़ाई। थोड़े दिनों पीछे वह उस अश्व का दाणा साफ़ करने वाला बना घोड़े की अच्छी चाकरी करता और उसको बहुत सुख देता था। राजा रोज़ घोड़े को देखने के लिये आवे, उसने खापरिया की सेवा से प्रसन्न होकर उसको घोड़ध्वज का साईस बना दिया। सिद्धराव जब आवे तब सदा मंदिर की चर्चा करे कि कोई उत्तम कारीगर मिले तो देवालय बनवाऊं परन्तु कोई ऐसा मिलता नहीं।

---

१ भूतराज ने चावड़ों से पाटण का राज जरूर लिया और लाखा फुलाणी को युद्ध में मारा परन्तु यह अपराद्धि की कहानियां केवल इस शिक्षा के वास्ते बनाई गई हों कि अपना वैर लेते हुए भी क्षत्रिय धर्म के अनुसार स्वामि की सेवा में सीस कटाने वाला परम पद को प्राप्त होता है।

यह बात खापरिया सुना करता था। दीपमालिका निकट आई, तब घड़ीचारेक रात गये वह उस घोड़े को खोल कर उस पर सवार हुआ और नगर के कोट को कुदा कर उस (घोड़े) को ले उड़ा। यहां जब खबर पड़ी तो राजा के नौकरों ने पीछा करने की तय्यारी की परन्तु सिद्धराव ने उनको रोक दिये और कहा कि तुम उस घोड़े को नहीं पहुंच सकोगे। खापरिया पहरेक रात पिछली रहते आबू के पास जा उतरा, क्योंकि कालिया सिरोही के आगे उमरणी गांव में रहता था सो उसको वहां लेजा कर घोड़ा देना था। खापरिया ने विचारा कि अब पास तो पहुंच ही गया हूं, पिछला कुछ भय है नहीं, थोड़ी देर यहां विश्राम लेकर फिर चलूं। घोड़े पर से उतर कर बैठा ही था कि वहां की पृथ्वी फटने लगी, यह देख कर वह बड़े अचम्भे में आया कि यह क्या बात है। इतने में पृथ्वी में से एक देवालय प्रगट हुआ। पहले तो उसके तीन सुवर्ण के कलश निकले, फिर शिखर और पीछे मण्डप दिखलाई दिया, जिस में कई देव देवाङ्गना आकर नाटक खेलने लगे। यह चोर भी एक झरोके में जा बैठा, खूब राग रंग देखा, जब थोड़ीसी रात्रि रही, नाचना गाना बन्द हुआ और देवताओं ने अपने अपने स्थान पर जाने की तय्यारी की, परन्तु क्योंकि मृत्युलोक का मानवी उस में बैठा था इसलिये वह देवालय वहां से हटा नहीं। यह देख कर देवताओं ने कहा कि इस में कोई मनुष्य तो नहीं आन बैठा है। खोज की तो एक गोख में खापरिये को बैठा पाया। उससे पूछा कि तू कौन है और क्या चाहता है? खापरिये ने अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया और उस मंदिर के विषय में उसने यह प्रश्न किया कि यह पीछा यहां कब प्रगट होवेगा। उत्तर मिला कि तीन दिन दीपमालिका की रात्रि तक वर्ष में एक बार प्रगट होता है, अब कल और परसों फिर निकलेगा। यह सुन कर खापरिया वहा से उठ गया और साथ ही मंदिर भी लुप्त होगया। अब उस चोर ने उमरणी का जाना तो छोड़ दिया और तुरन्त घोड़े पर पलाण रख पीछा पाटण को चला। मन में विचार बंधा कि मैंने सिद्धराव जयसिंहदेव का नमक साल भर तक खाया है, राजा को उत्तम देवसदन बनवाने की प्रबल उत्कण्ठा है सो यदि मैं राजा को यहां लाकर यह मंदिर बतलाऊं तो उसका मनोरथ सफल हो और मैं उसके नमक का हक़ अदा करसकूं। ऐसा मन्दिर बनवाने से पृथ्वी पर उसका नाम अमर होजावेगा। थोड़ी ही देर में चोर पाटण पहुंच गया, घोड़े को ठाण में बांध आप सीधा सिद्धराज के मुजरे

को गया, राजा को भी उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और पूछा कि किसलिये गया था और पीछा कैसे आया ? उसने प्रथम तो जूआ खेलने और कांटीधज को हारने का हाल सविस्तर कहा और पीछे देवालय की हकीकत अर्ज की कि आज रात को मैंने आबू के पास एक देव भवन पृथ्वी में से निकलता देखा है, और क्योंकि आपकी उत्कट अभिलाषा है कि उत्तम प्रासाद बनवायें, इसलिये आपको यह देवालय दिखलाने की इच्छा से मैं पीछा लौट आया हूं । वह मंदिर आज फिर वहीं प्रगट होवेगा । राजा को भी चोर की बात पर विश्वास आगया, दोनों सवार होकर चले और आबू की तलहटी आन पहुंचे । घोड़े को कुछ दूरी पर बांध के उसी स्थान पर जा बैठे जहां मंदिर प्रगट होने को था । नियत समय पर पृथ्वी फटने लगी और मंदिर निकला । राजा मार्ग के श्रम का मारा सोगया था, चोर ने जगाया और यह कौतुक दिखाया । दैवी देवताओं ने आकर अखाड़ा जमाया और राग मीठे मीठे सुरों के साथ बाजे बजने और नृत्य होने । राजा व चोर दोनों छुपके से उसी झरोखे में जा बैठे और आनन्द लूटने लगे । थोड़ीसी रात्रि शेष रही कि देवताओं ने देहरे को अन्तर्ध्यान करना चाहा, परन्तु वह तो वहां से हिला नहीं, विचार हुआ कि इसका कारण क्या है, फिर कोई मनुष्य तो नहीं आन घुसा है, तब लगे सब इधर उधर खोज करने, आगे एक गोख में दो मनुष्यों को बैठे देखे । देवताओं ने इन्द्र से जाकर निवेदन किया कि एक मनुष्य तो कल वाला और एक दूसरा अमुक गोख में बैठे हैं, हमने उनको उठजाने के लिये बहुत कुछ कहा परन्तु वे स्थान नहीं छोड़ते हैं । इन्द्र आप वहां आया और उनसे पूछा कि तुम कौन हो और क्या चाहते हो ? राजा ने अपना नाम ठाम बतलाया, इन्द्र ने कहा कि रात्रि बीतना चाहती है अब तुम यहां से उठजाओ ! तब राजा बोला है कि सुरराज ! मैं भी ऐसा ही मन्दिर बनवाना चाहता हूं जो मुझे बनाने वाले कारीगर का पता बतलाओ तो यहां से उठूं । तब देवेन्द्र ने राजा को ७ गोलियां देकर कहा कि जो कारीगर इन गोलियों को एक के ऊपर एक खड़ा बंधे वही ऐसा मंदिर बना सकेगा । गोलियां लेकर राजा व चोर वहां से उठगये और देवालय व देव देवाङ्गना सब वहीं लोप होगये । राजा चोर को लेकर पीछा राजधानी में आया, उसे तो वस्त्रालंकार सहित वह घोड़ा देकर विदा किया और आप देश देश के कारीगरों को बुला कर इकट्ठे करने लगा और जब सब आगये तो उनके सामने वे गोलियां रक्खीं, परन्तु

कोई गोली पर गोली न चढ़ा सका, सदा मुहूर्त निश्चय करे और निराश हो उसको आगे डिगावे। यह बात सारे विख्यात होगई कि कोई कारीगर राजा का मंदिर नहीं बना सका। एक सूत्रधार और उसका पुत्र (अमुक गांव में) रहते थे उन्होंने विचार किया कि अपने भी पाटण चलें। उस वक़्त पिताने पुत्र को कहा कि " बाट बाट, ' तब पुत्र टांकी हथोड़ा लेकर मार्ग को काटने लगा। पिता कहता है कि बेटा! " ब्याह न किया।" जब उसका कहीं विवाह कर दिया तो फिर वही शब्द कहे, परन्तु पुत्र उनका अभिप्राय वही समझा, तब दूसरी स्त्री परणाई। इस प्रकार च्यार विवाह उसके कर दिये। चौथी बधू बुद्धिमान बत्तीस लक्षणी थी उसने अपने पति को पूछा कि सुसराजी ने तुम्हें चार स्त्रियां क्यों परणाई? पति ने उत्तर दिया कि पिता कहता है कि " बाट बाट " और जब जब मैंने उसका अभिप्राय न समझा उसने मेरा विवाह कर दिया। वह बोली अबकी बार जब तुम से बाट बाट कहें तो उत्तर देना कि अपने इस प्रकार देहरा बनावेंगे, इस तरह उसका चित्र खींचेंगे आदि, और यह भी कहा कि जब राजा वे गोलियां तुम्हारे संमुख धरे तो मैं ये सात छल्ले तुमको देती हूं, एक एक छल्ला बीच में देकर उस पर गोलियां रखते जाना। अब तो वे कारीगर राजा के पास आये, सिद्धराव ने गोलियां उनके आगे धरीं, यह कारीगर बीच में छल्ला रख कर गोली पर गोली चढ़ाता गया, सिद्धराव ने छल्ला धरने का कारण पूछा तो उत्तर दिया ये बीच बीच में थर दिये जावेंगे। राजा की समझ में बात आगई, कारीगर मंदिर बनाने लगे. सोलह वर्ष में कार्य्य सम्पूर्ण हुआ, कई हज़ार शिल्पी रोज़ उस पर काम करते थे। छन्द जयसिंहदेव सिद्धराव के, रावल भाट ने कहे—

धर सौ चवदहमाल, थंभ सत सहस निरंतर।
सै अठारह पूतली, जड़ी हीरा माणक वर॥
तीस सहस धजदण्ड, करै सौवंन निहालै।
सतरह गय तुरिसाल, गुण रुद्र संभालै॥
एते देख अचरज हुवै, रोमंचे सुरनर अवै।
सुप्रसाद कीध जैसिंघ ने टग मग चाहे चक्कवै॥ १॥
दिस गयंद गड़ियड़ै, सीह दक्खिण गुंजारै।
रूपै कळस झळहळै, मंड उदंड संभारै॥

नाचे रंग पुत्तलिय, एक गावे इक पावे।
तिण पर सुरत तुलग्ग, सरस सयवट्ट ऊलावे॥
ऐसैं सुरनर सयल नर, धम धमंत नुर उच्छरै।
तिण कारण सिधनर प्रमुण, वृषभ तेण धको करै॥ २॥
रलन इंद्र सल छिये, राज माया के पालय।
मृत्य लोकनूराय, कहा इन ओपम कालय॥
रहै नख मंझार, न कोटिय रत्थन रायद।
इत्त चाळयो राय, गुज तजे पिरयल रायद॥
भिण राय प्रपेही भुवनपति, निचलाला इम उच्चरै।
इयत्र·· ····· सोहिय जलतो पर धरै॥ ३॥
उंदर दरसण मरै, पौन औ गहे भुयंगह।
इळ पहिनरै बहिल्ल, हरी जब चरै तुरंगह॥
खल संच धन मरै, पीर पिड़पे पिवद्द पर।
पडित पढ़ गुण मरै, मूढ़ भूपे रायांदर॥
सुखाण राय गुज्जर धणी, फरां धीनती कल्ल सुय।
इम पटां गुपह पांवे प्रयग, कहा परग जैसिंघ तुय॥ ४॥
बीस तीस चालीस, साठ सित्तर आसि पच्चर।
भट भारा समधिय रिद्ध, कै कारण धिपद्द पर॥
धीस ढाल दस दोल, तीस नेजा इक इंडह।
छत्र छारातं घटा, दिन्न जैसिंह नरिंदह॥
मारियो दलद्र दन लक्खदे, इम उपाय अंकुस किया।
हड़हड़े भट्ट ताहरै हंस्यो, सिद्धराय पतोछियो॥ ५॥

सं० १७१५ के वैशाख मास में महाराजा श्री जसवंतसिंहजी गुजरात के सूबेदार नियत किये गये, और सं० १७१७ के भाद्रपद में मुंहता नैणसी को (महाराजा ने) हजूर में बुलाया, तब भाद्रपद वदि ७ को उसका मुकाम सिद्धपुर में हुआ था। सिद्धपुर अच्छा नगर है जिसको सिद्धराज ने अपने नाम पर बसाया था, और पूर्व से १००० उदिच्य वेदिये ब्राह्मणों को बुला कर ५०० गांवों सहित सिद्धपुर उन्हें उदक में दिया, ये गांव शत्रुंजय के पास सीहोर के

कंवरपाल तीस त्रिहु आगल बरस तीन मुलराजलह।
थिलसी भीम ससर सहस्स बरस साठ अगलीक चह॥ [१]



वाघेले सोलंकी।

सोलंकियों से वाघेले राजा वीरधवल ने सं० १२५२ में पाटण का राज लिया, उसने वर्ष ४५ मास ३ दिन एक राज किया। वीरधवल का पुत्र वीसलदेव २५ वर्ष ४ मास और ३ दिन राज पर रहा। वीसल के पाट कर्ण गेहेला (घेला अथवा कम समझ) बैठा जिसने नागतिये (नागर) ब्राह्मण (माधव) की बेटी को अपने घर में डालली। वह ब्राह्मण बादशाह अलाउद्दीन (खिलजी) के पास जाकर पुकारा और बादशाही सेना चढ़ा लाया। गुजरात तुर्कों ने लिया। बादशाह ने च्यार उमराव गुजरात में रक्खे—मुदाफरखान (मुज़फ्फरखां), तातारखां, अहमदखां, और मोहम्मदखां। अहमद ने अहमदाबाद बसाया, पहले वहां आसाल भील की आसल बस्ती थी (आशापल्ली या आशावली) [२]। फिर अलाउद्दीन ने अपने बेटे कुतबुद्दीन को अहमदाबाद बख्शा, सत्तर खान बहत्तर उमरा साथ दिये, वह सिंहासन पर बैठा, २१ छत्र सिर पर धरे...... . . , दिल्ली से लक्ष्मी की मूर्ति लाया और लक्ष टके खर्च कर उसे भद्र में स्थापन की। कुतबशाही नाम का रुपया पहले पहल चलाया जिसके समान कोई दूसरा रुपया नहीं था। गुजरात में जलालशाही आदि दूसरे सिक्के पीछे से चले हैं। कुतबुद्दीन के पाट सुरताण मोहम्मद बैठा, इसके समय में सं० १५१६ में प्रजा पर १८ कर लगे दाण, पूंछी, हलगत, भोम, भेट, तलार, सूंखड़ी, वधामणा, मलया, वल, लांचा,

(१) ऊपर जो राजाओं के नाम और उनका राज्यत्व काल दिया है उस में और छन्द में दीहुई नामावली व समय में अन्तर है, छन्द की नामावली व काल ठीक है।

(२) जफरखां जो पीछे मुजफ्फरशाह के लकब से गुजरात का पहला सुलतान हुआ, वास्तव में टांक जाति का हिन्दू था, उसको सुलतान अलाउद्दीन ने नहीं वरन मोहम्मदशाह तुगलक ने गुजरात दी थी। सन् १३९६ ई० में जफरखां तख़्त पर बैठा, सुलतान अलाउद्दीन तो उससे ८० वर्ष पहले स० १३१६ ई० में मरचुका था। ऐसे ही अहमदाबाद का बसाने वाला अहमदशाह सुलतान अलाउद्दीन का उमराव नहीं किन्तु ज़फ़रखां का बेटा था जो स० १४४२ ई० में तख़्त पर बैठा था।

घोड़ा चारण, कयार की सूखड़ी, पाघयराङ्, ढोर चराई, वाड़ी की लाग, कोतवाली लाग, और क़ाजी की लाग। इकावन वर्ष राज किया। स० १५६७ में सुरताण मुदाफर तख़्त पर बैठा, बड़ा नाम पाया। उसके तीन बेटे सिकंदर, मोहम्मद और बहादुर थे। स० १५८१ में सिकंदरखां तख़्त पर आया, केवल दो मास १७ दिन राज किया, फिर उसका भाई मोहम्मद सुरताण हुआ, उसने भी ३ मास ५ दिन राज किया। सं० १५८२ में बहादुरशाह तख़्त पर बैठा, इसकी धाक खुरसाण (दिल्ली के घरों) तक पड़ती थी। सं० १५८६ (१५९१) फागुण सुदि १ को चित्तोड़गढ़ फतह किया। जब मुग़लों (हुमायूं) ने पठानों से दिल्ली पीछी ली तो स० १५९२ में मुग़ल चापानेर आये और श्रावण सुदि ११ को वह स्थान विजय किया। स० १५९३ के ज्येष्ठ मास में अहमदाबाद गये, बहादुरशाह से लड़ाई हुई, वह आसोज वदि १४ को भाग कर दीव बन्दर चलागया। बहादुर ने खांट, वरसा, और माडण, समीचा के धणी पाटण के भूमियों को उमराव बना कर १२ गाव तो माडण को, और १२ ही वरसा को दिये थे। उन भूमियों तथा हिन्दू तुर्कों ने मिल कर मुग़लों को अहमदाबाद में से निकाले। बहादुर शाह को दीव में फरगियों (पुर्तगीजों) ने मार कर समंदर में डाल दिया। सं० १५९३ फागुण सुदि ५ को बहादुर मारा गया, उमरा ने मिल कर महम्मद बेगड़ा को तख़्त पर बिठाया[1]। अहमदाबाद में यह बड़ा धर्मात्मा राजा हुआ। उसने ४ औषधालय खोले और वहां हकीमों को रक्खे जो सब लोगों को मुफ़्त दवा देते और रोगियों की चिकित्सा करते थे, ग़रीब रोगियों को भोजन वस्त्र भी दिये जाते थे। सुरताण जैसा खाना आप खाता वैसा ही फ़क़ीरों को खिलाता और शीतकाल में रजाइयां और बिस्तर बांटता था। सं० १६१० फागुण वदि १३ गुरुवार को पहर रात गये बुरहानखां ने मोहम्मदशाह बेगड़ा को मारा और ३५ बड़े बड़े उमरा भी मारे गये। भाटी सोरवान ने बुरहान को मार कर महमद का बैर लिया। महमद का बेटा अहमद तख़्त पर बैठा (यह अहमदशाह दूसरा हो जो महमूदशाह तीसरे के बाद तख़्त पर बैठा था) फिर सं० १६२९ में अकबर बादशाह ने गुजरात ली।

(१) बहादुरशाह के पीछे महमूद बेगड़ा सुलतान नहीं हुआ वह तो बहादुर से २५ वर्ष पहले मरचुका था, वह बहादुरशाह का भतीजा और लतीफखां का बेटा महमूदशाह था जो पहले बुरहानपुर में कैद था।

(दूसरी बात ऐसे लिखी है):—सोलंकियों से बाघेलों ने धरती ली, सोलङ्की बाघेला आगे जाते एक, बाघेले सोलंकियों के शामिल (शाखा) हैं। पाटण (अणहिलपुर) बाघेलों के अधिकार में रही जिसकी साखी का

कवित्त— गूजर धर भोगवी, बरस बीसल अट्ठारह।
अर्जैदेव इकतीस, कोट पाटण उद्धारह॥
वीरमदे तेतीस, संव बाघेला मंडण।
बीस बरस लहु करन, किंके वैरियां विहंडण॥
देवराज प्रतापियो चत्रबरस, यहां साख वंसावली।
बाघेल राज अणहल नगर, बरस सत्तछ्व आगली॥

बाघेलांरे पाटण—१८ वर्ष राव बीसलदेव; ३१ वर्ष अर्जुनदेव, ३३ वर्ष बीरमदेव; २० वर्ष कर्णगैहलो, ४ वर्ष देवराज। सं० १३४० माधव ब्राह्मण प्रधान हुआ, उसकी बाघेलों से बिगड़ गई, तब वह जाकर अलाउद्दीन बादशाह को लाया, एक एक मंजिल के लाख लाख टके देने किये। धरती तुर्कों ने ली। बादशाह अलाउद्दीन ने टांकों को वहां थाने पर रक्खे थे सो अलाउद्दीन को समुद्र में डाल कर ये टांक (गुजरात के) बादशाह बन बैठे। सुलतान कुतुब तातारखां ने ४५ वर्ष; फरैवान ने ३१ वर्ष, गदाधर (मुदाफर) ने ३ वर्ष, अहमदशाह, जिसने सं० १४३७ में अहमदाबाद बसाया, ३४ वर्ष, दाऊदखां, महमद् बेगड़ा ५८ वर्ष, मुदाफर (मुज़फ्फर) २५ वर्ष; सिकंदर २२ (केवल दो मास); मोहमद १२, बहादुर १०, मोहमद् १५, मुदाफर ने १८ वर्ष बादशाहत की। फिर सं० १६२६ कार्तिक शुदि १५ को अकबर बादशाह ने गुजरात फतह की।

बांधोगढ़ के बाघेले—गढ़ बंधव का देश पहले करण डहरिये का था और नौलाख डहर कहलाता था। कर्ण डहरिया जब माता के गर्भ में था तो दिन पूरे होने पर उसकी माता कष्टी हुई, ज्योतिषियों ने कहा कि अभी लग्न अच्छा नहीं है यदि दो घड़ी उपरान्त बालक जन्मे तो वह महाराजा पृथ्वीपति होवे। कर्ण की माता ने समय टालने को अपने पांव ऊपर को बंधवा दिये। वह तो उस पीड़ा से मरगई परन्तु बालक जीता जागता जन्मा[1]। बड़ा होने पर

(१) बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मणसेन के जन्म विषय में भी ऐसी ही कथा कही जाती है।

गङ्गा जमना के बीच के देश का प्रतापी महाराजाधिराज हुआ। जब कर्ण ने यह सुना कि मेरी माता ने मेरे वास्ते इतना कष्ट सहकर प्राण त्यागे हैं तब उसने ८४ नये तालाब बनवा कर एक ही दिन में उन सब के जल से अपनी माता का तर्पण किया और दूसरे भी कई दान पुण्य किये। कर्ण की राजधानी कालिंजर प्रयागराज से ४० कोस पर थी। बाघेलों ने बसी हुई धरती लेकर बंधवगढ़ में राजधानी की।

बरसिंहदेव बाघेला गुजरात से गंगाजी की यात्रा को आया तब बंधवगढ़ की ठौड़ निर्बल लोधे राजपूत रहते थे। उसने यह स्थान भांपा और गंगा के निकट मनोहर भूमि देख कर उसे लेने को बरसिंह का मन ललचाया। लोधों को मार कर देश लिया और बंधवगढ़ बसाया[1]। वंशावली—१ राजा बरसिंहदेव, २ राजा वीरभाण, ३ राजा मणिभाण, ४ राजा रामचंद्र वीरभाण का बड़ा दातार हुआ, च्यार कोड़ पसाव का दान दिया। एक क्रोड़ नरहर महापात्र को, एक क्रोड़ चतुर्भुज दसोंधी को, एक क्रोड़ भैया मधुसूदन नरहर के पुत्र को, और एक क्रोड़ कलावन्त तानसेन को। ५ वीरभद्र रामचद्र का, ६ दुर्योधन, ७ प्रतापादित्य। राजा विक्रमादित्य (रामचद्र का पुत्र) मुकुंदपुरे में रहता था और राजा मानसिंह (कछवाहे) का जमाई था। बाबू इंद्रसिंह, राजा मानसिंह का दोहिता। विक्रमादित्य के पुत्र सरूपसिंह, और राजा अमरसिंह जिसके साथ सं० १६९० में राजा गजसिंह (जोधपुर) की कुमारी चांदजी का विवाह हुआ था। बंधवगढ़ से २० कोस इधर गांव रैयो बसता था। सं० १७०७ में अमरसिंह ने काल किया, उसके पुत्र राजा अनूपसिंह, फतहसिंह, और मंगदराय थे।

(१) अभी बघेले अपनी उत्पत्ति राजा व्याघ्रदेव से मानते और उसका समय सं० ६२७ वि० का बतला कर उसे जयसिंह सिद्धराज सोलंकी का पुत्र होना कहते हैं। यह ऊटपटांग बात है। नैणसी का कहा हुआ बरसिंघदेव ही शायद पीछे वाघदेव होगया हो। गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल की मौसी का विवाह धवल के साथ हुआ था। धवल के पुत्र अर्णोराज या आनाक को कुमारपाल ने व्याघ्रपल्ली गांव जागीर में दिया, वहां रहने से उसकी सन्तान बाघेला नाम से प्रसिद्ध हुई हो। सम्भव है कि करीब सौएक वर्ष तक आनाक की सन्तान गुजरात ही में रही हो और सं० १५०० वि० के लगभग बरसिंघदेव डाहल मण्डल में आकर आबाद हुआ हो।

डाहल मण्डल पहले कलचूरियों के अधिकार में था, राजा कर्ण डहरिया इसी वंश का था जिसने सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम से मिल कर राजाभोज परमार के समय में

मेवाड़ के चाकर देसूरी के सोलंकी।

सोलंकियों से (अणहिलपुर) पाटण का राज छूटा तब उनमें से भोजा देपावत नाम का सोलंकी सीरोही के गांव लास मूणावद में आरहा। सिरोही के राव लाखा (राव सहसमल्ल का पुत्र) और सोलंकी भोजा के परस्पर शत्रुता होगई। राव लाखा ने पांच छ वार भोजा पर चढ़ाई की परन्तु प्रत्येक लड़ाई में लाखा हारता रहा, तब उसने ईडर के राजा को अपनी सहायता पर बुलाया। राजा ने लाखा से पूछा कि तुम इतनी लड़ाइया भोजा से हारे इसका कारण क्या है? लाखा ने उत्तर दिया कि सोलंकी परा बांध कर अपने भालों को झुकाये हुए इस चपलता के साथ धावा करते हैं कि मेरे आदमियों के पग छुटजाते हैं। ईडर के राजा ने कहा कि इसबार अपने भी उसी तरह हमला करेंगे, वे दोनों लास पर चढ़ आये, युद्ध हुआ जिस में चौहान जीते, भोजा मारा गया, लास सिरोही के हाथ आई। भोजा के पुत्र परिवारादि ने आकर मेवाड़ के राणा की शरण ली, कुम्भलमेरु पहुंचे और राणा रायमल से मुजरा किया। उन दिनों में देसूरी का इलाक़ा मादड़ेचे चौहानों के अधिकार में था, वे राणा की आज्ञा पालन न करते थे। राणा व उसके कुंवर प्रथीराज ने सोलंकियों को वह स्थान देना विचारा। पहले तो सोलंकी रायमल व सामन्तसिंह ने यह अर्ज़ की कि ये चौहान हमारे सगे सम्बन्धी हैं। राणा ने साफ कह दिया कि हमारे पास तुम्हें देने को दूसरी कोई ठौड़ नहीं, तब तो उन्होंने भी आज्ञा मानी, देसूरी गये, मादड़ेचे आल्हण और उसके १४० आदमियों को मार कर देसूरी पर अधिकार कर लिया। गाव १४० देसूरी के पट्टे हैं।

वंशावली—१ भोजा देपावत, २ त्रिभुवन, ३ पाता, ४ रायमल, ५ सावन्तसिंह, ६ देवराज, वीरमदेव, ७ जसवंत, और दलपत। उन १४० गांवों में विभाग—१२ गाव आगरिया के, १२ वसरोट के, १२ धामणिये के, १२ सेवंत्री के, १२ देसूरी के, ये प्राटची, १२ टोलाणा के, ८ गोडवाड के, १ आना, १ करणवास, १ वांसड़ा, १ मांडपुरा, १ केसूली, १ गाथी, १ गोढला, १ चावडेरा।

धारानगरी पर चढ़ाई की थी। फारसी तवारीखों में बघेलखण्ड का पुराना नाम भाट या भटा देश भी मिलता है। स० १४६४ ई० में देहली के बादशाह सिकंदर लोदी ने बघेल राजा भिरदेव पर चढ़ाई की जो भाट देश का राजा कहलाता था। अबुलफज़ल भी राजा रामचन्द्र बघेल को भाट देश का राजा लिखता है।

महिल गोत्रियों का वतन मालपुर तोडरी के पर्गने का गांव माल पंवार का बसाया हुआ है, पहले उस स्थान के अधिपति सोलंकी थे। तोडरी का राव सुरताण महिल गोत्री सोलंकी था।

सोलंकियों की पीढ़ियां—आदि नारायण, कमल, ब्रह्मा, धूमरिष, बाच, चालग, सूकर, अर्जुन, अजयपाल, देवपाल, राजी, मूलराज द्रोणगिर, वल्लभराव, भीम, करण, सिद्धराव, हितपाल, कीर्तिपाल, वालपसाव, धाहड़, सांगा, गोयंद्राव, कान्हड़, मोहिल तोडे का राव, दुर्जणसाल, हरराज, राव सुरताण, ऊदा, वैरा, ईसरदास, राव दलपत, राव अणदा, राव श्यामसिंह तोडरी वास, राव महासिंह[1]।

राव सुरताण हरराज का तोडरी छोड़ कर चित्तोड़ में राणा रायमल के पास आरहा और राणा ने वदनोर का पर्गना उसे जागीर में दिया था। उसकी पुत्री तारादेवी का विवाह राणा रायमल के पाटवी पुत्र पृथ्वीराज के साथ हुआ। पृथ्वीराज तो अपने पिता की विद्यमानता ही में विष प्रयोग से मरगया और राणा ने जयमल (दूसरे पुत्र) को टीकायत किया। जयमल का राव सुरताण पर कोप था, राव ने तो उसकी कृपा सम्पादन करने की पूरी कोशिश की परन्तु कुंवर ने एक न सुनी और कटक लेकर वदनोर पर चढ़ गया। राव सुरताण के साले रतना ने जयमल को मारा और आप भी मारा गया[2]।

इस प्रकार जयमल और रतना दोनों मारे गये, राणा की फौज पीछी फिरी आकड़सादे और सथाणे के बीच जयमल को दाग दिया गया। वदनोर के इलाक़े में पहले मेर गूजर रहते थे अब वहां जाट भी हैं जिन्हों ने मुझ से कहा कि हम राव सुरताण की वसी के हैं।

---

(१) गुजरात के सोलंकियों की बात में नैणसी ने उनके मूल पुरुष राज बीज को टोडे से गये हुए लिखे हैं परन्तु यहां टोडे के सोलंकियों का गुजरात वालों की शाखा में होना पाया जाता है।

(२) इसका पूरा वृत्तान्त पृष्ठ ४८—४५ में देखो।

नाथावत सोलंकी ।

मूल में तो ये तोडे के सोलङ्कियों से मिलते हैं, पीछे इनके वंशज नैणवे में आरहे (बूंदी राज्य में) जहां पहले भोजावतों की ठाकुराई थी जिनको नाथावत राघोदास दूलावत ने मार कर निकाल दिये और भूमिया वंट छीन लिया। राघोदास का पुत्र नाहरखान वीर राजपूत हुआ उसको राव रतनसिंह हाडा ने ६००००) रुपये का पट्टा दिया। इनकी बस्ती बूंदी के गाव डूंगोरी सूहते में थी। बूंदी के दर्बार में नाथावतों का बड़ा जोर था। जब राव रतनसिंह ने काल किया तब नाहरखान बादशाह शाहजहां का चाकर होगया और नैणवा जागीर में पाया। अभी नाहरखान का बेटा सूरसिंह नैणवे में है। नाहरखान के बनाये हुए महल बाग और बादशाह की दीहुई बहुतसी भूमि उसके अधिकार में है। सारे परगने में उसका भूमिया बंट का एक रुपये पीछे एक टका लगता है।[1]

---

(१) गुजरात के सोलंकियों की वंशावली प्राचीन शिलालेखादि से—नैणसी सोलंकी मात्र का मूल स्थान टोडा बतलाता, परन्तु वह स्वीकारने योग्य नहीं, क्योंकि कई प्रमाण ऐसे मिलते हैं जिनके आधार पर गुजरात के सोलंकियों को टोडे से निकले हुए नहीं बरन लाट देश के सोलंकियों की शाखा होना कह सकते हैं। फार्बस साहब अपनी पुस्तक रासमाला में गुजरात के चौलुक्यों को कल्याणी से निकले बतलाता, मेरुतुंग (चवदवीं शताब्दी में हुआ एक जैनाचार्य) लिखता है कि वे *कन्याकुब्ज की राजधानी कल्याणनगर* से आये थे। कन्याकुब्ज से अभिप्राय कन्नौज से नहीं किन्तु कर्णाटक से है।

गुजरात के सोलंकियों का मूल पुरुष मूलराज प्रबन्ध चिन्तामणि के अनुसार सं० १०१५ में और विचारश्रेणी के अनुसार सं० १००७ में सामन्तसिंह चावड़े से राजछीन कर गद्दी बैठा और सं० १०५२ में मरा।

चामुण्डराज, मूलराज का पुत्र, सं० १०६६ तक राज किया। बड़ा व्यभिचारी था, अतएव उसकी बहन ने उसे राजच्युत करा उसके पुत्र वल्लभराज को गद्दी बिठाया। पुत्र—वल्लभ, नागराज, दुर्लभराज। वल्लभराज-राज पर आने के थोड़े ही समय पीछे मालवे पर चढ़कर जाता था, मार्ग ही में मरगया।

दुर्लभराज—जिनेश्वरसुरि का शिष्य जैन मतावलम्बी; अपनी बहन का विवाह स्वयम्बर द्वारा नाडूल के चौहान राजा महेन्द्र के साथ किया। पुत्र नहीं, नागराज के पुत्र भीमदेव को गद्दी पर बिठाकर दुर्लभ व नागराज दोनों ने सन्यास लिया।

भीमदेव, सं० १०७८ में गद्दी बैठा। सुलतान महमूद गजनवी ने सोमनाथ का मंदिर लूटा, कर्ण कलचूरी[६] व भीमदेव दोनों ने मिलकर मालवे पर चढ़ाई की, धारा नगरी लूटी

प्रकरण चौथा ।

पड़िहार या प्रतिहार वंश ।

पड़िहारों की शाखा नीलिया के पुत्र भाट खंगार की लिखाई हुई–
पड़िहार, ईंदा, मलसिया, कालया, घासिया, बूलणा, लूलोरा मियां के वंशज, रामावट, धोथा मारवाड़ में पाटोदी के पास हैं, वारी मेवाड़ में राजपूत हैं और मारवाड़ में तुर्क हैं, धाधिया, कधरा बहुत राजपूत हैं जोधपुर में, खरवड मेवाड़ में बहुत हैं, फला सीरोही जालोरी में हैं, सिधका मेवाड़ और बीकानेर में हैं,

---

और शायद भोज राजा युद्ध में मारागया। आबू पर विमल वसही नामका ऋषभदेव का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाने वाला विमलशाह पोरवार भीमदेव की ओर से दण्डनायक होकर आबू पर रहता था। पुत्र–क्षेमराज, कर्णदेव। अन्तिम अवस्था में वानप्रस्थ हो सरस्वती के तट पर तप करने स० ११२० में चला गया, बड़ा बेटा क्षेमराज भी पिता की सेवा के लिये साथ रहा।

कर्णदेव या कर्णराज–आसावल (अहमदाबाद) के भील कोलियों को जीते, गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ का मन्दिर बनवाया। पुत्र जयसिंह।

सिद्धराव जयसिंह, स० ११५० में गद्दी बैठा। सोरठ के राजा नवघण या खंगार को युद्ध में मारा, उसकी राणी राणकदेवी को साथ लाया, परन्तु वह मार्ग में बढ़वान के पास जीती अग्नि में जलकर मर गई। इस फतह की यादगार में सिद्धराज ने अपना "सिंह" सम्वत् चलाया जिसका पहला वर्ष स० ११७० वि० में होता है। बारह वर्ष युद्ध कर मालवा जीता और वहां के परमार राजा यशोवर्मा को कैद कर लिया, अजमेर के चौहान राजा अर्णो-राज पर विजय पाई। सिद्धपुर बसाया। एक पुत्री का विवाह चौहान राजा अरणोराज से, और दूसरी का जेसलमेर के रावल लांजा विजयराज से किया। पुत्र नहीं।

कुमारपाल–देवपाल का पौत्र, जैन यति हेमचन्द्राचार्य का शिष्य। चौहान राजा अर्णोराज को स० १२०७ में युद्ध में जीता, मालवे के राजा बल्लाल, कोकण के शिलार वंशी मल्लिकार्जुन और चन्द्रावती के परमार राजा यशोधवल (हेमचन्द्राचार्य विक्रमसिंह कहता) को युद्ध में जीते। बड़ा प्रतापी हुआ, अपना राज्य दूर दूर तक पहुंचाया, स० १२३० में निस्सन्तान मरा।

अजयपाल–कुमारपाल के भाई महीपाल का पुत्र था, चौहान राजा सोमेश्वर को युद्ध में हराया। तीन वर्ष राज कर एक द्वारपाल के हाथ से मारा गया। जैनियों का परम विरोधी

चोहिल मेवाड़ में हैं, चैनिया फलोधी की तर्फ हैं, बोभरा, गंधरा मारवाड़ में भाट हैं, धनेरिया भूमलिया खीचीवाड़ में राजपूत हैं, वाफणा और चोपड़ा वनिये हैं, पेसवाल खोखरिया के रैवारी, गोढला, टाकसिया मेवाड़ में, चांदा के कुम्भार नींबाज वाले, माहप राजपूत मारवाड़ में बहुत, डूराणा राजपूत, सवर मारवाड़ में राजपूत, पूमोर और सामोर, जेठवे (पोरबंदर के राजा) पड़िहारों में मिलते है ।

सिखरा ईंदा पडिहार की बात--जेसलमेर के सोढों में कोटेचे राजपूत जिनकी बड़कुमारी पुत्री को व्याहने के वास्ते मोहिल पड़िहार आया। भली भाति विवाह कर पीछा फिरा, मार्गमें गोठ की और १६ बकरे मारे, उनकी मूंडियां चरवे में भर रक्खीं (कि कल नाश्ते को काम आवेंगी) । वहां से कूच हुआ, आगे एक तालाव पर ठहरे, साथ के राजपूत स्नान सेवा में लगे, कोटेची का सुखपाल भी ठहरा। दासी भारी भरलाई, उसने दातन किया और स्नान करके सिरामण (नाश्ता) मांगा। दासी बोली वाईजी ! यहां और तो कुछ है नहीं चरवे में बकरों की मूंडियां तो हैं । कहा वेही ला ! दासी परोसती गई और वह मूंडियां चट करती गई। अब साथ के ठाकुरों ने जलपान मगाया। दासी से कहा कि वह चरू ला, दासी बोली कि चरू का क्या करोगे उसमें की चीज की तो चटनी होगई। सारे ठाकुर चुप साध रहे और वहां से चल पड़िहारे आये। वहां ठाकुर व उसके प्रधान ने मिलकर सलाह की कि इस रजपूताणी का भार हमसे न सहा

था। हेमचन्द्र के शिष्य रामचन्द्र को जीता आग में जला दिया, कई जैन साधुओं के माथा लिये और उनके मन्दिर तुड़वा डाले ।

मूलराज दूसरा--अजयपाल का पुत्र, माता नायकदेवी महोबा के चन्देल राजा परमर्दिदेव की पुत्री थी। अपने बालक पुत्र को गोद में बिठाकर स० १२३४-३५ में सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के मुकाबले को गई, गादरागढ़ में युद्ध हुआ, सुलतान के कई योद्धा मारे गये और सुलतान जख्मी होकर हारा ।

भीमदेव दूसरा, अजयपाल का छोटा भाई, स० १२३५ में गद्दी बैठा। सुलतान कुतबुद्दीन ऐबक ने अणहिलपुर फतह किया, परन्तु उसके मरते ही भीमदेव ने पीछा लेलिया। मुसलमानों के साथ युद्ध करने से निर्बल पड़जाने के कारण भीमदेव के मुख्य मंत्री धोलके के राणा वीरधवल बाघेला ने स्वतंत्रता पकड़ी और उसका बल बढ़ता गया। स० १२९८ में भीमदेव मरा और अन्तिम राजा त्रिभुवनपाल से स० १३०० वि० के लगभग वीरधवल के पुत्र वीसलदेव बाघेला ने गुजरात का राज छीन लिया ।

जायगा, इसलिये उसके पिता को पत्र लिखा कि हमें तुम्हारी बेटी नहीं चाहिये। यह पत्र ठकुराणी के हाथ आया, उसने भी अपनी सारी हक़ीकत पिता को लिख भेजी। तब कोटेचे ने अपनी लड़की को बुलवाली। यह बात मालाजी (राठोड़ मल्लिनाथ मेहवे के) ने सुनी कि अमुक राजपूत ने खाने के बदले अपनी स्त्री को त्यागदी है। तब रावल मालाजी ने कहा कि उस राजपूत ने बड़ी भूल की, ऐसी रजपूताणी के पुत्र बड़े बलवंड वीर योद्धा होते जो गढ़ों के किवाड़ तोड़ते, भूतों से लड़ते और जीते हुए सिंहों को पकड़ लाते। वेहलवे का राणा ईंदा उगमसी रावल मल्लिनाथ के पास चाकरी करता था, उसने रावल के मुंह से यह बात सुनी, तब अपने आदमी भेजकर कोटेचे को कहलाया कि तुम अपनी बेटी मुझे देदो। कोटेचे ने पुत्री को उसके यहां भेजदी। उगमसी उसको अपने घर लाया, बड़ा आनंद मनाया और सुख पूर्वक रहने लगा। कोटेची के सात पुत्र हुए—सिखरा, रायधवल, ऊदा, राजा, लक्खा आदि।

एक दिन रायधवल और ऊदा दोनों खेलते खेलते जंगल में चले गये और वहां एक बघेरा देखा। साथ में और भी बालक थे जिन्हों ने कहा कि यह कैसा जानवर है। तब ऊदा रायधवल ने जाकर उसके कान पकड़ लिये और उसे खींचते हुए अपने घर ले आये, वहां मेख गाडकर उसको बांध दिया। जब लोगों ने देखा कि यह तो नाहर है तब कहने लगे कि रावलजी ने जो वचन कहे थे वे सत्य निकले।

वहलवे और मेहवे के बीच झोटेलाव नाम का एक तालाब है जहां एक प्रबल भूत रहता था। सूर्यास्त होने के पीछे यदि कोई मनुष्य उस तालाब की ओर जा निकलता तो वह भूत उसको मार डालता था। एक दिन जगमाल (रावल मल्लिनाथ का पुत्र) को अपने पिता का वचन याद आगया और विचारा कि किसी वेर (उगमणावत की) परीक्षा करना चाहिये। उजियाली चतुर्दशी (चातुर्मास्य में) शनि व आदित्यवार के दिन मेह की झड़ी लग रही थी उस वक़्त जगमाल ने बलाइयों को कहा कि झोटेलाव तालाब पर जाकर वट वृक्ष के पास दो भार लकड़ी के डाल आओ! बलाई लकड़ी डाल आये। च्यार घड़ी रात गये रावल जगमाल ने सिखरा को बुला कर कहा कि आज झोटेलाव तलाव के ऊपर सूले (कबाब) सेंक कर पीछे घर जाना! और वांभी (वांभी और बलाई पर्याय वाची हैं ये लोग कमीन जाति के गिने जाते, वेगार करते, घोड़ों

ऊदा उगमणावत—रावल मल्लिनाथजी की सेवा में मेहवे मे था उन दिनों में एक बाघ गोपाण की पहाड़ी में रहता और बहुत बिगाड़ करता था राजपूत वारी वारी से उस पहाड़ी की चौकी पर भेजे जाते थे। एक दिन ऊदा की वारी भी आई, उसने जाकर पहाड़ को घेरा, वाघ को पकड़ लाया और रावल के सुपुर्द किया। रावल ने उसकी बहुत प्रशंसा करके वाघ उसी को देदिया। ऊदा ने उसके गलमें एक घण्टी बांध कर छोड़ दिया और सब को कह सुनाया कि जो कोई इसे मारेगा उसके साथ मेरी शत्रुता होगी। वाघ स्वतन्त्रता के साथ फिरने और बड़ी हानि करने लगा परन्तु मारे कोई नहीं। एक बार घूमता घूमता यह भाद्राजण जा निकला, वहां के सिंधल राजपूतों ने उसे मार डाला। वैर बंधा और ईंदों व सिंधलों में लड़ाई हुई, २५ सिंधल मारे गये, भाद्राजण और चौरासी का मार्ग चलना बंद होगया। ऊदा का विवाह ईंदह सोलंकी की बेटी के साथ हुआ था, वह सिंधलों की चाकरी करता था। ऊदा की स्त्री भी ब्याह होने के पीछे सात वर्ष तक पति के घर न आई, कारण मार्ग रुका हुआ था। एक दिन सिखरा ने वालसीसर पर गोठ की, सब ईंदे वहां जमा हुए, बकरे मारे, खूब नशे पत्ते जमाये। वहां किसी ने हंसी में पूछा कि "ऊदाजी कभी भाद्राजण भी जाओगे"। ऊदा बोला कि आज ही रात्रि को जाऊंगा। उसने अपनी काठण घोड़ी को जव के चून में गुड़ मिलाकर खिलाया, तब उसके भाई सिखराने पूछा कि आज घोड़ी को उड़दावा (गुड व आटा) क्यों देता है? कहा भाद्राजण जाऊंगा। सिखरा बोला कि जहां ऐसा वैर पड़ रहा है कि पग पग पर मांटी (मनुष्य) मारे जाते है, उस मार्ग से क्यों जाना? तब ऊदाने कहा कि तुमको शपथ है मुझे मत रोको। साझ को ऊदा चढ़ चला, आधीरात को वहां पहुंचा, सासरे का द्वार खुलवा भीतर गया। सरगरे (डोम) ने जाकर ईहड़दे (ऊदा की स्त्री) को जगाया, ढोलिया बिछादिया। ऊदा को नींद आगई और वह अपनी घोड़ी का कायजा खोलकर उसे बांधना भूलगया, उसी तरह बाहर खड़ी थी। इतने में ऊदा का साला जागा, घोड़ी देखी, जाना ऊदा की है उसे लेजाकर पायगाह में बांधना चाहा। उस वक्त ऊदा की भी आंख खुल गई, उसने जाना कि घोड़ी को कोई चोर लिये जाता है, भाद्राजण में चोर बहुत हैं, यह समझ कर तलवार खींच हाथ मारा और साले के दो टुकड़े कर दिये। आहट पाकर ऊदा की स्त्री भी जाग उठी देखा भाई मरा पड़ा है। पति से

की चोटी काटकर पीछा फिर गया। थोड़ी देर पीछे स्त्री जागी, सिरपर हाथ फेरा तो चोटी नहीं। उसने कहा कि मेला आया और मेरी चोटी काटकर लेगया। सिखरा तत्काल उठा, शस्त्रों के वन्ध भी कटे हुए पाये, वर्छी हाथ में ले अवलख घोड़े पर सवार हो दौड़ा। लौटते हुए मेला ने उन कुत्तों को काट डाले थे, और उसका अमल का पोता भी खुल कर गिर पड़ा था। सिखरा घोड़े के खोजों लगा, पोता नज़र आया उसे उठा लिया, आगे हड्डियां बिखरी हुई और कुत्तों को कटे हुए पड़े देखे। ऊदा की घोड़ी की बछेरी सिखरा के साथ लगगई थी। मेला रात ही रात में चलकर प्रभात होते कोढणे के तालाव पर पहुंचा, अमल-पानी का समय था पोता संभाला तो पाया नहीं, तव घोड़े से उतर कर घासिया डाल सोरहा। सिखरा भी वहां आन पहुंचा, किसी आदमी को सोता देखा, घोड़े पर निगाह पड़ते ही उसने पहचान लिया कि है तो मेला, परन्तु सोता क्यों है? पास जाकर कपड़ा खींच जगाया और नाम पूछा, उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम मेला सेपटा है। सिखरा कहने लगा, मेलाजी चौरासी को छेड़ा है, स्थल स्थल पर टोलियां खड़ी हैं ऊदा जैसे रजपूत को खिजाकर फिर निश्शङ्क कैसे सोते हो? मेला ने पूछा, आपका नाम क्या है? उसने कहा सिखरा। तव तो मेला चौंका, कहने लगा इस वक़्त मेरा तो अमल उतर रहा है। सिखरा ने कहा उठो अमल लो! मेलाने कहा मेरा तो अमल का पोता कहीं मार्ग में गिर पड़ा, मैं अपने ही पोते की अमल खाता हूं। सिखराने वह पोता निकाल कर मेला के हाथ दिया, छागल में जल भर लाया, अमलपानी कराया और कहा मेलाजी अब थोड़ा आराम करलो मैं तुम्हारे पांव दबा दूंगा। मेला सो रहा, थोड़ी देर पीछे जगा, आंखें छांट शस्त्र बांधे। सिखरा ने पूछा कि युद्ध किस प्रकार करोगे। कहा सवार होकर, फिर अपने घोड़े पर चढ़ चाबुक फटकारा वह तो हवा होगया और सिखरा देखता ही रहा। उसने घोड़ा साथ दिया, परन्तु मेले को न पहुंच सका। सिखरे के घोड़े के साथ जो बछेरी आई थी वह भागती भागती मेला के घोड़े से सौ क़दम आगे जाकर पीछी फिरने लगी, तब सिखरा ने विचारा कि मेरा घोड़ा तो पहुंच सकेगा नहीं, तुरन्त बछेरी को पकड़ कर उस पर चढ़ बैठा और मेला को जालिया। संमुख होकर बर्छी मारा, वह छाती के पार हुआ और मेला वहीं ढेर होगया। इतने में सिखरा का भाई ऊदा भी आन पहुंचा, देखा कि मेला मरा हुआ पड़ा है, भाई को कहा कि इसका अग्नि

प्रकरण पांचवां

परमार या पंवार वंश

आबू पर वशिष्ट ऋषि ने दैत्यों को वध करने के वास्ते च्यार कुल के क्षत्री उत्पन्न किये—चहुवाण, चौलुक्य, पड़िहार, और परमार। परमारों का गोत्रोच्चार—आबूथान, अनल कुण्ड निकास, पञ्च प्रवर, वशिष्ठ गोत्र, माध्यंदिनी शाखा, सच्चियाय कुलदेवी।

किया है। सम्भव है कि कन्नौज का महाराज्य भीनमाल के पड़िहारों को मिला तब उन्होंने मंडोर अपने मेड़ते वाले भाइयों को देदी हो, जिससे फिर मेड़ता व मंडोर का राज एक होगया हो।

तात—नागभट का पुत्र, अपने छोटे भाई को राज दे आप मांडव्य ऋषि के आश्रम में जाकर तपस्या करने लगा।

भोज—तात का छोटा भाई, पुत्र यशोवर्धन राजा हुआ। यशोवर्धन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र चन्दुक था।

शीलुक—चन्दुक का पुत्र, जिसने वल्लमण्डल के स्वामि भाटिक देवराज (जैसलमेर का भाटी राजा, विक्रम की नवीं शताब्दी के मध्य में था) को जीतकर उसका छत्र छीना, त्रेता तीर्थ में नगर बसा कर पुष्करणी बनवाई आदि।

झोट—शीलुक का पुत्र, अन्तिम अवस्था में त्यागी होकर गंगा तट पर भजन करने चला गया।

भिल्लादित्य—झोट का पुत्र, मुद्गगिरि (मुंगेर) के पास गांवों पर विजय प्राप्त की। वह न्याय, व्याकरण व ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, कला कौशल में निपुण और कवि था। भट्टि वंश की राणी पद्मिनी से बाउक और दूसरी दुर्लभदेवी से कक्कुक नामी पुत्र हुए।

बाउक—सं० ८८४ वि० में राज पर था। कक्कुक ने मरुमाड (मारवाड़), वल्ल मंडल (जैसलमेर का राज्य), तमणी व गुजरात के लोगों की प्रीति सम्पादन की, घटियाले में एक जैन मंदिर बनवाकर धनेश्वर गच्छवालों को सौंप दिया। कक्कुक के पीछे मंडोर के पड़िहारों का कोई प्रामाणिक वृत्तान्त नहीं मिलता है।

बूंदी के इतिहास वंश भास्कर में मिश्रण चारण सूरजमल ने ऐसे वंशावली दी है—नाहरराज, राघवराज, धनराज, जीवराज इत्यादिक जिसके १२ बेटे—लुसर, सूर, रामट,

परमारों की ३६ शाखा—पवार, सोढा, सांखला, भाभा, भायल, पेस, पाणी सवल, वहिया, बाहल, छाहड़, मोटसी, हुवड़, सीलोरा, ऊंपाल, काबा, फाग, ऊमट, धांधू, भुरिया, भाई, कछोड़िया, काला, कालमुहा, खैरा, खूंटा, ढल, ढेगल, जागा, ढुंढा, गूगा, गैदलड़ा, कलीलिया, कूकणा, पीथलिया, डोडा, वारड़।

खींचा, मोयल, गुजर, धर, नाम्देव, धीर, बीर, डूगर और सूपर। इनमें पड़िहारों की बारह शाखा बनीं। मोयल के बेटे ईंदा के वंशज ईंदा पड़िहार कहलाये, ईंदा के सुजर रूपपाल, हरपाल, ठाकुरसी, गोरख पुत्र, पृथ्वीराज, रूपाद जिसके १६ पुत्र और हमीर हुए। हमीर बड़ा लम्पट और दुराचारी था इसलिये उसके भाइयों ने राव चूंडा राठोड़ से मिलकर मंडोर का राज उसे दे दिया। मंडोर छूटने पर राणा हमीर बीजकहा नगर में जा रहा। हमीर के बेटे कुंतल ने भिनाय लेकर वहां राजधानी की। कुंतल के बेटे देदे बाघराज ने बुढ़ापे में ईंदराज सोलंकी की बेटी जयवती से विवाह किया। वह कुलटा अपने पति को छोड़ भोजा गूजर के घर में जा बैठी। पड़िहारों और गूजरों में लड़ाई हुई जिसमें २४ भाई बगड़ावत मारे गये। नाहरराज पड़िहार और उसके समकालीन राजाओं के वर्णन के छप्पय—

कान्यकुब्ज रट्ठौर, तपत जयचन्द भूप जह।
चितऊद मासोद, समरसिंह गुरावलवह॥
तोंवर तपत अनग, पाल दिल्लियपुर दुव्वर।
सोमेश्वर अजमेर, वर चहुआन समुद्दर॥
चालुक्य भीम गुजरात धर, भोरा राय उपारयपति।
नरवर अधीस हैं जम नृपति, कूरम कुल मरन सुमति॥
इत सुलक्ख परमार, तपत अब्बुव गिरि ऊपर।
धवावद आनद, राजकुल रवि दिवाकर॥
जद्दवपति जयसेन, दुर्ग रनथम्भ धराधन।
भट्टी जेसलमेर, जाति जद्दव कुलकरन॥
परमाल भूप चंदेल जव, थान महुव्वा पुरठयो।
तव प्रतिहार नाहर नृपति, मंडोवर पुर प्रतिभयो॥

यह वर्णन वंश भास्कर के रचयिता ने पृथ्वीराज रासे के आधार पर किया है जो गलत है, कारण कि प्रथम तो नाहरराज के पिता का नाम अजराज बतला कर उसकी बेटी पिंगला का विवाह चित्तोड़ के रावल तेजसिंह के साथ होना लिखा है। जब कि नाहरराव पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर का (सं० १२२६–३५) समकालीन था तो उसकी बहन का विवाह एकसौ वर्ष पीछे (सं० १३१९–२८) में होनेवाले रावल तेजसिंह के साथ कैसे हो सकता है ? दूसरा दिल्ली में तवर अनगपाल विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी में राज करता था।

वंशावली (नं० १)—आदि जुगादि, कमल, ब्रह्मा, मरीच, कश्यप, धूमऋषि, राजपाल, राजा पुरुराई (पुरुरवा) धर्मांगद, धरणीवराह, धारगिर, धाहड़, धीरसेन, पोहपसेन, लखसेन, बुधसेन, कालसेन, इंद्र, चित्रांगद, गंधर्वसेन, वीर विक्रमादित्य, विक्रम चरित्र, राणा अजयभूपाल, महपाल, मधुर, चन्द, गोशील, राजा सिंघल, राजा भोज, राजा उदैकर्ण, देवकर्ण, सत्त, मिघर, सालवाहन, हंस, हरिवंस, सिंघ, मधु, धूंजालक, बुधाइय, वाघ, उदयादित्य,

---

चित्तोड़ के रावल समरसिंह का समय सं० १३२८–४६ वि० का है। रणथम्भोर में यादव नहीं किन्तु चौहान ही उस गढ़ के अधिपति थे, आबू में धारा वर्ष पवार राजा था, हाड़े उस वक्त बमावदे में आये ही नहीं थे, यह प्रदेश अजमेर के चौहानों के आधीन था; भला फिर ये सब समकालीन कैसे हो सकते हैं।

कन्नौज के पड़िहार—

पड़िहार राजाओं में वत्सराज बड़ा प्रतापी हुआ। जोधपुर राज के डीडवाना परगने के गांव बुचकला में पड़िहार राजा नागभट का एक लेख सं० ८७२ चैत्र शुदि ५ का मिला जिस में वत्सराज की पदवी "महाराजाधिराज परमेश्वर" और नागभट की "परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर" लिखी है। जैनमत के हरिवंश पुराण में वत्सराज का समय शक सं० ७०५ दिया है। वत्सराज नागभट से पहले भाई देवराज का पुत्र था, उसने गौड़ और बंगाल के राजाओं को जीते और जब मालवे पर चढ़ाई की तो दक्षिण के राठोड़ राजा ध्रुवराज ने अपने सामन्त गुजरात के राठोड़ राजा कर्कराज को मालवपति की सहायता के निमित्त भेजा। युद्ध हार कर वत्सराज मारवाड़ को लौट आया। उसकी राणी सुन्दरीदेवी से नागभट उत्पन्न हुआ।

नागभट–कन्नौज का महाराज्य प्राप्त किया। आंध्र, सैंधव, विदर्भ, कलिंग, और बंगाल के राजाओं को जीते, आनर्त, मालव, किरात, तुरुष्क, वत्स, मत्स्य आदि देशों के पर्वतीय गढ़ लिये। सम्भव है कि जैनों का नागावलोक यह नागभट ही हो जो सं० ८७२ वि० में विद्यमान था। उसका पुत्र रामभद्र।

रामभद्र–सूर्य का उपासक, राणी अप्पादेवी से भोजदेव उत्पन्न हुआ।

भोजदेव–विरुद आदिवराह व मिहर। गुजरात के राठोड़ राजा ध्रुवराज या धारावर्ष से लड़ा। इसका राज राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, मालवा, मध्य हिन्दुस्तान और गौड़ादि दूर दूर देशों तक फैला हुआ था। इसके लेख सं० ९०० से ९३८ वि० तक, और चांदी व तांबे के सिक्के भी मिले हैं।

महेन्द्रपाल–भोजदेव का पुत्र, भगवती का भक्त। विरुद महेन्द्रायुध और निर्भयनरेंद्र। पुत्र भोजदेव और विनायकपाल। सं० ९५० से ९६४ वि० तक विद्यमान था। बाल रामायण

अपना मस्तक दिया। माधवदे के पुत्र-सूर, सांवल। जगदेव के पुत्र-डाभऋषि जिसके वंशज आगरे के पास हैं। गूंगा, जगदेव के मस्तक देने के पीछे पैदा हुआ। काबा रामसेण तथा द्वारिका की तरफ। गेहलड़ा-कहते हैं कि पहले इनका राज सारी पायड़े में था। डाभऋषि का धोमऋषि (धूमऋषि), धूमऋषि का राजा धर्मदेव किराडू का स्वामी। धरणीवराह का भाई उत्पलराय किराडू छोड़कर ओसिया में जा बसा, सचियाय देवी प्रसन्न हुई मालवा दिया, ओसियां में देवल कराया[1]। धरणीवराह का पुत्र छाहड़ जिसके घर में अप्सरा थी, उसके पेट से सोढा और सांखला दो पुत्र हुए[2]।

सांखला पंवार—सांखले व सोढे का दादा धरणीवराह पहले बाहड़मेर या जूंन किराडू का स्वामी था और मारवाड़ के नवों कोट उसके आधीन थे। उसके पुत्र बाहड़ से यह स्थान छूटा[3]। पहले तो वह रायधणपुर (राधन-

(१) बसन्तगढ़ से मिले हुए सं० १०९९ वि० के परमारों के लेख से पाया जाता है कि उत्पलराज धरणीवराह का भाई नहीं किन्तु परदादा था जिसका समय विक्रम की दसवीं शताब्दी के आरम्भ में होना चाहिये।

(२) मिश्रण चारण सूरजमल कृत वंशभास्कर में परमारों की वंशावली दी है, जिसमें सोढा सूमरा तक २०३ नाम हैं, और इस ख्यात में दिये हुए नामों में से दो चार नाम के सिवाय एक भी नाम उसमें नहीं मिलता। आजतक उपलब्ध हुए परमारों के प्राचीन शिलालेखादि में दी हुई वंशावली इन नामों से नहीं मिलती है।

(३) पहले तो बाहड़ और पीछे छाहड़ नाम दिया है, परन्तु शुद्ध नाम बाहड़ ही प्रतीत होता है। बाहड़मेर सम्भवतः बाहड़ का बसाया हुआ हो।

राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि परमार धरणीवराह के ९ भाई थे जिनको उसने अपना राज बांट दिया और उनकी ९ राजधानियाँ नवकोटी मारवाड़ कहलाईं। इस विषय का छप्पय —

मंडोवर सामन्त, हुओ अजमेर सिधुसुव।
गढ़ पूंगल गजमल्ल, हुओ लोद्रवे भाण भुव॥
अल्ह पल्ह अर्बुद, भोज राजा जालंधर।
जोगराज धर धाट, हुओ हासू पारक्कर॥
नवकोट किराडू संजुगत, थिर पंवार हर थप्पिया।
धरणीवराह धर भाइयां, कोट बांट जू जू किया॥

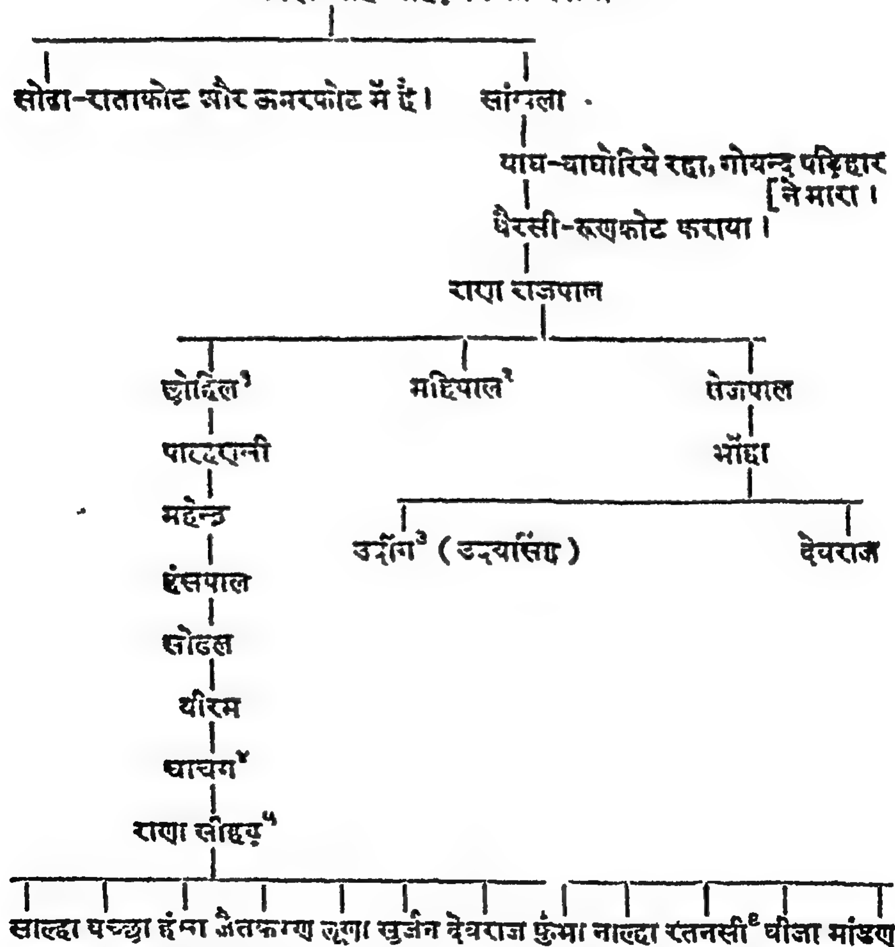
सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता राय बहादुर पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा अपने "सिरोही के इतिहास" पृष्ठ १४५ की टिप्पणी में लिखते हैं कि "इस छप्पय में कुछ भी सत्यता पाई नहीं जाती, अनुमान होता है कि यह किसी ने पीछे से बनाया हो और बनानेवाले को परमारों

पुर) के पास गांव जाझेत्रे में जारहा, पीछे उसका पुत्र सोढा सूमरों के पास गया, उन्होंने उसे राताकोट दिया, और फिर उसने जाम तमाइची से रातिकोट से १८ कोस आगे ऊमरकोट पाया। बाहड़ का दूसरा बेटा वाघ मारवाड़ में आया और पड़िहारों ने उसे गाव बाघेरिये में टिकाया। वंशावली-गंधर्वसेन, अजय-पाल, अजयसी, वंधाइन, बंध, धरणीवराह। इसके पुत्र बाहड़ के अप्सरा के पेट से दो पुत्र हुए सोढा और सांखला। वाघ, जिसकी सन्तान सांखला कह-लाई, उनकी दो स्थान में ठाकुराई हुई। वाघ लोटण व बाहड़मेर को छोड़ कर घाघेरिये में आया क्योंकि पड़िहार गोयंद की भूवा (फूफी) सुंदर का उससे कुछ सम्बन्ध था। पड़िहारों ने गोयंद को बहकाया और कहा कि वाघ का ढंग देखने ऐसा प्रतीत होता है कि वह तुम्हें मारकर इस प्रदेश का मालिक बन बैठेगा। तब गोयंद ने सेना भेजकर बहुत से साथियों सहित उसे मरवा डाला। वाघ की स्त्री सगर्भा थी, मुंहता सुगुण उसको लेकर अजमेर चला आया। यहां उसके वैरिसिंह नामी पुत्र उत्पन्न हुआ। जब वह सयाना हुआ तो मुंहता ने उसे अजमेर के स्वामी (चौहान) से मिलाया। वैरिसिंह ने उसकी बहुत दिनों तक सेवा की और एक दिन अवसर पाकर उसे कहा कि पड़िहारों ने मेरे बाप को बिना अपराध मारा है सो मुझे सैन्य की सहायता दो तो बाप का वैर लेऊं। राजा ने सेना दी। वैरिसिंह ने पयान करते समय माता की मानता मानी थी कि जो पड़िहारों पर फतह पाऊं तो कमल पूजा करूंगा। माता सचि-याय ने स्वप्न में आकर आज्ञा दी कि कल काले वस्त्र पहने काली टोपी सिर पर धरे, एक गाड़ी में, जिसके काली खोली (गिलाफ) और काले ही बैल जुते होंगे, बैठा हुआ एक आदमी साम्हने मिलेगा और कहेगा कि इस मार्ग से मत जा, परन्तु तू उसे मार कर चला जाना। प्रभात होते ही वैरसी मुंधियाड़ (पड़िहारों का एक ठिकाना) पर चढ़ा, साम्हने उसी भेष का पुरुष मिला, उसको मार कर फिर मुंधियाड़ जा मारा और बहुत से पड़िहारों का प्राण लेकर

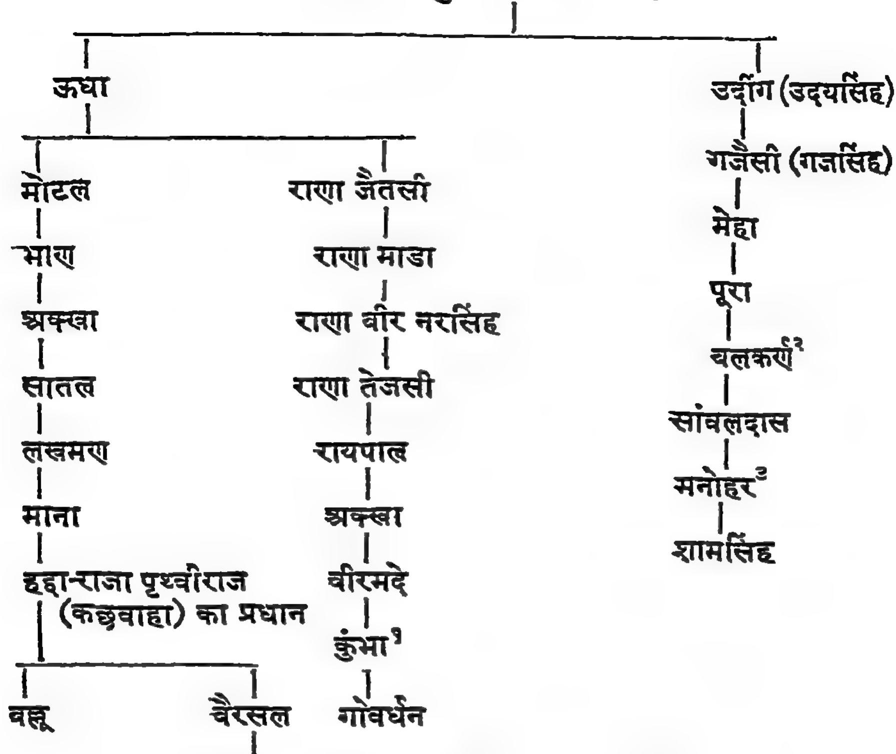
के इतिहास का ठीक ठीक ज्ञान न हो"। मैं भी इस पंडितजी के कथन से सहमत हूं, क्योंकि

बाप का वैर लिया। कार्य सिद्ध होने उपरान्त ओलियां आया और माता के मन्दिर का द्वार बन्द कर एकान्त में कमल पूजा करने को खड्ग उठाया, तब देवी ने हाथ पकड़ कर समझाया कि मैं तेरी सेवा से प्रसन्न हुई और तेरा मस्तक तुझे दिया, इसके बदले सुवर्ण का सिर बनवाकर चढ़ा देना। फिर अपने हाथ का शंख बैरसी को देकर फर्माया कि इस शंख को बजाकर साखला प्रसिद्ध हो। वहां से आकर बैरसी रूणवार में बसा, मुधियाड़ में पड़िहारों का गढ़ गिराकर उसने रूणकोट बनवाया।

रूण के सांखले पंवारों का वंशवृक्ष।



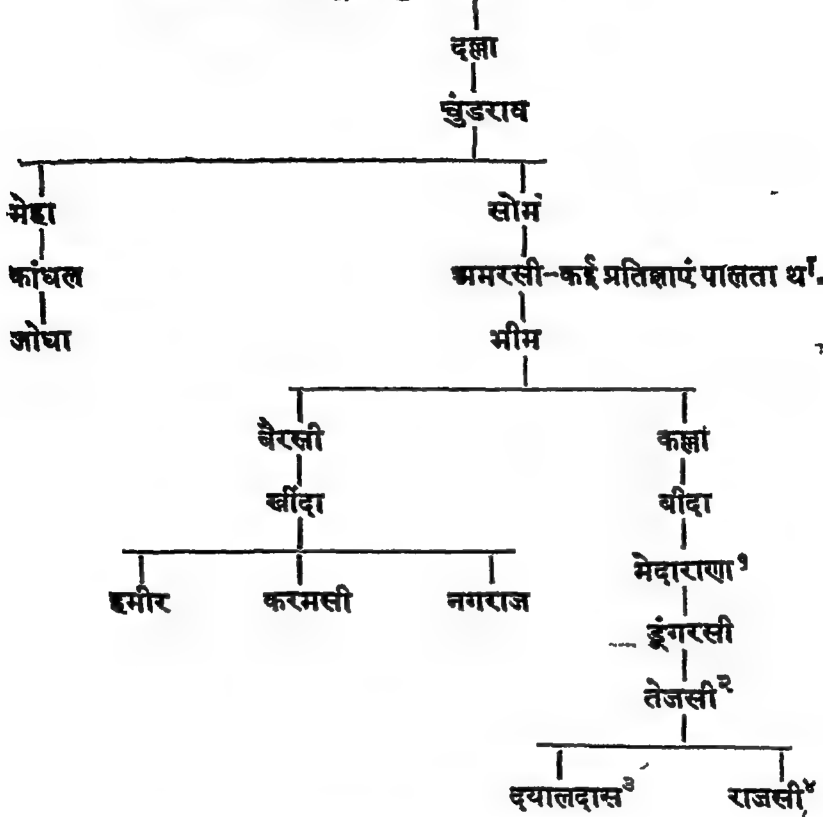
(१) इसके वंशज रुणेचा कहलाये। (२) इसके वंशज आगलवा कहलाये।



(३) पृथ्वीराज चौहान का सामंत, मेड़ता पट्टे था। (४) मांडू के बादशाह ने इस पर चढ़ाई की, लड़ाई हुई, बादशाह भागा और उसका नक्कारा निशान सांखलों ने छीन लिया, इसलिये वे "नादेत निसाणेत" कहलाते हैं। (५) बहुत अच्छा राजपूत हुआ। उसकी कन्या पंगुली के पेट से आनल के पुत्र धारू ने जन्म लिया जो बड़ा वीर पुरुष था। सीहड़ ने मेर से लड़ाई की उसकी साक्षी का छप्पय:—

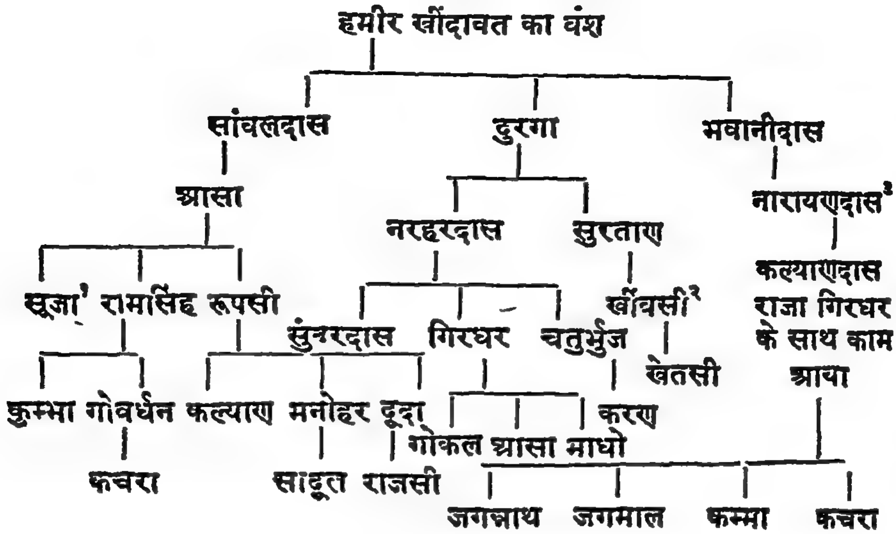
कोणो जो कोपियो, लूस अमणेर लियंतो।
दुजड़ां हथो हुभाल, रोस रोहीसै रत्तौ ॥
धाल जाल वोरवो, भरम पहाड़ां भग्गो।
मचकोड़े मेवड़ो, वळै वधनोर चिलग्गो ॥
वधनोर गोल आडोवळै, तोडै जड़ा विलाइली।
सांखले रांण सुजड़ां हथै, भांजी सीहड़ भाइली ॥

(६) इसकी संतान जोधपुर चाकर।



(१) बड़ा राजपूत हरदास महेसदासोत का नौकर था (२) बड़ा राजपूत, राजा मानसिंह (कछवाहा) का चाकर था। जब मानसिंह को नागोर मिली तब ८४ गांव से इसको रूण की जागीर दी थी। (३) राजा गजसिंह का नौकर, जोधपुर रहता था।

(१) राणा उदयसिंह का चाकर था, सोलंकी मल्ला वाला ताणां, गांव ८४ सहित उसको जागीर में दिया था। (२) इसके वंशज मेवाड़ में। (३) रु० १००००) का (मेवाड़ में) पट्टा था। (४) रु० १००००) का पट्टा था, राणा जगतसिंह (प्रथम) का बड़ा विश्वासपात्र सेवक था। राणा मोकल ने राजपाल के यहां विवाह किया था और उस राणी के पेट से राणा कुंभा ने जन्म लिया था। राजसी का दादा



जांगलू के सांखले पंवार ।

सांखले महिपाल का पुत्र रायसी रूण को छोड़ कर जांगलू आया। चौहान पृथ्वीराज की राणी अजादे (अजयदेवी) दहियाणी ने यह स्थान बसाया था, वहां रायसी गुढा बांध कर रहने लगा। चातुर्मास आने पर ढाक पलास के पत्तों से छाये हुए झोंपड़े बनाये। यह गुढा जांगलू के गढ़ के पास ही था सो रूण के लोग उसे उजाड़ने को आते और सांखलों की स्त्रियां जब जल भरने जातीं तो दहियों के लड़कों की टोलियां उन स्त्रियों के बेहड़ों (पानी के बर्तन) पर गिलोले चलाते, और जवान अबलाओं को देख कर खंखारते व ठट्ठा मसखरी करते थे।

करमसी बड़ा हरिभक्त हुआ। इसी विवाह के प्रसंग से सांखले और उनके दधिवाड़िये चारण मेवाड़ में गये।

(१) उदैसिंह गोपालदासोत का नौकर, उज्जैण काम आया। (२) खींवसर में गोपालदास के पास रहता था, मेरियावास जागीर में था। (३) तोसीना पट्टे।

ये सब दुखड़े गुढ़े के लोग रायसी के आगे जाकर रोते तब वह यही कह कर आश्वासना देता था कि भाइयों, अपनी दशा अभी ऐसी ही है, समय देख कर चलना चाहिये, परन्तु अन्तर में सदा वह उन धरती के लेने के प्रयत्न सोचा करता था। जांगलू में एक ब्राह्मण केशव उपाध्याय रहता था, उसकी अभिलाषा जांगलू के कोट के दर्वाज़े के बाहर एक तलाई बनवाने की थी। कई बार उसके वास्ते उसने दहियों से आज्ञा मांगी परन्तु उन्होंने मन्जूरी नहीं दी। केशव एक राहबेधी आदमी था और वह दहियों से चिढ़ा हुआ था। अवसर पाकर सांखलों ने चालीस पचास नारियल इकट्ठे दहियों के पास सम्बन्ध के निमित्त भेजे और उन्होंने भी स्वीकार कर लिये। एक ही दिन सब के लग्न ठहराये और दहियों के दुलहा ब्याहने आये। उनके खान पान में धतूरा मिलाया गया। भोजन करते और मदिरा पीते ही सब पर गहरा नशा छागया और वे बेसुध होगये, तब सांखलों ने उन्हें सहज ही में मार गिराया। केशव उपाध्याय भी साथ था, जब उसको मारने लगे तो बोला कि मुझे मत मारो, उबारो, मैं तुम्हारे बड़ा काम आऊंगा। पूछा कि भला क्या काम आओगे? वह बोला कि मुझे तुम गुरुपद दो और गढ़ के पास तलाई बनाने दो तो कहूं। उन्होंने उसकी मांग को स्वीकारा, कौल बचन और सौगन्ध शपथ हुए, तब केशव ने कहा कि इनको तो मारे, परन्तु गढ़ में कैसे घुसने पाओगे? उसका उपाय मैं बतलाता हूं। पचास साठ रथ जो यहां हैं जुतवालो, और प्रत्येक रथ में पांच पांच शस्त्रबन्द राजपूत बिठाओ, इस काम में विलम्ब मत करो और रात ही में वहां पहुंचो। गढ़ के कपाट मैं खुलवा दूंगा। तदनुसार रथ तयार हुए। केशव ने गढ़ की पोली पर आकर द्वारपाल का नाम ले उसको पुकारा और कहा कि "मुहूर्त का समय टलता है, रथ बाहर खड़े हैं, शीघ्र द्वार खोल कि भीतर आवें"। द्वारपाल ने द्वार उघाड़ दिया, तब तत्काल छिपे हुए राजपूत शस्त्र सम्भाल कर बाहर कूद पड़े, जितने मनुष्य दहियों के गढ़ में थे सबको सांखलों ने यमलोक में पहुंचाये और जांगलू में राणा रायसी की आण दुहाई फिरगई।

वंशावली—१ राणा रायसी, २ अणखसी, ३ धांधली (खेमसिंह), ४ करमसी, जिसको खरला राजपूतों ने छल से अपनी अन्धी कन्या भारमली को ब्याह दिया, परन्तु पाणिग्रहण होते ही उस कन्या के नेत्र खुलगये और दीखने लगा। इन खरलों की ठाकुराई पहले छोटले रिणधीरसर के बाहरोट

(बाहरी विभाग) में थी जो पूंगल से दस और बीकमपुर से १२ कोस है। जसलसी का पुत्र राणा ५ राजसी, राजसी का ६ सूंजा, सूंजा का ७ ऊदा और ऊदा का पुनपाल व जयसिंह हे। ८ पुनपाल जांगलू में टीके बैठा और जयसिंह दे जैसलमेर गया। पुनपाल का पुत्र ९ माणकराव, और माणकराव का बेटा १० नापा जांगलू का स्वामी हुआ। बिलोचों ने उसे आ दबाया, वह जोधपुर राव जोधा के पास गया और वहां से कुंवर बीका को लाकर जांगलू उसके सुपुर्द करदी और आप उसका सेवक होकर रहा तब से बीकानेर में सांखले बड़े विश्वासपात्र गिने जाते हैं। आज भी गढ़ की कुञ्जियां सांखलों के पास रहती हैं। सांखला नापा (नरपाल) का कवित्त:—

रवि अंगीरी रास, सिंह जाय कोरी हुतो।
पड़िया घोनारिक्ख, मास आषाढ निरत्तौ॥
उवाणो ईलियो, इसो काकड़ा वणे उर।
कहुपं (रो) गुरनह, गोम आवियो हुपंगुर॥
दे दिये दिवारे दानविध, विरदे गोयल राव हुवो।
तिणवार हुवो नरपात तूं, माणकरावत मालवो॥

राणा राजसी के पुत्र राणा अमा (अमयसिंह) को मारकर सूंजा ने जांगलू लेली थी[1]। अमा के पुत्र गोपालदे को उसके भाई ऊदा ने मारा, तब गोपाल की स्त्री जो मांगलिया कोलू करणोत की बेटी थी, सगर्भा थी। चारण धरमा बीठू उसे ले निकला। पीहर में मांगलियाणी के महिराज उत्पन्न हुआ। गोपाल के उदहड़ और खावड़ियाणी दो और स्त्रियां थीं जिनके उदर से सींवराज और बीरम ने जन्म लिया। जब महिराज १४-१५ वर्ष का हुआ तब अपने भाइयों और दूसरे राजपूतों को इकट्ठे कर जांगलू पर चढ़ दौड़ा और ऊदा सूंजावत को मार कर उसकी लाश दावसरी के कुए में डाल दी उसके बहुत से साथियों को काटे अर्थात् इतने आदमी मारे गये कि उनके तनों से निकली हुई रक्तधारा बहकर गढ़ के दरवाज़े के बाहर तक पहुंची। पहले जब सांखलों ने दहियों को मारे थे तब भी इतना ही रक्तपात हुआ था। महराज उसवक्त कभी था वह जांगलू में न रहा माणकराव के बेटों को वहां छोड़कर आप जोगी के तालाब से दो कोस

(१) जांगलू के राजा जंगल देश के धनी कहलाते थे।

पूर्व और चरडालर से एक कोस पिहलाप गाव में जा बसा। वहां उसके बनवाये हुए महिराजाणा, लूंभासर और हरभूसर नामी तीन तालाब हैं। कई एक दिन पिहलाप में रह कर फिर राव चूंडा से मिल नागोर के गांव भूडेल में जारहा। जब (राव चूंडा के पुत्र) गोगादेव ने दला जोइया को मारा तब महराज का पुत्र आल्हणसी गोगादेव के साथ था। फिर धीरदे जोइया और राणगदे (रणसिंह देव) भाटी ने पद्मोलाई की तलाई पर गोगादेव को मारा तब आल्हण भी उसके साथ काम आया। लूंभा की सन्तान मारवाड़ में चौधीड़स में है, कुम्भा और जोधा के वंशज और रणधीर पागटी में हैं।

राव चूंडा वीरमोत ने तुर्कों को मार कर नागोर लिया और वहीं रहने लगा, तब से महराज सांखला भी नागोर के गांव भूडेल में रहता था। एक दिन राव चूंडा का बेटा अरड़कमल आखेट करता हुआ महराज के गांव आ उतरा, महाराज ने उसे गोठ दी। वह जानता था कि भाटी सादा राणगदेवोत ओदीठ के मोहिलों के यहां विवाह करने को आवेगा। अरड़कमल को इस बात की खबर न थी। महराज के मुंह से अकस्मात ये शब्द निकल पड़े-"बाघण पूतन बीसरै, ज्यूं विषधर फाल्होद। आल्हणसी नउ बीसरै, महरज मूछाल्होद"। अरड़कमल ने पूछा कि तुमने यह क्या कहा ? उत्तर दिया कि कुछ भी नहीं। तब तो कुंवर ने आग्रह पूर्वक फिर पूछा। महराज बोला कि आप तो बड़े सर्दार हो, आपको अपने दावे की चिन्ता नहीं रहती, मैं गृहस्थ, मेरा पेट छोटा, सो एक बात याद आगई। अरड़कमल ने फिर प्रश्न किया कि वह बात क्या है ? तब वह कहने लगा कि राठोड़ गोगादेव को जब जोइयों ने मारा तब राणगदे भाटी ने गोगादेव से लड़ाई की थी, सो मरते वक्त गोगादे के मुंह से ये शब्द निकले थे—" मेरा दावा जोइयों से नहीं क्योंकि मेरे तीन सर्दार मारे गये और जोइयों के सात, यदि कोई राठोड़ मेरा वैर मांगे तो राव राणगदे पास मांगना"। उस वक्त मेरा बेटा आल्हणसी गोगादेव के साथ काम आया था, वह बात मुझको याद आगई। अरड़कमल कहता है कि अभी उस बात के याद आने का क्या प्रसंग था ? महराज बोला—राव राणगदे का पाटवी पुत्र सादा ओदीठ के मोहिलों के यहां ब्याहने को दो दिन में आवेगा। अरड़कमल ने अपने जासूस भेजे और आप २०० सवारों से चढ़ चला। मार्ग में ४ सिंह मिले, इस शकुन का फल पूछने को कूचेर गाव में गहलोत गोगा के पास गया। वहां जासूसों ने आकर

जबर दी और कुंवर आगे बढ़ा। सादा (सादूल) भी विवाह करके लौटता था, राठोड़ो ने नागोर बीकानेर के बीच गाव साथीसर जसरोसर में उसे जा लिया। एक बार तो सादा अपने घोड़े मोर का पराक्रम उनको दिखलाने के वास्ते घोड़े को दपट कर उनके बीच में से निकल गया, परन्तु फिर पीछा लौटा, लड़ाई की और मारा गया। जेठी पाहू राव राणगदे का बड़ा विश्वस्त राजपूत था, वह अकेला ही जारहा था, उसको पड़िहार उगमसी के पुत्र दो ईंदो ने जा पकड़ा, परन्तु वह उन दोनों को मार कर निकल गया, उसको यह खबर न हुई कि सादा मारा गया है। जब वह पूगल पहुंचा तो राव राणगदे ने उसे बहुत उपालम्भ दिया। भाटी महराज को मारने की घात देखने लगे, परन्तु वह बड़ा शकुनी था, उसको आपत्ति का ज्ञान पहले से होजाता इसलिये दाव मे नहीं आता था। एक बार उसका नौकर एक सांखला राजपूत भाटियो के पास जाकर कहने लगा कि मैं महराज को मरवा देता हू। कटक जोड़ कर भाटी उस राजपूत के साथ हो लिये। राव राणगदे और पाहू जेठी अपने डेरों के गिर्द गहरी खाई खुदवा कर उसे पानी से भरवा देते थे। इस तरह वे गाव भूंडेल के पास पहुचे, यह समाचार सुनते ही महराज ने अपने एक राखलिये रजपूत सोना का घोड़े चढ़ा कर राव चूंडा के पास नागोर भेजा और कहलाया कि मेरी सहायता कीजिये, और नातरे (नियोग) देने स्वीकारे। राव चूंडा बाहर चढ़ कर आया और नागोर से २० कोस जाभ वाघोड़े का गुढ़ा लूटने लगा। राव चूंडा के पहुंचने के पूर्व ही राव राणगदे महराज को मार कर पीछा फिर गया था। जांभ ने राव चूंडा से कहा कि जो मेरा गुढा न लूटो तो मैं राव राणगदे को बताढूं, वह इन मोरों पर है। जांभ को आगे किये हुए राव चूंडा वहां से दस कोस जहा राणगदे उतरा हुआ था जा पहुंचा। भाटियो ने जाना कि कोई सौदागरों के घोड़े हैं, वे तो कटकटाते हुए साम्हने जा खड़े हुए, और राव चूंडा ने ललकार कर कहा कि "राव राणगदे! राव गोगादेव को मागता हूं," और इसके साथ ही राणगदे और पाहू जेठी दोनों के मस्तक उड़ा दिये।

राव राणगदे का बेटा केलण मुलतान की सेना साथ ले अपने बाप का बैर लेने को राव चूंडा पर चढ़ आया और उसको मारा[1]। इस सेना के साथ देव

(१) टाड राजस्थान में केलण को जेसलमेर के रावल केहरीसल का पुत्र लिखा है जिसकी सलाह के अनुसार राणगदे के पुत्र तन्नू और महरा ने मुलतान के नवाब (खिजर-

राज भी था इसलिये राव कान्हा चूंडावत जांगलू गया और इतने सांखलों को मारे—दोहा—" सधर हुवा भद सांखला, ग्यो भाजे भाभाल । वीर रतन ऊदो बिजो, वह्यो नै पुनपाल " ॥ जांगलवे सांखलों के बारहट चारण वीठू और रूणेचा सांखलों के दधिवाड़िया चारण थे, जांगलवों के ब्राह्मण उपाध्याय, कुम्भार गिरधर व सूत्रधार वोहिल थे ।

गदराज के मारे जाने पर उसका पुत्र हरभम भूडेल छोड़ कर फलोधी के गांव चारू से तीन कोस और सिरड़ से ५ कोस 'हरभम जाल' नामी स्थान में जा रहा । वहां रामदेव पीर (राठोड़) और हरभम का मिलाप हुआ । जिस बालनाथ योगी ने रामदेव पीर के सिर पर पन्जा धरा था, हरभम भी उसी का शिष्य हुआ, वह शस्त्र त्याग कर साधू बन गया और गाव लोलटे में आ टिका । हरभम पीर बड़ा करामाती हुआ, पीर रामदेव ने देहरे में गोर ली तब कहा कि मेरी गोर के साथ एक गोर हरभम की भी सिवा रखी जावे, आज के आठवें दिन हरभम स्वय आन कर गोर पहनेगा । फिर हरभू ने वहां आकर गोर ली[1] ।

जब राव जोधा पर आफत आई और वह भटकता भटकता हरभम के पास आया तो हरभम ने उसको भोज दिया और यह आशिर्वाद दिया कि जब तक तेरे पेट में ये मूंग रहे उतने समय में तेरा घोड़ा जितनी धरती में फिरेगा वह भूमि तेरी सन्तान के अधिकार में सदा बनी रहेगी । राव जोधा के दिन फिरे, राज पीछा हाथ आया और उसने वहगटी गांव हरभम को शासन में दिया जहा अब तक उसकी सन्तान निवास करती है ।

राणा नापा के पीछे की वंशावली । नापा तक जागलू सांखलों के रही । रायपाल नापा का, सुर्जन रायपाल का, अखैराज सुर्जन का; ईसरदास अखैराज

का) की सहायता से अपनी बेटी ब्याहने के बहाने से छल के साथ राव चूंडा को नागोर में मारा था ।

(१) गोर या गोख एक छल्ला होता है, और जैसे साम्प्रदायिक सेवक अपने गुरु से कण्ठी बंधवाते और उसके नियम पालते हैं उसी प्रकार राजपूताने में प्रायः शूद्र वर्ण के लोग भैरव व पीर आदि के उपासक अपने २ देहरा या थानों में जाकर वह छल्ला पहनते हैं । यदि किसी कारण से छल्ला उनकी अंगुली से अलग हो जावे तो जब तक नियमानुसार देहरे जाकर दूसरा छल्ला न पहन लें तब तक मौन धारण किये रहते और कुछ खाते पीते भी नहीं हैं ।

का, ईसरदास के ४ बेटे—गोइंददास, रामदास, केशोदास, नरसिंहदास। सांख-ला महेश कल्लावत बीकानेर में बड़ा राजपूत हुआ। राजा रायसिंह की लड़ाई उसके पुत्र दलपत के साथ गांव सरणिंय में हुई जिसमें महेश मारा गया, उसके वंश का पता नहीं चलता है।

पुनपाल के पोतरे (वंशज)—(क्रमशः)—पुनपाल, सोमा, भोजा जिसके पुत्र अभा, चाटला पट्टे, कुंवर भोपत के साथ था, हणूतराव, मांडण का नौकर चाटले काम आया। भोजा, लूणा के साथ काम आया। तेजसी, देवीदास जैतावत के साथ मेड़ते में काम आया। तेजसी के पुत्र मानसिंह, जोधा और गोइंददास थे। पुनपाल के दूसरे बेटे सांडा का पुत्र कीता था।

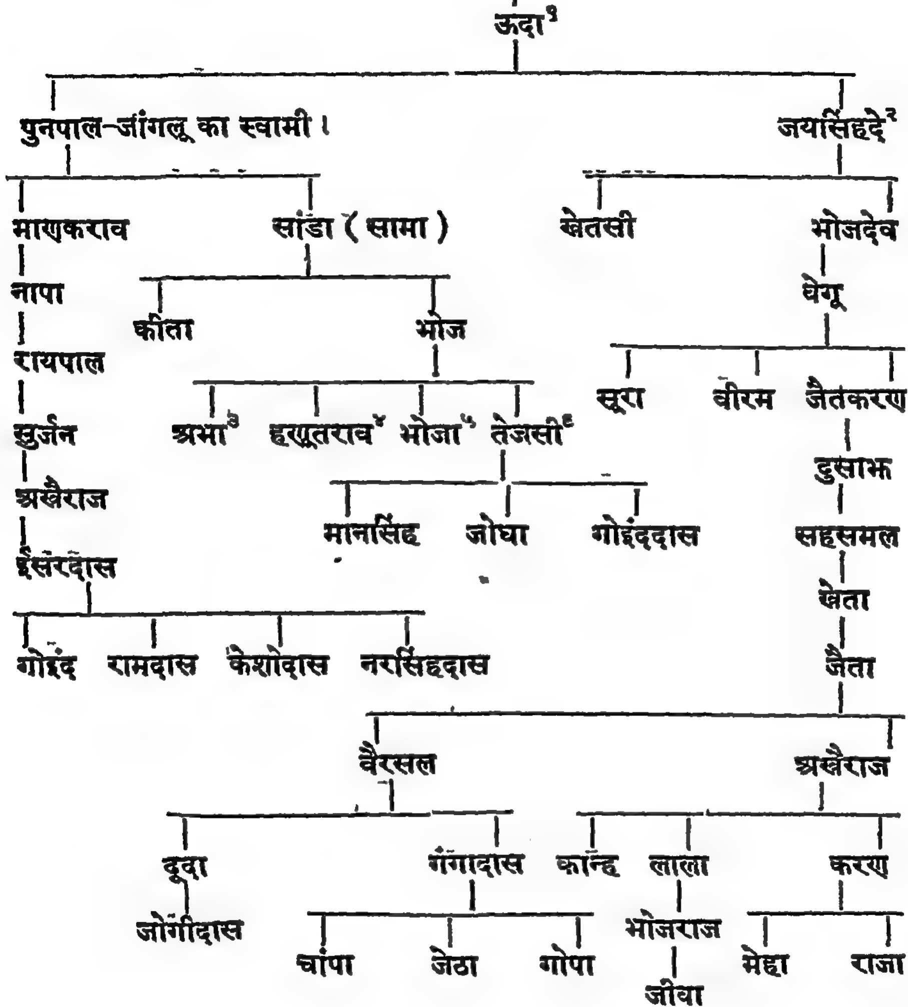
जांगलू के सांखलों का वंशवृत्त।

वैरसी का पुत्र राणा राजपाल, राजपाल का पुत्र राणा महिपाल, महिपाल का पुत्र राणा रायसी, रायसी का पुत्र राणा अणखसी, * अणखसी का पुत्र राणा खींवसी, खींवसी का पुत्र राणा कंवरसी × और कवरसी का पुत्र राणा राजसी राजसी के तीन पुत्र थे—करमसी, मूजा और राणा अभा। करमसी बड़ा हरि-भक्त था।

(*) अणखसी ने जागलू से २१ मील 'अणखसीसर' नाम का गाव बसाया, वहां ४ देवलियों पर स० १३४० वि० के लेख हैं उनमें अणखसी के पुत्र आसल और उसकी दो स्त्रियां रोहिणी और पूना के नाम हैं। नैणसी ने आसल का नाम नहीं दिया, वह अणखसी का दूसरा पुत्र होगा। (बगाल ए सोसाइटी का जर्नल जिल्द १६ पृष्ट २५५-५६)।

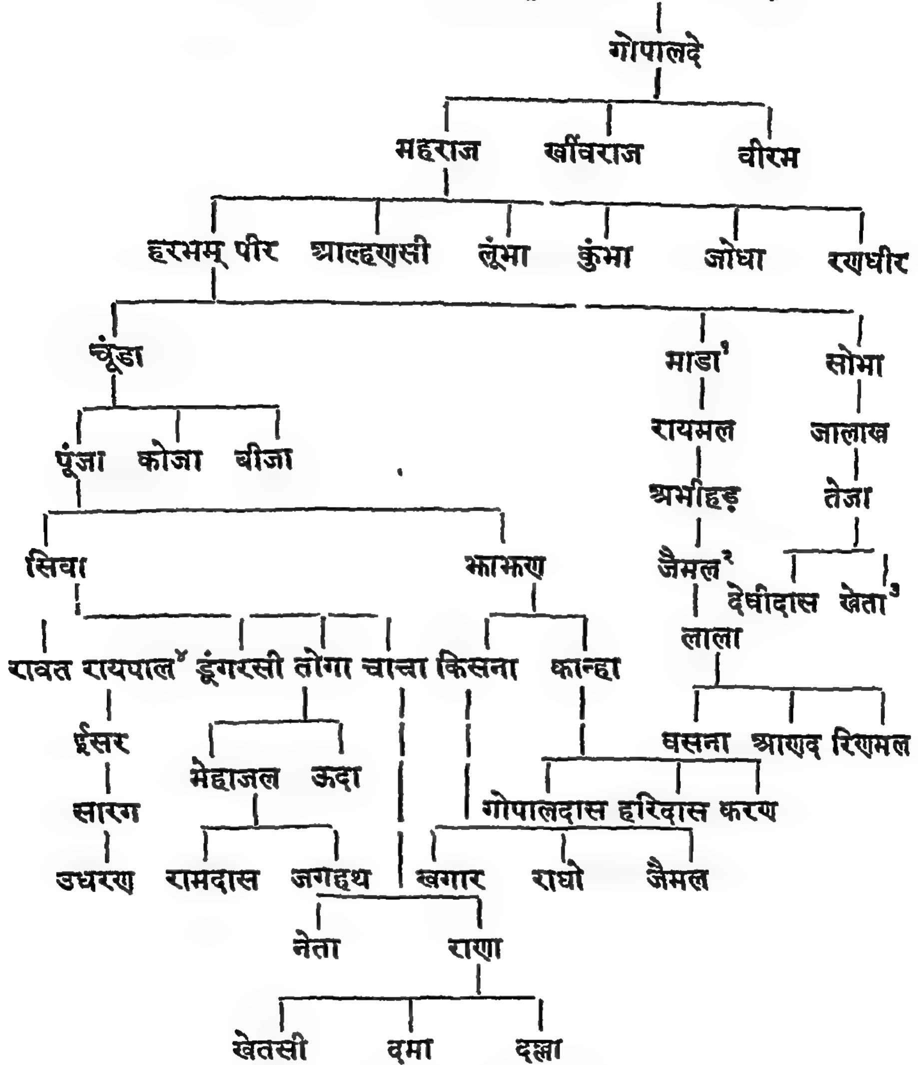
(×) कवरसी के समय का एक लेख सस्कृत में वरसिंहसर (जागलू के पास) में स० १३८१ वि० का मिला जिसमें जगलकूप के स्वामी साखला कुमारसिंह (नैणसी का कवरसी) की पुत्री दुलहादेवी के एक तालाव बनवाने का उल्लेख है। दुलहादेवी का विवाह जेसलमेर के रावल कर्णदेव के साथ हुआ था। कुमारसिंह के पिता का नाम खेमसिंह दिया है जो नैणसी का खींवसी है (वही पृष्ट २५५-५६)।

राणा राजसी के पुत्र मूंजा का वंश।



(१) जांगलू का स्वामी था, इसको महराज ने मारा। (२) इसकी बहिन जेसलमेर के रावल करण के साथ व्याही गई थी इस प्रसंग से जयसिंहदे का पुत्र खेतसी वहां गया और एक गांव सावा, जेसलमेर से १२ कोस, पट्टे में पाया, जहां अब वह रहता है। (३) कुंवर भोपत के साथ, वाटला पट्टे। (४) मांडण के पास रहता था, चाटले गांव में काम आया। (५) लूणा के साथ काम आया। (६) देवीदास जैतावत के साथ मेड़ते की लड़ाई में मारा गया।

साखला राणा राजसी के दूसरे पुत्र राणा अभा का वंश।



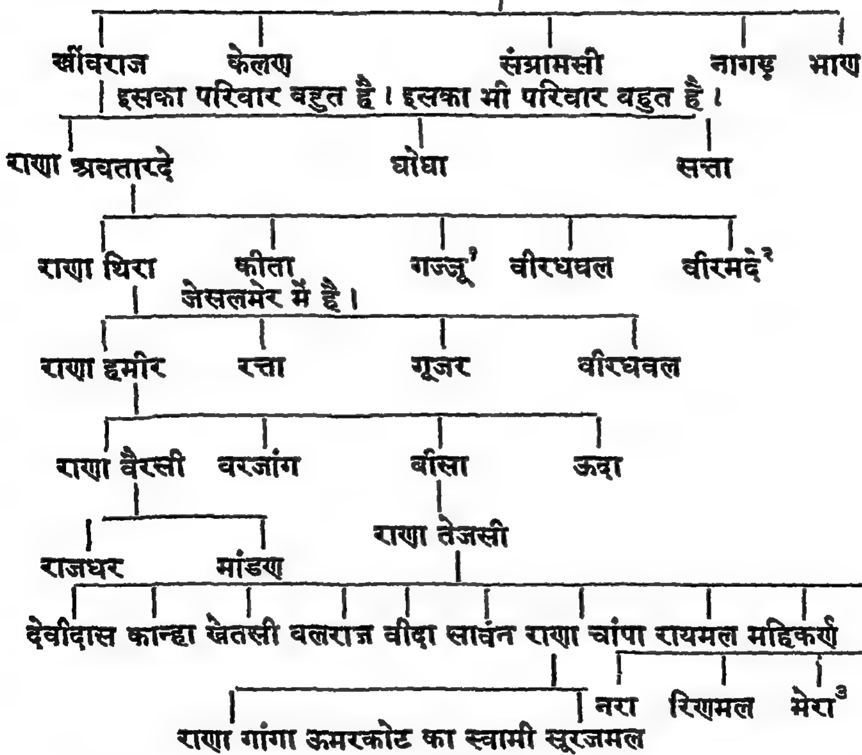
सोढा परमारों का वंश वृक्ष।

सोढो में दो शाखें है। बड़ी शाख ऊमर कोट की और छोटी शाख पार कर की है।

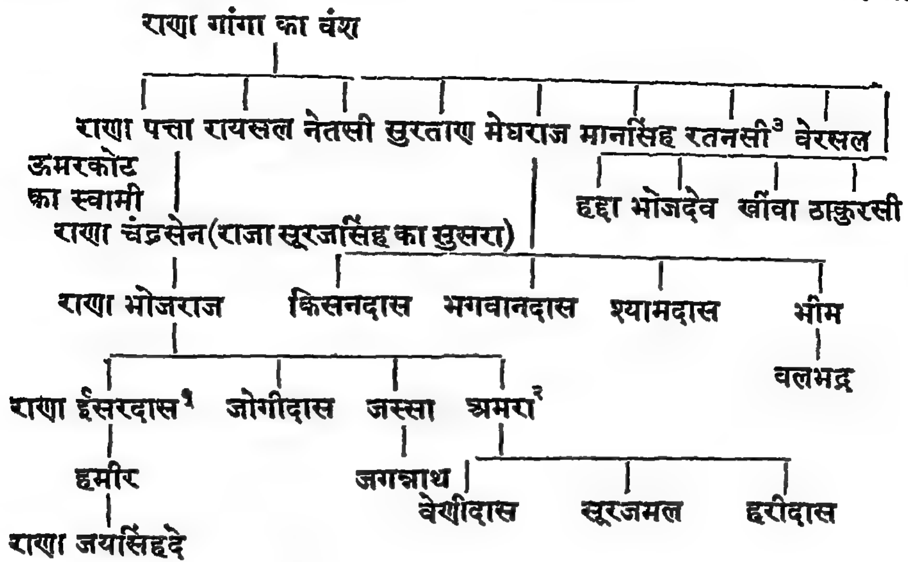
(१) टीकायत, बूढ़ा होने पर चूडा को टीका दिया। (२) गांव वहगटी में है। (३) वहगटी में है। (४) आफत का मारा रहता था, वींकू के केहर करमसीहोत ने मारा।

सोढों में दो शाखें हैं—बड़ी शाखा ऊमरकोट की और छोटी पारकर की है।

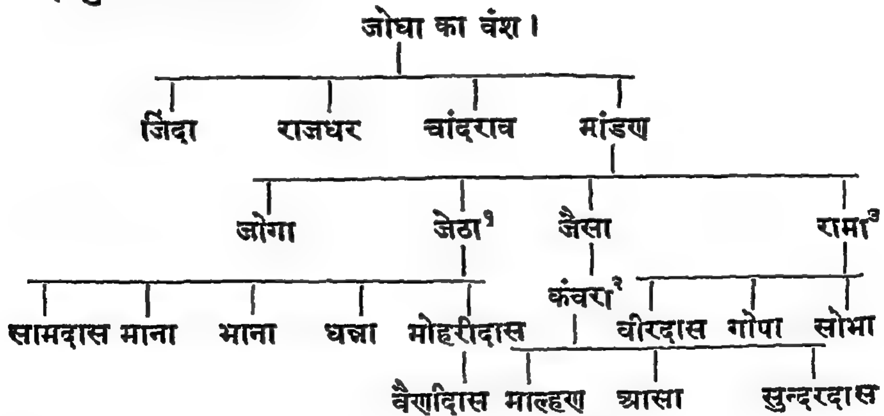
ऊमरकोट के सोढों की वंशावली—धरणी वराह के दो पुत्र, सोढा और सांखला। सोढा का पुत्र चाचगदे, चाचगदे का पुत्र राजदे; राजदे का पुत्र जयब्रह्म, जयब्रह्म का पुत्र जसहड़, जसहड़ का पुत्र सोमेश्वर; सोमेश्वर का पुत्र धारावर्ष, धारावर्ष के दो पुत्र—दुर्जनसाल और आसराव। दुर्जनसाल ऊमरकोट में और आसराव पारकर में रहा।



(१) इसकी संतान जेसलमेर में है। (२) इसकी संतान जोधपुर आंबेर में है।
(३) छप्पै—देवीदास दुरंग, सुपह कानो राजेसर।
खड़गहथो खेतसी, अनै बलराज उनैफर॥
चांपो ने रायमल्ल, रूप राया छज रायण।
वीदोने सामंत, वैर वम वार विचक्खण॥
मल्लिकरण नरो रिणमल मुदै, मेरो गुण सागर सुमत।
तेगियो तिलक तेजलज, बारै बेटा बिरदपत॥



राणा अवतारदे के पुत्र गज्जू का वंश—गज्जू का पुत्र मेला, मेला का पुत्र डूंगरसी, डूंगरसी का पुत्र खरहथ, खरहथ का पुत्र सहसा, सहसा के दो पुत्र-जोधा और सारा।



(१) ईसरदास को जेसलमेर के रावल सबलसिंह ने सं० १७१० में निकाल दिया। (२) मेहवे रावल भारमल के पास नौकर था। गांव भूका पट्टे में था। (३) (जेसलमेर) के रावल मनोहरदास का सुसरा था। इसकी पुत्री मनोहरदास की राणी सं० १७२२ में मथुरा में सती हुई।

(१) देवराज की जागीर में वुड़किया कनोड़िया गांव बसाये। (२) पोकरण के जालीवाड़े तथा ड्रेंग में रहता है। (३) गाव ड्रेंग में रहता है।

राणा अवतारदे के तीसरे पुत्र वीरमदे का वंश ।

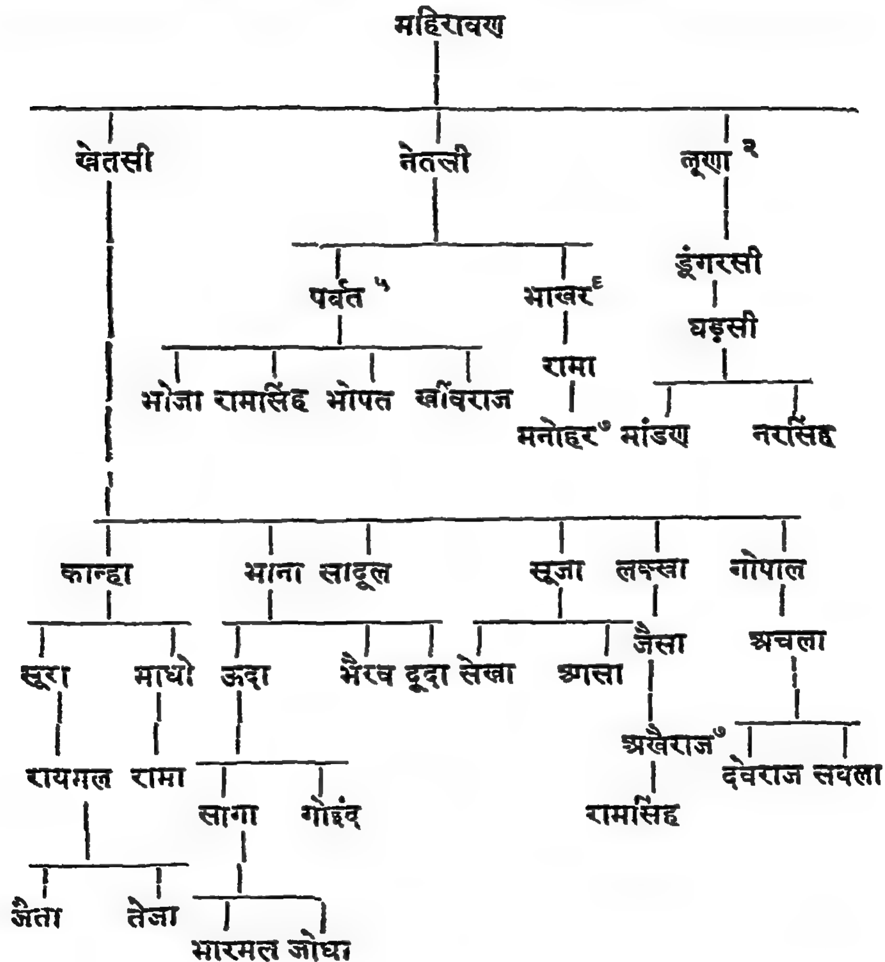
- तमाइची
  - सत्ता
    - कुम्भा
      - सहसा
        - सामा
          - महराज
          - गोवर्धन
          - लाडखान
          - सुंदर
  - देवराज
    - सावा
      - वघा
        - सहसमल[1]
          - अड़वाल[2]
            - दूदा
              - भाण
                - अमरा
                - दयालदास
                - भगवान
                  - दूला[7]
              - वेणीदास
                - गोपालदास
            - महेश
              - नेतसी
                - ईसरदास[5]
                  - गोरधन
                    - साँवराज
                - नरहरदास
                  - रामसिंह
                    - कल्ला
                    - गोकल
                  - जीवा
              - पत्ता
              - हरीदास
              - जैता
              - भोज
      - भीमराज
        - सायर
          - जगमाल
            - कंवरा[3]
        - मांडण
          - सूरा
            - जगन्नाथ[4]
    - सत्ता
      - पीथमराव
        - पर्वत
          - सूरज
            - जैमल
              - अर्जुन
                - माना
                  - घरजांगदे[6]
- रतनसी
- मालदेव
- उगमसी
- ससा

---

(१) भाइयों ने मारा। (२) राणी लक्ष्मी इसकी मासी थी, इस प्रसंग से वह मारवाड़ में आया। (३) देतीवाड़े रहता है। (४) अजमेर के गांव अमोलख में रहता है। (५) सोजत का गांव खारिया, पट्टे में था। (६) गांव पुरे मंडले में है। (७) जालोर का गांव पट्टे में था।

राणा हमीर थिरावत के चौथे पुत्र ऊदा का वंश।

ऊदा का पुत्र कूंपा, कूंपा का पुत्र वैरसल, वैरसल का पुत्र महिरावण। महिरावण का पुत्र खेतसी गोवल में रहता है। दूसरे पुत्र, नेतसी और लूणा।



(१) इनके वंशज मेहवे के गांव गोवल और ऊमरकोट के गांव समंद में हैं (२) ऊमरकोट में है। (३) वोहरावास में रहता है। (४) गोवल में रहता है। (५) गोवल में रहता है। (६) गाडइ़ेर काम आया। (७) हरीदास का नौकर, उज्जैन में काम आया। (७) गोवल में रहता है।

का दोहिता था, सिवाने में उसकी गिड़ी (गढ़ी ?) है, यह सुलतान अलाउद्दीन खिलजी से मिलकर उसको सिवाने पर चढ़ा लाया था।

राणा रावल सजन का राव, सांतल सोम का दोहिता, इसने सुलतान अला-उद्दीन से मिलकर सिवाने का गढ़ लिया, बादशाह ने पहले तो सिवाना उसको दे दिया परन्तु पीछे उसे मरवा डाला। रावल के पीछे क्रमवार इतने राणा हुए सिलार, जयसिंह, वीका, वीरम, रतनसी, भुजबल। सांकर (शङ्कर)। सादूल गांव मोड़ी पट्टे, इसका एक पुत्र रायसिंह और दूसरा पुत्र दुर्गा था जो रवड़ेते में काम आया। दुर्गा का बेटा जैता, जैता के पुत्र रामसिंह और रायसिंह। सांकर का तीसरा पुत्र वणवीर राव चन्द्रसेन (राठोड़) के साथ था, जब गांव थलूंडे में सोनगिरे चौहानों ने राव चन्द्रसेन को घेरा तो वणवीर उनसे लड़कर मारा गया। सांकर का चौथा पुत्र वैरसल घुघरोट की लड़ाई में जालौर के सोनगिरों के युद्ध में काम आया। सांकर का पांचवा पुत्र डूगरसी।*

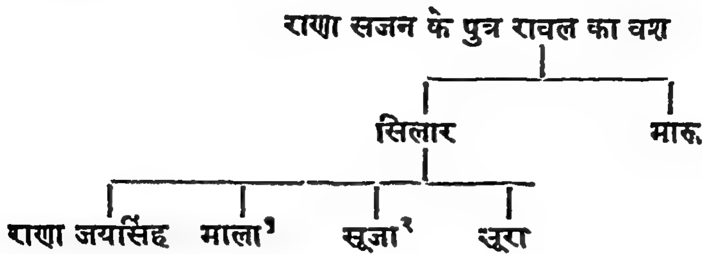
(*) आबू चद्रावती, मालवा व वागड़ आदि के मुख्य पवार कुलों का इस ख्यात में कुछ भी वर्णन नहीं है अतएव शिलालेखादि के आधार से उनकी वंशावली मात्र यहां दी जाती है।

सम्भव है कि पहले परमार उत्तर में हों परन्तु वहां मुसलमानों का अधिकार बढ़ने पर सातवीं शताब्दी के लगभग राजपूताने में आए हों। आबू के परमारों की प्राचीन राज-धानी चन्द्रावती थी जो आबू रोड स्टेशन से चारेक मील दक्षिण में है।

वंशावली–पहला राजा धूमराज। धूमराज के वंश में सिन्धुराज सं० १००० वि० के लगभग हुआ। उत्पलराज या उपेन्द्र, आरण्यराज, कृष्णराज, धरणीवराह सं० १०४० वि० के लगभग, महीपाल या देवराज सं० १०५६, धंधुक सं० १०८८, ध्रुवभट, रामदेव, विक्रमसिंह; यशोधवल सं० १२०२, धारावर्ष सं० १२२०–७६, इसका भाई प्रल्हादनदेव था जिसने पालनपुर का नगर बसाया; सोमसिंह सं० १२८३; कृष्णराज और प्रतापसिंह।

मालवे के पंवार—

उपेन्द्र या उत्पलराज चद्रावती के राजा ने मौर्यों से विक्रम की दसवीं शताब्दी में मालवा लिया हो, फिर क्रमवार इतने राजा मालवे की गद्दी पर बैठे–कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक, वाक्पतिराज, वैरिसिंह दूसरा या वज्रट, सीयक या श्रीहर्ष दूसरा या सिंहभट सं० १०२८, मुंजराज या वाक्पतिराज दूसरा सं० १०५२, सिन्धुराज, भोजराज या प्रसिद्ध राजा भोज सं० १११०



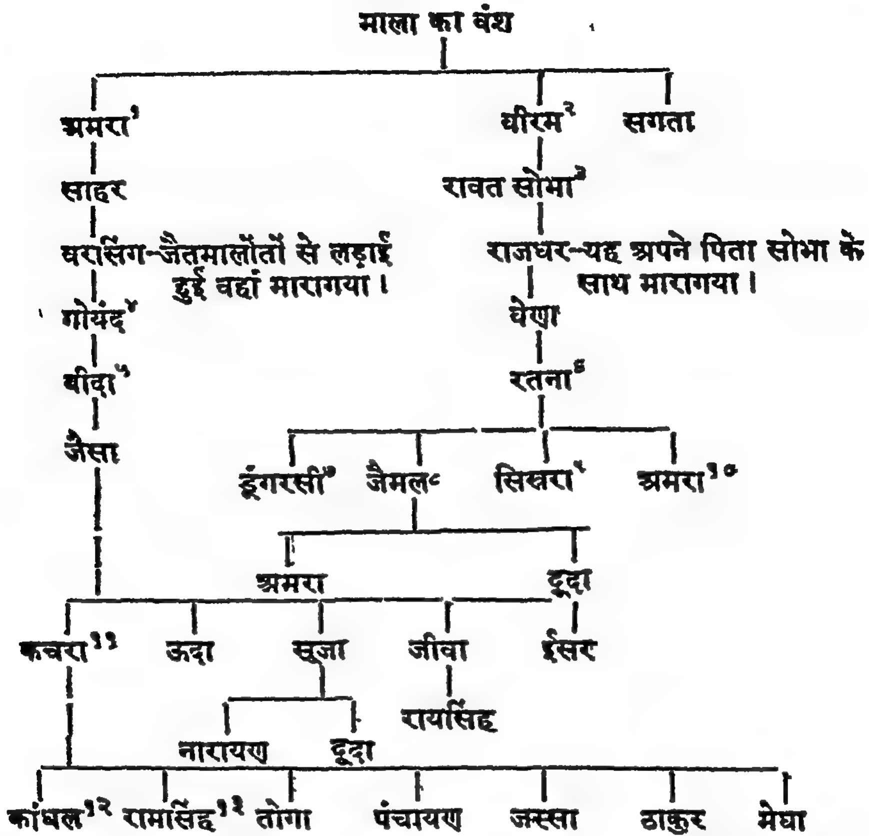
(१) पोहराचे खोहरे में भाइयों ने मारा। (२) यह गाव पीपलोण में रहता था।

के लगभग तक, जयसिहदेव स० १११०, उदयादित्य स० १११६–४३, लक्ष्मदेव, नरवर्म लक्ष्मदेव का भाई स० ११६०, यशोवर्म स० ११६१, जयवर्म स० १२००, अजयवर्म जयवर्म का भाई, विन्ध्यवर्म, सुभटवर्म या सोहड़, अर्जुनवर्म सं० १२६७–७३, देवपालदेव स० १२७२–६०। इसके वक्त मे सुलतान शमशुद्दीन अलतिमश ने स० १२८८ में मालवा फतह किया। महाकाल के मन्दिर को नाव से खुदवाकर नष्ट कर दिया और शिवलिङ्ग व राजा विक्रमादित्य की पीतल की मूर्ति को देहली लेजाकर जामे मसजिद के पास गड़वा दिया। देवपाल के पीछे जयसिंहदेव और महलक्देव दो नाम और मिलते हैं। महलकदेव पर सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ऐनुल्मुल्क ने स० १३६२ वि० के लगभग चढ़ाई कर मालवा फतह किया और देहली की बादशाहत मे मिला दिया।

जालौर के परमार–वाक्पतिराज, चन्दन, देवराज, अपराजित, विजल, धारावर्ष और वीसल। वीसल की राणी ने स० ११७४ मे सिन्धुराजेश्वर के मन्दिर पर सुवर्ण कलश चढाया था। जालौर के परमार आबू के परमारो के वंशज हों। स० १२३०–४० के आसपास चोहान राव कीर्तिपाल या कीतू ने परमार राजा कुंतपाल से जालौर लिया था। वीसल और कुंतपाल के बीच में होने वाले राजाओं के नाम नहीं मिले हैं।

बागड़ के परमार–मालवे के राजा वैरसिंह दूसरे के छोटे भाई डम्बरसिंह को बागड़ का प्रदेश जागीर में मिला था उसके वंशज एक अर्से तक वहा राज करते रहे हों राजधानी उनकी अर्थूणा थी जो अब बांसवाड़े के राज में है। डम्बरसिंह, कंकदेव, चण्डप, सत्यराज, मण्डलीक या मण्डन, चामुण्ड राज स० ११३६ और विजयराज सं० ११६६ वि०।

अब तो केवल उमटवाड़े मध्य हिन्दुस्तान में—राजगढ़, नरसिंहगढ के उमट परमारों के दो छोटे से राज्य रह गये हैं।



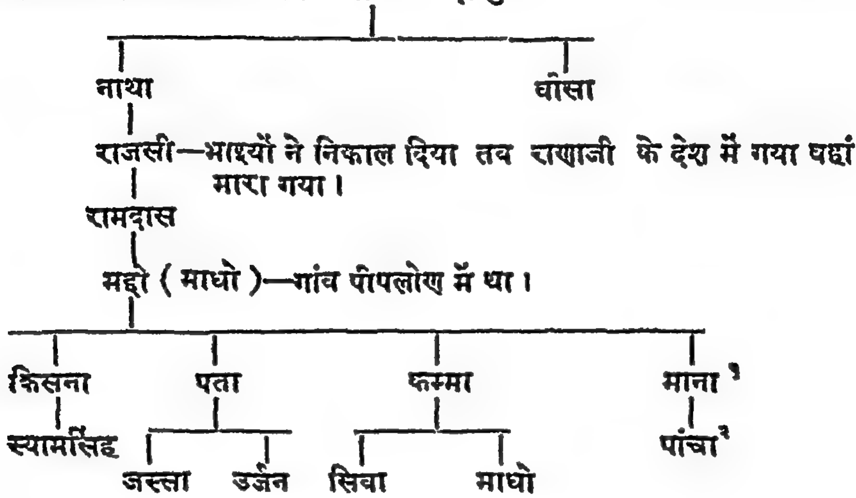
(१) अपने पिता माला के साथ मारा गया। (२) गांव घुघरोट में भाइयों ने मारा। (३) गांव घुघरोट में कुंडल के पंवारों ने मारा। (४) मादड़ी में सिरोही वाले जैतमालोतों पर चढ आये वहां मारा गया। (५) जालौर का खान घुघरोट पर चढ़ आया वहां मारा गया। (६) घुघरोट पट्टे थी, नारायण के वेटों को मारे थे उनके वैर में करण पीथावत ने इसको मारा। राजा भीम राणावत को जब जालौर जागीर में था, उस वक्त रतना वहां जारहा था, वहां पर करण ने इसको मारा। (७) सं० १६८० में सेवटे (राजपूत) ने मारा। (८) इसको सुंदरदास मुहणोत ने मारा। (९) सं० १६८२ में बुरहानपुर में मरा। (१०) तिमरणी की मुहिम में चोरी की तब राजा गजसिंह (राठोड़) ने इसका सिर कटवा दिया। (११) गांव अरजीयाणा में रहता है। (१२) अरजीयाणे में रहता है। (१३) गांव मूठली में रहता है।

रावल लखनावत के दूसरे पुत्र माल्ह का वंश—माल्ह का पुत्र बैरसल बैरसल का पुत्र करण, करण का पुत्र त्रिभण (त्रिभुवन) त्रिभण के पुत्र—नूंता, देवा, जस्सा और और सावंत

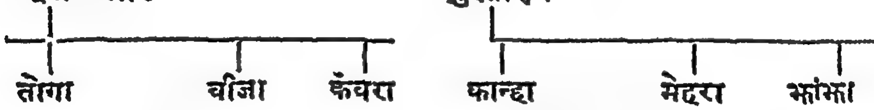
- नूंता
  - बीसा[2]
    - देवराज
      - जैमल
      - तेजमल
        - पूरा
        - माना
    - पांचा
      - वेणा
        - जोगीदास
        - पीथा
        - आसा
        - केसा
    - रतना
    - धन्ना
    - कुंभा[5]
      - डूंगरसी
  - सिवा[3]
  - आसा[4]
  - चापा
    - संकर
      - नरसिंह
        - रामसिंह
- जस्सा
  - चौहथ[1]
- सावंत
  - सेखा
    - ठाकुर[6]
      - बीसल[7]
        - माना[8]
          - डूंगर[9]
          - दूदा
          - जस्सा
          - महेश
        - सहसमल
        - कला
        - बीदा
        - रूपा
    - तेजसी

(१) गांव कुंडल में रहता था। (२) जालोर में मारागया। (३) गांव कुंडल में भायलों ने चूक कर मारा। (४) भायलों ने चूक कर मारा। (५ गांव धाए में सेवटों की लड़ाई में काम आया। (६) इसको उद्धरण गहलोत ने मारा। (७) दहियों ने मारा। (८) महाराज जसवंतसिंह के पास नौकर बुरहानपुर में मरा। (९) गांव भागवे में महेश के पुत्र राघोदास ने मारा

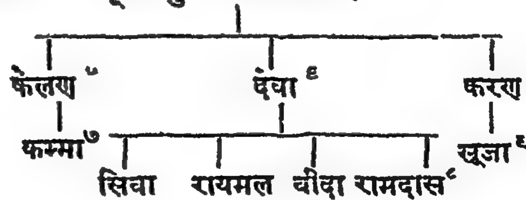
सिलार रावलोत के दूसरे पुत्र सूजा का वंश—सूजा का पुत्र कुंभा और कुंभा का पुत्र वीरम था जो चांपा चोहान की स्त्री सेवती को लेआया था, उसी मामले में मारा गया। वीरम के दो पुत्र—



सिलार रावलोत के तीसरे पुत्र सूरा का वंश—सूरा का पुत्र आपमल, आपमल का पुत्र वीका, वीका का पुत्र सांवतसी; सांवतसी का पुत्र भद्दा, भद्दा का पुत्र वीका, वीका का पुत्र भारमल[3], भारमल के दो पुत्र सूजा[4] और सुरताण।



सिलार के पोते कुंभा के बेटे वीरम के दूसरे पुत्र वीसा का वंश।



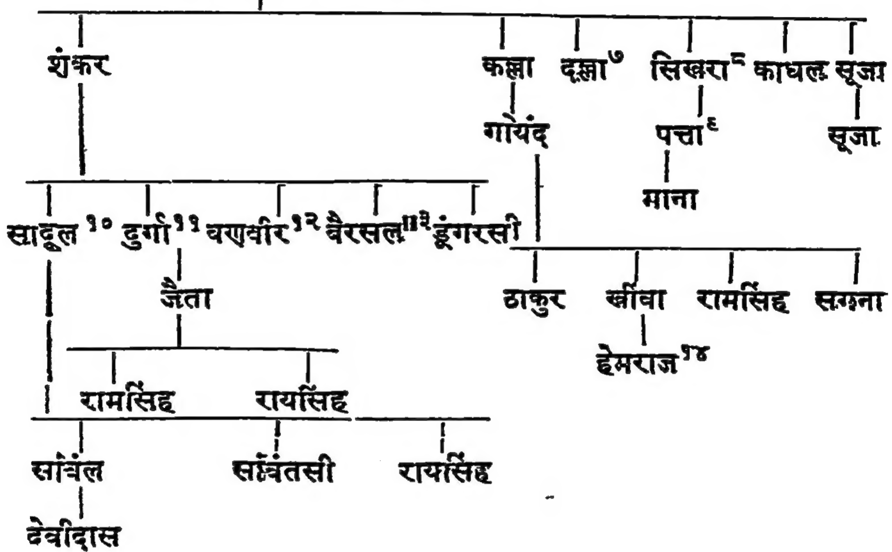
---

(१) इसको मुहणोत सुंदरदास ने मारा। (२) कल्याणदास के साथ काम आया। (३) पांचले पर फौज आई वहां लड़कर मारा गया। (४) गांव भागवे में रहता है। (५) राव मालदेव का चाकर, गांव भूंडू पट्टे में था, उसको

सिखार के पोते सगता मालावत का का वंश—सगता का पुत्र भागसल, भागसल का पुत्र मेहा, मेहा का पुत्र रामदास[1] इसके ५ पुत्र (१) सेखा (२) सत्ता (३) कल्ला (४) सादूल[2] (५) ऊदा[3]।

सेखा — परबत[4] — बरिम
सत्ता — पीथा[5]
कल्ला — सूरा[6]

राणा भुजवल रतनसीहोत का वंश।



छोड़कर जालौर गया। जालौर पर राव मालदेव ने फौज भेजी तब वहां पौल पर हात का छापा देकर लड़ मरा। (६) इसके तीन बेटों को कम्माने मारा। (७) (भाइयों की) परस्पर की लड़ाई में मारा गया। (८) पत्ता नंगावत के साथ नाडोल में काम आया। (६) कम्मा ने मारा।

(१) राव चंद्रसेन के आपत् काल में रामदास राठोड़ की सेवा में गढ़ पर रहा। (२) भाखरसी दासावत के पास नौकर। (३) बालक ही मर गया। (४) अजमेर में देवीदास की सेवा में लड़कर मारागया। (५) गांव मीठोड़े में रहता है। (६) भाखरसी के पुत्र कल्याणदास के पास था। (७) गांव मोड़ी में काम आया। (८) जालौर काम आया। (६) आसकरण ने उग्रसेन को मारा वहा काम आया। (१०) गाव मोड़ी पट्टे (११) गांव खड़ेते में काम आया। (१२) राव चंद्रसेन पर राव सोनिगरा गांव थलूंडे आन पड़ा वहा काम आया। (१३) घुघरोट पर जालौर वाले चढ़ आए, वहां लड़कर मारा गया। (१४) गुढ़े पर तुर्क आए उनके साथ लड़कर मारा गया।

देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता स्व० मुंशी देवीप्रसाद जी ने कई सहस्र रुपयों का दान काशी नागरीप्रचारिणी सभा को इसलिये दिया था कि उसके सूद से तथा उससे प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो, उससे सभा हिंदी में इतिहास संबंधी उत्तम उत्तम पुस्तकें प्रकाशित करे। तदनुसार इसमें अब तक ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) चीनी यात्री फाहियान का यात्रा विवरण—चीनी भाषा के मूल ग्रंथ के आधार पर यह ग्रंथ लिखा गया है। गांधार, तक्षशिला, पंजाब, मथुरा, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, रामस्तूप, पाटलिपुत्र, राजगृह, सप्तपर्णी गुफा, गया, वाराणसी, ताम्रलिप्ति आदि स्थानों का इसमें पूरा पूरा वर्णन है। अँग्रेजी अनुवादकों ने जो जो भूलें की हैं, वे भी सुधार दी गई हैं। साथ ही फाहियान की यात्रा का रंगीन नकशा भी है। मूल्य १।)

(२) चीनी यात्री सुंगयुन का यात्रा विवरण—इस पुस्तक के उपक्रम में समस्त चीनी यात्रियों का विवरण संक्षेप में दिया गया है। इसमें स्थान स्थान पर बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ दी गई हैं। उन पाँच प्रधान जातकों की कथा भी संक्षेप में दे दी गई है, जिनके घटना-स्थलों का उल्लेख इस यात्रा विवरण में आया है। इतिहास-प्रेमियों के लिये यह बहुत काम की चीज है। मूल्य १)

(३) सुलेमान सौदागर—भारतवर्ष और चीन देश के विषय में मुसलमानों की लिखी जो पुस्तकें पाई जाती हैं, उनमें से सब से अधिक प्राचीन सुलेमान नामक एक मुसलमान सौदागर का यात्रा-विवरण है, जो सन् ८५१ से पहले भारत आया था। उसी का मूल अरबी से यह अनुवाद कराके सभा ने प्रकाशित किया है। इसकी मूल प्रति बहुत परिश्रम करके तथा बहुत कुछ धन व्यय करके प्राप्त की गई थी। इस ग्रंथ में भारत तथा चीन का विवरण ईसवी नवीं शताब्दी के पूर्वार्ध का है। यह अनुवाद बहुत ही खोज और परिश्रम से किया गया है और इसमें मार्को पोलो तथा इब्न बतूता के यात्रा विवरणों से भी बहुत सहायता ली गई है। मूल्य १।)

(४) अशोक की धर्म लिपियाँ, पहला भाग—भारतवर्ष के आज से २५०० वर्ष पूर्व के इतिहास की जानकारी के लिये प्रियदर्शी राजा अशोक के शिलालेख बहुत महत्व के हैं। इन शिलालेखों से उस समय की राज्य व्यवस्था, राजनीति, राज्यविस्तार, धर्म, विचार,

भाषा तथा लोगों के रहन-सहन आदि का बहुत अच्छा पता लगता है। इस पुस्तक में उसी सम्राट् अशोक के प्रधान शिलालेखों की प्रतिलिपि, संस्कृत तथा हिंदी अनुवाद और स्थान स्थान पर अनेक बहुमूल्य टिप्पणियाँ दी गई हैं। अशोक की धर्म्मलिपियों का ऐसा अच्छा दूसरा संस्करण अभी कहीं नहीं निकला। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी और विद्यानुरागी को इसकी एक प्रति अवश्य अपने पास रखनी चाहिए। मूल्य ३)

(५) हुमायूँनामा—प्रसिद्ध मुगल सम्राट् हुमायूँ की सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने फारसी भाषा में हुमायूँ की एक जीवनी लिखी थी जो "हुमायूँ नामा" नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक उसी का अनुवाद है। इसमें राजनीतिक घटनाओं, युद्धों और विजयों आदि का तो बहुत थोड़ा वर्णन है, पर गार्हस्थ्य जीवन की बातें बहुत विस्तार से दी गई हैं। इस पुस्तक की गणना बहुत उच्च कोटि की पुस्तकों में की जाती है। स्थान स्थान पर अनेक उपयोगी टिप्पणियों से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। आरंभ में गुलबदन बेगम की संक्षिप्त जीवनी भी दी गई है। मूल्य १॥)

(६) प्राचीन मुद्रा—जिन प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्रीयुक्त राखालदास बंद्योपाध्याय के बनाए हुए करुणा और शशांक नामक उपन्यास हैं, उन्हीं के "प्राचीन मुद्रा" नामक बँगला ग्रंथ का यह हिंदी अनुवाद है। हिंदी में अपने विषय की यह सब से पहली पुस्तक है। इसमें भारत के सब से प्राचीन सिक्कों, विदेशी सिक्कों के अनुकरण पर बने हुए सिक्कों, सौराष्ट्र तथा मालव के सिक्कों, और दक्षिणापथ तथा उत्तरापथ के पुराने सिक्कों का पूरा पूरा विवरण दिया गया है और यह बतलाया गया है कि उनसे क्या क्या ऐतिहासिक बातें ज्ञात अथवा सिद्ध होती हैं। आरंभ में रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा का लिखा प्राक्कथन और अंत में सैकड़ों सिक्कों के चित्रों के प्रायः २० प्लेट हैं। मूल्य केवल ३)

एक कार्ड भेजकर सभा द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकों का नया बड़ा सूचीपत्र मँगा देखिए।

प्रकाशन मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी।
